कैप्टन कूल

महेंद्र सिंह धोनी की कहानी

"अभी तक मैं जिन कप्तानों के साथ खेला, उनमें धोनी बेस्ट हैं।"
–सचिन तेंदुलकर

चैंपियंस ट्रॉफी 2013 तक अपडेटिड

गुलू इज़िकियल

अनुवादः मोना पार्थसारथी

यात्रा
w

वैस्टलैंड

कैप्टन कूल
महेंद्र सिंह धोनी की कहानी

गुलू इज़िकियल भारत के नामचीन खेल पत्रकार और लेखकों में से हैं जिन्हें प्रिंट, रेडियो, टीवी और इंटरनेट का तीन दशक का अनुभव है। *एशियन एज, एनडीटीवी* और *इंडिया डॉट कॉम* के खेल संपादक रह चुके इज़िकियल खेलों पर कई किताबें लिख चुके हैं, जिनमें से सात तो क्रिकेट पर ही हैं। इसके अलावा भारत, ऑस्ट्रेलिया और इंग्लैंड में प्रकाशित दर्जनों अन्य किताबों में आपका योगदान रहा है।

1991 से नई दिल्ली में बसे इज़िकियल ने अगस्त 2001 में *जीई फिचर्स* की शुरुआत की। दुनिया भर के करीब सौ प्रकाशनों में अपना योगदान दे चुके इज़िकियल नियमित तौर पर विभिन्न समाचार चैनलों पर खेलों से जुड़े मामलों पर अपने विचार व्यक्त करते रहते हैं।

गुलू इज़िकियल ने अब तक 12 पुस्तकें लिखी हैं। वैस्टलैंड लिमिटेड के लिए यह उनकी पहली किताब है।

मोना पार्थसारथी भारतीय जनसंचार संस्थान से पत्रकारिता में स्नातकोत्तर हैं। आप बतौर संवाददाता प्रमुख समाचार पत्रों में काम कर चुकी हैं। संप्रति आप ट्रस्ट ऑफ इंडिया में खेल पत्रकार के तौर पर कार्यरत हैं।

कैप्टन कूल
महेंद्र सिंह धोनी की कहानी

गुलू इज़िकियल

अनुवाद
मोना पार्थसारथी

यात्रा बुक्स

Westland Ltd

वैस्टलैंड लिमिटेड

61 , सिल्वरलाइन अलपक्कम मेन रोड, मदुरावोयल, चेन्नई-600095
नं. 38/10 (नया नं. 5), राघव नगर, न्यू टिंबर यार्ड लेआउट, बैंगलुरु-560026
93 , प्रथम मंज़िल, शाम लाल रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002

अंग्रेजी का प्रथम संस्करण: *कैप्टन कूल: द एम.एस. धोनी स्टोरी,* वैस्टलैंड लिमिटेड, 2008
हिंदी का प्रथम संस्करण: वैस्टलैंड लिमिटेड, यात्रा बुक्स के सहयोग से, 2013

कॉपीराइट © गुलू इज़िकियल, 2013

सर्वाधिकार सुरक्षित
10 9 8 7 6 5 4 3 2 1

गुलू इज़िकियल दृढ़तापूर्वक अपने नैतिक अधिकार व्यक्त करते हैं कि उनकी पहचान इस पुस्तक के लेखक के रूप में हो।

आई.एस.बी.एन: 978-93-83260-45-4

यह पुस्तक इस शर्त पर विक्रय है कि प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना इसे व्यावसायिक अथवा अन्य किसी भी रूप में उपयोग नहीं किया जा सकता। इसे पुन: प्रकाशित कर बेचा या किराए पर नहीं दिया जा सकता। इसका जिल्दबंद या खुले या किसी भी अन्य रूप में इस्तेमाल नहीं किया जा सकता। ये सभी शर्तें पुस्तक के खरीदार पर भी लागू होंगी। इस संदर्भ में सभी प्रकाशनाधिकार सुरक्षित हैं। इस पुस्तक का आंशिक रूप में पुन: प्रकाशन या पुन: प्रकाशनार्थ अपने रिकॉर्ड में सुरक्षित रखने, इसे पुन: प्रस्तुत करने, इसका अनूदित रूप तैयार करने अथवा इलैक्ट्रॉनिक, यांत्रिकी, फोटोकॉपी और रिकॉर्डिंग आदि किसी भी तरीके से इसका उपयोग करने हेतु समस्त प्रकाशनाधिकार रखने वाले अधिकारी और पुस्तक के प्रकाशक की पूर्वानुमति लेना अनिवार्य है।

माँ को समर्पित,
जिन्होंने इस किताब को
लिखने का सुझाव दिया

अनुक्रम

प्रस्तावना

1. शुरुआती वर्ष
2. प्रथम श्रेणी क्रिकेट
3. भारतीय टीम में पदार्पण
4. सुर्खियों में धोनी
5. विश्व रिकॉर्ड और टैस्ट क्रिकेट में पर्दापण
6. इंडियन आइडल और सुपर स्टार धोनी
7. विश्व कप में हार और उसके बाद
8. दक्षिण अफ्रीका में विजय पताका
9. ऑस्ट्रेलिया में शानदार प्रदर्शन
10. अनमोल सितारा धोनी
11. ब्रेक के बाद
12. टैस्ट क्रिकेट के शिखर पर
13. घरेलू सुख
14. भव्य से हास्यास्पद तक
15. धोनी के लिए आगे क्या?
16. कैप्टन आइस-कूल
17. आंकड़ों के आइने में धोनी

प्रस्तावना

एक छोटे से शहर के लड़के से भारतीय खेलों का महानायक बनने तक का सफर तय करने में महेंद्र सिंह धोनी को सिर्फ चार साल लगे। जिन घटनाओं ने मौजूदा दौर की सबसे सुखद कहानियों में से एक को मूर्त रूप दिया, मुझे लगता है कि उनका वर्णन किया जाना जरूरी है।

सत्तर के दशक में कपिल देव के बाद धोनी को भारतीय क्रिकेट का सबसे प्रभावी खिलाड़ी कहा जा सकता है। भारतीय क्रिकेट और युवा ब्रिगेड पर उनके सकारात्मक प्रभाव को किसी परीकथा का आधुनिक संस्करण कहा जा सकता है।

धोनी ने अपने प्रारंभिक दौर में क्रिकेट का कोई औपचारिक प्रशिक्षण नहीं लिया था और यही उनकी ताकत भी बना। दर्शकों को भी लुभाने का भरपूर माद्दा उनके भीतर मौजूद है।

वह एक ऐसे अगुआ हैं—2007 से भारत के एक दिवसीय और ट्वेंटी-20 कप्तान और 2008 में एक टेस्ट में कप्तान—जो साहसिक फैसले लेता है और उन पर अमल भी करने से नहीं हिचकता।

परिणाम अक्सर उनके अनुकूल आने में सिर्फ भाग्य की भूमिका ही नहीं थी। कपि देव की तरह धोनी भी दिमाग से ज्यादा दिल की सुनते हैं।

जरूरत से ज्यादा रणनीति का खाका खींचने या आगे की योजनाएं बनाने में कपिल और धोनी जैसों का भरोसा नहीं रहा है। ये ऐसे क्रिकेटर हैं जो दिमाग से नहीं, दिल से खेलते हैं और सबसे अहम बात यह कि हमेशा कप्तानी की एक नई मिसाल कायम करते हैं।

कपिल देव ने इंग्लैंड में 1983 में हुए विश्व कप में अपनी इसी प्रतिभा की बानगी पेश करके भारत को पहली बार फटाफट क्रिकेट की बादशाहत से नवाजा था। जिम्बाब्वे के खिलाफ 175 रन की यादगार पारी खेलकर पहले उन्होंने टीम को संकट से निकाला और यह साबित किया कि उनके लिए कोई चुनौती बड़ी नहीं है। इसके बाद क्रिकेट के मक्का लार्ड्स पर वेस्टइंडीज जैसे दमदार बल्लेबाजी क्रम को महज 183 रन पर समेटकर ट्रॉफी जीतना सोने पर सुहागा था।

दक्षिण अफ्रीका में 2007 में हुए पहले ट्वेंटी 20 विश्व कप में कुछ यही कहानी धोनी की थी। 1983 में कपिल के रणबांकुरों की तरह यहां भी भारतीय टीम से खिलाबी जीत की उम्मीद बहुत कम लोगों को ही रही होगी। इस टूर्नामेंट से पहले टीम इंडिया ने सिर्फ एक ट्वेंटी-20 मैच खेला था लिहाजा अनुभव का घोर अभाव था।

कप्तान के लिए चुनौती और भी मुश्किल थी। एक तो कप्तान के रूप में पहली चुनौती और उस पर पास में अनुभवहीन खिलाड़ियों की पूरी जमात। ऐसे में इस युवा विकेटकीपर बल्लेबाज को संयम रखते हुए अपने संसाधनों का सही इस्तेमाल करना था।

पहले मैच में ही भारत ने बाल आउट में पाकिस्तान को हराया। खिताबी मुकाबला भी इन्हीं दोनों टीमों का था जिसमें बाजी भारत ने मारी। धोनी के सारे दाव चल निकले।

फाइनल मैच का आखिरी ओवर मध्यम तेज गेंदबाज जोगिंदर शर्मा को सौंपना जुआ ही था और वह भी तब जबकि सामने मिसबाह उल हक पूरे फार्म में थे। यह दाव उलटा भी पड़ सकता था लेकिन अपने कप्तान के भरोसे पर अक्षरशः सही उतरे और खिलाब भारत की झोली में आया। इसी तरह आस्ट्रेलिया में सीबी सीरिज में प्रवीण कुमार का उदाहरण दिया जा सकता है।

इन दोनों जीत के साथ धोनी देश भर के हरदिल अजीज हो गए। सुर्खियों में रहने के बावजूद उन्होंने अपनी गरिमा नहीं खोई। छोटे शहर से निकले इस सितारे को हर हालात में अपना संयम बरकरार रखने का हुनर बखूबी आता है।

कामयाबी अपनी जड़ों से जुड़े रहने वाले धोनी के सिर पर चढ़कर नहीं बोल रही है। सचिन तेंदुलकर की तरह मध्यवर्गीय परिवार से निकले धोनी के पैर भी जमीन पर हैं। तेंदुलकर की तरह धोनी हालांकि कम उम्र में ही सितारा नहीं बने और ना ही उन्हें रातोंरात लोकप्रियता मिली। उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट में पदार्पण 23 बरस की उम्र में किया जो भारतीय क्रिकेट के स्तर के हिसाब से परिपक्व कही जा सकती है। उनके पास पांच साल घरेलू क्रिकेट खेलने का अनुभव भी है।

ट्वेंटी-20 विश्व कप जीतने के बाद धोनी ने ऑस्ट्रेलिया में 2008 में खेली गई वनडे श्रृंखला में सीनियर खिलाड़ियों की भूमिका कुछ कम कर दी। इसकी काफी आलोचना हुई। लेकिन एक बार फिर वह सही साबित हुए। ऑस्ट्रेलिया को उसी के मांद में खदेड़ने का कारनामा तो सुनील गावस्कर, कपिल देव, मोहम्मद अजहरूद्दीन या सौरव गांगुली भी नहीं कर पाए थे।

लिहाजा इंडियर प्रीमियर लीग के लिए हुई नीलामी में धोनी का सबसे महंगा साबित होना... कोई हैरानी की बात नहीं थी। पहले आईपीएल में चेन्नई सुपर किंग्स को अपनी कप्तानी में फाइनल तक ले जाना उनकी उपलब्धियों में एक और इजाफा था। धोनी आज लोकप्रियता के शिखर पर हैं। उनकी कहानी वाकई प्रेरणास्पद है।

भारत में होने वाले क्रिकेट टूर्नामेंटः

रणजी ट्रॉफीः प्रदेश की टीमों के लिए (चार दिवसीय मैचः फाइनल पांच दिवसीय)
रणजी ट्रॉफी वनडे टूर्नामेंटः प्रदेश की टीमों के लिए
दलीप ट्रॉफीः क्षेत्रीय टीमों के लिए (उत्तर, दक्षिण, पूर्व, पश्चिम, मध्य और एक विदेशी टीम। चार दिवसीय मैच, फाइनल पांच दिवसीय)
देवधर ट्रॉफीः पांच क्षेत्रीय टीमों के लिए वनडे टूर्नामेंट
चैलेंजर टूर्नामेंटः वनडे टूर्नामेंट। पहले इंडिया सीनियर्स, इंडिया 'ए' और 'बी' टीमों के लिए। लेकिन अब इंडिया ब्लू, इंडिया ग्रीन और इंडिया रेड टीमों को लेकरः
कूच-बेहार ट्रॉफीः राज्य की अंडर 19 टीमों के लिए तीन दिवसीय टूर्नामेंट
सी.के. नायडू टूर्नामेंटः अंडर 19 खिलाड़ियों के लिए वनडे क्षेत्रीय टूर्नामेंट

अध्याय एक

शुरुआती वर्ष

कुमाऊं की वादियों में बसे अल्मोड़ा जिले में तलासलाम गांव में रहने वाले युवा पान सिंह के लिए जीवन बहुत आसान नहीं था।

उत्तरांचल के इस गांव में अब तो बस भी जाती है लेकिन 1964 में जब यह उत्तर प्रदेश का हिस्सा था, तब यहां तक पहुंचने के लिए कोई सड़क नहीं थी और दुर्गम पहाड़ी इलाके से बस पदयात्रा ही करनी पड़ती थी।

यही वजह है कि सैलानियों के लिए बनाए गए, इस इलाके के ब्रोशर में कहा जाता है कि यहां के बाशिंदे अप्रत्याशित रूप से फिट होते हैं और उनमें कठिन से कठिन कार्य को करने की क्षमता होती है। यही गुण पान सिंह में भी थे और फिर उनके बच्चों को विरासत में मिले।

खेती बड़ी मेहनत का काम था और इसमें अधिक मुनाफे की भी गुंजाइश नहीं थी, लिहाजा कम पढ़े-लिखे पान सिंह नौकरी की तलाश में लखनऊ चले आए। उनके पास था तो बस दृढ़ निश्चय और कुछ करने का जज्बा।

वहां से वे बिहार में बोकारो गए जहां हिंदुस्तान स्टील लिमिटेड अपना नया इस्पात संयंत्र खोलने जा रहा था। बोकारो से वे रांची गए जहां वे मेटलर्जिकल एंड इंजीनियरिंग कंसल्टेंट्स लिमिटेड या मेकन में नौकरी करने लगे। शुरुआती तौर पर उन्हें दिहाड़ी पर मजदूरी करनी पड़ी। बाद में पदोन्नति होती गई और उन्होंने सुपरवाइजर के तौर पर रिटायरमेंट ली।

नैनीताल की रहने वाली देवकी देवी से 1969 में उनका विवाह हुआ। उनके बेटे महेंद्र सिंह धोनी का जन्म रांची में सात जुलाई 1981 को हुआ। उनका एक बड़ा भाई नरेंद्र और चार साल बड़ी बहन जयंती हैं।

नरेंद्र अल्मोड़ा में पुश्तैनी संपत्ति की देखरेख करते थे। इसके बाद रांची आकर वह अपने भाई के क्रिकेट कैरियर से जुड़ी परियोजनाओं के प्रबंध से जुड़ गए। अल्मोड़ा में अभी भी

पान सिंह के रिश्तेदार हैं यानी कुमाऊं से उनका नाता पूरी तरह टूटा नहीं है।

पंप ऑपरेटर के तौर पर पान सिंह का काम श्यामली कालोनी में जल आपूर्ति करना था, जहां डीएवी जवाहर विद्या मंदिर स्कूल है। यह वही स्कूल हैं जहां नरेंद्र और माही के नाम से पुकारे जाने वाले महेंद्र पढ़ा करते थे। अब इनकी बहन जयंती यहां पढ़ाती हैं। (उनके पति गौतम गुप्ता ने भी इसी स्कूल में तालीम हासिल की है)

क्रिकेट से पान सिंह का नाता तब जुड़ा, जब उन्हें नवंबर 1984 में बिहार और उड़ीसा के बीच होने वाले रणजी ट्रॉफी मैच के लिए रांची के मेकन स्टेडियम पर तैयार की गई टर्फ के लिए पर्याप्त जलापूर्ति की जिम्मेदारी सौंपी गई।

वह जमाना पानी की राशनिंग का था और नमी के बिना टर्फ बर्बाद होने का डर था। हालात और भी मुश्किल हो गए क्योंकि प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की हत्या के कारण कर्फ्यू लगा था।

इसे कर्मयोग ही कहेंगे कि इसी स्टेडियम पर कुछ साल बाद उनके सबसे छोटे बेटे ने पहली बार नाम कमाया। मैदान के चारों ओर छक्कों की बरसात, अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर तकदीर के दरवाजे खुलने की पहली सीढ़ी थी।

माही का खेल से जबरदस्त लगाव था। हॉकी, टेबल टेनिस, बैडमिंटन और फुटबाल के गोलकीपर के तौर पर उन्होंने अपने प्रदर्शन की छाप छोड़ी। इसके बाद वे क्रिकेट के उस शिखर पर पहुंच गए, जब उनसे सवाल किया गया कि अगर वे क्रिकेटर नहीं होते, तो वे क्या होते? और उनका जवाब था कि शायद वे नामचीन फुटबॉलर होते और कोलकाता के किसी चोटी के क्लब का हिस्सा होते।

माही जब सातवीं में थे तब जो हुआ उसे फुटबॉल का नुकसान और क्रिकेट का फायदा ही कहेंगे। नियमित विकेटकीपर के अनुपस्थित रहने पर खेल प्रशिक्षक केशब रंजन बनर्जी ने माही को विकेटकीपिंग की सलाह दी।

इसके पीछे तर्क यह था कि फुटबॉल के गोलकीपर के लिए विकेटकीपिंग कोई मुश्किल काम नहीं।

धोनी ने अपनी दमदार बल्लेबाजी से सभी को हैरान कर दिया। विकेट के पीछे भी उनका प्रदर्शन असरदार था। विकेटकीपिंग में खुद को मांजने के लिए हालांकि उन्हें एक साल अथक परिश्रम करना पड़ा। इस दौरान उन्होंने एक भी प्रतिस्पर्धी मैच नहीं खेला।

उन्होंने 1994 में पहली बार विकेटकीपिंग की जिम्मेदारी संभाली और पूरे एक दशक बाद टीम इंडिया के विकेटकीपर बने।

इसके तीन साल बाद वे स्कूल के हीरो बन गए जब उन्होंने 150 गेंदों में 26 चौकों और छह छक्कों की मदद से 213 रन बनाए। अपने सलामी जोड़ीदार शब्बीर हुसैन के साथ उन्होंने पूरे दिन बल्लेबाजी करते हुए 378 रन जोड़े और इंटर-स्कूल ट्रॉफी जीती।

बरसों बाद अपनी आक्रामक शैली के बारे में धोनी ने कहा, “मैं शुरू ही से गेंद को पीटने में यकीन करता था। मुझे यह पसंद है। इसके अलावा मेरे जेहन में कुछ नहीं चलता। जब मैंने टेनिस गेंद से खेलना शुरू किया था तो किसी गेंद को छोड़ने का चलन नहीं हुआ करता था। हर गेंद पर रन लिया जाता था।” (*स्पोर्ट्सस्टार*, 3 दिसंबर 2005)

रांची के क्रिकेट क्लबों ने धोनी की तरफ ध्यान दिया और धोनी 1995 से 1998 तक कमांडो क्रिकेट क्लब के लिए खेले।

प्रारंभिक दिनों में उनके मददगारों में खेलों के सामान की एक छोटी सी दुकान चलाने वाले परमजीत सिंह शामिल हैं, जिन्होंने लुधियाना के एक क्रिकेट उपकरण निर्माता को इस बात के लिए मनाया कि वे प्रतिभाशाली स्कूली छात्र को सामान मुहैया करा दें।

सिंह की *प्राइम स्पोर्ट* दुकान पर आज औसतन 80 बल्ले प्रतिमाह बिकते हैं। इसका श्रेय छोटे शहर से निकले इस महानायक को जाता है। एम.एस. धोनी की अद्भुत कहानी में यह कर्मयोग का एक और उदाहरण है।

धोनी ने 1998 में सेंट्रल कोलफील्ड्स लिमिटेड की टीम के लिए खेलना शुरू किया, जहां उन्हें 2200 रुपए मासिक भत्ता मिलने लगा। इसी पैसे से अठारह वर्ष के इस लड़के ने एक पुरानी मोटरबाइक खरीदी। आज उनके पास अत्याधुनिक मोटरबाइकों की पूरी कतार है।

रांची में उन दिनों क्लब क्रिकेट 15-16 ओवर का हुआ करता था, जिसमें सातवें नंबर पर बल्लेबाजी करने वाले के लिए कुछ कर दिखाने के अवसर कम ही होते थे। सीसीएल में धोनी बल्लेबाजी क्रम में ऊपर उतरने लगे और उनकी प्रतिभा को निखरने का मौका मिला।

देशभर के लाखों स्कूली बच्चों की तरह अध्ययन ही उनकी प्राथमिकता थी, हालांकि क्रिकेट लड़कपन के उन दिनों में भी उनके जीवन का अभिन्न हिस्सा रहा।

सुबह 7:30 बजे स्कूल जाने के बाद वे लंच के लिए 1:30 बजे लौटते। उसके बाद नेट पर चले जाते। शाम 6.30 से 9 बजे तक का समय पढ़ाई का था। इसके अलावा तड़के एक घंटा भी अध्ययन करना होता था।

उनका अधिकांश समय क्रिकेट के मैदान पर बीतता लेकिन उनके माता-पिता को फख्र था कि उनका छोटा बेटा होनहार छात्र है और हमेशा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होता है। उन्होंने दसवीं बोर्ड की परीक्षा में 66 प्रतिशत अंक पाए।

दमदार पारिवारिक जीवन और दूध-चावल खाने के शौक ने उन्हें भीतर से मजबूत बनाया। उन्हें चिकन भी पसंद था। इससे उन्हें अनवरत क्रिकेट खेलने का दमखम मिला।

माही बचपन से ही सचिन तेंदुलकर के दीवाने थे। वे ऑस्ट्रेलिया में 1992 विश्वकप के दौरान जल्दी उठ जाया करते थे, ताकि तेंदुलकर को बल्लेबाजी करते देख सके। सचिन के आउट होने के बाद वे फिर सो जाते। शारजाह में तेंदुलकर की यादगार तूफानी पारियों को वे आज तक नहीं भुला सके हैं।

ऐसा कोई बिरला ही होता है, जिसका अपने आदर्श रहे किसी खिलाड़ी के साथ ड्रेसिंग रूम में रहने और खेलने का सपना सच हो जाए। धोनी तो सचिन के कप्तान भी बन गए।

धोनी के पिता कड़े अनुशासनप्रिय थे और माही स्वीकार करते हैं कि वे अपने पिता से काफी डरते थे। मां उनके लिए दोस्त की तरह थीं, जो हमेशा उन्हें बचातीं और उनकी कामयाबी के लिए दुआ करतीं। पिता से अधिक मां ने उन्हें क्रिकेट खेलने के लिए प्रेरित किया। (उनके पिता और भाई अपनी किशोरावस्था में अच्छे फुटबॉलर थे)

माही ने 1999 में बारहवीं का इम्तेहान पास किया। बोर्ड के पर्चे देना और सीसीएल के मैचों के लिए समय निकालना काफी मुश्किल काम था।

बाद में उन्होंने बी. कॉम (ऑनर्स) पहले साल के लिए रांची यूनीवर्सिटी के गोसनेर कॉलेज में दाखिला लिया। वे कॉलेज क्रिकेट टीम के कप्तान भी बने, लेकिन कभी भी इम्तेहान में बैठने का उन्हें समय नहीं मिल सका।

उस समय तक उनका प्रथम श्रेणी कैरियर शुरू हो चुका था। लिहाजा तालीम हाशिये पर चली गई।

अध्याय दो

प्रथम श्रेणी क्रिकेट

माही ने पहली नौकरी 2001 में दक्षिण पूर्वी रेलवे के खड़कपुर डिविजन में टिकट-कलेक्टर के रूप में की। यह ग्रेड नौ श्रेणी की नौकरी थी। एक ऐसी नौकरी जो भारत में निम्न मध्यमवर्गीय परिवार के लिए किसी वरदान से कम नहीं थी क्योंकि इसमें सुरक्षित आय की गारंटी थी।

पहली बार धोनी को अपने पसंदीदा शहर रांची से बाहर जाना पड़ा। अब वे खड़कपुर रहने लगे, जो कोलकाता से दो घंटे की दूरी पर है और जहां दुनिया का सबसे लंबा प्लेटफॉर्म है।

उन दिनों खड़कपुर में टेनिस बॉल क्रिकेट टूर्नामेंट काफी लोकप्रिय थे और धोनी इनमें जबरदस्त मशहूर हो गए थे। मैदान पर करीब 20,000 दर्शक उनकी बल्लेबाजी देखने के लिए जुटते थे।

आजकल धोनी जितने भी शॉट खेलते हैं, उनमें से अधिकांश उन दिनों टेनिस बॉल से 18 गज की पिच पर खेले गए क्रिकेट की देन है, जहां खेल में यॉर्कर डालना आम बात थी। धोनी के मशहूर शॉट हैं—यार्कर गेंद को मैदान से बाहर मारना या फिर मिडविकेट सीमा से ऊपर उछाल देना।

इसके लिए कंधों और बाजुओं में अपार बल होना जरूरी है और वे ऐसे शॉट आसानी से खेल जाते हैं जिन्हें खेलते समय दूसरे बल्लेबाज चोटिल हो जाते हैं। इसका श्रेय उन्हें विरासत में मिले दमखम को जाता है।

इसी दौरान उन्हें रेलवे की रणजी टीम के चयन ट्रायल के लिए रेलवे के घरेलू मैदान दिल्ली के करनैल सिंह स्टेडियम बुलाया गया। उसी समय कुछ क्षण के लिए उन्होंने बिहार को छोड़ने का मन बनाया लेकिन ट्रायल में उनका अनुभव बेहद खराब रहा।

उन्होंने सिर्फ तीन गेंद की विकेटकीपिंग की और थोड़ी बल्लेबाजी के बाद उन्हें खारिज कर दिया गया। माही का दावा है कि उन्हें उस समय बुरा नहीं लगा था। लेकिन 2004 की

शुरुआत में जब दिलीप ट्रॉफी के लिए उनका चयन हुआ तो रेलवे को दोबारा उनकी याद आई। लेकिन इस बार मना करने की बारी उनकी थी।

धोनी उन दिनों को याद करते हुए कहते हैं, “मैंने कहा, मैं नहीं आ रहा हूं। मैं शायद तल्ख था लेकिन इसका मुझ पर बहुत असर पड़ा। उस घटना ने मुझे अच्छे प्रदर्शन के लिए प्रेरित किया। उस ट्रायल में मेरी बुरी तरह उपेक्षा की गई थी जिससे मुझे लगातार अच्छा प्रदर्शन करने की प्रेरणा मिली ताकि हर कोई मेरी काबिलियत को पहचाने।” (*क्रिकइन्फो,* 24 मार्च 2008)

इससे उन्हें एक और सीख मिली, जो टीम इंडिया का कप्तान बनने पर उनके काम आई और वह यह कि किसी भी अच्छे खिलाड़ी को संक्षिप्त खराब दौर के कारण कभी टीम से निकाल बाहर नहीं किया जाना चाहिए।

अगर देखा जाए तो रेलवे के चयनकर्ताओं ने अनजाने में ही सही लेकिन भारतीय क्रिकेट का बहुत बड़ा फायदा कर दिया।

खड़कपुर में अपने परिवार से दूर माही के लिए जीवन आसान नहीं था। एक छोटे से फ्लैट में कई सहकर्मियों के साथ उन्हें गुजारा करना पड़ता था। बाद में 2004 में उन्होंने रेलवे की नौकरी छोड़ दी और मई 2005 में इंडियन एयरलाइंस में प्रबंधक हो गए।

एक दिवसीय क्रिकेट में पदार्पण के बाद उन्होंने झारखंड के मुख्यमंत्री अर्जुन मुंडा से मिली पुलिस उप अधीक्षक बनने की पेशकश ठुकरा दी। जमशेदपुर में टाटा स्टील ने भी उन्हें नौकरी की पेशकश की थी जो उन्होंने अस्वीकार कर दी।

भारतीय टीम में जगह बनाने से पहले उन्होंने घरेलू क्रिकेट में पांच सत्र खेले। इन तमाम सालों में उन्होंने बिहार (कालांतर में झारखंड) के प्रति अपना लगाव बदस्तूर बनाए रखा। भले ही अब यह अजीब लगे लेकिन यही सच है।

धोनी का दावा है कि रणजी खेलकर वे खुश थे और उन्हें चयन में नाकाम रहने पर कभी मायूसी नहीं हुई। विपरीत परिस्थितियों में उनकी सकारात्मक सोच का आधार यह था कि अच्छे प्रदर्शन और मेहनत से बड़ी उपलब्धियां हासिल होंगी।

“मेरा भरोसा अच्छे प्रदर्शन पर था मैंने यह देखने के लिए कभी अखबार नहीं उठाया कि मेरा दिलीप या देवधर ट्रॉफी के लिए पूर्वी क्षेत्र की टीम में चयन हुआ है या नहीं। मेरे लिए क्रिकेट खेलना और उसका पूरा लुत्फ उठाना अहम था। मैं जानता था कि यदि मुझमें योग्यता है तो मुझे मौका मिलेगा और इसके लिए मुझे लगातार अच्छा खेलना होगा। मेरे जेहन में एक बात साफ थी कि यदि मुझे दिलीप या देवधर ट्रॉफी खेलने का मौका नहीं मिलेगा तो कोई फर्क नहीं पड़ेगा। मैं अपने राज्य के लिए खेलकर खुश था और यदि मैं अपने राज्य के लिए लगातार अच्छा खेल सकूं तो मेरे लिए यह काफी है क्योंकि मुझे सबसे ज्यादा क्रिकेट खेलने से प्यार है।” (*क्रिकइन्फो,* 28 मार्च 2008)

धोनी क्रिकेट के पारंपरिक गढ़ों से बाहर छोटे शहरों से निकलने वाले खिलाड़ियों की पहली जमात में से थे।

मोहम्मद कैफ, युवराज सिंह और पार्थिव पटेल ने धोनी से पहले यह परिपाटी कायम की और अब यह आम चलन हो गया है। इरफान पठान, आर.पी. सिंह, जोगिंदर शर्मा और

प्रवीण कुमार ने साधारण परिवारों से निकलकर टीम इंडिया तक का सफर तय किया है।

पारंपरिक गढ़ों से आए खिलाड़ियों का प्रभुत्व खत्म होता जा रहा था, भले ही पूरी तरह नहीं, लेकिन छोटे शहर से आए लड़कों और सफल होने की उनकी लगन के आगे वह फीका जरूर पड़ने लगा था।

झारखंड नवंबर 2000 में बिहार से अलग राज्य बना और रांची इसकी राजधानी। लेकिन रणजी ट्रॉफी में झारखंड की टीम पहली बार 2004-05 के सत्र में उतरी। इसमें अधिकांश खिलाड़ी बिहार के ही थे।

धोनी कभी अपनी प्रांतीय टीम के कप्तान नहीं बने। उन्हें 2004-05 के सत्र में कप्तानी की पेशकश मिली थी लेकिन उन्होंने अपनी बल्लेबाजी और विकेटकीपिंग पर ही ध्यान केंद्रित करना मुनासिब समझा।

स्कूल और कॉलेज में वे कप्तान रहे लेकिन बहुत कम समय के लिए। अधिक उल्लेखनीय यह है कि नेशनल टीम के नेतृत्व में वह इतने सहज है मानो पानी में बत्तख।

उन्होंने 1998-99 सत्र में बिहार के लिए कूच बेहार अंडर 19 टूर्नामेंट खेला। भले ही उसमें वे चमक नहीं सके लेकिन आठ पारियों में 185 रन और विकेटकीपिंग के सहारे अगले सत्र के लिए चुन लिए गए।

बिहार 1999-2000 में फाइनल तक पहुंचा और धोनी ने सी.के. नायडू अंडर 19 क्षेत्रीय एक दिवसीय टूर्नामेंट में भी पूर्वी क्षेत्र की ओर से इसी सत्र में खेला।

बल्ले से बेहतरीन प्रदर्शन के दम पर धोनी कूच बेहार टूर्नामेंट में अगले सत्र के लिए भी चुन लिए गए। उन्होंने तीन अर्धशतक जमाए और तीन पारियों में 40 से अधिक रन जोड़े जिसकी बदौलत बिहार फाइनल तक पहुंचा। लेकिन जमशेदपुर के कीनन स्टेडियम पर सितंबर 1999 को खेले गए चार दिवसीय फाइनल में बिहार की टीम को पंजाब ने बुरी तरह हराया।

टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुए बिहार ने 357 रन बनाए। धोनी सर्वाधिक रन बनाने वाले दूसरे बल्लेबाज थे जिन्होंने 12 चौकों और दो छक्कों की मदद से 84 रन जोड़े।

पंजाब के बल्लेबाजों ने ढाई दिन की बल्लेबाजी में 222 ओवर में पांच विकेट पर 839 रन जोड़े।

यह धोनी के दमखम की पहली अग्निपरीक्षा थी। पंजाब के कप्तान युवराज सिंह से भी यह उनका पहला सामना था जिसने 358 रन बनाए। युवराज ने दूसरे विकेट के लिए रवनीत सिंह रिकी के साथ 207 रन और तीसरे विकेट के लिए विवेक महाजन के साथ 341 रन जोड़े।

बिहार के लड़कों के सामने कोई विकल्प नहीं था। लेकिन इस हार से भी उन्होंने सबक लिया।

चारों मैच हारने वाले पूर्वी क्षेत्र और चार पारियों में 97 रन बनाने वाले उसके विकेटकीपर धोनी के लिए सी.के. नायडू टूर्नामेंट फ्लॉप रहा। हालांकि इसके तुरंत बाद धोनी ने प्रथम श्रेणी क्रिकेट में पदार्पण किया।

असम के खिलाफ 12 जनवरी 2000 को कीनन स्टेडियम पर रणजी मैच में धोनी को विकेटकीपर बल्लेबाज के रूप में पदार्पण का मौका मिला। बिहार के कप्तान सुनील कुमार उस सत्र में विकेटकीपर और टीम के प्रमुख बल्लेबाज भी थे। यह महसूस किया गया कि तिहरी जिम्मेदारी का असर उनके खेल पर पड़ेगा। लिहाजा धोनी को टीम में जगह मिली।

रणजी ट्रॉफी वनडे टूर्नामेंट में जब दोनों टीमों की टक्कर हुई तो बिहार ने आठ विकेट से जीत दर्ज की। धोनी ने एक कैच लपका लेकिन उनकी बल्लेबाजी की नौबत ही नहीं आई।

प्रथम श्रेणी क्रिकेट में धोनी का पहला मैच यादगार रहा। उन्होंने असम के सलामी बल्लेबाज पराग कुमार दास को दूसरी पारी में अविनाश कुमार की गेंद पर स्टम्प आउट किया। सातवें नंबर पर बल्लेबाजी करते हुए उन्होंने 62 गेंद में 40 रन बनाए। बिहार ने पहली पारी में 258 रन जोड़े जिसके जवाब में असम ने 247 रन बनाए। दूसरी पारी में तेजी से रन बनाने की जरूरत थी। ऐसे में धोनी आठ चौकों की मदद से 89 गेंद में 68 रन बनाकर नाबाद रहे। असम को जीत के लिए 355 रन का लक्ष्य मिला लेकिन उसकी पूरी टीम आखरी दिन 163 रन पर सिमट गई। बिहार ने 191 रन से मैच जीता।

अपना आखरी मैच खेलने वाले बाएं हाथ के अनुभवी स्पिनर अविनाश कुमार ने मैच के बाद धोनी से कहा, “तुम्हारे भीतर भारत के लिए खेलने का माद्दा है।” यह टिप्पणी माही को छू गई और उसके बाद से उनके लिए मूलमंत्र बन गई।

अस्सी के दशक में दो वनडे मैच खेलने वाले मध्यम तेज गेंदबाज रणधीर सिंह राज्य के चयनकर्ताओं में से एक थे जिन्होंने धोनी के फन को पहचाना और उस समय वे बिहार की रणजी टीम के कोच थे।

अपने संघर्ष के दिनों को याद करते हुए हाल ही में दिए गए एक इंटरव्यू में धोनी ने खुद गुमनामी से अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कामयाबी के अपने सफर पर हैरानी जताई।

“उस समय रणजी टीम में जगह पाना भी बड़ी बात थी। (*क्रिकइन्फो,* 28 मार्च 2008) तकदीर से हमारे पास रणधीर सिंह जैसे चयनकर्ता थे जिन्हें युवाओं पर भरोसा था। बिहार ने कूच बेहार अंडर 19 टूर्नामेंट के लिए उसी साल क्वालीफाई किया और फाइनल तक पहुंचा। यह बड़ा बदलाव था और अचानक बिहार के पांच लड़कों को राज्य की रणजी टीम में मौका मिल गया। वह आगाज था। बिहार एक छोटा राज्य था लिहाजा पूर्वी क्षेत्र की टीम में और खासकर अंतिम एकादश में जगह पाना कठिन था। इसके लिए लगातार अच्छा प्रदर्शन करना जरूरी था।”

उड़ीसा के बाद पूर्वी क्षेत्र से रणजी ट्रॉफी सुपर लीग में पहुंचने वाली बिहार पूर्वी क्षेत्र की दूसरी टीम बनी। धोनी को देश की प्रमुख टीमों के साथ खेलने का अनुभव तभी मिला।

सुपर लीग में बिहार का प्रदर्शन निराशाजनक रहा और वह चार में से एक भी मैच नहीं जीत सका। धोनी ने आठ पारियों में सिर्फ 175 रन बनाए।

भारतीय प्रथम श्रेणी क्रिकेट की कठिन कसौटी से यह धोनी का पहला साक्षात्कार था लेकिन अनुभव के तौर पर अगले कुछ सत्रों में यह उनके काफी काम आया।

उन्होंने इस सत्र की दस पारियों में 31.44 की औसत से 283 रन बनाए जिसमें से एक बार वह नाबाद रहे। इसके अलावा उनके खाते में 12 कैच और तीन स्टम्पिंग भी रहे। यह

बेहतरीन प्रदर्शन तो नहीं कहा जा सकता लेकिन उनकी प्रतिभा को अनदेखा भी नहीं किया जा सका।

सीखने में तत्पर धोनी ने पहले सत्र की अपनी गलतियों को सुधारा और 2000-01 सत्र तक वह स्टम्प के आगे और पीछे काफी निखरे हुए दिखे।

उस सत्र में त्रिपुरा के खिलाफ रणजी एक दिवसीय मैच में उन्होंने सीनियर क्रिकेट में तब का सर्वोच्च स्कोर 84 रन बनाया। इसके लिए उन्होंने 73 गेंदों का सामना किया और दस चौके तथा चार छक्के जड़े। उसी बल्लेबाजी ने धोनी के लिए पहली बार बड़े स्तर पर शोहरत का दरवाजा खोला।

यह मैच कलकत्ता क्रिकेट और फुटबॉल क्लब मैदान पर खेला गया था और सीमा रेखा छोटी होने के कारण उनके बल्ले ने जमकर आतिश उगला।

उस टूर्नामेंट में उनसे पारी की शुरुआत कराई गई और पूर्वी क्षेत्र के चार लीग मैचों में उन्होंने 4 , 84 , 43 और 1 रन बनाए।

इसी सत्र में पहली बार देवधर ट्रॉफी वनडे टूर्नामेंट में वह पूर्वी क्षेत्र की ओर से खेले। उन्हें कानपुर में दक्षिणी क्षेत्र के खिलाफ एक मैच खेलने का मौका मिला।

उसके बाद राष्ट्रीय स्तर पर बड़ी सफलता मिली और वह भी कोलकाता के ईडन गार्डन पर।

जनवरी 2001 में बिहार का सामना सत्र के फाइनल लीग मैच में बंगाल से था। चार दिवसीय रणजी मैचों में धोनी लगातार खराब फॉर्म में चल रहे थे और अंतिम एकादश से उनके बाहर होने के आसान नजर आने लगे थे।

पहले बल्लेबाजी करते हुए बंगाल ने पांच विकेट पर 608 रन बनाकर पारी घोषित की। निखिल हल्दीपुर, आलोकेंदु लाहिड़ी और रोहन गावस्कर ने शतक जमाए थे।

बिहार का लक्ष्य फॉलोआन टालना था। बिहार ऐसा नहीं कर सका लेकिन उस मैच ने धोनी के रूप में एक नए सितारे को आलोकित कर दिया। उन्होंने पांच जनवरी को प्रथम श्रेणी क्रिकेट में पहला शतक बनाया। वे 114 रन बनाकर नाबाद रहे और बिहार ने पहली पारी में 323 रन जोड़े। फॉलोआन खेलते हुए बिहार ने तीन विकेट पर 302 रन बनाए और मैच ड्रॉ रहा।

धोनी ने चार घंटे और 206 गेंदों की जुझारू पारी में 17 चौके और एक छक्का लगाया। उन्नीस बरस के इस लड़के ने जिस तरह पुछल्ले बल्लेबाजों को बचाया, दर्शक उससे प्रभावित हुए बिना नहीं रह सके।

उस शतक के तीन चरण थे। धोनी जब क्रीज पर उतरे तो स्कोर पांच विकेट पर 228 रन था। उन्होंने चौकों के साथ खेलना शुरू किया लेकिन दूसरे छोर से विकेट गिरते देख पारी के सूत्रधार की भूमिका संभाल ली।

जब उन्हें लगा की दूसरे छोर पर उनका साथ निभाने को कोई नहीं रहेगा और वह पहले शतक से चूक जाएंगे तो उन्होंने फिर आक्रामक बल्लेबाजी की। 11 वें नंबर के बल्लेबाज धीरज कुमार के रूप में उन्हें अच्छा जोड़ीदार मिल गया जिसने आखरी विकेट की 55 रन की साझेदारी में सिर्फ 9 रन बनाए।

धोनी ने बाएं हाथ के स्पिनर शिव सागर सिंह की गेंद पर लांग ऑफ पर छक्का जड़कर अपना पहला शतक पूरा किया।

मैच का यह दिन हालांकि एक और युवा हरफनमौला लक्ष्मी रतन शुक्ला की बदमिजाजी के लिए चर्चा में रहा। उस समय शुक्ला के पास तीन एक दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय मैच खेलने का अनुभव था।

दूसरी नई गेंद के साथ पहले ओवर में शुक्ला ने 16 रन दे दिए जिसमें धोनी के तीन चौके शामिल थे। इस गेंदबाज ने बाद में बीमर फेंका और छींटाकशी भी की। धोनी ने अंपायरों से शिकायत की लेकिन हालात और बिगड़ गए। बाद में शुक्ला को उसके कप्तान ने मैदान से बाहर कर दिया और अगले दिन भी वह नहीं उतरा।

कोई भी अड़चन धोनी का रास्ता नहीं रोक सकी। इस मैच में जहां एक युवा खिलाड़ी लोगों की नजरों से उतरा तो दूसरा अपनी छाप छोड़ गया।

इस ड्रॉ मैच के साथ ही बिहार के लिए एक खराब सत्र का अंत हो गया। इसमें वह पूर्वी क्षेत्र लीग में चौथे स्थान पर रहा और अगले चरण के लिए क्वालीफाई नहीं कर सका। धोनी ने चार मैचों की छह पारियों में 195 रन बनाए, जिसमें सर्वोच्च स्कोर नाबाद 114 रन था। उन्होंने विकेट के पीछे छह कैच लपके और एक स्टम्पिंग की।

बिहार को अब कोई मैच नहीं खेलना था जिससे धोनी की लय टूटी और अगले सत्र में उनके खराब फॉर्म की यह भी एक वजह रही। 2001-02 सत्र धोनी और उसकी टीम के लिए बहुत बुरा रहा।

पिछले सत्र में ईडन गार्डन पर शतक जमा चुके धोनी से वैसे ही प्रदर्शन की उम्मीद थी। लेकिन इस पूरे सत्र में रणजी ट्रॉफी के चार दिवसीय चार मैचों और चार वनडे मैचों में वह सिर्फ एक अर्धशतक बना सके। बिहार दोनों टूर्नामेंटों में अपने क्षेत्र में चौथे स्थान पर रहा।

यह कठिन दौर था। छठे नंबर पर उतरने वाले धोनी को अक्सर फॉलोअप बचाने की जिम्मेदारी संभालनी पड़ती। अपने स्ट्रोक्स खेलने वाले बल्लेबाज के लिए यह मुश्किल काम था। प्रथम श्रेणी क्रिकेट के पहले तीन सत्रों से उन्हें निराशा ही मिली। धोनी को अब सलाह मिलने लगी कि उन्हें बल्लेबाजी में आक्रामकता कम करनी चाहिए और किसी बड़ी रणजी टीम से जुड़ना चाहिए। लेकिन उन्होंने अपनी शैली नहीं बदली जिसकी बदौलत वे इस मुकाम तक पहुंच थे। टीम से बेवफाई करने से भी उन्होंने इंकार कर दिया।

यह फैसला समझदारी का था जिसका अगले सत्र में काफी फायदा मिला। उन्होंने आठ अर्धशतक जमाकर दबाव को हटाया।

रणजी ट्रॉफी में पहली बार 2002-03 सत्र में प्लेट और एलीट समूह की व्यवस्था लागू की गई। बिहार प्लेट वर्ग में बी समूह में चारों मैच हारकर आखरी स्थान पर रहा। रणजी टूर्नामेंट में कुछ बेहतर प्रदर्शन करते हुए उन्होंने दो मैच जीते, एक टाई रहा और एक हारे। धोनी ने 10 , 74 , 88 और 74 रन बनाए। बिहार पूर्वी क्षेत्र की रैंकिंग में बंगाल के बाद दूसरे स्थान पर रहा।

पिछले सत्र में देवधर ट्रॉफी से बाहर रहने के बाद धोनी की वापसी हुई और उन्होंने तीन मैचों में दो अर्धशतक बनाए।

कुल मिलाकर यह उसके लिए सर्वश्रेष्ठ सत्र रहा। चार दिवसीय और एक दिवसीय मैचों में लगातार पारी का आरंभ करते हुए उन्होंने 15 पारियों में 48.71 की औसत से 682 रन बनाए।

पिछले सत्र के खराब फॉर्म से सिर्फ एक ही तरीके से उबरना धोनी को आता था और वह था आक्रामक खेल।

धोनी की यह लय कायम रही और 2003-04 के अंत तक राष्ट्रीय चयनकर्ताओं का ध्यान उन पर गया। अचानक सब कुछ ठीक होने लगा।

उन्होंने जिस पारी से राष्ट्रीय स्तर पर छाप छोड़ी वह मध्य क्षेत्र के खिलाफ देवधर ट्रॉफी मैच में 27 जनवरी 2004 को खेली थी। जमशेदपुर में खेला गया यह मैच फाइनल की ही तरह था।

पूर्वी क्षेत्र को राउंड रॉबिन टूर्नामेंट में खिताब बरकरार रखने के लिए एक जीत की दरकार थी, जो उन्होंने विरोधी टीम को 142 रन से हराकर हासिल की। 1996-97 के बाद पहली बार पूर्वी क्षेत्र ने देवधर ट्रॉफी जीती और धोनी के रूप में एक सितारे का अभ्युदय उसी के मैदान पर हुआ।

निखिल हल्दीपुर के साथ पारी आरंभ करते हुए धोनी ने 124 गेंद में 12 चौकों और तीन छक्कों की मदद से 114 रन बनाए। पूर्वी क्षेत्र की टीम ने 50 ओवर में चार विकेट पर 324 रन बनाए। इसके बाद मुकाबला एकतरफा रह गया। इस सत्र में ये उनका दूसरा शतक था। इसके बाद असम के खिलाफ रणजी वनडे मैच में उन्होंने 128 रन जोड़े।

बोर्ड ने देवधर ट्रॉफी के लिए बंगाल के दो पूर्व क्रिकेटरों राजू मुखर्जी और प्रकाश पोद्दार को प्रतिभा तलाश विकास अधिकारी नियुक्त किया था। उन्होंने राष्ट्रीय क्रिकेट अकादमी के प्रतिभा तलाश विकास प्रकोष्ठ के अध्यक्ष दिलीप वेंगसरकर को धोनी के बारे में जानकारी दी।

मुखर्जी ने मुझे बताया कि अपनी रिपोर्ट में उन्होंने धोनी का नाम 'मैच जीतने वाले आक्रामक बल्लेबाज' के रूप में लिखा था। "मैंने यह भी जिक्र किया कि उसकी विकेटकीपिंग से मैं प्रभावित नहीं हूं। दिलीप ने धोनी की अपरिपक्व प्रतिभा को तराशने की पहल की। धोनी की सफलता का कोई श्रेय मुझे नहीं जाता है।"

देवधर ट्रॉफी में उनकी जगह बंगाल के दीपदास गुप्ता को विकेटकीपिंग का जिम्मा सौंपा गया था, जो उस समय तक टैस्ट क्रिकेट खेल चुका था। धोनी को वनडे मैचों में विशेषज्ञ सलामी बल्लेबाज के रूप में टीम में शामिल किया गया था।

एक महीने बाद वह दिलीप ट्रॉफी के लिए पूर्वी क्षेत्र की टीम में चुन लिए गए। भारत के दौरे पर आई इंग्लैंड 'ए' टीम के खिलाफ उन्होंने इस एलीट क्षेत्रीय टूर्नामेंट में पदार्पण किया। इस टूर्नामेंट में खेलने के लिए आमंत्रित यह पहली विदेशी टीम थी।

पूर्वी क्षेत्र ने अपना दूसरा मैच अमृतसर में खेला और फाइनल में पहुंचने के लिए उन्हें हर हालत में जीतना था। धोनी दक्षिण क्षेत्र के खिलाफ पहला मैच नहीं खेल सके, लेकिन इस बार उन्होंने लोगों के सामने एक बार फिर आतिशी बल्लेबाजी का एक और नजारा पेश किया।

इंग्लैंड की टीम में चार मौजूदा या भावी अंतर्राष्ट्रीय खिलाड़ी शामिल थे, जिनमें केविन पीटर्सन और नई गेंद संभालने वाले गेंदबाज साजिद महमूद भी थे। दोनों पहली बार भारत दौरे पर आए थे।

मैंने पहली बार उन खिलाड़ियों को देखा था, जिनके नाम मीडिया में काफी चर्चित थे।

मैंने धोनी को अपना परिचय दिया और हमने पारी के बीच कुछ मिनट बातचीत की। मैंने जब उन्हें बताया कि मैंने 1973 में एक साल रांची में बिताया है, तो उनका चेहरा खुशी से चमकने लगा। हमने रांची के बारे में और अपने-अपने स्कूलों के बारे में भी बात की। यह मुलाकात संक्षिप्त थी, लेकिन मुझे लगा कि धोनी काफी दोस्ताना, विनम्र और मृदु बोलने वाले हैं।

धोनी पहली बार किसी अंतर्राष्ट्रीय टीम के खिलाफ खेल रहे थे लेकिन इससे वह तनिक भी भयभीत नहीं थे। उन्होंने पहली पारी में 12 चौके जड़ते हुए 52 रन बनाए।

यह मनोहारी पारी थी और सलामी बल्लेबाज शिवसुंदर दास के साथ उन्होंने पहले विकेट के लिए 93 रन जोड़े। दूसरी पारी में उन्होंने 24 रन बनाए जिसमें चार चौके भी थे। पूवी क्षेत्र की टीम 93 रन से जीतकर फाइनल में पहुंच गई। मोहाली में उसका खिताबी मुकाबला उत्तरी क्षेत्र से होना था।

फाइनल में दास गुप्ता को टीम में जगह नहीं मिली और धोनी ने बल्लेबाजी का आगाज करने के साथ विकेटकीपिंग भी की। चौथी पारी में जीत के लिए 409 रन के मुश्किल लक्ष्य का पीछा कर रही अपनी टीम के लिए धोनी ने 47 गेंद में 60 रन बनाए। इसमें आठ चौके और एक छक्का शामिल था। उसकी टीम हालांकि 59 रन से हार गई। धोनी ने विकेट के पीछे पांच कैच लपके। कुल मिलाकर यह सत्र उनके लिए लाजवाब रहा।

अब टीम इंडिया में उनके चयन में कुछ ही देर थी।

अध्याय तीन

भारतीय टीम में पदार्पण

वर्ष 2000 से 2005 के बीच टीम इंडिया के लिए विकेटकीपर का चयन म्यूजिकल चेयर के खेल की तरह हो गया था।

धोनी ने जब दिसंबर 2004 में एक दिवसीय क्रिकेट में पदार्पण किया तो वह पांच साल में टैस्ट या वनडे खेलने वाले 12 वें विकेटकीपर थे। इसकी शुरुआत 1999-00 के ऑस्ट्रेलिया दौरे से हुई जब एम.एस.के. प्रसाद ने टैस्ट और समीर दिघे ने त्रिकोणीय एक दिवसीय श्रृंखला में विकेटकीपिंग की।

इंग्लैंड में 1999 विश्वकप के दौरान नयन मोंगिया के घायल होने के बाद राहुल द्रविड़ को मजबूरन दस्ताने पहनने पड़े। वह 2003 विश्वकप और 2004 में भी कुछ समय तक जिम्मेदारी संभालते रहे।

इससे पहले 2000 में सबा करीब ने कुछ समय के लिए विकेटकीपिंग की लेकिन ढाका में उनकी आंख में चोट लग गई थी। इस बीच 2001 में कुछ समय के लिए नयन मोंगिया और उसी साल दीप दासगुप्ता को भी मौका दिया गया।

विजय दहिया ने टैस्ट और वनडे में कुछ समय के लिए यह जिम्मा संभाला। अजय रात्रा ने 2002 के वेस्टइंडीज दौरे पर अच्छा प्रदर्शन किया। लेकिन इसी साल उन्हें इंग्लैंड दौरे पर चोट लग गई और युवा पार्थिव पटेल को मौका दिया गया।

पटेल ऑस्ट्रेलिया के 2003-04 दौरे पर लचर प्रदर्शन किए जाने तक टीम में बने रहे। इसी साल ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ घरेलू श्रृंखला में भी वह अपेक्षाओं पर खरे नहीं उतर सके, जिससे दिनेश कार्तिक को मौका मिला।

दासगुप्ता भी पटेल की ही तरह विकेटकीपर कम और बल्लेबाज ज्यादा थे। उस समय लग रहा था कि घरेलू क्रिकेट में एक विकेटकीपर अपनी बल्लेबाजी के जरिए ही राष्ट्रीय चयनकर्ताओं का चयन खींच सकता है।

सितंबर 2004 में इंग्लैंड दौरा करने वाली वनडे टीम में कार्तिक का चयन होने से धोनी को एक ब्रेक मिला जो उनके लिए भाग्यशाली रहा। तमिलनाडु के विकेटकीपर बल्लेबाज कार्तिक जिम्बाब्वे और केन्या के भारत ‘ए’ टीम के दौरे के लिए पहली पसंद थे, जबकि धोनी रिजर्व विकेटकीपर थे।

जिम्बाब्वे दौरे पर पहले चार मैच खेलने के बाद कार्तिक को इंग्लैंड दौरे के लिए सीनियर टीम में चुन लिया गया, लिहाजा धोनी को खेलने का मौका मिल गया।

जिम्बाब्वे चयन एकादश के खिलाफ हरारे में दोनों ने दूसरा मैच खेला था। यह चार दिवसीय मैच 29 जुलाई 2004 को शुरू हुआ, लेकिन तीन दिन के भीतर ही भारत ‘ए’ ने इसे दस विकेट से जीत लिया। जिम्बाब्वे की टीम बेहद कमजोर थी।

कार्तिक विशेषज्ञ बल्लेबाज के रूप में खेले जबकि धोनी ने विकेटकीपिंग का जिम्मा संभाला। पहली बार उन्होंने भारतीय टीम की पोशाक पहनी। हालांकि यह पूर्ण अंतर्राष्ट्रीय मैच नहीं था।

इस मैच में धोनी ने एक ही मैच में सर्वाधिक 11 बल्लेबाजों को पैवेलियन भेजने के भारतीय रिकॉर्ड की बराबरी की। इनमें सात कैच और चार स्टम्पिंग शामिल थे। उन्होंने 48 गेंद में 45 रन भी बनाए। विश्व रिकॉर्ड एक ही मैच में 13 खिलाड़ी आउट करने का है।

अगले मैच के लिए कार्तिक टीम में लौटे। इस वनडे में धोनी ने पारी का आरंभ किया और एक ही रन बना सके। चौथे और फाइनल मैच में कार्तिक ने विकेटकीपिंग की और धोनी को बेंच पर बैठना पड़ा।

लेकिन उस दौरे पर भारत ‘ए’ के लिए कार्तिक का वह आखरी मैच था क्योंकि उन्हें भारतीय टीम के साथ इंग्लैंड दौरे पर जाना था। धोनी ने केन्या के खिलाफ विकेटकीपिंग की।

उन दिनों अच्छी बल्लेबाजी करने वाले विकेटकीपर पर जोर था। वनडे क्रिकेट में दोहरी जिम्मेदारी निभाने को लेकर द्रविड़ के उदासीन रवैये का फायदा कार्तिक और धोनी को मिला।

भारत ए, केन्या और पाकिस्तान ए के बीच केन्या में खेला गया त्रिकोणीय एक दिवसीय टूर्नामेंट टीम इंडिया में धोनी के पहुंचने की आखरी सीढ़ी था।

साईराज बहुतुले की कप्तानी में भारत की शुरुआत अच्छी नहीं रही। पहले मैच में उसे केन्या ने 20 रन से हराया। सलामी बल्लेबाज के रूप में उतरे धोनी ने सिर्फ आठ रन बनाए।

अगले दिन हालांकि बेहतरीन वापसी करते हुए भारत ने पाकिस्तान को चार विकेट से हराया और धोनी ने सबसे ज्यादा 70 रन बनाए। उन्हें पहली बार मैन ऑफ द मैच पुरस्कार मिला।

तीन दिन में अपना तीसरा मैच खेल रहे भारत ने अगले मैच में केन्या को दस विकेट से मात दी। इस मैच में धोनी को बल्लेबाजी की जरूरत नहीं पड़ी, लेकिन विकेट के लिए उन्होंने चार कैच लपके और एक बल्लेबाज को स्टम्प आउट किया।

पाकिस्तान के खिलाफ 16 अगस्त 2004 को खेले गए मैच में भारत ने जीत दर्ज की और धोनी ने पहला अंतर्राष्ट्रीय शतक बनाया।

उन्होंने 122 गेंद में 120 रन (दस चौके और दो छक्के) बनाए। सलामी बल्लेबाज गौतम गंभीर ने भी सैकड़ा जड़ा। दोनों ने दूसरे विकेट के लिए 192 गेंद में 208 रन जोड़े, जिसकी मदद से भारत ने 50 ओवर में छह विकेट पर 330 रन का विशाल स्कोर बनाया। जवाब में पाकिस्तानी टीम 209 रन पर आउट हो गई।

प्रारंभिक लीग में हर टीम को एक-दूसरे से तीन बार खेलना था। भारत ने अगले दिन केन्या को छह विकेट से मात दी जिसमें धोनी ने 30 रन बनाए।

इससे फाइनल में भारत का प्रवेश सुनिश्चित हो गया। तीसरे और आखरी लीग मैच में पाकिस्तान पर मिली आठ विकेट से जीत ने उनका मनोबल और बढ़ा दिया।

धोनी ने एक बार और सैकड़ा बनाया और फिर मैन ऑफ द मैच बने। नैरोबी के जिमखाना क्लब ग्राउंड पर वह चर्चा का केंद्र बन गए और स्थानीय भारतीयों के बीच स्टार। इस बार 119 रन की उनकी नाबाद पारी में नौ चौके और पांच गगनभेद छक्के लगाए जिससे पाकिस्तानी कप्तान मिस्बाह-उल-हक़ के बनाए 106 रन भी दब गए।

तकदीर ने दोनों चिर प्रतिद्वंद्वियों को एक बार फिर तीन साल बाद जोहानिसबर्ग में ट्वेंटी-20 विश्वकप के फाइनल में आमने-सामने ला दिया।

इस बार भी बाजी भारत ने मारी और पाकिस्तान को छह विकेट से हराकर खिताब जीता। धोनी ने हालांकि इस मैच में सिर्फ 15 रन बनाए।

भारत के केन्या दौरे का अंत मेजबान के खिलाफ ड्रॉ रहे, तीन दिवसीय मैच से हुआ। धीरज जाधव ने नाबाद 260 रन बनाए। धोनी ने 78 रन की पारी खेली।

त्रिकोणीय एक दिवसीय श्रृंखला की खोज साबित हुए धोनी ने (72.40 की औसत से) 362 रन बनाए। अपनी ताबड़तोबड़ बल्लेबाजी से उन्होंने भारतीय क्रिकेटप्रेमियों के दिलों में जगह बनाईं जिन्हें विकेट के पीछे बेहतरीन प्रदर्शन करने वाला उम्दा बल्लेबाज मिल गया।

धोनी को पूरा यकीन था कि टीम इंडिया के लिए खेलने का उनका अपना सच होने को है। उसने *स्पोर्ट्सस्टार* को 29 अप्रैल 2006 में दिए एक इंटरव्यू में कहा “नैरोबी टूर्नामेंट मेरे लिए बड़ी सफलता रहा। मुझे ऐसे बल्लेबाज के रूप में पहचान मिली जो लप्पे लगाने के अलावा विकेटकीपिंग भी कर सकता है। मैंने केन्या और पाकिस्तान के खिलाफ अपना स्वाभाविक खेल दिखाया। इस टूर्नामेंट ने भारतीय टीम में जगह पाने की मेरी उम्मीदों को साकार करने में बड़ी भूमिका निभाई। उस टूर्नामेंट के बाद मुझे भरोसा हो गया कि मुझे मौका मिलेगा।”

इसी इंटरव्यू में उनसे पूछा गया था कि उस टूर्नामेंट से उन्होंने क्या सीखा?

“बहुत कुछ। यह विदेशी टीमों के खिलाफ खेलने का मेरा पहला मौका था। पाकिस्तानी टीम काफी मजबूत थी जिसके पास कुछ अंतर्राष्ट्रीय और कुछ संभावित खिलाड़ी थे। मेरे लिए यह अच्छा अनुभव था। इससे मेरा मनोबल और आत्मविश्वास बढ़ा। मैंने भारत के बाहर क्रिकेट के बारे में जाना। गेंद बहुत ज्यादा घूम रही थी और पिचों से स्विंग तथा उछाल मिल रही थी। उस पर अच्छे रन बनाने का दबाव था। मैं अब यह सोचकर

हैरान होता हूं कि यदि मैं नाकाम रहता तो क्या होता। यह बेहतरीन मौका था और मुझे खुशी है कि मैंने उसे भुनाया भी।”

उधर कार्तिक ने इंग्लैंड के खिलाफ नेटवेस्ट एक दिवसीय श्रृंखला के तीसरे और आखरी मैच में विकेटकीपर के तौर पर द्रविड़ की जगह ली। इंग्लैंड में 2004 में हुई चैंपियंस ट्रॉफी के पहले मैच में भी उसने यह जिम्मा संभाला लेकिन बाकी पूरे टूर्नामेंट में द्रविड़ ने ही विकेटकीपिंग की।

कार्तिक ने मुंबई में नवंबर 2004 में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ चौथे और आखरी टैस्ट के जरिए टैस्ट क्रिकेट में पर्दापण किया। पिछले एक साल से पटेल के लचर फॉर्म को अब और बर्दाश्त करना चयनकर्ताओं के लिए नामुमकिन हो गया था।

ऑस्ट्रेलिया टीम के बाद भारत दौरे पर आई दक्षिण अफ्रीका टीम के खिलाफ जयपुर में बोर्ड अध्यक्ष एकादश के मैच में चयनकर्ताओं की नजरें धोनी पर लगी थीं। उन्होंने अच्छी विकेटकीपिंग की और 39 रन भी बनाए।

अपने पहले टैस्ट और उसके बाद दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ दो टैस्ट और फिर बांग्लादेश में दो टैस्ट में कार्तिक ने विकेटकीपर की भूमिका निभाई। लेकिन दिसंबर 2004 में बांग्लादेश में एक दिवसीय श्रृंखला के लिए उसकी जगह धोनी को तरजीह दी गई। इसकी वजह कार्तिक का बल्ले से खराब फार्म भी रहा।

बांग्लादेश के खिलाफ दोनों टैस्ट चार दिन के भीतर पारी के अंतर से जीतने वाली भारतीय टीम के लिए वनडे श्रृंखला एक अप्रत्याशित चुनौती थी।

धोनी ने पहला एक दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय मैच चटगांव के एम ए अजीज स्टेडियम पर 23 दिसंबर 2004 को खेला।

भारतीय टीम में वनडे श्रृंखला के लिए कई बदलाव किए गए जिसके मायने थे कि वह विरोधी को संजीदगी से नहीं ले रही थी। मकसद रिजर्व खिलाड़ियों को आजमाने का था। बांग्लादेश के पिछले रिकॉर्ड को देखते हुए इसमें कोई हर्ज भी नहीं था।

भारत ने पहला मैच 11 रन से जीता। यह अंतर छोटा जरूर था लेकिन भारतीय टीम को कोई खतरा नहीं था।

मध्यम तेज गेंदबाज जोगिंदर शर्मा ने भी इसी श्रृंखला से पदार्पण किया, लेकिन धोनी की ही तरह वह भी ज्यादा प्रभाव नहीं छोड़ सके।

भारत ने आठ विकेट पर 245 रन बनाए, जिसमें मैन ऑफ द मैच मोहम्मद कैफ और राहुल द्रविड़ ने अर्धशतक बनाए। एक समय पर भारत का स्कोर तीन विकेट पर 45 रन था, लेकिन इन दोनों ने 128 रन की साझेदारी करके उसे संकट से निकाला।

धोनी एस. श्रीराम का विकेट गिरने पर मैदान पर उतरे जब स्कोर 42 वें ओवर में पांच विकेट पर 180 रन था। तेजी से रन लेने के प्रयास में वे सिर्फ एक गेंद का सामना करके खाता खोले बिना रनआउट हो गए।

कप्तान हबीबुल बशर और विकेटकीपर खालिद मसूद के अर्धशतकों के बावजूद बांग्लादेशी टीम कभी भी भारत के लिए चुनौती नहीं बन सकी। मेजबान टीम आठ विकेट पर 234 रन ही बना सकी।

अपने पहले वनडे मैच में एक भी कैच या स्टम्पिंग नहीं कर पाने का धोनी को जरूर मलाल रहा होगा, लेकिन उन्होंने इस मैच में एक भी रन बाय के रूप में जाने नहीं दिया।

ढाका में 26 दिसंबर को खेले गए दूसरे मैच के लिए भारत ने टीम में कई बदलाव करते हुए द्रविड़, हरभजन सिंह, इरफान पठान और सचिन तेंदुलकर को आराम दिया।

यह हालांकि बड़ी गलती साबित हुई। भारतीय टीम को अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट की सबसे अदना टीम के हाथों पहली पराजय का सामना करना पड़ा।

पहले बल्लेबाजी करते हुए मेजबान टीम ने नौ विकेट पर 229 रन बनाए जिसमें आफताब अहमद ने सर्वाधिक 67 रन की पारी खेली।

कैफ (49) ने एक बार फिर अच्छा प्रदर्शन किया और श्रीराम ने भी 57 रन जोड़े। लेकिन पहले तीन विकेट जल्दी गिरने के सदमे से टीम इंडिया उबर ही नहीं सकी।

धोनी ने अजित अगरकर की गेंद पर सलामी बल्लेबाज नफीस इकबाल के रूप में अपना वनडे कैच लपका।

बाद में बल्लेबाजी करते हुए उन्होंने दो चौके जड़े और कैफ के साथ छठे विकेट के लिए 25 रन जोड़े। वह मध्यम तेज गेंदबाज मशरेफ मुर्तजा की गेंद पर मिडविकेट में बशर को कैच दे बैठा। उस समय स्कोर छह विकेट पर 157 रन था।

मैदान पर बांग्लादेशियों ने चीते सी फुर्ती दिखाई। उन्होंने अपनी सरजमीं पर एक दिवसीय क्रिकेट में पहली जीत अपने 100 वें मैच में हासिल की। भारत 15 रन से हार गया।

भारत की यह 2004 में वनडे क्रिकेट में 16 वीं हार थी। एक साल पहले विश्वकप फाइनल तक पहुंचने वाली टीम अर्श से फर्श तक पहुंच रही थी।

अगले दिन निर्णायक मैच में प्रयोगधर्मिता या रिजर्व खिलाड़ियों को आजमाने की कोई रणनीति नहीं बनाई गई। भारत ने अपनी सबसे मजबूत टीम उतारी। ढाका में मिली हार से स्तब्ध भारतीयों ने जबरदस्त वापसी करते हुए यह मैच 91 रन से जीत लिया।

भारत ने पांच विकेट पर 348 रन बनाए, जिसमें धोनी सिर्फ दो गेंद का सामना करके सात रन बनाकर नाबाद रहे। उन्होंने इसी मैच में अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट में पहला छक्का जड़ा।

विकेट के पीछे तीन कैच और दो स्टम्पिंग उनके खाते में गए। कप्तान सौरव गांगुली ने साफ कर दिया कि वनडे क्रिकेट में वह धोनी को ही टीम में चाहते हैं।

मार्च 2005 में पाकिस्तानी टीम के भारत के दौरे के मद्देनजर चैलेंजर वनडे श्रृंखला धोनी, कार्तिक और पटेल के बीच आजमाइश की तरह थी। धोनी की टीम इंडिया सीनियर्स मुंबई में खेले गए फाइनल में इंडिया 'ए' से हार गई लेकिन धोनी ने बाजी मार ली।

उन्होंने एक प्रारंभिक मैच में 96 गेंद में अविजित 102 रन बनाए जिसकी बदौलत उनकी टीम ने इंडिया 'बी' को हराया। सीनियर टीम के कप्तान गांगुली थे। लिहाजा धोनी के बारे में बांग्लादेश दौरे पर बनी उनकी राय और पुख्ता हो गई।

कार्तिक ने पाकिस्तान के खिलाफ टैस्ट टीम में अपनी जगह बरकरार रखी।

इस बीच पूर्वी क्षेत्र और रणजी क्रिकेट में पदार्पण कर रहे, झारखंड के लिए कुछ घरेलू मैच खेलने थे।

धोनी ने पश्चिम क्षेत्र के खिलाफ देवधर ट्रॉफी में पश्चिम क्षेत्र के लिए 101 और मध्य क्षेत्र के खिलाफ 87 रन बनाए। पूर्वी क्षेत्र की टीम हालांकि अंकतालिका में सबसे नीचे रही।

रणजी ट्रॉफी प्लेट डिवीजन में झारखंड की टीम समूह 'ए' में उड़ीसा के बाद दूसरे स्थान पर रही और सेमीफाइनल में हरियाणा से हार गई। रणजी वनडे टूर्नामेंट में वह तीसरे स्थान पर रही।

2004-05 सत्र धोनी के लिए अब तक का सर्वोत्तम रहा। उन्होंने केरल के खिलाफ 97 , उड़ीसा के खिलाफ 128 और सेमीफाइनल में 109 रन बनाए। कुल चार मैचों में 79.40 की औसत से उन्होंने 397 रन बनाए और 21 कैच भी लपके।

चंडीगढ़ में मार्च 2005 में हरियाणा के खिलाफ प्लेट सेमीफाइनल झारखंड के लिए धोनी का आखरी प्रथम श्रेणी मैच रहा। व्यस्त अंतर्राष्ट्रीय कार्यक्रम के चलते उनके पास घरेलू क्रिकेट के लिए समय ही कहां रह गया है।

अध्याय चार

सुर्खियों में धोनी

वर्ष 2005 की शुरुआत में पाकिस्तान टीम का भारत दौरा टीम इंडिया के साथ कोच जॉन राइट की आखरी श्रृंखला थी।

एक साल पहले पाकिस्तानी सरजमीं पर पहली बार टैस्ट और वनडे श्रृंखला जीतने वाली टीम से काफी अपेक्षाएं थी। न्यूजीलैंड के पूर्व क्रिकेटर राइट भी जीत के साथ भारत से रुखसत होना चाहते थे।

इंजमाम उल हक की अगुआई वाली पाकिस्तानी टीम को भारत दौरा करने वाली अब तक की सबसे कमजोर पाकिस्तानी टीम करार दिया गया। लेकिन यह आंकलन बेहद गलत साबित हुआ।

ड्रा रहे पहले टैस्ट में कोताही बरतने के बाद भारत ने कोलकाता में दूसरा टैस्ट 195 रन से जीता। राहुल द्रविड़ ने दोनों पारियों में सैकड़ा जड़ा।

अपने पहले मैच से ही दिनेश कार्तिक बल्ले का जौहर नहीं दिखा सके थे, लेकिन कोलकाता में उन्होंने दूसरी पारी में 93 रन बनाकर टैस्ट टीम में अपनी जगह और सुरक्षित कर ली।

जीत की प्रबल दावेदार भारतीय टीम को जमीन पर लाते हुए पाकिस्तान ने बेंगलुरू में तीसरा और आखरी टैस्ट जीतकर श्रृंखला बराबर कर ली। लेकिन इससे भी बुरा तो एक दिवसीय श्रृंखला में होना था।

कोच्चि में पहला और विशाखापत्तनम में दूसरा वनडे जीतकर भारत ने छह मैचों की श्रृंखला की शुरुआत अच्छी की। विशाखापत्तनम में खेले गए दूसरे मैच में 148 रन की सनसनीखेज पारी खेलकर धोनी ने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर वाहवाही बटोरी।

भारतीय टीम में आक्रामक बल्लेबाज के रूप में जगह बनाने वाले धोनी तीन महीने पहले बांग्लादेश दौरे पर वनडे क्रिकेट में पदार्पण के बाद से चार वनडे में नहीं चल सके थे। 5 अप्रैल 2005 को सब कुछ नाटकीय ढंग से बदल गया।

कोच्चि में तीन रन बनाकर आउट हुए धोनी फटाफट क्रिकेट में शतक जमाने वाले द्रविड़ के बाद दूसरे और पहले नियमित भारतीय विकेटकीपर बन गए। पाकिस्तान के खिलाफ एक दिवसीय क्रिकेट में यह भारत का दूसरा सर्वोच्च व्यक्तिगत स्कोर भी था। धोनी की पारी जिन्होंने भी देखी, वह उनकी आंखों में कैद होकर रह गई।

इस पारी का श्रेय गांगुली को जाता है जिन्होंने धोनी को बल्लेबाजी क्रम में तीसरे नंबर पर उतारा, जबकि पिछले चार मैचों में वह सातवें नंबर पर बल्लेबाजी करते आए थे।

यह चौकाने वाला फैसला था और गांगुली का यह दाव चल भी निकला। वैसे इसका कारण किसी चतुर रणनीति की बजाय खुद बल्लेबाजी के लिए उतरने से बचने की कवायद थी, क्योंकि बतौर बल्लेबाज उन दिनों गांगुली के सितारे गर्दिश में थे।

विकेट बल्लेबाजों का मददगार था और मेजबान टीम ने इसका भरपूर फायदा भी उठाया।

सचिन तेंदुलकर का विकेट गिरने के समय भारत का स्कोर 26 रन था। ऐसे में लोग तेजी से क्रीज की तरफ आते एक अनजाने से बल्लेबाज को देखकर स्तब्ध रह गए। धोनी ने पहली ही गेंद पर सीधे ड्राइव लगाकर चौका जड़ दिया और अपने तेवर भी जाहिर कर दिए।

इसके बाद धोनी और वीरेंद्र सहवाग ने पाकिस्तानी गेंदबाजों की जमकर बखिया उधेड़ी।

सहवाग ने सिर्फ 40 गेंद में 74 रन बनाए। धोनी और उन्होंने सिर्फ 62 गेंद में 96 रन की साझेदारी की।

सहवाग के आउट होने के बाद गांगुली आए और रन गति कुछ मंद पड़ गई। राहुल द्रविड़ के विकेट पर आने तक यही आलम रहा।

द्रविड़ के रूप में पुराने सिपहसालार को भारतीय क्रिकेट के नए चेहरे के साथ विपरीत अंदाज में बल्लेबाजी करते देखना सुखद था। द्रविड़ ने प्रति गेंद एक रन की दर से बल्लेबाजी की और 52 रन की पारी में सिर्फ तीन बार गेंद को सीमारेखा तक पहुंचाया।

दूसरी ओर धोनी कातिलाना फार्म में थे और दमखम भरे अपने शॉट के जरिए, उन्होंने दर्शकों का भरपूर मनोरंजन किया। लंबे बाल, सूरज की तपिश से हेलमेट के भीतर सुर्ख पड़े उनके चेहरे ने उनकी बल्लेबाजी को किसी रॉक स्टार की तरह नूर दे दिया। भारतीयों के महानायक और हरदिल अजीज सितारा बनने की दिशा में धोनी का यह पहला कदम था।

अगले दिन सारे मीडिया में भारत की जीत और धोनी के रूप में भारतीय क्रिकेट के एक नए धूमकेतु के उभरने के ही चर्चे थे।

द्रविड़ और धोनी ने 134 गेंद में 149 रन जोड़कर भारत को नौ विकेट पर 356 रन के विशाल स्कोर तक पहुंचाया। पाकिस्तान के खिलाफ यह सबसे बड़ा स्कोर और क्रिकेट के इतिहास में तीसरा सर्वोच्च स्कोर था।

धोनी का पहले पचास 49 गेंद में और दूसरे 39 गेंद में बने और उनके चेहरे पर कोई घबराहट नहीं थी कि वह अपना पहला अंतर्राष्ट्रीय शतक जड़ने जा रहे थे।

उनके आउट होने के समय स्कोर 41.2 ओवर में चार विकेट पर 289 रन था। ऑफ स्पिनर मोहम्मद हाफिज की गेंद पर मिड विकेट में वह शोएब मलिक को कैच थमा बैठे। धोनी ने 123 गेंदों का सामना करके 148 रन बनाए। इसमें 12 चौके और चार छक्के शामिल थे।

वाइजेग के जबरदस्त आर्द्र मौसम में आला दर्जे की विकेटकीपिंग करते हुए, धोनी ने पूरे 44.1 ओवर तक एक भी रन बाय के रूप में नहीं दिया। पाकिस्तानी टीम 298 रन पर आउट हो गई। ऐसे में मैन ऑफ द मैच पुरस्कार के लिए धोनी के अलावा दूर-दूर तक कोई दावेदार नहीं था।

धोनी ने स्वीकार किया कि छोटे मैदान और सपाट विकेट पर आतिशी बल्लेबाजी की अच्छी गुंजाइश थी। उन्होंने कहा कि विरोधी गेंदबाजों से ज्यादा गर्म और आर्द्र मौसम ने उन्हें परेशान किया।

क्रिकइन्फो पर चंद्रहास चौधरी ने इसकी समीक्षा कुछ यूं की थीः “ऐसा लगा कि भारत के सधे हुए और जाने-पहचाने बल्लेबाजी क्रम में अचानक तूफान की तरह कोई बदलाव आ गया हो। ऐसा लगा जैसे कोई विस्फोट हुआ और इसकी धमक लंबे समय तक सुनाई देती रहेगी।”

ऐसा ही हुआ। उस समय हालांकि फौरी मकसद वनडे श्रृंखला जीतना था।

भारतीय टीम की किस्मत में यह श्रृंखला जीतना नहीं बदा था। पाकिस्तान ने अगले चारों मैच सिलसिलेवार जीत लिए।

यह करारा झटका था। खासतौर पर तब जबकि कप्तान सौरव गांगुली को अहमदाबाद के चौथे मैच में टीम की धीमी ओवर गति के कारण प्रतिबंध झेलना पड़ा और ऐसा पहली बार नहीं हुआ था। कानपुर और दिल्ली में खेले गए आखरी दो मैच में वह बाहर बैठे और द्रविड़ ने कमान संभाली।

तीसरा मैच धोनी के अपने शहर यानी जमशेदपुर में खेला गया। उन्होंने अपने परिवार से स्टेडियम नहीं आने का अनुरोध किया। उसके बाद से वे ऐसा ही करते आए हैं क्योंकि उनका मानना है कि दर्शक दीर्घा में अपने परिवार को देखकर उन्हें अतिरिक्त दबाव महसूस होता है।

इसका ज्यादा फायदा नहीं हुआ। कीनन स्टेडियम में दर्शकों की आंखें बस अपने स्थानीय नायक को तलाश रही थी। लेकिन 24 गेंद में 28 रन बनाने के बाद दर्शक दीर्घा से उठते ‘धोनी-धोनी’ के शोर ने उनकी एकाग्रता तोड़ दी और जोखिम भरा शॉट खेलने के प्रयास में वह अपना विकेट गंवा बैठा।

पाकिस्तान ने 106 रन से जीत दर्ज की। अहमदाबाद में काफी तनावपूर्ण तरीके से आखरी गेंद पर खत्म हुआ मैच जीतकर पाकिस्तान ने श्रृंखला में बराबरी कर ली। यहां धोनी का योगदान महज 47 रन का था। उसने अपने आदर्श रहे सचिन तेंदुलकर के साथ दूसरे विकेट के लिए 129 रन जोड़े। सचिन की 123 रन की पारी बेकार गई।

टीम का मनोबल अब तक बुरी तरह टूट चुका था। कानपुर में वह पांच विकेट से और दिल्ली में 159 रन से हार गई।

कोच राइट के बेहतरीन कार्यकाल का दुखद अंत हुआ। पिछले पांच साल में वह गांगुली के साथ मिलकर भारतीय क्रिकेट को नई ऊंचाइयों पर ले गए। इस दौरान विदेश में भारतीय टीम का रिकॉर्ड बहुत अच्छा रहा और ऑस्ट्रेलिया के बाद वह दूसरे नंबर की टीम थी।

श्रीलंका में मेजबान और वेस्टइंडीज के खिलाफ त्रिकोणीय श्रृंखला से पहले भारतीय खिलाड़ियों के पास अपने जख्मों को भरने के लिए काफी समय था।

धोनी ने ऐसे में आराम करने की बजाय मैच अभ्यास मुनासिब समझा। उन्होंने कोलकाता में पी सेन ट्रॉफी के लिए क्लब टूर्नामेंट खेला।

भारत में किसी भी अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेटर के लिए यह अनोखी बात थी। उनकी मौजूदगी से ईडन गार्डन पर खेले गए फाइनल में रिकॉर्ड 2000 दर्शक जुटे। धोनी ने टूर्नामेंट में 227 गेंद में 394 रन बनाए। वे अब वनडे टूर्नामेंट के लिए पूरी तरह तैयार थे।

भारतीय क्रिकेट किसी खालिस बॉलीवुड की तरह नाटकीयता से भरपूर होता है और मैदान से बाहर भी सुर्खियां बनती हैं।

ऑस्ट्रेलिया के पूर्व कप्तान और महान बल्लेबाज ग्रेग चैपल 20 मई 2005 को भारतीय टीम के कोच बने और एक महीने बाद बेंगलुरू में उन्होंने औपचारिक रूप से कार्यभार संभाल लिया।

सुनील गावस्कर, रवि शास्त्री और एस. वेंकटराघवन चयन पैनल में थे, लेकिन चैपल की दावेदारी का सबसे पुरजोर समर्थन गांगुली ने किया। चैपल के अलावा मोहिंदर अमरनाथ, टॉम मूडी और डेसमंड हैंस भी इस दौड़ में थे।

ऑस्ट्रेलिया के 2003-04 दौरे से पहले अपनी तकनीक को मांजने का श्रेय गांगुली ने चैपल को दिया था। चैपल के साथ कुछ सत्र की बातचीत का असर यह हुआ कि गांगुली ने ब्रिसबेन में पहले टैस्ट में शानदार शतक जमाया। लेकिन तब किसी को इसका गुमान तक नहीं था कि गांगुली का चैपल को यूं समर्थन आनेवाले महीनों में क्या रंग दिखाएगा।

पाकिस्तान श्रृंखला के दौरान गांगुली पर लगाया गया, छह मैचों का प्रतिबंध अपील के बाद घटाकर चार मैचों का कर दिया गया। त्रिकोणीय श्रृंखला के तीसरे मैच में वह टीम में लौटे जरूर लेकिन द्रविड़ ही टूर्नामेंट में कप्तान बने रहे।

भारतीय टीम के लिए नए सत्र का प्रारंभ नए कोच और टीम में कतिपय नए चेहरों के साथ हुआ।

तेंदुलकर के कंधे की चोट की वजह से श्रीलंका में भारत को पहले दो मैच अपने दो दिग्गज बल्लेबाजों के बिना खेलने पड़े।

पहले मैच में धोनी ने सहवाग के लिए पारी की शुरुआत की। भारतीय क्रिकेट के नए नायक के लिए यह त्रिकोणीय श्रृंखला हालांकि नाकामी की दास्तान साबित हुई।

चैपल का फलसफा था 'टीम में लचीलापन' और खिलाड़ियों को इसका अनुभव उनके मार्गदर्शन में पहली ही श्रृंखला के दौरान हो गया। पहले तीन मैचों में सहवाग को तीन अलग-अलग प्रारंभिक जोड़ीदार मिले। धोनी को दूसरे मैच में छठे नंबर पर उतारा गया।

तीसरे मैच में वह दो क्रम ऊपर और फिर चौथे मैच में छठे स्थान पर ही उतरे। श्रीलंका ने फाइनल में भारत को 18 रन से मात दी।

धोनी ने 2 , नाबाद 15 , 20 , नाबाद 28 और सात रन का स्कोर बनाया। लेकिन बल्लेबाजी नहीं बल्कि उनकी औसत विकेटकीपिंग चिंता का मसला बन गई।

फाइनल मैच में इरफान पठान की गेंद पर उसने सनत जयसूर्या का कैच उस समय छोड़ा जब उन्होंने 19 रन ही बनाए थे। जयसूर्या जैसे खतरनाक बल्लेबाज को दिया यह जीवनदान भारत के लिए महंगा साबित हुआ और इस सलामी बल्लेबाज ने 67 रन बनाए।

पहले तीन मैच में बाहर रहने के बाद अनिल कुंबले वेस्टइंडीज के खिलाफ आखरी लीग मैच और फाइनल में टीम में लौटे। इससे धोनी की परेशानियां और बढ़ गई।

वह पहली बार किसी लेग स्पिनर के सामने विकेटकीपिंग कर रहे थे और उनके प्रदर्शन पर इसका असर पड़ा। कुंबले की गति और गेंद को मिलने वाला उछाल हमेशा विकेटकीपरों के लिए चुनौती होता है। धोनी ने खुद इसे स्वीकार किया हैः

“घरेलू स्तर पर खेलते हुए आप खुद को अनिल कुंबले और हरभजन सिंह जैसे गेंदबाजों का सामना करने के लिए तैयार नहीं कर पाते। उनकी गेंदों को मिलने वाली उछाल और गति का मुकाबला कोई घरेलू गेंदबाज नहीं कर सकता। उनके साथ अधिक से अधिक अभ्यास करके ही प्रदर्शन बेहतर किया जा सकता है।” (*क्रिकइन्फो* मैगजीन, मई 2006)

उन्होंने इस बात पर भी तवज्जो दी कि खेल के एक पहलू का असर किस तरह से दूसरे पर पड़ता है। “अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सब आत्मविश्वास पर निर्भर करता है। यदि आपके बल्ले से रन निकलने लगे तो दूसरे पहलुओं मसलन गेंदबाजी व क्षेत्ररक्षण में भी सुधार आने लगता है।”

पार्थिव और कार्तिक भी टीम इंडिया में जगह बनाने के लिए कतार में खड़े थे, लिहाजा धोनी को खतरा महसूस होने लगा था।

उनकी खुशकिस्मती रही कि जिम्बाब्वे में मेजबान और न्यूजीलैंड के खिलाफ त्रिकोणीय श्रृंखला के लिए भारतीय टीम में उनका चयन हो गया।

जिम्बाब्वे क्रिकेट की दुर्दशा को देखते हुए फाइनल भारत और न्यूजीलैंड के बीच होना लगभग तय था। वैसे दूसरे लीग मैच में मेजबान टीम ने भारत की हालत खराब कर दी थी, लेकिन युवराज और धोनी ने संकटमोचन की भूमिका निभाई।

बुलावायो में न्यूजीलैंड के खिलाफ पहले मैच में लचर प्रदर्शन के बाद भारत ने जिम्बाब्वे को हराया। धोनी ने 46 गेंद में 56 रन बनाए। इसके बाद अगले मैच में मोहम्मद कैफ के नाबाद 102 रन की मदद से भारत ने न्यूजीलैंड पर छह विकेट से जीत दर्ज की। इस मैच में धोनी ने 27 गेंद में 37 रन की नाबाद पारी खेली।

हरारे में जिम्बाब्वे के खिलाफ दूसरे मैच में भारतीय टीम पर संकट के बादल मंडराने लगे, जब 36 रन पर उसके चार और 91 रन पर पांच विकेट उखड़ गए। इससे पहले मेजबान ने 250 रन बना डाले थे।

ऐसे में युवराज और धोनी ने समझबूझ भरी पारियां खेली। युवराज 120 रन बनाकर मैन ऑफ द मैच रहे, जबकि धोनी ने 67 गेंद में अविजित 67 रन बनाकर उनका बखूबी साथ दिया। इस पारी में सिर्फ एक चौका और तीन छक्के शामिल थे।

फाइनल मैच एक बार फिर भारत के लिए बुरे सपने की तरह रहा। ठीक एक महीने पहले कोलंबो में खेले गए फाइनल में भी भारत की यही हालत थी।

भारतीय टीम 276 रन पर आउट हो गई, जबकि उसका दूसरा विकेट 155 के स्कोर पर गिरा था। न्यूजीलैंड टीम ने दो ओवर और छह विकेट बाकी रहते जीत दर्ज की।

फाइनल में घुटने टेकने की भारत की आदत बदस्तूर जारी रही। वर्ष 2000 से लेकर तब तक 16 फाइनल में से भारत ने सिर्फ एक जीता था और तीन के नतीजे नहीं निकल सके।

जिम्बाब्वे के खिलाफ टैस्ट श्रृंखला में कार्तिक टीम में लौटे। दोनों पारियों में वह सिर्फ एक रन ही बना सके। वैसे भारत को टैस्ट श्रृंखला जीतने में कोई पसीना नहीं बहाना पड़ा।

धोनी वैसे अपने भाग्य को धन्यवाद दे रहे होंगे कि एक दिवसीय श्रृंखला के बाद वह स्वदेश लौट आए और उन्हें भारतीय क्रिकेट के इतिहास के सबसे बदनाम और शर्मनाक विवाद का हिस्सा नहीं बनना पड़ा।

बल्लेबाजी में अपने लगातार खराब प्रदर्शन को देखते हुए गांगुली ने बुलावायो में पहले टैस्ट से पूर्व चैपल से सलाह मांगी। कोच ने उनसे दो टूक लहजे में कहा कि अपना फार्म हासिल करने तक वह टीम से बाहर रहें।

इस बयान से स्तब्ध गांगुली ने अपना बोरिया बिस्तर बांध लिया था लेकिन उन्हें रुकने के लिए मनाया गया। पहले टैस्ट में उन्होंने सैकड़ा ठोका और कोच के साथ अपनी गोपनीय बातचीत का खुलासा मैच के बाद एक टीवी चैनल पर कर दिया। इससे दोनों के बीच सरेआम वाक्‌युद्ध की शुरुआत हो गई।

हरारे में दूसरे टैस्ट से पहले दोनों के बीच सार्वजनिक तौर पर सुलह सफाई हुई। लेकिन यह तूफान से पहले की शांति थी।

टीम के लौटने के बाद भारतीय क्रिकेट बोर्ड के अध्यक्ष को लिखा एक “निजी और गोपनीय ई-मेल (चैपल के शब्दों में) मीडिया के सामने उजागर हो गया।” इसमें कोच ने गांगुली के बारे में अपनी राय जाहिर की थी।

बीसीसीआई ने एक समीक्षा समिति बनाई जिसने दोनों से अलग-अलग मुलाकात की और उनका आपस में समझौता करा दिया गया।

गांगुली के कोहनी में लगी चोट के कारण चयनकर्ताओं ने श्रीलंका के खिलाफ सात मैचों की श्रृंखला और उसके बाद दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ वनडे श्रृंखला के लिए टीम की बागडोर 13 अक्टूबर 2005 को द्रविड़ को सौंप दी। द्रविड़ को बाद में दिसंबर में श्रीलंका के खिलाफ टैस्ट श्रृंखला के लिए भी कप्तान बना दिया गया। इसके साथ भारतीय क्रिकेट के सफलतम कप्तानों में शुमार गांगुली के 2000 में शुरू हुए दौर का पटाक्षेप हो गया।

अध्याय पांच

विश्व रिकॉर्ड और टैस्ट क्रिकेट में पदार्पण

मोहाली में खेली गई चैलेंजर त्रिकोणीय श्रृंखला एक दिवसीय टूर्नामेंट श्रीलंका के खिलाफ घरेलू श्रृंखला से पहले ट्रायल और अभ्यास की तरह था। आठ साल बाद पहली बार श्रीलंकाई टीम भारत के संपूर्ण दौरे पर आ रही थी।

इंडिया सीनियर्स की ओर से खेल रहे धोनी की टीम ने फाइनल में इंडिया ‘बी’ को हराया, हालांकि तीनों मैचों में धोनी अपने बल्ले का जौहर नहीं दिखा सके। फाइनल में उन्होंने इंडिया ‘बी’ के तीन बल्लेबाजों को बाएं हाथ के स्पिनर मुरली कार्तिक की गेंद पर स्टम्प आउट किया।

अक्टूबर 2005 में शुरू हुई वनडे श्रृंखला में वर्ल्ड रैंकिंग में दूसरे नंबर पर आने वाली श्रीलंकाई टीम जीत की प्रबल दावेदार थी, क्योंकि खराब फार्म की वजह से भारत की रैंकिंग भी गिरकर सातवें नंबर पर आ गई थी। श्रीलंका ने पिछले छह मैचों में से पांच में भारत को हराया था सो अलग।

मेजबान टीम को नए सिरे से तरोताजा होकर लौटे सचिन तेंदुलकर की वापसी से आत्मबल मिला। छह महीने तक टेनिस एलबो के कारण क्रिकेट से दूर रहे तेंदुलकर ने नागपुर में पहले मैच में जिस तरह बल्लेबाजी की, उससे अहसास भी नहीं हुआ कि वह एक दिन भी क्रिकेट से दूर थे।

तेंदुलकर ने 93 और पिंच हिटर के रूप में आए इरफान पठान ने 83 रन बनाए। कप्तान द्रविड़ ने भी 85 रन की नाबाद पारी खेली।

धोनी 33 गेंद में 38 रन बनाकर डीप क्षेत्र में कैच दे बैठे। भारत ने छह विकेट पर 350 रन बनाए और विशाल लक्ष्य के जवाब में श्रीलंकाई टीम ने घुटने टेक दिए और 152 रन से हार गई।

मोहाली में दूसरा मैच और भी एकतरफा रहा। पहले बल्लेबाजी के लिए भेजी गई मेहमान टीम 122 रन के मामूली स्कोर पर सिमट गई। भारत ने आठ विकेट से जीत दर्ज

करके श्रृंखला में 2-0 की बढ़त बना ली। तेंदुलकर ने एक बार फिर बेहतरीन पारी खेली और चार विकेट लेने वाले इरफान पठान मैन ऑफ द मैच रहे।

जयपुर में 31 अक्टूबर को टीम इंडिया जब तीसरा मैच खेलने उतरी तो उसके हौसले बुलंदी के सातवें आसमान पर थे। खिलाड़ियों के जेहन में हालांकि कहीं न कहीं पाकिस्तान पर 2-0 से बढ़त बनाने के बाद मिली 2-4 से हार थी।

अब मेजबान टीम कोई कोताही नहीं बरतना चाहती थी। मैच की पूर्व संध्या पर द्रविड़ ने अपने खिलाड़ियों को आत्ममुग्धता से बचने की ताकीद दी। तेंदुलकर को आराम देने की भी बात उठी, लेकिन आखिर में उन्होंने खेलने का फैसला किया।

भारतीय गेंदबाज दिशा से भटक गए और श्रीलंका ने श्रृंखला में अपना सर्वोच्च स्कोर चार विकेट पर 298 रन बनाया। सलामी बल्लेबाज और विकेटकीपर कुमार संगकारा ने नाबाद 138 और महेला जयवर्धने ने 71 रन बनाए।

लक्ष्य कठिन था लिहाजा अच्छी शुरुआत मिलना लाजमी था। ऐसे में पहले ही ओवर में तेंदुलकर के आउट होने से मैदान में मानो सांप सूंघ गया।

लेकिन यह खामोशी ज्यादा देर नहीं रही। दुनिया का कोई भी गेंदबाज तब बगलें झांकने पर मजबूर हो जाता है, जब सहवाग और धोनी पूरी रंगत में हों। यह भी ऐसा ही मौका था। श्रृंखला के पहले मैच में पठान को और दूसरे मैच में जेपी यादव को तीसरे नंबर पर उतारा गया था जो चैपल की प्रयोगधर्मिता का एक हिस्सा था।

यहां लक्ष्य कठिन होने के कारण धोनी को तीसरे नंबर पर भेजने का फैसला किया गया। छह महीने पहले इसी क्रम में पाकिस्तान के खिलाफ इसी मैदान पर उन्होंने सैकड़ा बनाया था।

उस मैच में भी तेंदुलकर दो रन बनाकर आउट हो गए थे और धोनी ने सहवाग के साथ बड़ी साझेदारी की थी।

जयपुर में ही एक बार फिर सहवाग (39) के आउट होने के बाद द्रविड़ ने धोनी का बखूबी साथ निभाया।

तेंदुलकर को आउट करके चमिंडा वास ने श्रीलंका की उम्मीदें जगा दी, लेकिन उनकी खुशी ज्यादा देर तक नहीं टिक सकी। बाएं हाथ के इस तेज गेंदबाज को धोनी ने एक्स्ट्रा कवर के ऊपर से दो बार छक्के जड़े। उनकी गेंदों में कोई खराबी नहीं थी और वास उन्हें इस तरह नसीहत मिलती देख अपनी आंखों पर यकीन नहीं कर पा रहे थे।

चैम्पियन ऑफ स्पिनर मुथैया मुरलीधरन को भी धोनी ने बखूबी खेला। कप्तान मर्वन अटापट्टू ने पहला पावर प्ले लेने का फैसला किया और रन गति पर अंकुश लगाने के लिए मुरली को 11 वें ओवर में गेंद सौंपी गई। धोनी ने खिलाड़ियों के बीच फासले तलाश कर एक रन चुराया था। उन्हें पावर प्ले का ही इंतजार था, ताकि फिर से आक्रमण कर सकें।

सहवाग के साथ उन्होंने 92 रन की साझेदारी की। सहवाग को मुरली ने पगबाधा आउट किया। दो विकेट 99 रन पर गिर जाने के बाद लक्ष्य दुरूह नजर आने लगा था।

दूसरा पावर प्ले 17 वें से 21 वें ओवर के बीच लिया गया। द्रविड़ के क्रीज पर उतरने के बाद धोनी ने फिर आक्रमण शुरू कर दिया और पांच ओवर में 46 रन की साझेदारी की

जिसमें से 32 रन धोनी के बल्ले से निकले थे।

मुरली ने 10 ओवर में 46 रन देकर दो विकेट लिए। लेग स्पिनर उपुल चंदाना को धोनी ने दो बार स्क्वेयर लेग पर छक्का जमाया।

धोनी ने अपना शतक 85 गेंदों में दस चौकों और पांच छक्कों की मदद से पूरा किया। इससे पहले गर्मी और आर्द्रता के बीच 50 ओवर तक विकेटकीपिंग करने और फिर इतनी देर बल्लेबाजी से थकान उन पर हावी होने लगी। शतक पूरा करने के बाद वह पहले की तरह फुर्ती से नहीं खेल पाए। आखरी 53 रन उन्होंने रनर को साथ लेकर बनाए।

इसके बावजूद धोनी की रन गति कम नहीं हुई। उनकी पारी के तीसरे 50 रन केवल 38 गेंद में बने।

द्रविड़ 28 के रूप में भारत का तीसरा विकेट 185 रन पर गिरा। इसके बाद युवराज मैदान पर आए, लेकिन वह दूसरे छोर से वनडे क्रिकेट में एक विकेटकीपर बल्लेबाज का विश्वरिकॉर्ड बनते देख रहे थे।

श्रीलंकाई टीम ने अपनी सारी ऊर्जा दूसरे छोर से बल्लेबाजों के आउट करने में लगा दी। युवराज 18 रन बनाकर पेवेलियन लौटे। धोनी अंत तक डटे रहे और 46.1 ओवर में भारत को जीत दिलाकर ही दम लिया।

पहला विकेट गिरने के बाद लगातार चार अर्धशतकीय साझेदारियां हुई जिनमें धोनी की अहम भूमिका रही। उन्होंने 145 गेंद में नाबाद 183 रन बनाए। इसमें 15 चौके और 10 छक्के शामिल थे।

धोनी ने तिलकरत्ने दिलशान को 46 वें ओवर की पहली गेंद पर मिडविकेट में छक्का जड़कर भारत को जीत दिलाई। वह मैदान पर झूमने लगे और दर्शक दीर्घा में मौजूद हजारों लोग भी।

उनके 120 रन तो मात्र बाउंड्री की ही बदौलत आए, यह भी अपने आप में एक रिकॉर्ड था (जिसे एक साल बाद हर्शल गिब्स ने तोड़ा था) और जो दूसरे शानदार रिकॉर्ड धोनी ने अपने नाम किए थे उनके हाल-फिलहाल में टूटने के कोई आसार नहीं हैं।

यह एक दिवसीय क्रिकेट में किसी भी विकेटकीपर का सर्वोच्च स्कोर था। इससे पहले रिकॉर्ड ऑस्ट्रेलिया के एडम गिलक्रिस्ट के नाम था जिन्होंने एक साल पहले 173 रन बनाए थे।

इसके अलावा यह टैस्ट नहीं खेलने वाले किसी बल्लेबाज का भी सर्वोच्च स्कोर था। श्रीलंका के खिलाफ किसी भी विकेटकीपर के सर्वाधिक स्कोर के एडम गिलक्रिस्ट के नाबाद 155 रन के रिकॉर्ड को भी धोनी ने तोड़ा। तीसरे नंबर के बल्लेबाज का यह सर्वोच्च स्कोर था। इसके अलावा उन्होंने श्रीलंका के खिलाफ सर्वोच्च वनडे स्कोर के सौरभ गांगुली के रिकॉर्ड की बराबरी की। गांगुली ने 1999 विश्वकप में श्रीलंका के खिलाफ 183 रन की पारी खेली थी। यही नहीं एक पारी में सर्वाधिक छक्के लगाने वाले वह सनत जयसूर्या और शाहिद अफरीदी (11 छक्के) के बाद तीसरे बल्लेबाज बन गए।

मैच के बाद द्रविड़ ने इस पारी की तुलना 1998 में शारजाह में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ सचिन तेंदुलकर के 143 रन की पारी से की जो किसी भी भारतीय बल्लेबाज की एक

दिवसीय क्रिकेट में सबसे उम्दा पारी है।

"मैं खुशकिस्मत हूं कि मैंने सचिन, वीरू और सौरव की कुछ बेहतरीन एक दिवसीय पारियां देखी हैं।" यह कहना था द्रविड़ का। उन्होंने कहा, "लेकिन लक्ष्य का पीछा करते हुए यह ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ शारजाह में बनाए गए सचिन के शतक के करीब कहा जा सकता है। मैंने वह मैच टीवी पर देखा था क्योंकि मैं टीम का हिस्सा नहीं था। मैंने जितनी पारियां देखी हैं, उनमें से आज की पारी सबसे उम्दा पारियों में है।"

धोनी जिस तरह से आखरी क्षणों में गेंद को पीट रहे थे, मुमकिन था कि वह एक दिवसीय क्रिकेट में पहला दोहरा शतक जड़ देते। लेकिन उनके दिमाग में यह नहीं था। "मैं बस आखिर तक खेलना चाहता था। मैं विजयी रन बनाना चाहता था। जब मेरे 160 रन हो गए तब मैंने गिलक्रिस्ट के रिकॉर्ड के बारे में सोचा। हम मुरलीधरन को लेकर कुछ चिंतित थे। वह श्रीलंकाई टीम का सबसे उम्दा गेंदबाज है। राहुल और मैंने उसकी गेंदों पर एक-एक रन ही लेने का फैसला किया ताकि बाकी गेंदबाजों की धुनाई कर सकें।"

द स्पोर्ट्सस्टार को (3 दिसंबर 2005) दिए इंटरव्यू में धोनी ने कहा था कि वे सिर्फ 'सामान्य क्रिकेट' खेल रहे थे। इस पर हैरान पत्रकार ने पूछा, "क्या 183 रन की तूफानी पारी आपके लिए 'सामान्य क्रिकेट' है।"

उनका जवाब अभिमानरहित आत्मविश्वास से परिपूर्ण था। उन्होंने कहा, "हां, यही मेरा सामान्य क्रिकेट है। मुझे शॉट लगाने के लिए सिर्फ सही गेंद का चयन करना होता है। मैंने गेंदबाजों की धुनाई की लेकिन मुझे पता था कि किस गेंद को पीटना है और किसे छोड़ना है। यह मेरी सर्वश्रेष्ठ पारी थी, पाकिस्तान के खिलाफ 148 रन से भी बेहतर।"

उन्होंने स्वीकार किया कि जब मैच की पहली गेंद फेंकी गई, तभी उन्हें महसूस हो गया कि यह पिच बल्लेबाजों की ऐशगाह है। पहली पारी खत्म होने के बाद भी यह अच्छी सपाट बल्लेबाजी वाली विकेट थी।

उनसे पूछा गया कि इतने सारे छक्के जड़ने की उनकी क्षमता का राज क्या है, इस पर उन्होंने कहा, "तकनीकी तौर पर यह मेरी ताकत और बल्ले की स्विंग थी जो मैंने इतनी गति से रन बनाए। मैंने उन छक्कों के लिए काफी मेहनत की थी, क्योंकि इससे मुझे आत्मविश्वास मिला। एक बार आप इसमें कामयाब हो जाते हो तो बाद में ज्यादा दिक्कत नहीं होती। आत्मविश्वास होने पर छक्के लगाना कोई मुश्किल काम नहीं।"

भारत ने पुणे में चौथा मैच चार विकेट से जीतकर श्रृंखला अपने नाम कर ली। यह काफी करीबी और तनावपूर्ण मैच था। जिसमें धोनी की 45 रन की अविजित पारी निर्णायक साबित हुई।

श्रीलंकाई टीम 261 रन पर आउट हो गई थी। भारत की शुरुआत अच्छी नहीं रही।

तेंदुलकर और युवराज के सस्ते में आउट होने पर स्कोर दो विकेट पर 34 रन था। इसके बाद सहवाग (48) और द्रविड़ (36) ने टीम को मैच में लौटाया। वेणुगोपाल राव ने 38 रन बनाए। उसका विकेट गिरने के समय भारत का स्कोर 31 ओवर में चार विकेट पर 176 रन था। उस समय भी भारत की जीत मुश्किल नहीं लग रही थी, लेकिन राव के बाद द्रविड़ और पठान भी जल्दी आउट हो गए। इससे स्कोर छह विकेट पर 189 रन हो गया।

तब सुरेश रैना (39) और धोनी ने 82 रन की नाबाद साझेदारी करके मैच का पासा पलट दिया और भारत ने 4.2 ओवर बाकी रहते जीत हासिल कर ली।

धोनी की यह पारी जयपुर में खेली गई आतिशी पारी से एकदम अलग थी। पहले उन्होंने रक्षात्मक रणनीति अपनाई और लक्ष्य के करीब पहुंचने पर हाथ खोले।

भारत को आखरी पांच ओवर में 16 रन की जरूरत थी और 46 वां ओवर करने रसेल अर्नाल्ड आए। धोनी उस समय 39 गेंद में 29 रन बनाकर खेल रहे थे।

अगली चार गेंद में मैच का फैसला हो गया। धोनी ने पहली दो गेंद पर दो-दो रन लिए।

अगली दो गेंद पर छक्के जड़कर उन्होंने भारत की जीत पर मुहर लगा दी।

वह 44 गेंद में 45 रन बनाकर नाबाद रहे।

श्रीलंका ने एकमात्र जीत अहमदाबाद में दर्ज की। गौतम गंभीर और द्रविड़ के शतकों के बावजूद भारत वह मैच पांच विकेट से हार गया। श्रृंखला के इसी मैच में धोनी नहीं चल सके और पहली गेंद पर खाता खोले बिना आउट हो गए।

राजकोट में उन्हें बल्लेबाजी के लिए उतरना ही नहीं पड़ा क्योंकि भारत ने सात विकेट से मैच जीत लिया। इसके बाद वडोदरा में सातवें और आखरी वनडे में उन्होंने 73 गेंद में नौ चौकों और तीन छक्कों की मदद से 80 रन बनाकर एक बार फिर अपना लोहा मनवाया।

इस मैच में भी बड़े स्ट्रोक्स उन्होंने पारी के दूसरे चरण में लगाए। उनके मैदान पर उतरने के समय स्कोर चार विकेट पर 157 रन था। उन्होंने एक-एक रन चुराकर खेलना आरंभ किया। यह एक क्रिकेटर के तौर पर उनकी परिपक्वता का परिचायक था। भारत ने जीत के लिए 245 रन का लक्ष्य 63 गेंद और पांच विकेट बाकी रहते हासिल कर लिया और श्रृंखला 6-1 से अपने नाम की।

द्रविड़ के लिए यह निजी उपलब्धि भी थी जो पहली बार पूर्णकालिक आधार पर भारतीय टीम की कप्तानी कर रहे थे। उन्होंने 156.00 की बेहतरीन औसत से रन बनाए।

श्रृंखला में सबसे ज्यादा 346 रन धोनी के नाम रहे। औसत के मामले में द्रविड़ के बाद दूसरे स्थान पर रहे। उनका औसत 115.33 और स्ट्राइक रेट 119.31 था।

अब बारी दक्षिण अफ्रीका टीम की थी।

ऑस्ट्रेलिया के बाद दुनिया की दूसरी सर्वश्रेष्ठ टीम को हराना उतना आसान नहीं था। श्रृंखला 2-2 से बराबर करना भी भारत के लिए कम उपलब्धि नहीं थी जबकि एक मैच बारिश की भेंट हो गया था।

धोनी के लिए यह श्रृंखला निराशाजनक रही। पिछली श्रृंखला के हीरो रहे धोनी 17 , 14 और 12 रन ही बना सके।

श्रीलंकाई टीम 2005 के आखिर में तीन टैस्ट मैच खेलने फिर भारत आई और इस बार टैस्ट टीम में धोनी का दावा अनदेखा नहीं किया जा सकता था।

कार्तिक का चयन उनकी बल्लेबाजी के आधार पर होता रहा। लेकिन दस टैस्ट में सिर्फ एक अर्धशतक जमा सके तमिलनाडु के इस विकेटकीपर की जगह चयनकताओं ने दिसंबर में चेन्नई में खेले जाने वाले पहले टैस्ट के लिए धोनी को तरजीह दी।

बारिश के कारण पहले तीन दिन कोई खेल नहीं हो सका। चौथे और पांचवें दिन भी कुछ ही देर खेल हुआ। इसमें भी देशभर की नजरें गांगुली पर टिकी थीं, जो घरेलू क्रिकेट में जबरदस्त प्रदर्शन करके टीम इंडिया में लौटे थे।

पांचवें दिन का खेल औपचारिकता मात्र बचा था। इसमें हालांकि श्रीलंका को मनोवैज्ञानिक बढ़त बनाने का मौका मिल गया। भारतीय टीम 167 रन पर सिमट गई जो श्रीलंका के खिलाफ उसका न्यूनतम टैस्ट स्कोर था। बाद में मेहमान टीम ने चार विकेट पर 168 रन बनाए।

सहवाग ने 36 रन की पारी खेली। द्रविड़ ढाई घंटे की पारी में बमुश्किल 32 रन जोड़ सके। अब इस युवा विकेटकीपर पर टीम को और शर्मसार होने से बचाने की जिम्मेदारी थी। आलम यह था कि चमिंडा वास की बेहतरीन गेंदबाजी के सामने तेंदुलकर सरीखे बल्लेबाज भी नहीं चल पा रहे थे। वास ने लगातार 11 मैडन ओवर फेंककर कहर बरपा रखा था।

ऐसे में धोनी ने चतुराई से काम लिया। उन्होंने द्रविड़ और तेंदुलकर से ज्यादा चौके जमाए और स्ट्राइक बदलते रहे।

धोनी ने भले ही सिर्फ 30 रन बनाए लेकिन क्रिकेट पंडितों को उनकी तकनीक और तेवर ने प्रभावित किया। उन्होंने श्रीलंकाई पारी में पठान के पहले ओवर में सलामी बल्लेबाज अविश्का गुणवर्धने का कैच भी लपका।

दिल्ली में अगले टैस्ट में धोनी ने पहला अर्धशतक जमाया। भारत की 188 रन से जीत में प्रति गेंद रन की दर से खेली गई उनकी पारी की अहम भूमिका रही।

पहले दिन का खेल तेंदुलकर के नाम रहा, जिन्होंने सुनील गावस्कर का रिकॉर्ड तोड़कर 35 वां टैस्ट शतक अपने नाम किया। गावस्कर के नाम यह रिकॉर्ड 22 बरस तक रहा।

दूसरी सुबह मुरली गजब के फार्म में थे और भारत ने अपने आखरी सात विकेट केवल 45 रन के भीतर गंवा दिए। इस चैम्पियन ऑफ स्पिनर ने धोनी (पांच) को अपने *दूसरा* का शिकार बनाया। इस गेंद की काट बिरले ही बल्लेबाज कर पाते हैं। लेग स्टम्प के सामने टप्पा खाने वाली यह गेंद ऑफ स्टम्प के बाहर गिरती है। एक पत्रकार ने तो उसे साल की सर्वश्रेष्ठ गेंद भी करार दे दिया।

भारत का स्कोर 290 रन था जो किसी लिहाज से अच्छा तो नहीं कहा जा सकता। लेकिन भारतीय गेंदबाजों ने आशातीत प्रदर्शन कर दिखाया। लेग स्पिनर अनिल कुंबले ने छह विकेट चटकाए और भारत ने पहली पारी में 60 रन की बढ़त ले ली।

सहवाग अस्वस्थ होने के कारण यह मैच नहीं खेल रहे थे। द्रविड़ ने गंभीर के साथ पहली पारी की शुरुआत की। दूसरी पारी में वह पठान को लेकर उतरे, जिन्होंने 93 रन बनाकर भारत को मजबूत शुरुआत दी।

भारत ने तीसरे दिन का खेल समाप्त होने तक पांच विकेट पर 237 रन बना लिए। चौथी सुबह गांगुली 39 रन बनाकर आउट हो गए।

ऐसे में वनडे क्रिकेट जैसे हालात पैदा हो गए। उस मौके पर युवराज और धोनी से बढ़िया जोड़ी नहीं हो सकती थी। द्रविड़ चाहते थे कि टीम 400 से अधिक रन बनाए और

चौथे दिन आखरी सत्र में श्रीलंका को कुछ देर बल्लेबाजी के लिए उतारे ताकि उनके गेंदबाज शुरुआती विकेट चटका सकें।

इस युवा जोड़ी ने सातवें विकेट की अटूट साझेदारी में 119 गेंद में 105 रन जोड़कर ऐसा ही किया। द्रविड़ ने छह विकेट पर 375 रन के स्कोर पर पारी घोषित की तब युवराज 77 और धोनी 61 रन बनाकर क्रीज पर थे।

मुरली भले ही पहली पारी में कमाल कर गए, लेकिन इस बार धोनी ने उन्हें खेलने का शऊर सीख लिया था। उन्होंने आते ही मिडऑन पर चौका जड़कर मुरली का स्वागत किया।

लेग स्पिनर मलिंगा बंदारा की गेंद पर उन्होंने लंच के बाद दो गगनचुंबी छक्के जमाए। कप्तान द्रविड़ ने इससे जरूर राहत महसूस की होगी।

चाय तक श्रीलंका ने सिर्फ एक विकेट गंवाया था, लेकिन उसके बाद कुंबले ने धावा बोला और चौथे दिन के अंत तक श्रीलंका के पांच विकेट 123 रन पर उखड़ गए। जीत के लिए उसके सामने 436 रन का दुरूह लक्ष्य था।

अगले दिन कुंबले ने ही कहानी का अंत करते हुए मैच में दस विकेट चटकाए।

लेकिन जीत का जश्न मनाने की बजाय भारतीय टीम एक और विवाद में फंस गई जब 40 और 39 रन बनाने के बावजूद गांगुली को अहमदाबाद में होने वाले तीसरे और आखरी टैस्ट के लिए टीम में जगह नहीं मिली।

सहवाग टीम में लौटे और वसीम जाफर की भी वापसी हुई। युवराज ने दूसरी पारी में अच्छा स्कोर बनाकर टीम में जगह पक्की कर ली और ऐसा लगने लगा कि अंतिम एकादश में गांगुली के लिए स्थान नहीं रह गया है।

यह सफाई हालांकि क्रिकेट प्रेमियों के लिए नाकाफी थी। कोलकाता समेत पूरे देश में विरोध प्रदर्शन हआ। कप्तान द्रविड़, कोच चैपल और चयन समिति के प्रमुख किरण मोरे क्रिकेट प्रेमियों का कोपभाजन बने।

टैस्ट की पूर्व संध्या पर द्रविड़ बीमार हो गए और सहवाग ने पहली बार टीम की बागडोर संभाली।

इससे कोई फर्क नहीं पड़ा। भारत ने 259 रन से जीत दर्ज करके श्रृंखला 2-0 से अपने नाम कर ली।

भारतीयों की शुरुआत हालांकि अच्छी नहीं रही थी। पहले दिन मेजबान टीम के पांच बल्लेबाज उस समय पैवेलियन लौट गए जब स्कोर बोर्ड पर सिर्फ 97 रन टंगे थे।

वीवीएस लक्ष्मण, धोनी और पठान के प्रयासों से स्कोर छह विकेट पर 247 रन तक पहुंचा।

धोनी सातवें नंबर पर उतरे और उनके बाद पठान लिहाजा भारतीय बल्लेबाज क्रम काफी मजबूत लग रहा था। झारखंड के इस विकेटकीपर ने ऐसे मुश्किल समय में लक्ष्मण का साथ निभाया।

धोनी के सकारात्मक रवैये से पहली बार गेंदबाजों पर दबाव बना। वह जोखिम नहीं लेने के बावजूद आक्रामक बल्लेबाजी कर रहे थे। उनके मैदान पर उतरने के समय लक्ष्मण

23 रन बना चुके थे। लेकिन लक्ष्मण के 50 रन पूरे होने तक उनके खाते में भी 49 रन थे। वह लगातार दूसरा टैस्ट अर्धशतक नहीं बना सके और मुरली ने उन्हें पगबाधा आउट कर दिया।

अगले दिन लक्ष्मण ने सैकड़ा जड़ दिया जबकि पठान ने 82 रन बनाए। भारत ने 398 रन बनाकर पहली पारी में 192 रन की अहम बढ़त ली।

दूसरी पारी नौ विकेट पर 316 के स्कोर पर घोषित कर दी गई यानी अब भारत के पास गेंदबाजी का भरपूर समय था।

यह श्रृंखला जीतकर भारत आईसीसी टैस्ट रैंकिंग में ऑस्ट्रेलिया के बाद दूसरे स्थान पर पहुंच गया। 2001 में रैंकिंग शुरू होने के बाद से पहली बार टीम इंडिया इस मुकाम तक पहुंची थी।

इसके तुरंत बाद होने वाले पाकिस्तान दौरे के लिए यह आदर्श टीम थी। धोनी ने अपने बल्ले और विकेटकीपिंग के जलवे दिखाकर अपनी जगह महफूज कर ली थी।

सरहद पार के इस दौरे के लिए गांगुली को टीम में शामिल किए जाने से यह यक्षप्रश्न खड़ा हो गया कि लाहौर में पहले टैस्ट में कप्तान कौन होगा।

टीम प्रबंधन पर बीसीसीआई के आला अधिकारियों का भारी दबाव था कि गांगुली को अंतिम एकादश में जगह दी जाए। इससे बल्लेबाजी क्रम का संतुलन बिगड़ा। विशेषज्ञ सलामी बल्लेबाज वसीम जाफर और गंभीर को दरकिनार किया गया। द्रविड़ के पास पारी का आगाज करने के अलावा कोई चारा नहीं था जैसे कि उन्होंने श्रीलंका के खिलाफ दिल्ली टैस्ट में किया था। इस बार यह दाव सटीक बैठा।

गद्दाफी स्टेडियम की सपाट पिच और मौसम की मेहरबानी से पहला टैस्ट ड्रॉ रहा। द्रविड़ और सहवाग क्रिकेट के इतिहास के सबसे पुराने रिकॉर्ड में से एक तोड़ने से सिर्फ चार रन से चूक गए।

पाकिस्तान ने सात विकेट पर 679 के स्कोर पर पारी घोषित की जिसमें चार बल्लेबाजों ने शतक बनाए। यूनिस खान टैस्ट क्रिकेट में 199 पर रनआउट होने वाले पहले बल्लेबाज बने। शाहिद अफरीदी, मोहम्मद यूसुफ और कामरान अकमल ने भी तिरहे अंक को छुआ।

भारत ने भी माकूल जवाब दिया। सहवाग (254) और द्रविड़ (नाबाद 128) ने पहले विकेट के लिए 410 रन जोड़े और टैस्ट मानो यहीं खत्म हो गया था।

पहले विकेट के लिए सबसे बड़ी साझेदारी पंकज राय और वीनू मांकड़ ने 5 बरस पहले की थी जब उन्होंने 413 रन जोड़े थे। दो साल बाद दक्षिण अफ्रीका के नील मैकेंजी और ग्रीम स्मिथ ने इसे तोड़ा।

दोनों टीमों का रनरेट 4.93 प्रति ओवर था जो कि टैस्ट मैच में रन गति का एक रिकॉर्ड है।

फैसलाबाद में दूसरा टैस्ट भी गेंदबाजों की कब्रगाह साबित हुआ।

इस बार निशाने पर भारतीय गेंदबाज थे जिनकी पाकिस्तानी कप्तान इंजमाम उल हक और अफरीदी ने धुनाई की। पाकिस्तान ने 588 रन बना डाले।

द्रविड़ (103) और लक्ष्मण (90) ने ऊपरी क्रम में मोर्चा संभाला लेकिन भारत के पांच विकेट सहज 45 रन के भीतर गिर गए। एक समय पर स्कोर पांच विकेट पर 281 रन था और भारत को फालोआन टालने के लिए अभी भी 100 रन की दरकार थी। ऐसे में धोनी क्रीज पर उतरे।

गांगुली को इस मैच में मौका नहीं दिया गया क्योंकि टीम प्रबंधन ने पांच विशेष गेंदबाजों को उतारने का फैसला किया था।

एक छोर से दूसरी नई गेंद लेकर शोएब तूफानी रफ्तार से गेंद फेंक रहे थे, और सपाट पिच से भी उन्हें उछाल मिल रही थी। बकौल धोनी वे काफी दबाव में थे।

उन्हें पहली छह गेंद 146 से 152 किलोमीटर प्रति घंटे की गति से फेंकी गई।

दूसरी गेंद पर उन्होंने चौका जड़ा। लेकिन यह बल्लेबाज का हुनर नहीं था, बल्कि तेज वेग से आ रही गेंद पर उन्होंने बल्ला अड़ाया भर था।

"शॉर्ट गेंद को खेलना आसान नहीं था क्योंकि उछाल ऊंचाई पर नहीं था। यह बेहद कठिन पहला ओवर था।" (*क्रिकइन्फो* मैगजीन, मार्च 2006 में धोनी ने कहा)

उन्होंने दूसरा ओवर विपरीत छोर से देखा और फिर रफ्तार के इस सौदागर के सामने डटकर खड़े हो गए।

"मैं या तो यहां खड़ा रहकर रक्षात्मक खेल दिखाता या फिर आत्मविश्वास के साथ अपने शॉट खेलता। मैंने अपना स्वाभाविक खेल दिखाना बेहतर समझा। यह सरल विकल्प था।"

ओवर की पहली गेंद सीधे धोनी के ललाट की ऊंचाई पर थी। लेकिन वह फैसला ले चुके थे और इन्हीं फैसलों पर कैरियर बनते या बिगड़ जाया करते हैं।

इस गेंद पर स्क्वेयर लेग में उन्होंने छक्का जड़ दिया। इस स्ट्रोक में विवियन रिचर्ड्स की तरह अभिमान दिख रहा था। उन्होंने अपने इरादे जाहिर कर दिए। यह एक ऐसा बल्लेबाज था जो अपना समय गेंद को सिर्फ बल्ले से छूकर छोड़ देने में बर्बाद नहीं करने वाला था।

उन्होंने बाद में कहा, "मैं आउट होने के परिणामों के बारे में सोच भी नहीं रहा था। रन बनाकर फॉलोऑन टालने का यही एक जरिया था। मैं जानता था कि यह तीन या चार ओवर का ही स्पैल होगा।"

दूसरे छोर पर शोएब का गुस्सा सातवें आसमान पर था। उसने गति बढ़ाई लेकिन लय खो दी। धोनी का आत्मविश्वास बढ़ा और उन्होंने कुछ और दर्शनीय स्ट्रोक्स लगाए। बाद में शोएब को हार माननी पड़ी और सिर झुकाकर वह हट गए।

अफरीदी और दानिश कनेरिया ने धोनी और पठान की एकाग्रता तोड़ने के लिए छींटाकशी का भी सहारा लिया। इस युवा जोड़ी पर इसका कोई असर नहीं पड़ा, जिन्होंने मैदान के चारों और बेहतरीन शॉट लगाए।

कनेरिया की गेंद तो एक बार इकबाल स्टेडियम से बाहर ही चली गई। अगली गेंद पर भी उसी तरह का स्ट्रोक खेलकर धोनी ने 34 गेंदों में 50 रन पूरे किए।

उन्होंने अपना पहला टैस्ट शतक सिर्फ 93 गेंदों में पूरा कर लिया। दूसरी ओर से पठान ने उनका बखूबी साथ निभाया। भारत का स्कोर तीसरे दिन के अंत तक पांच विकेट पर

441 रन था। धोनी 116 और पठान 49 रन पर खेल रहे थे।

उस दिन प्रेस कांफ्रेंस में द्रविड़ ने धोनी की पारी को 'सर्वश्रेष्ठ जवाबी पारियों' में से एक बताया। उन्होंने यह भी कहा कि धोनी के खेल में अभी और निखार आएगा। उन्होंने कहा, "दबाव के क्षणों में ऐसी पारियां मैंने कम ही देखी हैं। उसे नई गेंद का सामना करना पड़ा और उसने गेंदबाजों की धुनाई की।"

उन्होंने कहा कि इसे सिर्फ ताबड़तोड़ पारी नहीं कहा जा सकता। आक्रामक शुरुआत के बाद धोनी क्रीज पर जम गए और अपना विकेट नहीं गंवाया।

"यह समझबूझ वाली पारी थी। उसने आरंभ में अपने शॉट खेले लेकिन बाद में इरफान के साथ संयमित पारी खेली। यह एक महान पारी थी और मुझे यकीन है कि आगे वह और भी उम्दा खेलेगा। इससे उसका मनोबल कई गुना बढ़ गया होगा।" द्रविड़ ने बाद में कहा।

'दृढ़ता', 'साहस' और 'योग्यता' द्रविड़ ने धोनी की पारी को इन्हीं उपमाओं से बयान किया।

चौथे दिन भी काफी काम बाकी था। दोनों ने अपनी साझेदारी 210 रन की कर ली, जो पाकिस्तान के खिलाफ भारत के लिए एक रिकॉर्ड है। भारत ने 15 रन की बढ़त ले ली।

पठान अपने पहले शतक से महज दस रन से चूक गए जबकि धोनी 150 रन से दो रन पीछे रह गए। सुबह के सत्र में 29 गेंद में 33 रन बनाने के बाद वह कनेरिया की गेंद पर स्टम्पिंग का शिकार हो गए। उन्होंने करीब 100 रन चौकों-छक्कों से बनाए।

दूसरी पारी में यूनिस और यूसुफ के सैकड़ों के बावजूद मैच अपेक्षा के अनुरूप ड्रा पर छूटा। इसमें धोनी ने अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट में अपना पहला और अब तक का एकमात्र ओवर फेंका जिसमें 13 रन बने।

कपिल देव ने 1978 में इसी मैदान पर पहला टैस्ट खेला था। कालांतर में उन्होंने अपनी बल्लेबाजी और गेंदबाजी दोनों से क्रिकेट प्रेमियों का दिल जीता। इस महान हरफनमौला को इस मैच में इस युवा विकेटकीपर बल्लेबाज में अपनी कुछ झलक नजर आई होगी। उन्होंने भारत से धोनी को भेजे एक संदेश में कहा कि वह 'हीरो' बन गया है। कप्तान से जमकर तारीफें मिलने के बावजूद अपना पांचवां टैस्ट खेल रहे धोनी के लिए तब तक का यह सबसे बेहतरीन पैगाम था।

दस दिन तक मुर्दा पिच ने दोनों टीमों के गेंदबाजों को बुरी तरह थका दिया। कराची में तीसरे टैस्ट में हालांकि उन्हें खासकर पाकिस्तानियों को बदला चुकता करने का मौका मिला।

मेजबान टीम का खेल के हर विभाग में बराबरी से मुकाबला करने के बाद भारत ने पठान की पहली और ऐतिहासिक हैट्रिक के बावजूद मैच पर से पकड़ ढीली कर दी। पठान की हैट्रिक की वजह से पाकिस्तान का स्कोर एक समय छह विकेट पर 39 रन था।

पाकिस्तान ने हालांकि 245 रन बना लिए, जिसमें अकमल ने शतक बनाया। मेजबान को सात रन की बढ़त मिली। अकमल को 80 के स्कोर पर जीवनदान भी मिला जब कुंबले की गेंद पर धोनी ने उन्हें स्टम्प आउट करने का मौका गंवाया।

आक्रामक बल्लेबाजी के दम पर पाकिस्तान ने दूसरी पारी सात विकेट पर 599 रन बनाकर घोषित की। चौथे दिन भारतीय बल्लेबाजी ताश के पत्तों की तरह ढह गई और उसे 341 रन से शर्मनाक हार का सामना करना पड़ा।

द्रविड़ की टीम के लिए यह निराशाजनक अंत था। वे मोहम्मद आसिफ और अब्दुल रज्जाक की गेंदों को मिल रही गति और उछाल का सामना नहीं कर पाए। लेकिन टीम इंडिया ने इसके बाद होने वाली वनडे श्रृंखला में बदला लेने की ठानी।

भारतीयों के लिए यह एक दमदार जीत थी। श्रीलंका को अपनी सरजमीं पर 61 से हराने के बाद उसने पाकिस्तान को उसी की धरती पर 4-1 से शिकस्त दी। इससे संकेत मिला कि द्रविड़ और चैपल की जोड़ी शुरुआती अड़चनों के बाद आखिरकार कामयाब हो रही है। यह श्रृंखला मैन ऑफ द सीरिज युवराज के बेहतरीन प्रदर्शन के कारण यादगार रही तो धोनी भी पीछे नहीं थे।

पाकिस्तान ने पेशावर में खेला गया पहला मैच डकवर्थ लुईस पद्धति से जीता। खराब रोशनी के कारण मैच जल्दी खत्म हो गया, तब पाकिस्तान को 18 गेंद पर 18 रन चाहिए थे और उसके तीन विकेट बाकी थे। इससे पहले भारत ने 328 रन बनाए थे।

तेंदुलकर ने 10 महीने में पहला शतक बनाकर अपने आलोचकों का मुंह बंद कर दिया। उन्हें पठान (65) और धोनी (68) से पूरा सहयोग मिला।

इसके बाद से भारतीय टीम ने मुड़कर नहीं देखा। रावलपिंडी में पाकिस्तान के 265 रन के जवाब में भारत ने सात ओवर और सात विकेट बाकी रहते जीत हासिल की।

पाकिस्तान के आठ विकेट पर 288 रन के जवाब में 35 वें ओवर में भारत का स्कोर पांच विकेट पर 195 रन था और मैच का पासा किसी भी तरफ पलट सकता था।

ऐसे में एक बार फिर युवराज और धोनी संकटमोचन की भूमिका में उतरे और 13 ओवर में 102 रन की साझेदारी करके टीम को जीत तक पहुंचाया।

युवराज ने 87 गेंद में नाबाद 79 रन बनाए। वहीं धोनी ने सिर्फ 46 गेंद में 72 रन की आतिशी पारी खेली। उन्हें मैन ऑफ द मैच पुरस्कार मिला और *विजडन क्रिकेटर्स अलमनैक* ने उनकी बल्लेबाजी की समीक्षा कुछ यूं किः “यह हुडदंगी, हिंसक और अहंकार से भरी थी।”

वहीं इसके विपरीत द्रविड़ ने कहा, “अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट में इतने नए खिलाड़ी को इस तरह दबाव का सामना करते देखना अच्छा लगा। पिछले छह-आठ महीने से हमारी कामयाबी में उसका बहुत बड़ा योगदान रहा है।”

जब 92 गेंद में 99 रन की जरूरत थी तब धोनी क्रीज पर थे। उसकी दमदार बल्लेबाजी से ज्यादा उसे लेकर बनी हाइप से सभी हतप्रभ थे।

अपने कैरियर के इतने शुरुआती मुकाम पर भारत और पाकिस्तान के मैच में लक्ष्य का पीछा करने का दबाव इतने संयम के साथ झेलना वाकई काबिले तारीफ था।

धोनी ने खुद स्वीकार किया है कि उसे लगा कि यह उसके कैरियर की सर्वश्रेष्ठ पारियों में से एक है। उन्होंने इसे विशाखापत्तनम में खेली गई 148 रन की पारी से भी ऊपर रखा। उन्होंने कहा, “मेरे 148 रन से मेरी टीम जीती और यह निर्णायक मौके पर खेली गई पारी

थी। मेरे लिए वह सुनहरा मौका था लेकिन यहां काफी दबाव था। यह उस मायने में कहीं बेहतर पारी है।”

इसके साथ ही उन्होंने एक दिवसीय कैरियर में 33 वां मैच खेलते हुए 1000 रन पूरे कर लिए। उनका औसत 50.19 और स्ट्राइक रेट 107.44 था।

अब भारत के सितारे बुलंदी पर थे और मुल्तान में पांच विकेट से जीत दर्ज करके उन्होंने श्रृंखला अपने नाम कर ली। धोनी को बल्लेबाजी के लिए नहीं उतरना पड़ा, लेकिन उन्होंने अजित अगरकर की गेंद पर यूसुफ का डाइव लगाकर दर्शनीय कैच लपका।

कराची में पांचवें और आखरी वनडे में भारतीय क्रिकेट के दोनों पोस्टर बॉय युवराज और धोनी फिर चमके। पाकिस्तान ने आठ विकेट पर 286 रन बनाए थे। भारत ने सिर्फ दो विकेट गंवाकर लक्ष्य हासिल कर लिया। युवराज ने श्रृंखला में पहला सैकड़ा बनाया और धोनी 77 रन बनाकर क्रीज पर डटे रहे। उन्होंने 56 गेंद की पारी में छह चौके और चार छक्के लगाए मानो पाकिस्तानी गेंदबाजों का इम्तेहान ले रहे हों।

युवराज 68 , 72 नाबाद, दो नाबाद और 77 नाबाद के स्कोर के साथ मैन ऑफ द सीरिज रहे। धोनी भी ज्यादा पीछे नहीं थे।

उनकी मैच जिताने की काबिलियत के बारे में ड्रेसिंग रूम में कोच ने कहा था, “वह ज्यादा बोलता नहीं और उसे अपनी मौजूदगी का अहसास है। जब वह बोलता है तो उसकी बात में दम होता है। वह दिमाग से बोलता है। उसमें एक ईमानदारी झलकती है जो आकर्षक है। यह छद्म ईमानदारी नहीं है। उसका आत्मविश्वास कमाल का है।” (*क्रिकइन्फो* मैगजीन)

अध्याय छह

इंडियन आइडल और सुपर स्टार धोनी

देश के लिए पहली बार खेलने के 16 महीने के भीतर ही अपनी आक्रामक बल्लेबाजी और स्टाइल के कारण धोनी देशभर के युवाओं के आदर्श बन गए।

उन्हें जब 2006 में एमटीवी ने युवा आइकन चुना तो किसी को हैरानी नहीं हुई। क्रिकेट प्रेमियों खासकर युवा वर्ग के बीच उनकी रॉक-स्टार छवि हिट थी।

धोनी इसका श्रेय क्रिकेट को देते हैं। पुरस्कार लेते समय उन्होंने एमटीवी पर कहा था, “मुझे लगता है कि यह प्रतिष्ठित पुरस्कार है। युवाओं ने वोट देकर विजेता का चयन किया है। बाकी दूसरे दावेदार अलग-अलग क्षेत्रों से थे लिहाजा मुझे लगता है कि मेरे जीतने में क्रिकेट की अहम भूमिका रही।”

उन्होंने जुलाई-अगस्त 2004 में भारत ए टीम के साथ केन्या और जिम्बाब्वे के दौरे पर बाल लंबे कर रखे थे। उन्हें विश्वास होने लगा कि सैमसन की तरह ये लंबे बाल उनके लिए लकी हैं और इससे उन्हें ताकत तथा ऊर्जा मिलती है।

यही वजह है कि पाकिस्तानी राष्ट्रपति परवेज मुशर्रफ ने जब उनके हेयर स्टाइल की तारीफ की तो अंतर्राष्ट्रीय मीडिया में सुर्खी बन गई।

मुशर्रफ ने 13 फरवरी 2006 को लाहौर वनडे के बाद पारितोषिक वितरण समारोह में माइक पर कहा था, “दर्शकों ने बहुत सारे पोस्टरों में लिखा था कि आपको बाल कटवा लेने चाहिए। यदि आप मेरी राय पूछो तो आप इसी हेयर स्टाइल में जंचते हो।”

उनके चौड़े कंधों, झलकते आत्मविश्वास और आक्रामक बल्लेबाजी ने लोगों को वेस्टइंडीज के महान बल्लेबाज विवियन रिचर्ड्स की याद दिला दी जो दुनिया भर के गेंदबाजों के लिए आतंक का पर्याय हुआ करते थे।

पिछली पीढ़ी को साठ के दशक के भारतीय विकेटकीपरों फारूक इंजीनियर और बुधी कुंदरन की याद ताजा हो आई जो अपनी आक्रामक बल्लेबाजी के कारण लोकप्रिय हुए थे।

धोनी ने पीढ़ी के इस अंतर को पाट दिया और सभी आयु वर्ग के बीच अपनी लोकप्रियता के कारण वह धीरे-धीरे कॉर्पेरेट जगत के लिए रिकॉर्ड समय में एक बड़ा और भरोसेमंद ब्रांड भी बन गए।

उनकी मर्दाना छवि से मेल खाता है मोटर बाइक से उनका लगाव। गति, ताकत और पौरुष के परिचायक बन गए धोनी।

भारत के विज्ञापन जगत को तो मानो पारसमणि ही मिल गई। बालों की क्रीम से लेकर जूते पॉलिश करने वाली क्रीम तक दर्जनों उत्पादों के विज्ञापन के लिए उनके दरवाजे पर कंपनियों की कतार लग गई। इसमें मोटरबाइक निर्माता कंपनियां भी थीं।

इनमें से चेरी ब्लॉसम शू पॉलिश का एक विज्ञापन काफी चर्चित था जिसमें वह रेलवे की वर्दी में अपनी तकदीर बदलने की कहानी सुनाते हैं।

ट्वेंटी-20 विश्वकप जीतने के बाद लोकप्रियता के शिखर पर पहुंचे धोनी का फिल्म जगत से तो नाता जुड़ना ही था। एक विज्ञापन में उन्होंने सुपर स्टार शाहरूख खान के साथ काम किया, अभिनेत्री दीपिका पादुकोण के साथ उनके रोमांस के किस्से सुर्खियों में रहे। इसमें कोई दो राय नहीं कि भारतीयों के दिलों में इस सुपर स्टार ने गहरी पैठ बना ली थी।

उनके तत्कालीन मैनेजर *गेमप्लान स्पोर्ट्स* के जीत बनर्जी ने *स्पोर्ट्स स्टार* (14 अक्टूबर 2006) में उनकी लोकप्रियता के बारे में कहा, “यह कई चीजों का संयोजन है। सबसे पहले मैदान पर उनके प्रदर्शन ने विज्ञापन कंपनियों को लुभाया। उन्होंने अपने दम पर भारत के लिए मैच जीते हैं। फिर वह एक छोटे से कस्बे से निकलकर यहां तक पहुंचे हैं। उन्होंने लोगों की आंखों को सपने दिए। उनके लंबे बालों की भी इस लोकप्रियता में अहम भूमिका रही है।”

बनर्जी ने ऐसी कई अलग-अलग उत्पाद बनाने वाली कंपनियों के नाम लिए जो धोनी से विज्ञापन कराना चाहती थीं, जिससे साबित होता है कि उनकी लोकप्रियता सामाजिक-आर्थिक अवरोधों से ऊपर थी। बनर्जी ने कहा, “ *जीई मनी* ने हमें बताया कि वैश्विक स्तर पर उनके दो ही ब्रांड एम्बेस्डर हैं, रोजन फेडरर और धोनी।”

अभिनेता जॉन अब्राहम और उनकी मोटरबाइक फिल्म ‘धूम’ की कामयाबी से धोनी का लुक और भी चर्चित हो गया। पूरा देश ‘धोनी मनिया’ में रंग गया।

उसके पास 2006 में चार मोटरबाइक थीं, एक 650 सीसी यामाहा थंडरवर्ड, एक आरडी 350 , एक बुलेट मशिस्मो और एक सीबीजेड। यह संख्या अब कई गुना बढ़ गई है और इसमें एक अत्याधुनिक अपनी तरह की अनोखी बाइक भी है जो उन्हें उस ब्रांड ने तोहफे में दी है जिसके लिए वे आजकल विज्ञापन कर रहे हैं। इसके अलावा दो एसयूवी भी हैं।

रांची के आसपास हाइवे बाइक चलाने के लिए उत्तम है और धोनी इन सड़कों पर 180 घंटा प्रति किलोमीटर की गति से बाइक चलाते हैं। घर जाने पर तनावमुक्त होने का यह उनका अपना तरीका है।

रांची में लड़कपन के दिनों में सड़कों पर सरपट दौड़ती मोटरबाइक उन्हें बेहद लुभाती थीं और तभी से उन्हें तेज रफ्तार का चस्का लगा। उन्होंने कहा, “मुझे बाइक चलाना बहुत

पसंद है। इससे मुझे एक तरह की ऊर्जा मिलती है।”

एक्साइड बैटरी, चेरी ब्लॉसम शू पॉलिश, जीई मनी, टीवीएस बाइक, पेप्सी, रीबॉक, भारत पेट्रोलियम और वीडियोकोन इलेक्ट्रॉनिक्स ऐसे ब्रांड हैं जिनसे धोनी शुरुआत में जुड़े। अब वे करीब 25 ब्रांड के लिए विज्ञापन कर रहे हैं।

बाइकिंग के अलावा धोनी को अपने प्ले स्टेशन पर कंप्यूटर गेम खेलना भी पसंद है। उन्होंने खुद खुलासा किया, “मैदान के बाहर अधिकांश समय मैं यही खेलता हूं। लेकिन मैं तभी खेलना पसंद करता हूं जब दो या तीन घंटे लगातार खेलने का समय मिले। मुझे खेल बीच में छोड़ना, फिर अभ्यास के लिए जाना और वापस लौटकर खेलना पसंद नहीं है। मुझे फर्स्ट पर्सन शूटिंग खेल जैसे *काउंटर स्ट्राइक, ब्लैक हाक डाउन* और *मैन ऑफ वेलोर* पसंद है।”

रांची में उन्हें अपने कुत्तों ज़ारा और सैम के साथ समय बिताना पसंद है। यह पूछने पर कि वह किस तरह की लड़की से विवाह करना पसंद करेंगे, उनका जवाब होता है कि उसे जानवरों से प्यार होना चाहिए।

रांची उनके दिल के बहुत करीब है और इतनी दौलत तथा शोहरत कमाने के बावजूद उन्होंने कभी रांची छोड़कर कहीं और बसने की इच्छा नहीं जताई।

उनके इसी लगाव ने उन्हें अपने शहरवासियों का नूरे नजर बना रखा है। (विश्वकप के तुरंत बाद वाले शर्मनाक प्रकरण का जिक्र बाद में करेंगे)। जब वह शहर में नहीं होते हैं, तब भी युवा उनके घर के बाहर खड़ी बाइक पर फूलमालाएं पहनाकर उस शख्स के प्रति सम्मान व्यक्त करते हैं जिसने अकेले दम पर रांची को विश्व क्रिकेट के मानचित्र पर ला दिया है।

जैसा कि मैंने प्रारंभिक अध्याय में लिखा था कि धोनी की सफलता ने रांची को क्रिकेट का दीवाना बना दिया। इसके क्लब लीग में अब 85 टीमें हैं। छह साल में यह संख्या दोगुनी हो गई है। इसके अलावा कम से कम सात कोचिंग शिविरों में 25 से 100 बच्चे क्रिकेट का ककहरा सीख रहे हैं। राज्य के चयन ट्रायल में 600 से ज्यादा लड़के आते हैं और इसका श्रेय धोनी के जादू को जाता है।

राष्ट्रीय स्तर के कोच बताते हैं कि कैसे छोटे कस्बों के लड़के बड़े शहरों के लड़कों से ज्यादा समर्पित और मेहनती होते हैं। धोनी भी इससे पूरी तरह सहमत हैं।

पहले उपेक्षा के शिकार इन खिलाड़ियों के राष्ट्रीय टीम में आने से उदीयमान खिलाड़ियों का आत्मविश्वास बढ़ा है।

धोनी ने स्वीकार किया है कि बढ़ती लोकप्रियता से उनके जीवन में निजता नहीं रह गई है। वह प्रशंसकों की भीड़ और टीवी चैनलों के कैमरों द्वारा पीछा किए जाने के कारण अपने घर से निकलकर बाल कटवाने के लिए सैलून तक भी नहीं जा सकते।

इसके बावजूद वह हमेशा जोर देते हैं कि उन्होंने अपनी जड़ों को नहीं भुलाया है और अपने बचपन के दोस्तों और रांची के कोचों के हमेशा करीब रहेंगे।

धोनी ने कहा, “मानसिक और शारीरिक तौर पर सबकुछ वैसा ही है। फर्क है तो इतना कि आजकल मैं यात्रा अधिक करता हूं। विज्ञापन जैसी चीजों से मुझे फर्क नहीं पड़ता

क्योंकि मेरे एजेंट यह सब देखते हैं। मैं अब भी रांची का वही लड़का हूं।" (*द स्पोर्ट्सस्टार,* 3 दिसंबर 2005)

निश्चित तौर पर उन्हें आने वाले समय में भी देश-विदेश की कई यात्राएं करनी थी।

संयुक्त अरब अमीरात, वेस्टइंडीज, श्रीलंका, मलेशिया, दक्षिण अफ्रीका और वह भी 12 महीने के भीतर।

सबसे पहले अपनी धरती पर इंग्लैंड का सामना करना था।

एशेज के हीरो एंड्रयू फ्लिंटाफ अब माइकल वान की जगह इंग्लैंड के कप्तान थे। नागपुर के पहले टैस्ट से पूर्व मेहमान टीम की हालत खिलाड़ियों की चोट और नाम वापस लेने के कारण खस्ता थी।

दूसरी ओर भारतीय खेमा आत्मविश्वास से ओतप्रोत था और उसे श्रृंखला जल्दी जीत लेने की उम्मीद थी। लेकिन ऐसा हुआ नहीं।

नागपुर में इंग्लैंड ने पहले पारी की संक्षिप्त बढ़त बना ली और पांचवीं सुबह पारी घोषित करने के बाद कुछ पल को उस पर पराजय का खतरा मंडराने लगा। भारत ने कठिन लक्ष्य का पीछा करते हुए देर से वापसी की कोशिश की। ड्रा के बावजूद मैच में इंग्लैंड का पलड़ा भारी रहा।

मोहाली के दूसरे टैस्ट में भारत ने संक्षिप्त बढ़त कायम की। दूसरी पारी में इंग्लैंड की टीम 181 रन पर सिमट गई और भारत ने नौ विकेट से मैच जीत लिया।

द्रविड़ और उनकी टीम को लगा था कि मुंबई टैस्ट जीतना कोई मुश्किल नहीं होगा लेकिन उन्हें करारा झटका लगा।

एक बार फिर इंग्लैंड ने बढ़त बनाई लेकिन इस बार यह महत्वपूर्ण 121 रन की थी।

धोनी ने पहले दो टैस्ट में कोई कमाल नहीं किया था। लेकिन मुंबई टैस्ट की पहली पारी में उन्होंने अपनी बल्लेबाजी का एक नया आयाम पेश किया।

भारत की आधी टीम 142 के स्कोर पर पैवेलियन जा चुकी थी, जब वह पठान का साथ देने आए। दोनों ने काफी जवाबदेही के साथ बल्लेबाजी की।

धोनी ने सर्वाधिक 64 रन बनाए। द्रविड़ ने भी अर्धशतकीय पारी खेली। आखरी पांच बल्लेबाजों की मदद से स्कोर 279 रन हो गया।

इंग्लैंड के गेंदबाजों ने काफी किफायती गेंदबाजी की और धोनी को अपने स्वाभाविक स्ट्रोक्स खेलने का मौका नहीं मिल सका। जब वह 14 रन पर थे तब फिलंटाफ की एक गेंद उन्हें सिर पर लगी लेकिन फिजियों के मैदान पर चेकअप करने के बाद वह दोबारा खेलने लगे।

उन्होंने फिलंटाफ को लगातार तीन चौके जमाए लेकिन तीसरे अंपायर ने विवादित तरीके से उन्हें रन आउट दे दिया। रिप्ले में पता ही नहीं चल पा रहा था कि गिल्लियां सही समय पर गिरी हैं अथवा नहीं।

दूसरी पारी में इंग्लैंड की टीम 191 रन पर आउट हो गई और भारत को 312 रन का लक्ष्य मिला जो मुश्किल था लेकिन नामुमकिन नहीं। आखरी दिन भारतीय बल्लेबाजी चरमरा गई और पूरी टीम 100 रन पर सिमट गई। इंग्लैंड ने मैच जीत लिया।

हार के लिए सभी बल्लेबाज कसूरवार थे लेकिन धोनी (पांच) को जिम्मेदाराना शॉट खेलने के लिए सबसे ज्यादा आलोचना झेलनी पड़ी। पहली पारी में तीन घंटे से ज्यादा रक्षात्मक खेल दिखाने के बाद दूसरी पारी में उन्हें आक्रामक होना महंगा पड़ा। पहले उन्होंने स्पिनर शान उड़ाल की गेंद पर मिड ऑफ में कैच उछाल दिया जिसे मोंटी पनेसर लपक नहीं सके। तीन गेंद बाद धोनी ने उसी शॉट को दोहराया और इस बार पनेसर ने कोई गलती नहीं की।

भारतीय बल्लेबाजी की दुर्दशा का पता इसी से चल जाता है कि सात विकेट लंच के बाद 15.2 ओवर में सिर्फ 25 रन के भीतर गिर गए।

इंग्लैंड की टीम टैस्ट श्रृंखला 1-1 से ड्रा करके बहुत खुश थी लेकिन एक दिवसीय श्रृंखला में उसकी सारी खुशी जाती रही।

इस बार मेजबान टीम ने 5-1 से जीत हासिल की और एक मैच बारिश में धुल गया। श्रीलंका को 6-1 से और पाकिस्तान को 4-1 से हराने के बाद यह एक और बड़ी जीत थी। पांच हार और 17 जीत का रिकॉर्ड अच्छी उपलब्धि था और द्रविड़-चैपल की जोड़ी भारतीय क्रिकेट में जादू बिखेर रही थी।

धोनी को बल्लेबाजी का मौका कम ही मिला लेकिन जमशेदपुर में छठे मैच में दर्शकों को उनके बल्ले के जौहर देखने का अवसर मिल गया।

भारत तब तक श्रृंखला जीत चुका था हालांकि इंग्लैंड ने एक मैच अपने नाम किया था। दर्शकों की नजरें इस मैच में अपने स्थानीय हीरो पर लगी थी।

धोनी ने सहवाग के साथ पारी की शुरुआत की और कई बार अनर्गल शॉट भी खेले। वह बल्ले का इस्तेमाल टेनिस रैकेट की तरह कर रहे थे। जब भी वह हमला बोलने पर उतारु होते हैं तो ऐसा ही करते हैं। ऐसे में गेंदबाज के सामने कोई विकल्प नहीं रह जाता।

वह अपने तीसरे वनडे शतक से चार रन पीछे रह गए। सातवें और आखरी वनडे में उन्हें आराम देकर कार्तिक को उतारा गया। दिसंबर 2004 में टीम में शामिल होने के बाद से यह पहला मैच था जिसमें वह बाहर रहे थे।

भारत ने कोच्चि में चौथा मैच जीतने के साथ एक रिकॉर्ड भी कायम किया था। यह लक्ष्य का पीछा करते हुए उसकी लगातार 15 वीं जीत थी। टीम इंडिया ने वह रिकॉर्ड तोड़ा जो 80 के दशक में कैरेबियाई टीम ने कायम किया था। इनमें से सात मैचों में स्कोर 250 से अधिक था। यानी दबाव के आगे घुटने टेकने वाली टीम का ठप्पा अब हटने लगा था।

कोच्चि में मिली जीत भारत की लगातार आठवीं जीत थी। युवराज और धोनी ने बेहतरीन खेल दिखाया। श्रीलंका के खिलाफ अक्टूबर 2005 में खेली गई श्रृंखला के बाद से विजय पथ पर चल रही भारतीय टीम के छह महीने के शानदार प्रदर्शन में युवराज और धोनी ने 100 से अधिक की औसत से रन बनाए।

श्रीलंका के खिलाफ श्रृंखला से पहले वनडे रैंकिंग में सातवें नंबर पर काबिज टीम इंडिया इंग्लैंड पर मिली जीत के बाद आईसीसी एक दिवसीय विश्व रैंकिंग में तीसरे नंबर पर आ गई थी।

पाकिस्तान के खिलाफ अप्रैल की भीषण गर्मी में अबुधाबी में खेली गई दो मैचों की निरर्थक श्रृंखला 1-1 से ड्रा रही। भारतीय टीम थकी हुई थी लेकिन पहला मैच छह विकेट से हारने के बाद उसने दूसरा 51 रन से जीता जिसमें धोनी ने 59 रन बनाए।

इस पारी के बाद वह 20 अप्रैल 2006 को जारी आईसीसी वनडे रैंकिंग में चोटी के बल्लेबाज हो गए। धोनी ने एक अंक से रिकी पोंटिंग को हटाया भले ही वह एक सप्ताह तक ही सिंहासन पर काबिज रह सके। यह सम्मान पाने वाले वह पहले भारतीय बल्लेबाज बने।

दिसंबर 2004 में वनडे क्रिकेट में पदार्पण के बाद से धोनी ने 32 मैचों में 52 की औसत से 103 की स्ट्राइक रेट से रन बनाए।

इसके बाद भारतीय टीम को सीधे वेस्टइंडीज दौरे पर जाना था। इससे पहले यूएई में संक्षिप्त श्रृंखला थी। वेस्टइंडीज में भारतीय टीम के अश्वमेधी अभियान में नकेल पड़ गई।

किंगस्टन में श्रृंखला का पहला मैच पांच विकेट से जीतकर भारत ने अपेक्षा के अनुरूप शुरुआत की।

इसके बाद से पतन प्रारंभ हुआ। ड्वेन ब्रावो की एक उम्दा गेंद के दम पर वेस्टइंडीज ने दूसरा वनडे जीता। उस गेंद पर भारतीय टीम के खेवनहार युवराज 93 के स्कोर पर बोल्ड हो गए। वह आखरी ओवर की चौथी गेंद थी और भारत एक रन से हार गया।

अगले मैच में भी भारत ने आखरी ओवर में पराजय का सामना करके मेजबान टीम को 2-1 से बढ़त बनाने का मौका दे दिया। पोर्ट ऑफ स्पेन में अगले दो मैच ब्रायन लारा की टीम ने आसानी से जीत लिए।

पिछले छह महीने से चढ़ा जीत का खुमार अचानक काफूर हो गया। अचानक सवाल उठने लगे और अब तक देशभर की प्रिय रही द्रविड़-चैपल की जोड़ी कटघरे में आ गई। अब तक सफल रहे प्रयोग अचानक ही आलोचना के दायरे में आ गए। यह जायज भी था क्योंकि वेस्टइंडीज टीम रैंकिंग में आठवें नंबर की थी। उससे नीचे सिर्फ बांग्लादेश और जिम्बाब्वे थे जबकि भारतीय टीम तीसरे नंबर पर थी।

धोनी के लिए भी यह खराब दौर था जिनका पांच पारियों में सर्वाधिक स्कोर 46 रन था। इसके बाद खेली गई टैस्ट श्रृंखला में उन पर भी काफी दबाव था।

ऐसे में अपने खिलाड़ियों पर भरोसा रखने की कप्तान और कोच की पहल काम आई और भारत ने 1971 के बाद पहली बार वेस्टइंडीज में टैस्ट श्रृंखला जीती। भारतीय टीम आरंभ से ही छाई रही और तकदीर साथ देती तो वह श्रृंखला 1-0 की बजाय 3-0 से जीतती।

पहले और दूसरे टैस्ट में किस्मत ने लारा की टीम का साथ दिया।

सेंट जोंस में पहले टैस्ट में 130 रन से पिछड़ने के बावजूद भारत जीत की दहलीज पर पहुंच गया था लेकिन आखरी कैरेबियाई जोड़ी ने अंतिम 19 गेंदों का डटकर सामना करते हुए मैच ड्रा करा लिया।

उन्होंने दूसरी पारी छह विकेट पर 521 रन बनाकर घोषित की थी। भारत के लिए सलामी बल्लेबाज वसीम जाफर ने श्रृंखला का सर्वोच्च स्कोर 212 रन बनाया जबकि धोनी

ने 52 गेंद में 69 रन बनाकर रन गति बढ़ाई।

चौथे दिन उनकी लारा से नोंकझोंक भी हुई जो आखरी दिन चर्चा का विषय रही।

धोनी ने स्पिनर डेव मोहम्मद को लगातार तीन छक्के लगाए। चौथा लगाने की कोशिश में वह मिडविकेट सीमा के पास डेरेन गंगा द्वारा लपक लिए गए। तीसरे अंपायर बिली डोक्ट्रोव से पूछा गया कि क्या कैच लपकते समय फिल्डर ने सीमा रेखा को छुआ था। रिप्ले से कोई नतीजा नहीं निकल रहा था लिहाजा फैसला मैदानी अंपायरों पर ही छोड़ दिया गया। लारा का बर्ताव देखते हुए धोनी ने मैदान छोड़ने का फैसला किया और द्रविड़ ने पारी घोषित कर दी।

लारा ने आरोप लगाने के लहजे में अंपायर पर उंगली उठाई और उनके हाथ से गेंद भी छीन ली। खेल भावना को लेकर बहस होने लगी। धोनी के पास अपनी आखरी टैस्ट श्रृंखला खेल रहे सबसे सीनियर खिलाड़ी के सामने दबाव के आगे घुटने टेकने के सिवाय कोई चारा नहीं था।

चौथे दिन का खेल धुलने के बाद वेस्टइंडीज ने सेंट लूसिया में दूसरे टैस्ट में एक बार फिर लय खो दी। फालोआन खेलते हुए उसने दूसरी पारी में सात विकेट गंवाकर बमुश्किल मैच ड्रा कराया।

किंगस्टन में चौथा और आखरी टैस्ट निर्णायक हो गया था।

गेंदबाजों और द्रविड़ के बेहतरीन प्रदर्शन की बदौलत भारत ने तीन दिन के भीतर 49 रन से जीत हासिल कर ली।

इंग्लैंड को 1986 में हराने के बाद से उपमहाद्वीप के बाहर यह भारत की पहली जीत थी। वनडे श्रृंखला में हार के बाद भारतीय टीम का खोया मनोबल फिर लौटा।

श्रीलंका में तीन मैचों की श्रृंखला बारिश से धुल गई। इसके बावजूद वनडे क्रिकेट में भारतीय टीम के प्रदर्शन पर लगा ग्रहण नहीं हट सका। ऑस्ट्रेलिया और वेस्टइंडीज के खिलाफ डीएलएफ त्रिकोणीय श्रृंखला में वह फाइनल तक नहीं पहुंच सकी और अपनी ही धरती पर चैम्पियंस ट्रॉफी में उसका प्रदर्शन निराशाजनक रहा।

भारत में यह टूर्नामेंट पहली बार हो रहा था लेकिन कुछ भी उसके अनुकूल नहीं रहा।

इंग्लैंड को जयपुर में खेले गए पहले मैच में मेजबान ने चार विकेट से मात दी। लेकिन अहमदाबाद में वेस्टइंडीज से हारने के बाद से मोहाली में आखरी ग्रुप मैच में ऑस्ट्रेलिया को हर हालत में हराना था।

मेजबान टीम मैच पर एक पल के लिए भी पकड़ नहीं बना सकी और सेमीफाइनल तक भी नहीं पहुंच पाई। मुंबई में खेले गए फाइनल में ऑस्ट्रेलिया ने वेस्टइंडीज को हराकर पहली बार चैम्पियंस ट्रॉफी जीती।

वर्ष 2006 के आखिर में दक्षिण अफ्रीकी दौरे पर भारत का 4-0 से सूपड़ा साफ हो गया। पाकिस्तान पर 4-1 से जीत और इंग्लैंड को 5-1 से हराने के बाद अप्रतिम सफलता के साथ शुरू हुए वर्ष का अंत शर्मनाक पराजयों की सिलसिलेवार दास्तानों के साथ हुआ।

धोनी उन चुनिंदा भारतीय बल्लेबाजों में से थे जिनका प्रदर्शन कुछ हद तक ठीक रहा। उन्होंने केपटाउन में तीसरे मैच में चार छक्कों की मदद से 48 गेंद में 55 रन बनाए। श्रृंखला

में उनका स्कोर 14.26 और 44 रन रहा।

वेस्टइंडीज दौरे के बाद भारत ने 15 में से सिर्फ तीन मैच जीते। वर्ष 2006 में भारत 13 मैच जीत सका जबकि 15 में उसे पराजय का सामना करना पड़ा और दो मैच बेनतीजा रहे। इससे 2007 में वेस्टइंडीज में होने वाले विश्वकप की तैयारियों की कलई खुल गई थी।

एकमात्र जीत जोहानिसबर्ग में 1 दिसंबर को खेले गए एकमात्र ट्वेंटी-20 अंतर्राष्ट्रीय मैच में मिली। वीरेंद्र सहवाग की अगुआई में भारतीय टीम ने अपना पहला ट्वेंटी-20 मैच एक गेंद बाकी रहते छह विकेट से जीता।

इससे पहले तीन दौरों पर भारतीय टीम दक्षिण अफ्रीका में टैस्ट जीतने के करीब भी नहीं पहुंच सकी थी। लेकिन जोहानिसबर्ग के न्यू वांडरर्स स्टेडियम पर खेले गए पहले टैस्ट के चार नाटकीय दिनों में सबकुछ बदल गया।

गांगुली के लिए टीम इंडिया के दरवाजे फिर खुले। उन्हें अंतिम एकादश में जगह मिली और उन्होंने करिश्मा कर दिखाया।

कम स्कोर वाले मैच में उन्होंने पहली पारी में सर्वाधिक 51 रन की नाबाद पारी खेली जिसकी बदौलत भारत ने 249 रन बनाए।

युवा तेज गेंदबाज एस. श्रीसंत के आगे दक्षिण अफ्रीकी बल्लेबाजी की चूलें हिल गई और अचानक ही यह मामूली स्कोर बेहद चुनौतीपूर्ण लगने लगा। अपना छठा टैस्ट खेल रहे श्रीसंत ने पहली बार एक पारी के पांच विकेट चटकाए।

दक्षिण अफ्रीकी टीम सात विकेट पर 47 रन के स्कोर से 84 रन पर पैवेलियन लौट गई। भारतीयों को अपनी आंखों पर यकीन नहीं हुआ। यह 1992 में अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट में वापसी के बाद पहला टैस्ट खेलने वाली दक्षिण अफ्रीकी टीम का न्यूनतम टैस्ट स्कोर था।

दूसरी पारी में लक्ष्मण ने उम्दा बल्लेबाजी की और दक्षिण अफ्रीका को 402 रन का लक्ष्य मिला जो उसके लिए इस पिच पर बेहद मुश्किल था।

भारत ने वह टैस्ट 123 रन से जीता। ड्रेसिंग रूम में जश्न का माहौल था और जीत के इस खुमार में काफी संपत्ति को नुकसान हुआ और लंबा चौड़ा बिल बन गया।

लेकिन जैसा कि पिछले कुछ साल में अक्सर देखा गया है, भारतीय टीम जीत के शिखर पर पहुंचने के बाद नाकामी की गर्त में गिर गई।

ग्रीम स्मिथ की टीम ने डरबन में दूसरा टैस्ट 174 रन से जीतकर श्रृंखला बराबर कर ली। पांच दिन में खराब रोशनी के कारण करीब सौ ओवर का नुकसान हुआ। भारत का आखरी विकेट गिरने के दस मिनट के भीतर फिर बारिश शुरू हो गई।

भारतीय बल्लेबाजों ने दूसरी पारी में निराश किया जबकि मौसम के मिजाज को देखते हुए ड्रा के लिए उन्हें बस क्रीज पर डटे रहना था। भारतीय बल्लेबाजों का सामना दुनिया के सर्वश्रेष्ठ तेज गेंदबाजों से था जिससे वे दबाव में आ गए।

आंद्रे नेल, मखाया एनटिनी, अपना पहला मैच खेल रहे मोर्नी मोर्केल और शान पोलाक ने गति, सटीकता और आक्रामकता के साथ गेंदबाजी की।

भारत के लिए 354 रन का लक्ष्य मुश्किल था। उसने चौथे दिन दो विकेट गंवा दिए जिसके बाद बल्लेबाजों को ड्रा के लिए ही खेलना था।

अगले दिन स्कोर छह विकेट पर 85 रन था और लग रहा था कि मेजबान जल्दी ही जीत जाएगा। लेकिन भारत के पुछल्ले बल्लेबाजों ने मौसम पर नजर रखते हुए संयम का प्रदर्शन किया हालांकि तब तक बहुत देर हो चुकी थी।

पहली पारी में 34 रन बनाने वाले धोनी ने 47 रन बनाए जो दक्षिण अफ्रीका के तूफानी गेंदबाजों के हाथों हो रही तबाही को रोकने के लिए नाकाफी थे।

केपटाउन में तीसरे और आखरी टैस्ट में छाती में संक्रमण और उंगली में घाव के कारण धोनी को बाहर बैठना पड़ा। कार्तिक ने पहली बार टैस्ट क्रिकेट में पारी का आगाज किया। सितंबर 2005 के बाद से यह उसका पहला टैस्ट था। उसने 63 रन बनाए और जाफर के साथ 153 रन जोड़े।

भारत ने पहली पारी में 414 रन जोड़े, लेकिन दूसरी पारी में एक बार फिर बल्लेबाजों ने गैर जिम्मेदाराना प्रदर्शन किया। दक्षिण अफ्रीका ने पांच विकेट से मैच जीत लिया।

चैपल का पारा सातवें आसमान पर था और उन्होंने संकेत दे दिए कि अच्छा प्रदर्शन करने वालों के लिए ही टीम में जगह है।

दूसरी बार सातवें नंबर पर बल्लेबाजी करते हुए कार्तिक 38 रन बनाकर नाबाद रहा और उसने पांच कैच भी लपके।

लेकिन इस साल विश्वकप होना था और एक बार फिर सभी की नजरें क्रिकेट के इस महासमर पर पड़ गई।

अध्याय सात

विश्वकप में हार और उसके बाद

मार्च में होने वाले नौवें विश्वकप के लिए उल्टी गिनती शुरू हो चुकी थी। पहली बार क्रिकेट का यह महासमर कैरेबियाई सरजमीं पर आयोजित हो रहा था।

वेस्टइंडीज और श्रीलंका भारत का दौरा करके एक दिवसीय श्रृंखला एं खेल चुके थे जो भारत ने क्रमश: 3-1 और 2-1 के अंतर से जीती थीं।

सबसे ज्यादा चर्चा सौरव गांगुली की टीम में वापसी को लेकर हो रही थी जिन्होंने श्रीलंका के खिलाफ मैन ऑफ द सीरिज का पुरस्कार जीतकर विश्वकप के लिए भारत की 15 सदस्यीय टीम में जगह बनाई थी।

युवराज सिंह भी कुछ महीना पहले चैम्पियंस ट्रॉफी के दौरान लगी चोट से उबरने के बाद टीम में लौटे थे।

वेस्टइंडीज के खिलाफ धोनी ने एक बार फिर बल्ले के जौहर दिखाए। नागपुर में पहले वनडे में उन्होंने 42 गेंद में अविजित 62 रन बनाए और भारत 14 रन से वह मैच जीता। उन्होंने आखरी 11.5 ओवर में द्रविड़ के साथ 119 रन जोड़े।

भारत ने कटक में दूसरा मैच 20 रन से जीता और चेन्नई में तीसरे वनडे में धोनी को आराम देकर दिनेश कार्तिक को उतारा गया। वेस्टइंडीज ने यहां श्रृंखला में एकमात्र जीत दर्ज की।

वड़ोदरा में चौथे और आखरी मैच में धोनी टीम में लौटे। भारत ने 160 रन से मैच जीतकर श्रृंखला 3-1 से अपने नाम कर ली। इस मैच में धोनी ने सिर्फ 20 गेंद में नाबाद 40 रन बनाए। इसके साथ ही भारत ने एक साल पहले वेस्टइंडीज में मिली 1-4 से हार का बदला चुकता कर लिया।

श्रीलंका के खिलाफ कोलकाता में पहले मैच में बारिश के कारण कोई परिणाम नहीं निकल सका। राजकोट में दूसरा मैच श्रीलंका ने पांच रन से जीता। धोनी के खाते में 48 रन रहे।

भारत ने मडगांव में तीसरा मैच पांच विकेट से जीतकर श्रृंखला में बराबरी कर ली। धोनी ने सर्वाधिक 67 रन बनाए और वह अंत तक आउट नहीं हुए। तेज गेंदबाज जहीर खान पांच विकेट लेकर मैन ऑफ द मैच बने।

श्रीलंका के आठ विकेट पर 230 रन के जवाब में भारत का स्कोर एक समय चार विकेट पर 94 रन था और बल्लेबाजी बिखरने लगी थी। पिछले साल लक्ष्य का पीछा करते हुए लगातार 17 जीत का विश्व रिकॉर्ड बनाने वाली भारतीय टीम ने उसके बाद लय खो दी थी। भारतीय खेमे को राहत देते हुए द्रविड़ और धोनी ने पांचवें विकेट के लिए 133 रन की साझेदारी करके लक्ष्य तक पहुंचाया।

विशाखापत्तनम में धोनी को बल्लेबाजी की जरूरत ही नहीं पड़ी। चौथा मैच भारत ने सात विकेट से जीता और श्रृंखला 2-1 से अपने नाम कर ली। वर्ष 2007 में भारत के लक्ष्य का कामयाबी के साथ पीछा करने के विश्व रिकॉर्ड में धोनी की अहम भूमिका रही। लेकिन राजकोट में उन्होंने 48 रन की पारी में सिर्फ एक चौका लगाया और वह भी 67 वीं गेंद पर। अगली गेंद पर वह आउट हो गए और भारत पांच रन से हार गया।

मडगांव में उन्होंने कप्तान के सहायक की भूमिका निभाई और 32 रन बनाने में 49 गेंद खेल डाली। इस पारी में भी उन्होंने संयम का परिचय देते हुए चार ही चौके जड़े।

वर्ष 2006 के आखिर में औसत प्रदर्शन के बाद विश्वकप से ठीक पहले भारतीय टीम ढर्रे पर आती नजर आ रही थी। टीम इंडिया अब कैरेबियाई धरती पर होने वाले क्रिकेट के महायुद्ध के लिए पूरी तरह तैयार थी।

इस टीम के 15 में से नौ सदस्य 2003 विश्वकप भी खेल चुके थे। कप्तान द्रविड़ अपना तीसरा और कप्तान के रूप में पहला विश्वकप खेल रहे थे।

कपिल के रणबांकुरों ने 1983 में वेस्टइंडीज सरीखे दो बार के चैम्पियन को हराकर जब चैम्पियन का ताज पहना था, उसके बाद से ही हर विश्वकप में टीम इंडिया प्रबल दावेदारों में से एक मानी जाती आई है। भारतीय क्रिकेट प्रेमियों की अपेक्षाएं आसमान छू रही थीं।

इसके पीछे ठोस कारण भी था कि चार बरस पहले दक्षिण अफ्रीका में सौरव गांगुली की कप्तानी में टीम एक बार फिर 1983 का इतिहास दोहराने की ड्योढ़ी पर पहुंचकर फाइनल में ऑस्ट्रेलिया से हार गई थी।

इस बार भारत की संभावना को लेकर जबरदस्त मीडिया हाइप थी। भारतीय क्रिकेट प्रेमियों की विश्वकप में दिलचस्पी 1983 के बाद काफी बढ़ गई थी। टीवी चैनलों की बाढ़ और क्रिकेट पर पैसा लुटाने को आतुर कॉर्पोरेट जगत में भांति-भांति के प्रलोभनों ने देश भर को क्रिकेट के बुखार की गिरफ्त में ले लिया था। भारतीय टीम भले ही खिताब की सबसे बड़ी दावेदार ना हो लेकिन मीडिया हाइप के मद्देनजर लोगों की उम्मीदें कई गुना बढ़ गई थीं।

पिछली चैम्पियन ऑस्ट्रेलियाई टीम ग्रुप ए में दक्षिण अफ्रीका, स्कॉटलैंड और हॉलैंड के साथ थी जबकि भारत ग्रुप बी में श्रीलंका, बांग्लादेश और बरमूडा के साथ था।

ग्रुप सी में इंग्लैंड, कनाडा, केन्या और न्यूजीलैंड थे और ग्रुप डी में पाकिस्तान, आयरलैंड, वेस्टइंडीज और जिम्बाब्वे की टीमें थीं। हर ग्रुप से पहली दो टीमें सुपर आठ चरण में पहुंचने वाली थीं।

आईसीसी को भारत और पाकिस्तान की 15 अप्रैल को बारबाडोस में टक्कर होने की उम्मीद थी।

नतीजतन भारत और पाकिस्तान के हजारों समर्थकों ने होटलों और आलीशन क्रूसलाइनर पर बुकिंग करा ली। इनमें से ज्यादातर क्रिकेट प्रेमी अमेरिका से थे जिनके लिए एशियाई चिर प्रतिद्वंद्वियों की क्रिकेट के मैदान पर जंग देखने का यह बिरला मौका था।

विश्वकप के इतिहास के दो सबसे बड़े उलटफेरों में से एक पहले ही मैच में भारत को बांग्लादेश के हाथों मिली हार थी। दूसरी ओर आयरलैंड ने जमैका में उसी दिन पाकिस्तान को हराकर क्रिकेट जगत में सनसनी फैला दी। उपमहाद्वीप के ये दोनों दिग्गज पहले ही दौर से बाहर हो गए और आर्थिक कसौटी पर विश्वकप का फ्लॉप होना अब दीवार पर लिखी इबारत था।

आयरलैंड के हाथों अप्रत्याशित हार वाली रात को पाकिस्तानी कोच बॉब वूल्मर की दुखद मौत ने विश्वकप को विवादों के घेरे में ला दिया। इसके बाद से अब क्रिकेट के खेल पर नहीं बल्कि इंग्लैंड के पूर्व क्रिकेटर की रहस्मयी मौत पर सारी तवज्जो चली गई।

भारतीय टीम को तीन ग्रुप मैच त्रिनिदाद के पोर्ट ऑफ स्पेन स्थित क्वींस पार्क ओवल पर खेलने थे जहां भारतीय मूल के लोग भारी संख्या में बसे हैं। उनके लिए 1953 में भारतीय टीम के पहले वेस्टइंडीज दौरे के बाद से हर बार भारत के क्रिकेटरों का दौरा अपने वतन की याद दिलाने जैसा होता है। तब उनमें से किसी ने नहीं सोचा होगा कि उनकी टीम का यह हश्र होगा।

सत्रह मार्च को खेले गए पहले मैच में बांग्लादेश को हल्के में लेने की चूक भारतीयों पर भारी पड़ी। ऐसी रिपोर्ट थी कि भारतीय क्रिकेटर मैच के लिए तैयारी करने की बजाय यहां जश्न में मशगूल रहे।

उस दिन टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने का द्रविड़ का फैसला किसी के गले नहीं उतरा। भारतीय टीम 49.3 ओवर में 191 रन पर सिमट गई। सिर्फ गांगुली 50 से ज्यादा रन बना सके जिन्होंने 129 गेंद में 66 रन बनाए।

गांगुली और युवराज (47) ने पांचवें विकेट के लिए 85 रन जोड़े। भारत के पांच विकेट सिर्फ एक रन के भीतर गिर गए और धोनी तो खाता भी नहीं खोल सके।

मध्यम तेज गेंदबाज मशरेफ मुर्तजा ने शुरुआती दो विकेट चटकाए और दूसरे स्पैल में भी दो विकेट लिए। बांग्लादेशी स्पिनरों की तिकड़ी ने बेहद कसी हुई गेंदबाजी की। यहां तक कि तेंदुलकर को भी रन बनाने में दिक्कत हो रही थी जिन्होंने 26 गेंद में महज सात रन बनाए। भारतीय बल्लेबाजों ने निहायत गैर जिम्मेदाराना प्रदर्शन किया और अब सारी उम्मीदें गेंदबाजों पर टिकी थी।

ऐसा हालांकि हुआ नहीं। बांग्लादेश के तीन युवा बल्लेबाज तामिम इकबाल, मुशफिकर रहीम और सकीबुल हसन ने अर्धशतक जमाकर भारतीय गेंदबाजी की बखिया उधेड़

डाली। बांग्लादेश ने नौ गेंद और पांच विकेट बाकी रहते जीत हासिल कर ली। बांग्लादेश में जहां इस जीत के बाद जश्न का माहौल था, वहीं भारत में हर कोई स्तब्ध रह गया। भारतीय क्रिकेट प्रेमी तड़के मैच खत्म होने पर अविश्वास से आंखें मलते रह गए।

विश्वकप में खराब शुरुआत भारतीयों के लिए परंपरा सी हो गई है। नौ टूर्नामेंटों में यह छठी बार हुआ जब भारत ने पहला मैच हारा हो। लेकिन इस बार उसे सुपर आठ चरण में पहुंचने के लिए अब किसी चमत्कार की जरूरत थी। टूर्नामेंट की तैयारियों में बरती गई ढिलाई अब खुलकर नजर आ रही थी।

भारत का अगला मैच बरमूडा से था जो उसने भारी अंतर से जीतकर अपना नेट रन रेट सुधारा। इसके बाद आखरी ग्रुप मैच में उसे श्रीलंका को हराना था। वह मैच भी हारने पर उसे आखरी ग्रुप मैच में बरमूडा की बांग्लादेश पर जीत की प्रार्थना करनी होती जो दोनों टीमों के फॉर्म को देखते हुए नामुमकिन था। श्रीलंका ने अपेक्षा के अनुरूप बांग्लादेश को हरा दिया।

भारत और बरमूडा का मैच पूरी तरह से एकतरफा था। विश्वकप में 400 से ज्यादा रन बनाने का भारत ने रिकॉर्ड बनाया और जीत का अंतर—257 रन—भी विश्वकप के इतिहास में सबसे बड़ा था। (इसके बाद जुलाई 2008 में न्यूजीलैंड ने आयरलैंड को अबेरदीन में 290 रन से हराया)।

सहवाग ने 114 , गांगुली ने 89 और युवराज ने 83 रन बनाए। भारत ने पांच विकेट पर 413 रन का पहाड़ खड़ा कर दिया। जवाब में बरमूडा की टीम 156 रन पर सिमट गई। वैसे इस मैच की जीत खुशी का सबब नहीं थी। बरमूडा विश्वकप की सबसे कमजोर टीम जो थी।

भारत-श्रीलंका मैच पर सभी की नजरें थी। श्रीलंकाई टीम अगले चरण में पहुंच चुकी थी जबकि भारत टूर्नामेंट में वजूद बनाए रखने के लिए जूझ रहा था।

23 मार्च द्रविड़ और उनकी टीम के साथ दुनिया भर के करोड़ों भारतीय क्रिकेट प्रेमियों के लिए महत्वपूर्ण दिन था। यह करो या मरो का मुकाबला था और पूरे देश की सांसें थमी हुई थीं।

भारत के खिलाफ श्रीलंका ने पिछले 10 में से सिर्फ दो मैच जीते थे लेकिन इस मैच में वह शुरू ही से आत्मविश्वास से ओतप्रोत नजर आई। भारत के लिए एक ही सकारात्मक बात रही, द्रविड़ का टॉस जीतना। बांग्लादेश के खिलाफ पहले बल्लेबाजी की गलती से सबक लेते हुए उन्होंने इस बार श्रीलंका को बल्लेबाजी का न्यौता दिया।

भारतीय गेंदबाजों ने बेहतर प्रदर्शन करते हुए श्रीलंका को छह विकेट पर 254 रन के स्कोर पर रोक दिया।

भारत के बल्लेबाजों ने बुरी तरह मायूस किया। बारूद के ढेर पर बैठे कप्तान द्रविड़ ने एक छोर संभाले रखा जबकि दूसरी ओर से विकेटों का पतन जारी रहा। सहवाग (48) से उन्हें सहयोग मिला लेकिन बाद में अकेले दम पर उन्हें मोर्चा संभालना पड़ा। गांगुली और तेंदुलकर नाकाम रहे तो युवराज बेवकूफाना ढंग से रन आउट हो गए।

टूट चुके कप्तान के लिए आखरी उम्मीद धोनी थे, जो पहली ही गेंद पर खाता खोले बिना पगबाधा आउट हो गए। गेंदबाज मुरलीधरन के अपील करने या अंपायर के फैसला सुनाने से पहले ही उन्होंने पैवेलियन का रुख कर लिया। द्रविड़ ने लसिथ मलिंगा को लगातार चार चौके जड़े जिसमें आक्रोश और लाचारगी नजर आ रही थी। उन्होंने अपनी आंखों के सामने अपनी टीम को यूं घुटने टेकते जो देखा था।

मुरली तीन विकेट और दो कैच लेकर मैन ऑफ द मैच रहे। श्रीलंका 69 रन से जीत गया। अब भारत की एक ही उम्मीद थी कि ग्रुप बी के आखरी लीग मैच में बरमूडा की टीम बांग्लादेश को हराने का करिश्मा कर दे।

ऐसा उसकी नियति में नहीं लिखा था। विश्वकप के इतिहास में भारत का यह दूसरा सबसे खराब प्रदर्शन था। इससे पहले 1979 में दूसरे विश्वकप में भी उसे श्रीलंका ने ही हराकर बाहर किया था। और हां, एक अनहोनी और होने को थी। यानी बारबाडोस में 15 अप्रैल को भारत और पाकिस्तान का नहीं बल्कि बांग्लादेश बनाम बरमूडा मुकाबला था।

श्रीलंका से मिली हार के बाद मीडिया ने द्रविड़ और कोच चैपल पर सवालों की झड़ी लगा दी। द्रविड़ ने बार-बार अपनी निराशा व्यक्त की जबकि चैपल ने रक्षात्मक रवैया अपनाते हुए कई सवालों को ‘भड़काऊ’ बताकर उनका जवाब नहीं दिया। कोच के साथ मतभेद तो पिछले कुछ समय से थे ही लेकिन वेस्टइंडीज में विश्वकप अभियान की शुरुआत से ही वे जाहिर होने लगे। टीम में आक्रामकता और जुझारूपन का घोर अभाव देखा गया।

चैपल को भी बखूबी इल्म था कि उनकी नौकरी खतरे में है। उन्हें विश्वकप तक नियुक्त किया गया था लेकिन अब उनके अनुबंध के नवीनीकरण की कोई उम्मीद नहीं थी। उन्होंने पद से हटाए जाने से पहले ही इस्तीफा दे दिया। अनिल कुंबले ने भी टीम की वापसी के बाद एक दिवसीय क्रिकेट से संन्यास लेने की घोषणा कर दी।

सबसे ज्यादा दुख की बात भारत में क्रिकेट प्रेमियों की प्रतिक्रिया रही, जिसने पूरे देश को शर्मसार कर दिया। ऐसा लगने लगा कि भारत में क्रिकेट का जुनून और कुछ नहीं बल्कि तर्क से परे एक तरह का कट्टरवाद है। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया ने देश भर में हुए विरोध प्रदर्शन की कार्रवाई को बढ़-चढ़कर दिखाया।

रांची में उपद्रवियों के एक छोटे से समूह ने टीवी कैमरों के सामने धोनी को झारखंड सरकार द्वारा दी गई संपत्ति पर हमला बोल दिया। बाद में पता चला कि उन्होंने खुद को किसी स्थानीय राजनीतिक दल का सदस्य बताकर टीवी चैनलों को अपनी इस हरकत के बारे में पहले ही सूचित कर दिया था। इससे उन्हें 15 सेकंड के लिए टीवी फुटेज मिल गई। ऐसी ही घटना मुंबई में तेंदुलकर के घर के पास और पुणे में जहीर खान के रेस्त्रां के पास हुई। टीवी कैमरे हर जगह मौजूद थे।

माही के माता-पिता निश्चित तौर पर क्रोधित थे। अपने बेटे की उपलब्धियों पर गौरवान्वित होकर सभी समाचार चैनलों पर अपनी प्रतिक्रिया देने वाले पान सिंह और देवकी ने इन चैनलों का बहिष्कार कर दिया था। इसी अंदाज में उन्होंने अपने जज्बात जाहिर किए।

बोर्ड ने भी जनता की भावनाओं में बहकर आनन-फानन में कदम उठाया। उसने देश के क्रिकेटरों को इस तरह से दिशा-निर्देश जारी कर दिए मानो वे कोई स्कूली बच्चे हों।

क्रिकेट हलकों में ऐसा लंबे समय से महसूस किया जाता रहा था कि खिलाड़ियों के एजेंटों का चयन के मामलों में गैर जरूरी दखल होता है। ऐसी भी अफवाहें उड़ीं कि बल्ले पर अपने लोगो का प्रचार करने वाली कंपनियों ने खिलाड़ियों को रन बनाने की बजाय क्रीज पर ज्यादा देर डटे रहने के लिए बोनस देने का प्रावधान किया था। इन अफवाहों की हालांकि कभी पुष्टि नहीं हो सकी। यक्ष प्रश्न यह था कि विश्वकप में भारत के कुछ आला बल्लेबाजों की धीमी रन गति का कारण क्या वे स्पष्ट कर सकते हैं।

बीसीसीआई ने अब फैसला किया कि कोई भी खिलाड़ी तीन से अधिक उत्पादों के विज्ञापन नहीं करेगा और किसी भी खिलाड़ी को किसी श्रृंखला से दो सप्ताह पहले और बाद में किसी उत्पाद का विज्ञापन करने की अनुमति नहीं होगी और सिर्फ कप्तान ही अखबार में कॉलम लिख सकेगा।

भारतीय क्रिकेटरों की निजी स्वतंत्रता खतरे में पड़ती देख एजेंटों की लॉबी ने तुरंत हरकत में आते हुए मीडिया अभियान आरंभ कर दिया। भारतीय क्रिकेट काफी नीचे गिर गया था। कड़वाहट की गंध साफ महसूस की जा सकती थी।

ये कड़े कदम लंबे समय तक कायम नहीं रखे जा सके। सिर्फ छह महीने बाद दक्षिण अफ्रीका में टीम इंडिया ने एक अलग किस्म का विश्वकप जीता।

विश्वकप में जल्दी बाहर जाने के बाद खिलाड़ियों को अगली चुनौती के बारे में सोचने के लिए काफी समय मिल गया। विश्वकप खत्म होने के दो सप्ताह बाद भारतीय टीम ने बांग्लादेश का दौरा करके वनडे और टैस्ट श्रृंखलाएं जीतीं। लेकिन विश्वकप में मिली हार का बदला चुकता करने जैसी कोई भावना अब निरर्थक थी।

चैपल के जाने के बाद टीम के पास कोई कोच नहीं था। बोर्ड ने फौरी तौर पर पूर्व टैस्ट कप्तान रवि शास्त्री को क्रिकेट मैनेजर नियुक्त करने का चतुराई भरा फैसला किया।

तेंदुलकर और गांगुली को वनडे श्रृंखला में 'आराम' दिया गया हालांकि कइयों का यह मानना था कि यह टीम से बाहर करने का बहाना भर था। दोनों की हालांकि बाद में खेली गई दो टैस्ट मैचों की श्रृंखला के लिए वापसी हुई।

मीरपुर में पहले वनडे में भारतीय टीम को बांग्लादेश ने फिर चौंका दिया। धोनी यदि करिश्माई प्रदर्शन नहीं करते तो बांग्लादेश के खिलाफ पिछले चार मैचों में भारत को तीसरी हार का सामना करना पड़ता। भीषण गर्मी और आर्द्रता के अलावा मांसपेशियों में खिंचाव के बावजूद धोनी डटकर बल्लेबाजी करते रहे। युवराज ने उनके रनर की भूमिका निभाई।

बांग्लादेश ने 47 ओवर में सात विकेट पर 250 रन बनाए। बारिश के कारण ओवरों की संख्या कम कर दी गई। विकेट टूटने लगा था। भारत का स्कोर एक समय पांच विकेट पर 114 रन था और उसे 113 गेंद में 107 रन की जरूरत थी। क्रीज पर दो विकेटकीपर बल्लेबाज धोनी और कार्तिक थे।

तीसरे नंबर पर भेजे गए धोनी ने 39 के स्कोर पर रनर बुला लिया। अपनी आक्रामक शैली से परे धोनी ने अपनी बल्लेबाजी का एक बिरला आयाम पेश करके भारत को जीत

दिलाई।

धोनी और कार्तिक ने मेजबान गेंदबाजों से मिलने वाली कड़ी चुनौती का डटकर मुकाबला करते हुए नाबाद शतकीय साझेदारी की बदौलत एक ओवर बाकी रहते भारत को जीत की सौगात दी। मैन ऑफ द मैच धोनी 91 रन बनाकर अविजित रहे।

मैच के बाद द्रविड़ ने मीडिया से कहा, “धोनी सिर्फ एक अंदाज में नहीं खेलता है। वह तकनीक बदलने का हुनर रखता है। वह हालात के मुताबिक खेलता है और इतनी कमउम्र में यह गुण वरदान है।”

भारत ने दूसरा वनडे 46 रन से जीता और तीसरा बारिश के कारण नहीं हो सका। चटगांव में पहला टैस्ट भी बारिश के कारण ड्रॉ रहा। इसके बाद ढाका में दूसरे टैस्ट में भारतीय बल्लेबाज पूरी रंगत में दिखे।

पहले चार बल्लेबाजों ने सैंकड़े जमाए और धोनी 51 रन बनाकर नाबाद रहे। भारत ने तीन विकेट पर 610 रन के विशाल स्कोर पर पारी की घोषणा की। बांग्लादेश को तीन दिन के भीतर ही एक पारी और 239 रन से पराजय झेलनी पड़ी।

द्रविड़ ने दौरा खत्म होने के बाद कहा, “यदि हमने अच्छा प्रदर्शन नहीं किया होता तो लोग कहते कि ये क्या हो गया। हम जीत गए तो कोई बड़ी बात नहीं है। यह काफी कठिन दौर था।”

इससे बड़ी चुनौती इंग्लैंड के लंबे दौरे के रूप में इंतजार कर रही थी।

इस बीच जून की चिलचिलाती धूप में बेंगलुरू और चेन्नई में तीन वनडे मैचों का दूसरा एफ्रो एशियाई कप खेला गया जिसे औचित्यहीन कहा जाए तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। दक्षिण अफ्रीका में खेला गया पहला एफ्रो एशिया कप बुरी तरह नाकाम रहा था। दूसरे की कहानी भी कुछ अलग नहीं रही। उपमहाद्वीपीय टीमों को यूं आईसीसी द्वारा मान्य आधिकारिक अंतर्राष्ट्रीय मैचों में भिड़ते देखना दुनिया के क्रिकेट सांख्यिकीविदों और पत्रकारों को रास नहीं आया। यही कारण है कि चोटी के खिलाड़ी इस टूर्नामेंट से कन्नी काट गए।

एशिया एकादश ने एकतरफा जीत दर्ज की लेकिन मैदान पर इन मैचों के लिए दर्शक नहीं जुटे।

दो और 33 रन बनाने के बाद धोनी ने चेन्नई में तीसरे मैच के दौरान एक दिवसीय क्रिकेट में अपना तीसरा शतक लगाया।

धोनी के नाबाद 139 रन सातवें नंबर पर उतरने वाले किसी भी बल्लेबाज का सर्वोच्च स्कोर है। उन्होंने तीन स्टम्पिंग भी कीं और मैन ऑफ द मैच का पुरस्कार जीता। उन्होंने कप्तान मेहला जयवर्धने के साथ छठे विकेट के लिए 218 रन की साझेदारी की जो की एक रिकॉर्ड है। धोनी की पारी में 90 रन चौकों से बने।

इसके बाद भारत को इंग्लैंड के खिलाफ तीन टैस्ट मैच और कई टीमों से एक दिवसीय मैच खेलने थे। पाकिस्तान के खिलाफ ग्लैसगो में एक वनडे मैच बारिश में धुल गया। बेलफास्ट में पहले अभ्यास मैच में भारत ने आयरलैंड को नौ विकेट से हराया। इसके बाद

इसी जगह पर दक्षिण अफ्रीका को हराकर विदेशी सरजमीं पर उसके खिलाफ पहली बार वनडे श्रृंखला जीती।

धोनी फ्लू के कारण आयरलैंड के खिलाफ वनडे और दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ पहला मैच नहीं खेल पाए थे।

गांगुली की अगुआई में पिछली बार 2002 के इंग्लैंड दौरे पर टैस्ट श्रृंखला 11 से ड्रॉ रही थी। टैस्ट क्रिकेट के 75 सालों में भारत ने इंग्लैंड की धरती पर सिर्फ दो बार श्रृंखला जीती है। पहली बार अजित वाडेकर की कप्तानी में 1971 में और फिर 1986 में कपिल देव की अगुआई में।

लॉर्ड्स पर खेला गया पहला टैस्ट अंतिम गेंद पर रोमांच की पराकाष्ठा पर था। आखरी दिन बारिश के कारण भारत शर्तिया हार से बच गया जब उसके नौ विकेट गिर चुके थे और खराब मौसम के कारण मैच ड्रॉ घोषित कर दिया गया।

टैस्ट क्रिकेट के इतिहास में ऐसा दूसरी बार ही हुआ जब सिर्फ एक विकेट बाकी रहते भारत ने ड्रा खेला हो। इसके लिए टीम धोनी की ऋणी रहेगी।

इंग्लैंड ने पहली पारी में 97 रन की बढ़त बना ली और दूसरी पारी में 282 रन बनाकर भारत के सामने 380 रन का लक्ष्य रखा।

ऐसे में जबकि स्विंग गेंदबाजों को पिच से पूरी मदद मिल रही थी, भारत के सामने ड्रॉ ही एकमात्र विकल्प था।

चौथे दिन के अंत में भारत का स्कोर तीन विकेट पर 137 रन था। यदि बारिश के कारण पांचवें दिन खेल बाधित नहीं हुआ होता तो इंग्लैंड निश्चित तौर पर श्रृंखला में बढ़त बना लेता। आखरी दिन केवल 55 ओवर फेंके जा सके।

पहली पारी में धोनी खाता भी नहीं खोल सके थे लेकिन पांचवें दिन अपनी गलती सुधार ली। उनके क्रीज पर उतरने के समय स्कोर पांच विकेट पर 145 रन था।

वह 203 मिनट तक क्रीज पर रहे और नाबाद 76 रन बनाए हालांकि इस पारी में वह तकनीकी कौशल नहीं दिखा जिसके लिए वह मशहूर हैं। इस पारी में थी अपार दृढ़ता जो धोनी की बल्लेबाजी का एक और आयाम थी।

खराब रोशनी और तनावपूर्ण हालात के बावजूद धोनी ने गाहे-बगाहे अपने आक्रामक खेल का भी परिचय दिया और 10 चौके लगाए। वह भी ऐसे समय जब विकेट बचाए रखना ही प्राथमिकता थी। उन्होंने 159 गेंदों का सामना करके भारत के लिए संकटमोचक की भूमिका निभाई।

मैच में खराब विकेटकीपिंग की गलती का भी इससे प्रायश्चित हो गया। वैसे इस पिच पर दोनों टीमों के विकेटकीपरों के लिए अपने काम को बखूबी अंजाम दे पाना काफी मुश्किल था।

नाटिंघम के ट्रेंट ब्रिज में खेला गया दूसरा टैस्ट विदेशी सरजमीं पर भारत का 200 वां टैस्ट भी था। इसमें भारत ने सात विकेट से यादगार जीत दर्ज की। जहीर खान ने मैच में नौ विकेट लिए जबकि तेंदुलकर ने पहली पारी में 91 रन बनाए। भारत की विदेशी धरती पर यह 29 वीं जीत थी और इंग्लैंड के 15 दौरों में पांचवीं।

ओवल पर तीसरा और आखरी टैस्ट आरंभ होने से दो दिन पहले 7 अगस्त को यह घोषणा की गई कि दक्षिण अफ्रीका में होने वाले पहले ट्वेंटी-20 विश्वकप में धोनी भारतीय टीम के कप्तान होंगे। उन्हें वनडे टीम में भी कप्तान द्रविड़ के साथ उपकप्तान बनाया गया।

ओवल में भारत ने पहली पारी में 664 रन का रिकॉर्ड स्कोर बनाया। श्रृंखला में 1-0 की बढ़त बनाकर संतुष्ट कप्तान द्रविड़ ने ऐसे में पहली पारी की 319 रन की बढ़त होने के बावजूद मेजबान को फालोआन नहीं दिया। उनकी रक्षात्मक रणनीति टीम इंडिया पर भारी पड़ी।

दूसरी पारी घोषित होने के बाद इंग्लैंड को जीत के लिए 500 रन का लक्ष्य मिला जिसके जवाब में उसने दूसरी पारी में छह विकेट गंवाए। अब गेंदबाजों के लिए समय ही नहीं बचा था अन्यथा भारत 2-0 से जीत गया होता।

भारत ने इंग्लैंड में 1986 के बाद पहली श्रृंखला जीती और टैस्ट क्रिकेट में भारत के पदार्पण के 75 साल भी पूरे हो रहे थे। इस टैस्ट में कुंबले ने अपने 118 वें टैस्ट में पहला शतक जमाया और धोनी ने 92 रन जोड़े।

लॉर्ड्स पर भारत को हार से बचाने वाले धोनी ने एक बार फिर बेहतरीन प्रदर्शन किया। इस बार उन पर कोई दबाव नहीं था क्योंकि उनके क्रीज पर उतरने के समय स्कोर पांच विकेट पर 345 रन था। इससे उन्हें स्वाभाविक शॉट खेलने में सहूलियत मिली और उन्होंने 81 गेंद में नौ चौकों और चार छक्कों की मदद से 92 रन बनाए।

अच्छी बल्लेबाजी के बावजूद धोनी और इंग्लैंड के मैट प्रायर को विकेट के पीछे खराब प्रदर्शन के कारण काफी आलोचना झेलनी पड़ी। दोनों के लिए हालांकि हालात काफी कठिन थे।

द स्पोर्ट्स स्टार (22 सितंबर 2007) में ऑस्ट्रेलिया के पूर्व कप्तान और कोच बॉब सिम्पसन ने आधुनिक क्रिकेट में विश्व स्तरीय विकेट कीपरों के अभाव पर चिंता जताई थी। उन्होंने कहा था कि विकेटकीपिंग से ज्यादा बल्लेबाजी पर जोर देने के कारण ऐसा हो रहा है।

उन्होंने लिखा, “विकेटकीपिंग की अधिकांश समस्याएं घुटनों से नीचे गिरने के बाद ही गेंद को पकड़ने की विकेटकीपरों की इच्छा के कारण पैदा हो रही है। बीते जमाने के महान विकेटकीपर गेंद को कमर की ऊंचाई पर ही लपक लेते थे।”

उन्होंने आगे लिखा, “धोनी ने बल्ले से अच्छा प्रदर्शन किया और वह सिर्फ अपनी बल्लेबाजी के दम पर भी टीम में जगह बनाने के योग्य है। लेकिन विकेट के पीछे उसका प्रदर्शन निराशाजनक रहा। यदि कोई मुझसे कहेगा कि भारत में उससे बेहतर विकेटकीपर नहीं है तो मुझे हैरानी होगी। भारतीय क्रिकेट के किरमानियों को क्या हुआ? एलेन नाट और वेली ग्राउट कहां गए। उनकी गैर मौजूदगी से क्रिकेट को काफी नुकसान हुआ है।”

टैस्ट श्रृंखला के बाद एक दिवसीय श्रृंखला की बारी थी और 19 दिन के भीतर 7 वनडे खेले गए। इससे पहले स्काटलैंड के खिलाफ एक मैच भी था जो भारत ने आसानी से जीता।

इंग्लैंड दौरे पर भारत का मुकाबला पांच अलग-अलग प्रतिद्वंद्वियों— इंग्लैंड, दक्षिण अफ्रीका, आयरलैंड, पाकिस्तान और स्काटलैंड से हुआ।

बल्लेबाजी से कोई कमाल नहीं करने के बावजूद धोनी ने लाजवाब विकेटकीपिंग की। लीड्स पर पांचवें मैच में उन्होंने छह बल्लेबाजों को पैवेलियन भेजने: पांच कैच और एक स्टम्पिंग: के विश्व रिकॉर्ड की बराबरी की।

यह श्रृंखला काफी रोमांचक थी और आखरी मैच से पहले दोनों टीमें 3-3 की बराबरी पर थी।

एक बार फिर निर्णायक मैच में भारत का मशहूर बल्लेबाजी क्रम ढह गया। धोनी ने सबसे ज्यादा 50 रन बनाए जो श्रृंखला में उनका सर्वोच्च स्कोर था। इंग्लैंड ने सात विकेट से जीतकर श्रृंखला 4-3 से अपने नाम कर ली।

इसके साथ ही ढाई महीने का यह दौरा भी खत्म हो गया। धोनी और अन्य खिलाड़ियों के लिए हालांकि आराम का समय नहीं था। दक्षिण अफ्रीका में ट्वेंटी-20 विश्वकप जो होना था।

अध्याय आठ

दक्षिण अफ्रीका में विजय पताका

विश्व ट्वेंटी-20 कप के लिए कप्तान बनाए जाने के बाद लंदन में सात अगस्त को पहली प्रेस कांफ्रेंस में ही धोनी ने बानगी दे दी थी कि वह तेजी से सीखने वालों में से है।

भारतीय क्रिकेटर होने के नाते खासकर कप्तान को मीडिया से निपटने का हुनर भी बखूबी आना चाहिए। विशेष रूप से अनगिनत टीवी चैनलों के पत्रकारों से और कभी-कभी यह काफी तनावपूर्ण हो जाता है। जरा जबान चूकी नहीं कि देश भर के मीडिया में मिनटों में मसालेदार सुर्खियां बन जाती हैं।

धोनी ने अपने पर आए वाक्बाणों का बड़ी चतुराई से सामना किया। कई बार वह 'नो कमेंट्स' कहकर निकल जाते लेकिन उनके चेहरे पर मुस्कुराहट हमेशा बनी रहती।

सभी के लिए यह ताज्जुब की बात थी कि रांची का वह लड़का जिसने बमुश्किल तीन साल पहले भारतीय टीम में पदार्पण किया, वह राष्ट्रीय क्रिकेट टीम की कप्तानी वाला झारखंड या बिहार का पहला क्रिकेटर बन गया। वह भी क्रिकेट के सबसे नए और छोटे स्वरूप में आधुनिक भारत की सबसे सुखद कहानियों में से यह एक थी।

धोनी को मीडिया से यह कहने में कभी हिचक नहीं होती, "मैं झारखंड के लोगों का ब्रांड दूत हूं। यह एक छोटा सा राज्य है जहां क्रिकेट के लिए बुनियादी ढांचा भी बहुत अच्छा नहीं था। पांच साल पहले किसी ने सोचा भी नहीं होगा कि इस प्रांत का कोई खिलाड़ी भारत के लिए खेलेगा। यदि मैं पीछे मुड़कर देखता हूं तो मुझे बड़ी खुशी होती है।"

सीनियर बल्लेबाज राहुल द्रविड़, सौरव गांगुली और सचिन तेंदुलकर ने ट्वेंटी-20 विश्वकप नहीं खेलने का फैसला किया था। ऐसा महसूस किया जा रहा था कि यह प्रारूप युवा खिलाड़ियों को अधिक सुहाता है। वीरेंद्र सहवाग, हरभजन सिंह और अजित अगरकर जैसे जाने-माने नामों को जोड़कर टीम में अधिकतर युवा खिलाड़ी ही थे। जोगिंदर शर्मा और इरफान खान के बड़े भाई युसूफ पठान नए चेहरे थे।

इंग्लैंड में जुलाई में 30 संभावित खिलाड़ियों के नाम की घोषणा के वक्त द्रविड़ ने कहा था, “हमें लगता है कि यह टूर्नामेंट युवा खिलाड़ियों को खेलना चाहिए। ट्वेंटी-20 युवाओं के लिए है। यह भारतीय क्रिकेट को आगे बढ़ाने के लिए सही दिशा में लिया गया फैसला है।”

युवराज सिंह को उपकप्तान बनाया गया। इसमें भी एक संकेत था। युवराज कप्तानी के लिए तरजीह नहीं दिए जाने पर अवश्य खिन्न थे क्योंकि उन्होंने धोनी से चार बरस पहले अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट में पदार्पण किया था। लेकिन ऐसा लग रहा था कि उनकी ‘पार्टी बॉय’ छवि ने उनका नुकसान किया था।

ट्वेंटी20 क्रिकेट का उद्‌भव भी इंग्लैंड में हुआ जहां साठ के दशक में सीमित ओवरों के क्रिकेट की शुरुआत हुई थी। इंग्लैंड और वेल्स क्रिकेट बोर्ड के तत्कालीन मार्केटिंग मैनेजर स्टुअर्ट रॉबर्टसन को काफी हद तक इसका श्रेय जाता है।

मैचों के दौरान औसत उपस्थिति घटकर प्रति मैच 1200 हो गई थी और उम्मीद की जा रही थी कि इस नए टूर्नामेंट के पहले साल में यह दोगुनी हो जाएगी। पहले ट्वेंटी-20 मैच का उद्‌घाटन 13 जुलाई 2003 को हुआ जिसमें 5000 दर्शक जुटे थे। इंग्लैंड के छोटे स्टेडियमों को देखते हुए यह संख्या अच्छी ही कही जाएगी।

अगले साल यह तादाद बढ़ी और मिडिसेक्स बनाम सर्रे के मैच में लॉर्ड्स (27,500 दर्शक संख्या) खचाखच भरा था। इससे साबित हो गया था कि क्रिकेट प्रेमियों ने क्रिकेट के इस नवीनतम स्वरूप को स्वीकृति दे दी है। क्रिकेट के पारंपरिक गढ़ लॉर्ड्स पर यदि इस नई अवधारणा का स्वागत हो गया था तो इंग्लैंड के बाकी शहरों में होना तय था।

इसके बाद जल्दी ही दूसरे देशों ने भी घरेलू ट्वेंटी-20 टूर्नामेंट शुरू कर दिए। न्यूजीलैंड, ऑस्ट्रेलिया, पाकिस्तान और दक्षिण अफ्रीका में ये मैच बड़े हिट हो गए। वहां घरेलू क्रिकेट के लिए अभूतपूर्व भीड़ जुटने लगी।

पहला ट्वेंटी-20 अंतर्राष्ट्रीय मैच ऑकलैंड के ईडन पार्क पर 17 फरवरी 2005 को खेला गया। ऑस्ट्रेलिया ने इस मैच में न्यूजीलैंड को 44 रन से हराया। खिलाड़ियों ने अभी तक इसे क्रिकेट के विधिसम्मत स्वरूप के तौर पर स्वीकार नहीं किया था, लिहाजा पूरा मैच काफी हल्के माहौल में खेला गया। कीवी टीम अस्सी के दशक की अपनी हल्की भूरी पोशाक में उतरी और उसी जमाने के हेयरस्टाइल भी देखे गए।

विश्व चैम्पियनशिप से पहले चुनिंदा ट्वेंटी-20 मैच ही खेले गए थे और भारतीय टीम ने तो एकमात्र मैच दिसंबर 2006 में जोहानिसबर्ग में खेला था, जिसमें वह विजयी रही। आईसीसी में विश्व चैम्पियनशिप के पक्ष में जब वोटिंग का समय आया तो भारतीय क्रिकेट बोर्ड ने सबसे ज्यादा समय लिया था।

इंडियन प्रीमियम लीग की अपार सफलता के बाद भले ही यह अजीब लगे लेकिन उस समय बीसीसीआई अध्यक्ष शरद पवार ने यह कहकर विश्व चैम्पियनशिप का विरोध किया था कि ट्वेंटी-20 क्रिकेट से युवा खिलाड़ियों की तकनीक पर विपरीत प्रभाव पड़ेगा।

अब बीसीसीआई के तेवर बिल्कुल बदल चुके हैं लेकिन अपनी प्रारंभिक उदासीनता के कारण बीसीसीआई ने 2006-07 के सत्र में पहले घरेलू ट्वेंटी-20 टूर्नामेंट का आयोजन

बिना किसी दिलचस्पी के किया था।

यह बुरी तरह फ्लॉप रहा। मैदान में सीटें खाली पड़ी रहीं चूंकि भारत के 50 ओवरों के विश्वकप से जल्दी बाहर हो जाने के कारण लोगों का क्षणिक तौर पर क्रिकेट से भी मोहभंग हो गया था। बोर्ड ने इस टूर्नामेंट के प्रसारण अधिकार भी बेचे।

टूर्नामेंट का आयोजन रस्मी तौर पर ही किया गया। मुंबई में 21 अप्रैल 2007 को खेले गए फाइनल में तमिलनाडु ने जब पंजाब को दो विकेट से हराया तब किसी ने इस पर ध्यान भी नहीं दिया।

धोनी ने 1 , 12 , नाबाद 37 और नाबाद 73 रन बनाए। पूर्वी क्षेत्र से झारखंड हालांकि टूर्नामेंट के राष्ट्रीय चरण तक नहीं पहुंच सका। पांच क्षेत्रों से सिर्फ चोटी की दो टीमों को ही इस चरण में जगह मिलनी थी।

आईसीसी ने वेस्टइंडीज में 50-50 ओवरों के विश्वकप की नाकामी से अपना सबक सीख लिया था। इसी वजह से इस टूर्नामेट की अवधि छोटी रखी गई। दर्शकों के लिए पाबंदियां भी कम कर दी गईं ताकि पार्टी के माहौल में लोग इन मैचों का मजा ले सकें। कैरेबियाई धरती पर हुए विश्वकप में इसकी कमी खली थी।

धोनी और उनकी टीम आराम किए बगैर लंदन से सीधे दक्षिण अफ्रीका पहुंची। लेकिन 50-50 विश्वकप की तरह इस बार भारतीय टीम को लेकर टूर्नामेंट के पहले कोई हाइप नहीं थी लिहाजा खिलाड़ियों पर किसी किस्म का दबाव नहीं था।

ट्वेंटी20 क्रिकेट में अधिक अनुभव नहीं होने के कारण भारत को खिताब के प्रबल दावेदारों में नहीं गिना जा रहा था। कुछ ऐसा ही 24 बरस पहले प्रूडेंशियल विश्वकप में कपिल देव की टीम के साथ हुआ था। हाइप ना होने और अपेक्षाओं का कोई दबाव नहीं रहने से टीम को फायदा हुआ।

बारह टीमों को चार प्रारंभिक समूहों में बांटा गया और भारत ग्रुप डी में स्कॉटलैंड तथा पाकिस्तान के साथ था। हर ग्रुप से पहली दो टीमों को सुपर आठ चरण में जगह मिलनी थी जहां उनका बंटवारा दो ग्रुप में होना था।

ग्रुप डी के मैच डरबन में होने थे जहां भारतीय बड़ी संख्या में बसते हैं। आयोजकों ने सपने में भी नहीं सोचा होगा कि 11 सितंबर को दक्षिण अफ्रीका और वेस्टइंडीज के बीच जोहानिसबर्ग में खेला गया पहला मैच इतना आतिशी होगा। इसमें छक्कों की बरसात हुई और कैरेबियाई सलामी बल्लेबाज क्रिस गेल ने पहला शतक जड़ दिया। इसमें 10 छक्के शामिल हैं जो ट्वेंटी-20 अंतर्राष्ट्रीय मैचों का एक रिकॉर्ड बना। इसके बावजूद मेजबान टीम आठ विकेट से जीत गई।

अगले दो दिन दो बड़े उलटफेर हुए। पहले जिम्बाब्वे जैसी अदना सी टीम ने एक दिवसीय क्रिकेट की विश्व चैम्पियन ऑस्ट्रेलिया को हरा दिया और फिर बांग्लादेश ने वेस्टइंडीज को टूर्नामेंट से ही बाहर कर दिया।

ग्रुप डी में पाकिस्तान ने स्कॉटलैंड को 51 रन से हराया और अगले दिन स्कॉटलैंड के खिलाफ भारत का पहला मैच एक भी गेंद फेंके बगैर बारिश में धुल गया। इसके मायने थे

कि भारत और पाकिस्तान का मैच अब काफी महत्वपूर्ण हो गया था। भारत यदि बड़े अंतर से हार जाता तो टूर्नामेंट से बाहर हो जाता।

मैच की सुबह भारतीय टीम को एक झटका लगा। बेंगलुरू में राहुल द्रविड़ ने टैस्ट और एक दिवसीय टीम की कप्तानी छोड़ने का ऐलान करके सनसनी फैला दी।

होटल में नाश्ते की टेबल पर खिलाड़ियों के बीच यही चर्चा हो रही थी कि क्या यह सच है? गेंदबाजी कोच वेंकटेश प्रसाद ने खबर की पुष्टि के लिए अनिल कुंबले को फोन किया। आखिर इस नाटकीय कदम की क्या वजह हो सकती है? आखिरकार द्रविड़ की कप्तानी में हाल ही में भारत ने 21 बरस में पहली बार इंग्लैंड में टैस्ट श्रृंखला जीती थी।

द्रविड़ ने गलत समय पर यह घोषणा की थी। ऐसे में अपने खिलाड़ियों का ध्यान इस खबर से हटाने के लिए धोनी को काफी मेहनत करनी पड़ी और वह भी इतने अहम् मैच से ठीक पहले।

ऑस्ट्रेलिया टीम को विश्व चैम्पियनशिप के तुरंत बाद सात वनडे मैच के लिए भारत का दौरा करना था। द्रविड़ के कप्तानी छोड़ने के कुछ दिन बाद ही धोनी को वनडे टीम की भी कमान सौंप दी गई।

डरबन में मैच देखने के लिए भारी तादाद में दर्शक जुटे थे। पाकिस्तान के सलामी गेंदबाज मोहम्मद आसिफ ने भारत को प्रारंभिक झटके दिए जिससे स्कोर चार विकेट पर 36 रन हो गया। इसके बाद रॉबिन उथप्पा (50) और धोनी (33) ने गेंदबाजों की मददगार पिच पर उपयोगी साझेदारी की। भारत का स्कोर नौ विकेट पर 141 रन था जो चुनौतीपूर्ण कहा जा सकता था।

पाकिस्तन की भी शुरुआत अच्छी नहीं रही और 87 के स्कोर तक उसकी आधी टीम पैवेलियन लौट चुकी थी। उसे 14 गेंद में 39 रन चाहिए थे और लग रहा था कि भारत आसानी से जीत जाएगा। लेकिन मिसबाह उल हक ने अजित अगरकर द्वारा फेंके गए 19 वें ओवर में 17 रन बना लिए। श्रीसंत के अंतिम ओवर में दो गेंद बाकी रहते स्कोर बराबर हो गया। धोनी ने अपना संयम कायम रखते हुए अपने युवा खिलाड़ियों को भी धीरज से काम लेने की सलाह दी।

मिसबाह पांचवीं गेंद पर कोई रन नहीं बना सके। मैच की आखरी गेंद पर वह 53 के स्कोर पर रन आउट हो गए। यह ट्वेटी20 अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट में दूसरा ही मैच था और विजेता का फैसला अब ‘बॉल आउट’ पर होना था।

फुटबॉल के पेनल्टी शूटआउट की तर्ज पर ताबड़तोड़ क्रिकेट में लागू किए गए इस नियम की भी कम आलोचना नहीं हुई थी। पाकिस्तानी टीम अभी तक आखरी ओवर के सदमे में थी और उसे इसके लिए तैयार होने में समय लगा जबकि भारतीय पूरी तैयारी से उतरे। पहले तीन भारतीय गेंदबाज—सहवाग, हरभजन और उथप्पा ने स्टम्प उड़ा दिए जबकि पाकिस्तान के तीनों गेंदबाज चूक गए। भारत ने मैच 3-0 से जीता जो फुटबॉल के स्कोर की तरह लग रहा था।

पाकिस्तानी कप्तान शोएब मलिक और कोच ज्यॉफ लासन ने स्वीकार किया कि उन्हें बॉल आउट के नियम की जानकारी नहीं थी। दूसरी ओर धोनी ने खुलासा किया कि

भारतीय अभ्यास सत्र के दौरान इससे निपटने की भी तैयारी कर रहे थे। उन्होंने हालांकि स्वीकार किया कि विजेता के निर्धारण के इस कृत्रिम तरीके से वह खुश नहीं है।

उन्होंने कहा, “मैं नहीं चाहता कि क्रिकेट मैच का फैसला बॉल आउट से हो। टीमें परिणाम के लिए काफी मेहनत करती हैं और इसका फैसला मैदान पर ही हो जाना चाहिए।”

धोनी ने कहा, “क्रिकेट मैच 3-0 से जीतना अजीब लगता है। यह हर बार नहीं होता। लेकिन अब यह रिकॉर्ड पुस्तिका में दर्ज है। मैं अपने दोस्तों को बता सकता हूं कि जब मैं कप्तान था तब टीम 3-0 से जीती थी।”

इस जीत के साथ ही विश्वकप में पाकिस्तान से कभी नहीं हारने का अपना रिकॉर्ड भी भारत ने कायम रखा। फिर चाहे वह 50-50 विश्वकप हो या ट्वेंटी-20 ।

टूर्नामेंट के दूसरे चरण में भारत के साथ न्यूजीलैंड, इंग्लैंड और दक्षिण अफ्रीका की टीमें थी। सुपर आठ चरण के पहले मैच में उसके विजय अभियान पर कुछ समय के लिए रोक लग गई।

जोहानिसबर्ग में न्यूजीलैंड के कप्तान और बाएं हाथ के स्पिनर डेनियल विटोरी ने बेहतरीन गेंदबाजी करके भारत को जीत से वंचित कर दिया। न्यूजीलैंड के 190 रन के जवाब में भारत की शुरुआत धमाकेदार हुई। सहवाग 40 रन बनाकर जब आउट हुए तब तक पहले विकेट की साझेदारी में सिर्फ 35 गेंद में 76 रन बन चुके थे।

विटोरी ने अपने पहले ही ओवर में उथप्पा को खाता खोले बिना पैवेलियन लौटा दिया। इसके बाद गंभीर, कार्तिक और इरफान पठान के विकेट लेकर भारत की 10 रन से हार में सूत्रधार की भूमिका निभाई। सिर्फ धोनी ही कुछ देर टिक सके जिन्होंने 20 गेंद में 24 रन बनाए।

इंग्लैंड के खिलाफ मैच में धोनी की टीम दबाव में थी लेकिन यह मैच डरबन में सैकड़ों भारतीय समर्थकों के सामने होना था। इसके बाद से टीम इंडिया को हर मैच जीतना था।

यह मैच बेहद रोमांचक साबित हुआ और ताबड़तोड़ बल्लेबाजी के लिए क्रिकेट की इतिहास पुस्तिका में दर्ज हो गया। गंभीर और सहवाग ने पहले विकेट के लिए 136 रन की साझेदारी की और 19 वें ओवर में युवराज ने जो कारनामा किया, वह इतिहास बन गया।

एंड्रयू फ्लिंटॉफ ने पिछले ओवर के आखिर में युवराज को उकसाने की गलती की। इंग्लैंड के हरफनमौला की छींटाकशी पर खीजे युवराज ने उनसे बहस की लेकिन कप्तान धोनी ने लपककर अपने साथी खिलाड़ी को शांत किया।

अब बस बारूद के ढेर में आग लगने की देर थी। तेज गेंदबाज स्टुअर्ट ब्रॉड और इंग्लैंड के बाकी खिलाड़ी बस देखते रह गए और युवराज ने उसके एक ओवर में छह छक्के जड़ डाले।

अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट के 129 साल के इतिहास में 2006 तक ऐसा करिश्मा नहीं हुआ था। उसके बाद 2007 में छह महीने के भीतर यह नजारा दो बार देखने को मिला। पहले 50 ओवर के विश्वकप में दक्षिण अफ्रीकी बल्लेबाज हर्शल गिब्स ने नीदरलैंड के खिलाफ छह गेंद में छह छक्के जड़े।

गैरी सोबर्स और रवि शास्त्री भी यह रिकॉर्ड बना चुके हैं लेकिन अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट में नहीं बल्कि प्रथम श्रेणी क्रिकेट में। धोनी दूसरे छोर से युवराज के बल्लेबाज को यूं आग उगलते अपलक निहारते रहे। युवराज ने सिर्फ 12 गेंद में अर्धशतक पूरा किया जो इस स्तर पर क्रिकेट में एक रिकॉर्ड है। युवराज ने इसके साथ ही पिछले महीने ओवल पर हुई अपनी गेंदों की धुनाई का बदला भी ले लिया जब इंग्लैंड के दमित्री मस्कारेंहास ने उन्हें एक ओवर में पांच छक्के जमाए थे। इंग्लैंड की टीम 18 रन से हार गई लेकिन इस जीत के सूत्राधार थे तो बस युवराज।

सेमीफाइनल में पहुंचने के लिए भारत को डरबन में अब आखरी सुपह आठ मैच में दक्षिण अफ्रीका को भी हराना था। टूर्नामेंट की एकमात्र अपराजेय टीम दक्षिण अफ्रीका को अंतिम चार में पहुंचने के लिए 126 रन की ही दरकार थी। लेकिन जैसा कि अतीत में अक्सर होता आया है जब दक्षिण अफ्रीका अंतिम चुनौती का सामना नहीं कर पाया।

युवराज बाईं कोहनी में चोट के कारण नहीं खेल पाए जिनकी जगह दिनेश कार्तिक ने ली। पहले बल्लेबाजी करते हुए भारत का स्कोर तीन विकेट पर 33 रन हो गया जिसके बाद 20 बरस के रोहित शर्मा और धोनी ने पांचवें विकेट के लिए 85 रन की साझेदारी करके मुश्किल विकेट पर पांच विकेट पर 153 रन का स्कोर बनाया। रोहित का यह चैम्पियनशिप में पहला मैच था।

दस ओवर तक भारत का स्कोर सिर्फ 57 रन था। आखरी पांच ओवर में 56 रन बनाए। रोहित ने नाबाद 50 और धोनी ने 45 रन बनाए। बाएं हाथ के तेज गेंदबाज आर.पी. सिंह ने इसके बाद मोर्चा संभाला और दक्षिण अफ्रीका के पांच विकेट केवल 31 रन पर उखड़ गए।

धोनी ने कमर दर्द की शिकायत पर विकेटकीपिंग छोड़ी और कार्तिक को दस्ताने सौंप दिए। इससे पहले कार्तिक दूसरी स्लिप में गिब्स का बेहतरीन कैच लपक चुके थे। अब विकेट के पीछे उन्होंने दो स्टम्पिंग भी कीं।

अब दक्षिण अफ्रीका के लिए दुविधा यह थी कि वह जीत के लिए 154 रन बनाए या 126 रन से संतोष कर ले जो उसे सेमीफाइनल में पहुंचने के लिए चाहिए थे।

आखिरकार दोनों में से कुछ भी उसे नहीं मिला। उसका अंतिम स्कोर नौ वकेट पर 116 रन था। इतने सालों से दबाव के आगे घुटने टेकने वाली टीम का ठप्पा जो उस पर लगा था, वह फिर सही साबित हुआ। कप्तान ग्रीम स्मिथ स्तब्ध रह गए। न सिर्फ इस हार पर बल्कि भारत का खुले दिल से समर्थन कर रहे दर्शकों पर भी। भारत को रोहित के रूप में एक नया हीरो मिल गया जिसने अच्छी बल्लेबाजी के साथ उम्दा क्षेत्र रक्षण भी किया और मैन ऑफ द मैन बना।

सेमीफाइनल में पाकिस्तान का सामना केपटाउन में न्यूजीलैंड से और भारत का डरबन में ऑस्ट्रेलिया से था। पाकिस्तान ने पहला सेमीफाइनल आसानी से 33 रन से जीत लिया। लग रहा था कि विश्वकप में अब पहली बार खिताबी भिडंत भारत और पाकिस्तान के बीच होगी।

ऑस्ट्रेलियाई टीम खुशकिस्मत थी जो यहां तक पहुंच गई। इसके लिए चैम्पियनशिप के प्रारूप को श्रेय देना चाहिए। जिम्बाब्वे के हाथों पहली हार के बाद उसे सुपर आठ चरण में

पाकिस्तान ने भी हराया। लेकिन बांग्लादेश और श्रीलंका पर विशाल अंतर से जीत हासिल करके वह सेमीफाइनल में पहुंच गई।

क्रिकेट के इस नए प्रारूप को एक दिवसीय क्रिकेट की चैम्पियन टीम अभी तक अपना नहीं सकी थी। कप्तान रिकी पोंटिंग ने इसे स्वीकार किया और ऑस्ट्रेलिया के लचर प्रदर्शन से भी यह जाहिर था।

इस बार कहानी अलग थी। भारत और ऑस्ट्रेलिया पहली विश्व ट्वेंटी-20 चैम्पियनशिप के फाइनल में जगह बनाने के लिए आमने-सामने थे और पिछले छह साल में दोनों टीमों के मुकाबले बेहद रोमांचक होते आए हैं।

भारतीय टीम ने टूर्नामेंट में अप्रत्याशित प्रदर्शन कर दिखाया था। खिलाड़ियों को खुद भी उम्मीद नहीं होगी कि अनुभव के अभाव में भी वे यहां तक पहुंच जाएंगे। लेकिन धोनी ने मोर्चे से अगुआई की और संकट के दौर में भी संयम से काम लेने के उनके गुण ने खिलाड़ियों से सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन कराया।

यह टूर्नामेंट का सबसे उम्दा मैच साबित हुआ। भारत ने 15 रन से जीत दर्ज तो की लेकिन आखिर तक पासा किसी भी ओर पलट सकता था। दोनों टीमों ने अंत तक बेहद जुझारूपन दिखाया।

धोनी ने एक बार फिर टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी का फैसला किया। इंग्लैंड और दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ यह रणनीति काम कर गई थी। ब्रेट ली और नाथन ब्रेकन ने अच्छी गेंदबाजी की और आठ ओवर के बाद भारत के सिर्फ 41 रन बने थे जबकि सहवाग और गंभीर पैवेलियन लौट चुके थे।

युवराज एक बार फिर जबरदस्त फॉर्म में थे। उन्होंने स्टुअर्ट क्लार्क को छक्का लगाकर खाता खोला। उन्हें उथप्पा के रूप में सही जोड़ीदार मिल गया। दोनों ने सिर्फ 40 गेंद में 84 रन जोड़े। युवराज ने पांच छक्के लगाए जिसमें ली को स्क्वेयर लेग के 119 मीटर ऊपर से जड़ा छक्का टूर्नामेंट का सबसे बड़ा शॉट था। धोनी ने 200 की स्ट्राइक रेट से 36 रन बनाए। आखरी 11 ओवर में 140 रन बने।

ऑस्ट्रेलिया ने भारत के पांच विकेट पर 188 रन के जवाब में सकारात्मक शुरुआत की। मैथ्यू हेडन और एंड्रयू साइमंड्स ने मोर्चा संभाल लिया और आगे बढ़ने लगे।

धोनी ने एक बार फिर चतुराई का प्रदर्शन करते हुए इस साझेदारी को तोड़ने श्रीसंत को उसका चौथा और आखरी ओवर फेंकने बुलाया। श्रीसंत का यार्कर हेडन का ऑफ स्टम्प उड़ा ले गया और केरल के इस गेंदबाज ने झूमते हुए इस विकेट का जश्न मनाया।

अभी भी ऑस्ट्रेलिया मैच से बाहर नहीं हुआ था और उसे 32 गेंद में 55 रन की जरूरत थी। वास्तव में वह 18 वें ओवर के आखिर तक मैच में भारत की बराबरी पर या उससे आगे ही था। आखरी तीन ओवर में उसे 30 रन की जरूरत थी, ऐसे में धोनी ने फिर युक्ति लगाई और हरभजन को गेंद सौंपी। इस ऑफ स्पिनर ने माइकल क्लार्क को बोल्ड कर लिया और ओवर में सिर्फ तीन रन दिए। इसके बाद आर.पी. सिंह ने 19 वें ओवर में महज पांच रन दिए।

अचानक ही सब कुछ बदल गया। धोनी की कुशल रणनीति और उसके गेंदबाजों के अनुशासित प्रदर्शन ने भारत की झोली में जीत डाल दी। अब फाइनल में भारत और पाकिस्तान की टक्कर होनी थी।

भारतीयों ने इस जीत का जश्न जमकर मनाया। श्रीसंत पर तो जरूरत से ज्यादा अपील करने के लिए मैच फीस का 25 प्रतिशत दंड भी लगा दिया गया। युवराज ने आखिर में जिस तरह हाथ हिलाकर खुशी जाहिर की, वह भी कईयों को गले नहीं उतरी। लेकिन यह खुमार बेवजह भी नहीं था। भारतीय टीम ने एक दिवसीय क्रिकेट के विश्व चैम्पियन को हराया था और वेस्इंडीज में 50 ओवरों के विश्वकप के पहले ही दौर से बाहर होने के बाद अब टीम फाइनल खेलने जा रही थी।

मैच के आखिर में धोनी ने टीवी प्रजेंटर और पूर्व कप्तान रवि शास्त्री की खिंचाई की जिन्होंने एक दिन पहले अपने कॉलम में ऑस्ट्रेलिया को जीत की प्रबल दावेदार बताया था। धोनी ने कहा, “मैंने आपका कॉलम पढ़ा था। आपने कहा था कि ऑस्ट्रेलिया जीत की प्रबल दावेदार है। मुझे लगता है कि हमने आपको ताज्जुब में डाल दिया।”

उस समय शास्त्री का चेहरा सुर्ख हो गया और मैदान पर मौजूद हजारों भारतीय प्रशंसकों ने अपने कप्तान के बेबाकपन की चिल्लाकर और तालियां बजाकर दाद दी।

पिछले कुछ मैचों से दोनों टीमों के बीच पड़े कड़वाहट के बीज इस मैच में पुष्पित पल्लवित होते नजर आए। ऑस्ट्रेलियाई खिलाड़ियों को भारतीयों पर चढ़ी जीत का खुमार रास नहीं आया और साइमंड्स ने तो एक अखबार के कॉलम में इसका जिक्र भी कर दिया। निश्चित तौर पर उनके लिए अंगूर खट्टे थे। वैसे चैम्पियनशिप में आरंभ से भारत का रिकॉर्ड ऑस्ट्रेलिया से कई गुना अच्छा रहा।

मार्च में विश्वकप से भारत और पाकिस्तान के पहले ही दौर से बाहर होने के बाद क्रिकेट जगत और आईसीसी भी इन दोनों एशियाई दिग्गजों के बीच खिताबी मुकाबले की दुआ कर रहे थे। दोनों टूर्नामेंट की सर्वश्रेष्ठ टीमें भी थीं और दस दिन पहले दोनों के बीच टाई रहा (भारत ने बाल आउट से जीता) मैच क्रिकेट प्रेमियों के जेहन में अभी तक ताजा था।

दोनों टीमों के बीच पारंपरिक प्रतिद्वंद्विता के कारण मैदान पर भारी तादाद में दर्शक जुटे। बारबाडोस में अप्रैल में ऑस्ट्रेलिया और श्रीलंका के बीच विश्वकप फाइनल के फ्लॉप होने के बाद यह आईसीसी और विश्व क्रिकेट के लिए किसी संजीवनी की तरह था।

सिक्के की उछाल ने एक बार फिर धोनी का साथ दिया। उन्होंने फिर पहले बल्लेबाजी चुनी। पहली ही गेंद से मैच में रोमांच का आगाज हो गया जब तीसरे अंपयार ने रन आउट के एक नजदीकी मामले में बल्लेबाज युसूफ पठान के पक्ष में फैसला दिया।

गंभीर ने एक बार फिर पारी के सूत्रधार की भूमिका निभाते हुए 54 गेंद में 75 रन बनाए। वह 18 वें ओवर में आउट हुए। दूसरे छोर से उथप्पा, युवराज और धोनी सस्ते में पैवेलियन लौट गए। रोहित शर्मा ने बड़े स्ट्रोक्स खेलने में कुछ समय लिया। उसने 16 गेंद में नाबाद 30 रन बनाए। भारत ने पांच विकेट पर 157 रन जोड़े।

आर.पी. सिंह ने एक बार फिर विरोधी टीम को शुरुआती झटके देते हुए मोहम्मद हाफिज और कामरान अकमल को जल्दी आउट कर दिया। इरफान नजीर (33) खतरनाक

दिख रहे थे लेकिन उथप्पा ने लाजवाब तरीके से उन्हें रन आउट कर दिया। यूनिस खान और शाहिद अफरीदी दोनों इरफान पठान के एक ही ओवर में पैवेलियन लौट गए। पाकिस्तान के छह विकेट 11.4 ओवर में महज 77 रन पर उखड़ चुके थे।

लेकिन जब तक मिसबाह उल हक क्रीज पर थे, मैच पाकिस्तान की पकड़ से छूटा नहीं था। हरभजन ने पहले दो ओवर में 18 रन दिए लेकिन उनके तीसरे और पारी के 17 वें ओवर में जब पाकिस्तान को चार ओवर में 54 रन चाहिए थे, मिसबाह ने ढीली गेंदों को नसीहत देने का फैसला किया। हरभजन के इस ओवर में तीन छक्कों सहित 19 रन बने। अब तीन ओवर में पाकिस्तान को 35 रन की जरूरत थी।

तेज गेंदबाज सोहेल तनवीर ने भी अपनी बल्लेबाजी के जौहर दिखाते हुए श्रीसंत के ओवर में 15 रन ले डाले जिसमें दो छक्के भी थे। श्रीसंत ने आखरी गेंद पर तनवीर को बोल्ड कर दिया। अब पाकिस्तान का स्कोर आठ विकेट पर 138 रन था और भारत का पलड़ा भारी लग रहा था।

आखरी दो ओवर में पाकिस्तान को 20 रन चाहिए थे और उसके दो विकेट बाकी थे। आर.पी. ने अपने ओवर में केवल सात रन दिए और उमर गुल का विकेट लिया। अब पाकिस्तान की आखरी जोड़ी क्रीज पर थी और उसे अंतिम ओवर में 13 रन की जरूरत थी।

हरभजन को गेंदबाजी करनी थी लेकिन पिछले ओवर में हुई पिटाई से उसका आत्मविश्वास डोल चुका था। धोनी ने काफी विचार विमर्श के बाद अपने गेंदबाजी आक्रमण की सबसे कमजोर कड़ी मध्यम तेज गेंदबाज जोगिंदर शर्मा को गेंद सौंपी। तीन अन्य प्रमुख गेंदबाज आर.पी. सिंह, श्रीसंत और इरफान अपना कोटा पूरा कर चुके थे।

जोगिंदर ने पहली ही गेंद वाइड फेंक दी। मिसबाह सामने थे और पाकिस्तान के हौसले बुलंद दिख रहे थे। कुछ नर्वस दिख रहे कप्तान ने अपने गेंदबाज के कान में कुछ कहा और उसने सटीक गेंद फेंकी जिस पर कोई रन नहीं बना। असली गेंद फुलटॉस थी जिस पर मिसबाह ने छक्का जड़ दिया। अब चार गेंद में छह रन चाहिए थे और पाकिस्तान की नजरें ट्रॉफी पर थीं।

ग्रुप मैच में आखरी दो गेंद पर रन नहीं बना पाने की यादें मिसबाह के जेहन में अभी भी ताजा थीं लिहाजा वह कोई जोखिम मोल लेना नहीं चाहते थे। बाद में उन्होंने स्वीकार किया कि वह एकदम आखरी गेंद पर फैसला नहीं छोड़ना चाहते थे। उन्होंने लेग साइड पर ऊंचा शॉट खेला जिसे श्रीसंत ने लपक लिया।

खेल खत्म हो गया। भारत ने तमाम कयासों के विपरीत पहले विश्व ट्वेंटी-20 चैम्पियन का खिताब पाया। धोनी के शांत चेहरे पर भी कुछ क्षण के लिए उत्तेजना दिखी जिसमें खुशी और राहत के भाव थे।

आखिरकार 1983 प्रूडेंशियल विश्वकप के बाद भारत की झोली में एक और बड़ा खिताब आया। वह भी जोहानिसबर्ग के उसी वांडरर्स मैदान पर जहां 2003 विश्वकप फाइनल में उसे ऑस्ट्रेलिया ने हराया था।

किसी मैच में कुछ गड़बड़ होने पर भी धोनी के अपने खिलाड़ियों को कसूरवार ठहराने से इंकार करने के रवैये पर फाइनल के बाद एक क्रिकेट लेखक ने कहा था कि भारतीय क्रिकेट में वह एकमात्र वयस्क है। आखरी ओवर जोगिंदर से कराने का फैसला भले ही उन्हें मजबूरी में लेना पड़ा हो लेकिन इसी गेंदबाज ने सेमीफाइनल में भी अंतिम ओवर फेंका था जब ऑस्ट्रेलिया को जीत के लिए 22 रन चाहिए थे और उसके कई विकेट बाकी थे। उसने उस ओवर में सिर्फ छह रन दिए और दो विकेट भी लिए। धोनी की तुलना अब भारत के सबसे महान कप्तान मंसूर अली खान पटौदी से की जाने लगी।

दूसरे भारतीय खिलाड़ी जहां जश्न में डूबे थे, वहीं धोनी के चेहरे पर अपार शांति थी। आखरी विकेट गिरने पर कुछ पल के लिए उन्होंने भी अपने जज्बात को चेहरे पर आने से नहीं रोका। उन्होंने टीम इंडिया की अपनी कमीज उतारकर एक भारतीय युवक को दे दी जो हर मैच में मौजूद था। यह तुरत-फुरत की गई कार्रवाई थी जिसने टीवी सेट पर नजर गड़ाए बैठे करोड़ों क्रिकेट प्रेमियों के दिलों को छू लिया।

भारत में उस रात मानो दीवाली मन गई। सड़कों पर आतिशबाजी खूब हुई और लोग खुशी से नाचते रहे। छह महीने पहले का अपमान, आक्रोश और कड़वाहट अचानक तिरोहित हो गए।

एक बार फिर जुनून की हद तक पहुंची दीवानगी। जब रांची में धोनी के घर के बाहर खुशी में डूबा हुजूम इकट्ठा हुआ तो उसके माता-पिता ने उनका अभिवादन स्वीकार करने या बाहर खड़े पत्रकारों से बात तक करने से इंकार कर दिया। क्रिकेट प्रेमियों और मीडिया की याददाश्त कमजोर होती होगी। लेकिन पान सिंह और देवकी अभी तक सब कुछ भुलाकर उन्हें माफ करने को तैयार नहीं थे।

टूर्नामेंट बेहद कामयाब रहा और भारत की जीत तो सोने पर सुहागा थी। तब किसी को इल्म भी नही था कि कुछ महीने बाद क्रिकेट का चेहरा सदा के लिए बदल जाएगा।

धोनी ने जीत का श्रेय अपने गेंदबाजों को दिया जिन्होंने पूरी चैम्पियनशिप में बेहतरीन प्रदर्शन किया।

उन्होंने फाइनल के बाद कहा, “कागजों पर भले ही हमारी बल्लेबाजी अधिक मजबूत दिखती हो लेकिन जिस तरह गेंदबाजों ने खेला, उसकी जितनी तारीफ की जाए कम है। यदि दोनों की तुलना की जाए तो गेंदबाजों ने लगातार अच्छा प्रदर्शन किया। व्यक्तिगत तौर पर बल्लेबाजी में कुछ अच्छी पारियां देखने को मिलीं लेकिन गेंदबाजी पूरे टूर्नामेंट में आला दर्जे की रही। क्षेत्र रक्षकों ने भी उनकी मदद की। हमने हर मैच में एक रन आउट तो जरूर किया।”

आखरी ओवर में हरभजन की जगह जोगिंदर को गेंद सौंपने के फैसले के बारे में धोनी ने कहा कि उस दिन के फॉर्म को देखकर उन्होंने यह फैसला किया।

उन्होंने कहा, “वही सर्वश्रेष्ठ उपलब्ध विकल्प था। हरभजन ने पिछला ओवर बहुत अच्छा नहीं फेंका था। मुझे लगा कि यदि एक मध्यम तेज गेंदबाज को गेंद सौंपी जाए तो उसे खेलना अपेक्षाकृत कठिन होगा क्योंकि हरभजन के सामने मिसबाह की टाइमिंग बहुत

अच्छी थी। हरभजन भी अपने यॉर्कर को लेकर सौ फीसदी आश्वस्त नहीं था। जोगिंदर ने मैच में तब तक अच्छी गेंदबाजी की थी तो मैंने उसे मौका देने का फैसला किया।"

कप्तानी को लेकर होने वाली तारीफों को दरकिनार करते हुए उन्होंने कहा, "कप्तान ने ज्यादा कुछ नहीं किया है। खिलाड़ियों को जो जिम्मेदारी सौंपी गई थी, वह उन्होंने बखूबी निभाई।"

क्रिकेट प्रेमी ही नहीं बल्कि बीसीसीआई के आला अधिकारियों का रवैया भी अब पूरी तरह बदल गया था। छह महीने पहले ही खिलाड़ियों के साथ स्कूली बच्चों की तरह बर्ताव करने वाले बोर्ड अधिकारी टीम के फाइनल में पहुंचते ही दक्षिण अफ्रीका पहुंच गए। अब टीम के साथ तस्वीर खिंचवाने की उनमें होड़ लगी थी जबकि वेस्टइंडीज में विश्वकप में फ्लॉप शो के बाद वे अपना दामन बचाने की जुगत में थे।

फाइनल के पांच दिन बाद ही भारत का सामना अपनी मेजबानी में होने वाले सात एक दिवसीय मैचों की श्रृंखला और एक ट्वेंटी-20 मैच में ऑस्ट्रेलिया से था। खिलाड़ियों के पास सांस लेने और जीत का जश्न मनाने का समय ही कहां था?

आनन-फानन में मुंबई के छत्रपति शिवाजी हवाई अड्डे से वानखेडे स्टेडियम तक खुली बस में हुई जीत की परेड से पूरे मुंबई का ट्रैफिक जाम हो गया। झमाझम बारिश के बीच भी अपने नायकों की अगवानी करने भारी संख्या में लोग सड़कों पर उमड़ पड़े। इस सफर में पांच घंटे लग गए।

धोनी को बाद में कहना पड़ा, "हमें बताया गया था कि मुंबई शहर हमेशा भागता रहता है। देखिए मैंने और मेरी टीम ने आज शहर की रफ्तार रोक दी।"

बीसीसीआई ने हर खिलाड़ी को 80 लाख रुपए बोनस देने का ऐलान किया। कुछ महीना पहले लागू किए गए कड़े नियम वापस ले लिए गए। विश्व चैम्पियन से बहस कौन करना चाहता था?

धोनी ने वानखेड़े स्टेडियम पर लोगों को संबोधित करते हुए स्वीकार किया कि वह अपनी कप्तानी में खेले गए पहले टूर्नामेंट में नर्वस थे।

उन्होंने कहा, "इस स्तर पर थोड़ी घबराहट जायज है। लेकिन जिस तरह से सभी 15 खिलाड़ियों ने खेला, मुझे चिंतित होने का कोई कारण नहीं था। जिसे भी मैंने गेंद सौंपी, उसने विकेट लिए। जो भी बल्लेबाजी के लिए उतरा, उसने रन बनाए। मुझ पर दबाव कम था। पूरी टीम को एक-दूसरे की क्षमता पर विश्वास था जो महत्वपूर्ण है।"

जश्न के इस माहौल में ऑस्ट्रेलिया टीम अपनी हार से सबक सीखते हुए एक दिवसीय क्रिकेट में बदला चुकता करने के इरादे से भारत आई। धोनी के लिए एक दिवसीय क्रिकेट में उनकी कप्तानी की यह पहली परीक्षा थी।

यह अच्छा अनुभव नहीं रहा। ऑस्ट्रेलियाई टीम बेहद कठिन प्रतिद्वंद्वी थी और साइमंड्स जबरदस्त फार्म में थे। उनकी बल्लेबाजी बेहतरीन थी तो ऑफ स्पिनर गेंदबाजी लाजवाब और क्षेत्र रक्षण में उनकी फुर्ती बेमिसाल। पहला मैच बारिश में धुल गया और ऑस्ट्रेलिया ने श्रृंखला 4-2 से जीत ली। भारतीय टीम हर विभाग में उन्नीस साबित हुई। दर्शकों की ओर से साइमंड्स पर की गई नस्लवादी टिप्पणियों का असर कुछ महीने बाद

ऑस्ट्रेलिया में देखने को मिला। इस शर्मनाक प्रकरण से विश्व चैम्पियनों का मैदान पर शानदार प्रदर्शन गौण हो गया।

श्रृंखला के पहले चरण में खिलाड़ियों के बीच भी काफी तनाव देखा गया जब मैच रैफरी क्रिस ब्रॉड को मध्यस्थता करके मामला शांत करना पड़ा। धोनी ने अपनी टीम के आक्रामक तेवरों को हवा नहीं दी तो उसे ठंडा करने की भी कोशिश नहीं की। यह ईंट का जवाब पत्थर वाली रणनीति की शुरुआत थी। कुल मिलाकर दौरे का अंत कड़वी यादों के साथ हुआ।

धोनी ने दूसरे, तीसरे और चौथे मैच में अच्छी बल्लेबाजी की। ट्वेंटी-20 विश्व चैम्पियन के लिए राहत की बात यह थी कि उसने मुंबई में खेले गए एकमात्र ट्वेंटी-20 मैच में ऑस्ट्रेलिया को हराया।

अध्याय नौ

ऑस्ट्रेलिया में शानदार प्रदर्शन

राहुल द्रविड़ के सितंबर में कप्तानी छोड़ने और महेंद्र सिंह धोनी को ट्वेंटी-20 तथा एक दिवसीय टीम की कमान सौंपने के बाद अब चयनकर्ताओं के सामने सवाल टैस्ट कप्तान चुनने का था। पाकिस्तानी टीम जल्दी ही तीन टैस्ट और पांच वनडे खेलने भारत दौरे पर आ रही थी।

सचिन तेंदुलकर के इंकार करने के बाद अब चयन धोनी और अनुभवी लेग स्पिनर अनिल कुंबले के बीच होना था।

तमाम अटकलों और नाटकीयता के बीच आठ नवंबर को फैसला ले लिया गया। कुंबले 37 बरस की उम्र में भारत के सबसे उम्रदराज कप्तान बने। उस समय तक वह 118 टैस्ट खेल चुके थे जो विश्व रिकॉर्ड है।

लंबे समय से गुपचुप भारतीय क्रिकेट की सेवा करते आए कुंबले ने टैस्ट क्रिकेट में पदार्पण 1990 में किया था। वह बिशन सिंह बेदी (1976) के कप्तान बनने के बाद भारतीय टीम की अगुआई करने वाले पहले विशुद्ध गेंदबाज थे।

किसी और गेंदबाज ने देश या विदेश में भारतीय टीम के लिए इतने मैच नहीं जीते हैं। विश्वकप के बाद वनडे क्रिकेट से वह संन्यास ले चुके थे। अब भारत के पास पहली बार टैस्ट और एक दिवसीय क्रिकेट के लिए अलग-अलग कप्तान थे।

आगे भारतीय टीम को पाकिस्तान की मेजबानी करनी थी और फिर ऑस्ट्रेलिया दौरे पर जाना था। चयनकर्ताओं ने ऐसे में महज तीन साल का अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट का अनुभव रखने वाले 26 बरस के धोनी की बजाय किसी अनुभवी को कप्तानी सौंपना मुनासिब समझा। धोनी पहले ही टैस्ट टीम के उपकप्तान थे, यानी कुंबले के संन्यास लेने के बाद टैस्ट टीम की कप्तानी उन्हें मिलना तय था।

नए कप्तान ने इस जिम्मेदारी के बारे में मीडिया में कहा, “देर आए, दुरूस्त आए।”

पाकिस्तानी टीम भी चंद महीनो पहले नियुक्त हुए कप्तान शोएब मलिक के साथ आई थी। वहीं धोनी के लिए ऑस्ट्रेलिया के हाथों 2-4 से पराजय के बाद यह दूसरी एक दिवसीय श्रृंखला थी।

कुंबले को कप्तानी सौंपे जाने के बाद पाकिस्तान ने मोहाली में दूसरा वनडे सनसनीखेज तरीके से चार विकेट से जीता। भारत के नौ विकेट पर 321 रन के जवाब में उन्होंने एक गेंद बाकी रहते जीत हासिल की। अब श्रृंखला 1-1 से बराबरी पर थी।

गुवाहाटी में पहला मैच भारत ने पांच विकेट से जीता था जिसमें सर्वाधिक 63 रन बनाकर धोनी मैन ऑफ द मैच रहे।

धोनी और युवराज ने गुवाहाटी में शतकीय साझेदारी निभाई और कानपुर में तीसरे मैच में तो उनका प्रदर्शन और बेहतर था। भारत ने 46 रन से जीत दर्ज करके श्रृंखला में बढ़त बना ली। इस बार मैन ऑफ द मैच (77) युवराज थे जबकि धोनी ने 49 रन बनाए।

ग्वालियर में चौथे मैच में पाकिस्तान के छह विकेट पर 255 रन के जवाब में भारत के चार विकेट 159 के स्कोर पर गिर गए। इसके बाद भारतीय क्रिकेट की इस करिश्माई जोड़ी ने नाबाद शतकीय साझेदारी करके बिना कोई और विकेट गंवाए टीम को जीत तक पहुंचाया। श्रृंखला में यह उनकी तीसरी शतकीय भागीदारी थी।

इससे भारत की श्रृंखला में जीत पर भी मुहर लग गई और एक बार फिर धोनी 50 ओवर के क्रिकेट में मिली पहली कामयाबी के साथ देशभर के नूर नजर बन गए। पाकिस्तान ने पांचवां और आखरी मैच जीता लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी। भारत श्रृंखला 3-2 से अपने नाम कर चुका था।

युवराज मैन ऑफ द सीरिज बने हालांकि धोनी भी बहुत पीछे नहीं थे। कप्तानी के मामले में वह पाकिस्तान के शोएब मलिक से बाजी मार ले गए।

कुंबले की कप्तानी में पहले मैच के लिए दिल्ली के फिरोजशाह कोटला मैदान से बढ़िया स्थान क्या हो सकता था? इसी मैदान पर पाकिस्तान के ही खिलाफ 1999 में वह एक पारी के पूरे दस विकेट चटकाने वाले दूसरे गेंदबाज (1956 में इंग्लैंड के जिम लाकेर के बाद) बन गए।

एक बार फिर वह गेंदबाजी में पूरी रंगत में थे और पहली पारी में उन्होंने चार विकेट चटकाए। पाकिस्तानी टीम 231 रन पर सिमट गई।

दूसरे दिन पाकिस्तानी गेंदबाजों ने टीम को मैच में लौटाया। शोएब अख्तर ने असीम वेग से गेंदबाजी की तो बाएं हाथ के तेज गेंदबाज सोहेल तनवीर ने पहले ही मैच में दो विकेट चटकाए। भारत के पांच बल्लेबाज 93 के स्कोर पर पैवेलियन लौट चुके थे।

क्रीज पर वीवीएस लक्ष्मण और धोनी के रूप में आखरी ख्यात जोड़ी थी। वैसे कप्तान कुंबले भी इंग्लैंड के खिलाफ पिछले टैस्ट में पहला टैस्ट शतक जड़ चुके थे।

आरंभ में लक्ष्मण और धोनी ने संभलकर बल्लेबाजी की और दबाव कम करने के लिए इक्के-दुक्के रन ही बनाए। दूसरे दिन के आखरी सत्र में धोनी ने अपने हाथ खोले और स्पिनर दानेश कनेरिया को खासी नसीहत दी।

धोनी ने गेंदबाजों को दबाव में लाने के लिए अपनी मांसपेशियों की ताकत का इस्तेमाल किया तो दूसरी ओर लक्ष्मण ने हमेशा की तरह कलात्मक खेल दिखाया। दो विपरीत शैलियों के बल्लेबाजों को एक साथ क्रीज पर इस तरह बल्लेबाजी करते देखना सुखद अनुभव था।

अपना अर्धशतक पूरा करने के बाद धोनी को एड़ी की चोट के कारण कोई भी हरकत लेने में कठिनाई हो रही थी। जयपुर वनडे के दौरान लगी चोट फिर उभर आई थी। इसी की वजह से वह 57 के स्कोर पर कनेरिया को स्ट्रोक लगाने के प्रयास से चूके और विकेट के पीछे कामरान अकमल को कैच दे बैठे।

इस साझेदारी में 115 बेशकीमती रन बने। इससे भारत को पाकिस्तानी स्कोर के करीब आने का मौका मिला। उसके चार विकेट बाकी थे और लक्ष्मण 57 रन बनाकर क्रीज पर डटे हुए थे।

भारत ने तीसरे दिन 45 रन की बढ़त बना ली। इस दिन का खेल सताह होने तक पाकिस्तान ने पांच विकेट पर 212 रन बनाकर 167 रन की बढ़त ले ली थी। अब मैच बराबरी का था।

चौथे दिन सुबह पाकिस्तानियों की गैर जिम्मेदाराना बल्लेबाजी का फायदा भारत को मिला। आखरी पांच पाकिस्तानी विकेट जल्दबाजी में गिर गए और भारत को श्रृंखला में बढ़त लेने के लिए अब 203 रन बनाने थे।

शोएब के अपने स्पैल में भारतीय बल्लेबाजों को परेशान जरूर किया और चारों विकेट भी चटकए। लेकिन पांचवीं सुबह भारत की जीत दीवार पर लिखी इबारत थी। मेजबान टीम ने छह विकेट से मैच जीतकर श्रृंखला में बढ़त बना ली।

सात विकेट लेने वाले कुंबले के लिए यह मैन ऑफ द मैच पुरस्कार कुछ खास था।

बेनतीजा रहे अगले दोनों टैस्ट सौरव गांगुली की कामयाबी की दास्तान कहते हैं जो अपने कैरियर के ढलान पर बेहतरीन फार्म में थे।

कोलकाता में दूसरा टैस्ट तो उनके लिए खासतौर पर सबसे अहम कहा जा सकता है। अपने प्रिय ईडन गार्डन पर अपने घरेलू दर्शकों के सामने खेलते हुए पिछले 11 बरस में वह कभी सैकड़ा नहीं जड़ पाए थे। इस बार 'प्रिंस ऑफ कोलकाता' ने 102 रन की पारी खेली। सलामी बल्लेबाज वसीम जाफर ने सर्वाधिक 202 रन बनाए जबकि लक्ष्मण 112 रन बनाकर नाबाद रहे। भारत ने पांच विकेट पर 616 के विशाल स्कोर पर पारी का ऐलान किया।

पाकिस्तान ने 456 रन बनाकर फालोआन टाल दिया। कुंबले ने दूसरी पारी चार विकेट पर 184 के स्कोर पर घोषित कर दी। जीत के लिए 345 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए पाकिस्तान के चार विकेट 79 रन पर गिर गए। इसके बाद कार्यवाहक कप्तानः मलिक चोटिल थे: यूनिस खान ने नाबाद 107 रन बनाकर टीम को बचा लिया।

एड़ी में सूजन के कारण पूरे मैच में पट्टी बांधकर खेलने वाले धोनी ने नाबाद 50 और 37 रन बनाए। चोट के कारण वह बेंगलुरू में तीसरा और आखरी टैस्ट नहीं खेल सके।

पहले दो टैस्ट में सलामी बल्लेबाज के तौर पर खेलने वाले दिनेश कार्तिक ने इसमें विकेटकीपिंग की जिम्मेदारी भी संभाली।

गांगुली ने बेंगलुरू में टैस्ट कैरियर का अपना पहला दोहरा शतक जड़ा और दूसरी पारी में 91 रन बनाए। लेकिन खब्बू बल्लेबाज युवराज सिंह ने भी पहले दिन 169 रन की दर्शनीय पारी खेली।

इस श्रृंखला से पहले बहस का मसला यह था कि क्या टैस्ट टीम में युवराज का रास्ता गांगुली रोक रहे हैं? यदि धोनी और तेंदुलकर दोनों चोटिल नहीं होते तो युवराज को यह मैच खेलने का मौका ही नहीं मिला होता।

दोनों खब्बू बल्लेबाजों ने पहले दिन उस समय पारी को संभाला जब पाकिस्तानी गेंदबाजों ने भारत के चार विकेट 61 रन पर चटका दिए थे। युवराज पहले दिल का खेल समाप्त होने से ठीक पहले आउट हुए। दोनों ने जबरदस्त बल्लेबाजी का परिचय देते हुए स्कोर 300 रन के पार पहुंचाया।

कल के स्कोर पांच विकेट पर 365 रन से आगे खेलते हुए भारतीय टीम अगले दिन 626 रन पर आउट हो गई। गांगुली ने 239 रन बनाए। जो बाएं हाथ के किसी भी भारतीय बल्लेबाज का सर्वोच्च स्कोर है। बाएं हाथ के ही हरफनमौला इरफान पठान ने भी पहला टैस्ट शतक बनाया।

पाकिस्तान ने माकूल जवाब देते हुए 537 रन बनाए और भारत को सिर्फ 89 रन की बढ़त लेने दी। चौथे दिन का मैच ड्रॉ की ओर बढ़ना तय लग रहा था।

आखरी दिन काफी नाटकीय रहा। आखिर में जीत के लिए 347 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए पाकिस्तान ने सात विकेट गंवा दिए।

खराब रोशनी के कारण पाकिस्तानी टीम हार से बच गई। पिच का यह हाल था कि स्थानीय नायक और कप्तान अनिल कुंबले ने मध्यम तेज गेंदबाजी से पांच विकेट चटकाए। कुंबले ने 20 बरस पहले इसी रूप में अपने प्रथम श्रेणी कैरियर का आगाज किया था और बाद में लेग स्पिनर बने।

आखरी दिन कुंबले ने शायद पारी की घोषणा करने में काफी समय लगा दिया। दूसरी पारी छह विकेट पर 284 के स्कोर पर घोषित करने के मायने थे कि भारतीय गेंदबाजों के पास श्रृंखला 2-0 से जीतने के लिए सिर्फ 48 ओवर थे। बहरहाल, खराब रोशनी के कारण मैच समय से पहले खत्म हो गया जब 11 ओवर बाकी थे।

इसके बावजूद 1979-80 के बाद भारत ने पहली बार अपनी धरती पर पाकिस्तान को टैस्ट श्रृंखला में हराया था। कुंबले बतौर कप्तान पहली श्रृंखला में अपने और टीम के प्रदर्शन से संतुष्ट होंगे। अब टीम को कठिनतम दौरे के लिए ऑस्ट्रेलिया जाना था।

कार्तिक ने बेंगलूर में 24 और 52 रन बनाने के साथ अच्छी विकेट कीपिंग करके टीम में जगह बरकरार रखी। इसके मायने थे कि भारतीय टीम के पास दो उच्चस्तरीय विकेटकीपर बल्लेबाज थे।

कुंबले के लिए चुनौती कठिन थी लेकिन पिछले दो ऑस्ट्रेलिया दौरों पर भारतीय टीम का हिस्सा होने के कारण उन्हें वहां के हालात का बखूबी इल्म था।

इस दौरे के साथ ही भारत ऑस्ट्रेलिया क्रिकेट संबंधों के भी 60 साल पूरे हो रहे थे। भारतीय टीम के 1947-48 में पहले ऑस्ट्रेलिया दौरे के बाद से यह नौवां दौरा था। भारत वहां एक भी टैस्ट श्रृंखला नहीं जीत सका था। तीन श्रृंखलाएं ड्रॉ रही थीं जिसमें गांगुली की कप्तानी में पिछला दौरा शामिल है।

भारतीय टीम ने 2001 में अपनी धरती पर जब स्टीव वा की अगुआई वाली ऑस्ट्रेलियाई टीम को हराया था, उसके बाद से ही दोनों टीमों के मुकाबले काफी प्रतिस्पर्धी होते आए हैं। भारत एकमात्र ऐसा देश था जिसने पिछले 10 साल में टैस्ट क्रिकेट में ऑस्ट्रेलियाई एकाधिकार को गंभीर चुनौती दी थी।

वा ने भारत दौरे को ऑस्ट्रेलियाई टीम का 'अंतिम मोर्चा' कहा था। कुंबले की भी ऑस्ट्रेलिया जाते समय कुछ ऐसी ही सोच रही होगी, क्योंकि दक्षिण अफ्रीका के अलावा वह ही ऐसा टैस्ट खेलने वाला देश था जिसमें भारत ने टैस्ट श्रृंखला में जीत का स्वाद नहीं चखा था।

भारतीय टीम जब चार टैस्ट, मेजबान और श्रीलंका के साथ कॉमनवेल्थ बैंक वनडे श्रृंखला और एक टी-20 मैच खेलने ऑस्ट्रेलिया पहुंची तो पूरे क्रिकेट जगत की नजर उसी पर थी।

तैयारी के अभाव में भारत को मेलबर्न में पहले टैस्ट में 337 रन से पराजय का सामना करना पड़ा।

टैस्ट श्रृंखला से पहले भारतीय बोर्ड ने सिर्फ एक चार दिवसीय अभ्यास मैच को मंजूरी दी थी और भारी बारिश के कारण विक्टोरिया के खिलाफ इस मैच में सिर्फ 48 ओवर फेंके जा सके।

ऑस्ट्रेलियाई टीम ने इसका पूरा फायदा पहले टैस्ट में उठाया। उसने एक दिन बाकी रहते रिकॉर्ड लगातार 15 वीं टैस्ट जीत दर्ज की। मुंबई में 2001 में बने लगातार 16 टैस्ट जीतने के अपने विश्व रिकॉर्ड की बराबरी से अब वह बस एक जीत दूर थी। भारत ने कोलकाता और चेन्नई जीतकर ऑस्ट्रेलिया के उस अश्वमेधी अभियान में नकेल कसी थी।

कप्तान रिकी पोंटिंग हर हालत में यह साबित करना चाहते थे कि वा की विरासत को संभालने में वह सक्षम हैं। सिडनी में दूसरा टैस्ट काफी अहम माना जा रहा था क्योंकि ऑस्ट्रेलियाई टीम पर विश्व रिकॉर्ड की बराबरी के लिए अपने प्रशंसकों और मीडिया का भारी दबाव था।

दुख की बात यह है कि सिडनी टैस्ट क्रिकेट के इतिहास के सबसे विवादास्पद और तनावपूर्ण टैस्ट मैचों में से एक रहा। भारी तनाव में खेले गए इस मैच में आस्ट्रेलिया ने नौ मिनट बाकी रहते चमतकारिक जीत दर्ज की जब अनियमित स्पिनर माइकल क्लार्क ने पांच गेंद के भीतर भारत के आखरी तीन विकेट चटका दिए।

भारत का मानना था कि उसे अम्पायर मार्क बेंसन और अपने पुराने शत्रु स्टीव बकनर के गलत फैसलों का खामियाजा भुगतना पड़ा। पहले दिन एंड्रयू साइमंड्स को स्टीव बकनर से 30 के स्कोर पर जीवनदान मिला। विकेट के पीछे लपके जाने की जोरदार अपील को अम्पायर ने खारिज कर दिया। साइमंड्स के नाबाद 162 रन ने ऑस्ट्रेलियाई पारी को संकट

से निकाला। पहले दिन के खेल के आखिर में साइमंड्स ने खुद स्वीकार किया कि ईशांत शर्मा की गेंद पर उन्होंने बल्ला लगाया था।

इसी से पूरे मैच की दिशा तय हो गई। तीसरे दिन हालात काबू से बाहर हो गए जब हरभजन सिंह ने तेंदुलकर के साथ शतकीय साझेदारी करके ऑस्ट्रेलियाई गेंदबाजों की नाक में दम कर दिया। साइमंड्स ने हरभजन पर छींटाकशी की और मेजबान क्षेत्र रक्षकों के मुताबिक उसने इसका जवाब नस्लवाली टिप्पणी से दिया। पोंटिंग ने मैच रैफरी माइक प्रोक्टर से इसकी शिकायत की जिन्होंने टैस्ट खत्म होने के बाद मसला सुलझाने का फैसला किया।

इस प्रकरण ने दोनों टीमों की उम्दा बल्लेबाजी से भी ध्यान हटा दिया। तेंदुलकर के नाबाद 154 और लक्ष्मण के 109 रन की मदद से भारत ने पहली पारी में 68 रन की बढ़त बना ली थी।

बहुत कम टीमें ही पहली पारी में 500 से अधिक रन बनाकर हारती हैं, लेकिन भारत के साथ ऐसा ही हुआ। आखरी दिन द्रविड़ और गांगुली विवादित तरीके से आउट हुए। दोनों ओर का पारा चढ़ गया था और दोनों अंपयारों के नियंत्रण में कुछ नहीं बचा था।

पोंटिंग और उनकी टीम ने विवादास्पद जीत का जमकर जश्न मनाया। मैच खत्म होने के बाद कुंबले ने यह कहकर दुखती रग पर हाथ रख दिया कि सिर्फ एक टीम खेल भावना से खेल रही थी।

कुंबले ने ऑस्ट्रेलिया के कप्तान रहे बिल वुडफुल के उन शब्दों को दोहराया जो उन्होंने 1932-33 की ‘बॉडीलाइन’ श्रृंखला के बाद कहे थे जब डगलस जार्डिन की अगुआई वाली इंग्लैंड की टीम के तौर-तरीकों और रवैये से ऑस्ट्रेलियाई स्तब्ध रह गए थे।

हरभजन के खिलाफ सुनवाई तीन बजे तक चली। ऐसे में तेंदुलकर ने भारतीय स्पिनर का साथ दिया, जबकि साइमंड्स और ऑस्ट्रेलियाई क्षेत्र रक्षक उसके खिलाफ खड़े थे।

हरभजन को नस्लीय टिप्पणी का कसूरवार ठहराकर तीन टैस्ट मैचों का प्रतिबंध लगाने के प्रोक्टर के फैसले का भारत में जबरदस्त विरोध हुआ। बीसीसीआई पर अपने ही खिलाड़ियों का भारी दबाव था जो दौरा बीच में छोड़कर वापस आने को तैयार थे। बाद में तय हुआ कि श्रृंखला के आखिर में हरभजन की अपील पर सुनवाई होगी और तब तक इस ऑफ स्पिनर को खेलने का अधिकार होगा। बकनर को पर्थ में तीसरे और आखरी टैस्ट से हटाने पर भी रजामंदी बन गई। उनकी जगह न्यूजीलैंड के बिली बोडेन ने ली। बेंसन को यूं भी आखरी दो टैस्ट में अंपायरिंग का जिम्मा नहीं सौंपा गया था।

हालात धीरे-धीरे सामान्य हुए और दोनों टीमें तीसरे टैस्ट के लिए पर्थ पहुंची। ऑस्ट्रेलिया के पास 2-0 की बढ़त थी और वह हर हालत में बार्डर—गावस्कर ट्रॉफी पर पकड़ बनाए रखना चाहता था। दूसरी ओर पोंटिंग का इरादा लगातार 17 वीं जीत दर्ज करके नया इतिहास रचने का था। इसके लिए पर्थ मुनासिब जगह थी।

पर्थ में एशियाई टीमों को पिछले नौ टैस्ट में पराजय का सामना करना पड़ा था। ऑस्ट्रेलिया ने फरवरी 1997 के बाद से इस मैदान पर एक भी मैच नहीं गंवाया था। सत्तर के दशक में एक बार इसे दुनिया की सबसे तेज पिच भी माना गया। अब यह काफी थीमी

हो चुकी थी लेकिन अभी भी अनुमान था कि यह मेजबान गेंदबाजों की मददगार साबित होगी। ऑस्ट्रेलियाई मीडिया जीत को दीवार पर लिखी इबारत मान रहा था।

लेकिन यहां जो हुआ, उससे सारे कयास गलत साबित हो गए। भारतीय टीम ने 72 रन से जीत दर्ज करके अपने क्रिकेट इतिहास का स्वर्णिम अध्याय लिखने की शुरुआत कर दी।

पिछली बार ऑस्ट्रेलिया को घरेलू टैस्ट में दिसंबर 2003 में पराजय का सामना करना पड़ा था और तब भी भारत ने ही उसे हराया था। इसके मायने हैं कि सात बरस में दूसरी बार भारत ने ऑस्ट्रेलिया के 16 टैस्ट के अश्वमेधी अभियान पर नकेल कसी।

दोनों टीमों के गेंदबाज ही छाए रहे। द्रविड़ ने पहली पारी में 93 रन बनाए जो मैच का सर्वोच्च स्कोर था। भारत के स्विंग गेंदबाज खासकर रफ्तार के नए सौदागर ईशांत शर्मा ऑस्ट्रेलिया के खतरनाक तेज आक्रामक पर भारी पड़े।

धोनी ने विकेट के पीछे छह कैच लपके और एक स्टम्पिंग की जो किसी टैस्ट मैच में अब तक का उनका सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन थ। उन्होंने दूसरी पारी में 38 उपयोगी रन भी बनाए। उस समय रन बनाने में बहुत दिक्कत हो रही थी और भारत के छह विकेट 160 रन पर गिर चुके थे।

मैच चार दिन के भीतर खत्म हो गया और आत्मविश्वास से ओतप्रोत भारतीय टीम ने मेजबान का मानमर्दन करके चौथे और आखरी टैस्ट के लिए एडीलेड का रुख किया।

वह मैच ड्रॉ रहा जिसमें दोनों टीमों ने पहली पारी में 500 से अधिक रन बनाए और पांच बल्लेबाजों ने सैकड़ा लगाया।

ऑस्ट्रेलिया 2-1 से विजयी भले ही रहा लेकिन सिडनी टैस्ट में पासा किसी भी ओर पलट सकता था। कुंबले ने क्षमता और गरिमा के साथ टीम की अगुआई की और फिर एक बेहतरीन श्रृंखला खेलकर टीम इंडिया गर्व के साथ सिर ऊंचा करके स्वदेश लौटी।

धोनी बल्ले से प्रभावित नहीं कर सके और आठ पारियों में उनका सर्वोच्च स्कोर 38 रन था। उनके लिए अब आगामी एक दिवसीय श्रृंखला एक कड़ी चुनौती बन गई थी।

न्यूजीलैंड उच्च न्यायालय के जज जॉन हेंसन ने हरभजन को दौरे के बाकी मैचों में खेलने की अनुमति दे दी। लेकिन इस समूचे प्रकरण से रंग में भंग पड़ ही गया था। अब दौरे के बाकी मैच विवादों के घेरे में ही खेले गए।

पूरे मामले का लब्बालुआब यह रहा कि विश्व क्रिकेट में भारत की ही तूती बोलती है। उसकी आर्थिक ताकत के कारण और चूंकि आईपीएल नजदीक था तो यह ताकत और बढ़ गई थी। ऑस्ट्रेलियाई क्रिकेट जगत मन मसोसकर रह गया लेकिन उसके वश में कुछ नहीं था।

अब दोनों टीमों के बीच मेलबर्न में टी-20 मैच होना था।

पिछले चार महीने में क्रिकेट के इस लघुतम स्वरूप में दो बार पराजय का सामना कर चुकी ऑस्ट्रेलियाई टीम एमजीसी मैदान पर बदला चुकता करने को बेताब थी। लेकिन इस मैच के नतीजे के बाद एक बार फिर विश्व चैम्पियन को शर्मिंदगी झेलनी पड़ी। महज 74 रन पर आउट होने के बाद मेजबान नौ विकेट से हार गया।

ऑस्ट्रेलियाई जनता के लिए हरभजन दुश्मन नंबर एक थे और दर्शकों ने जिस अंदाज में उनकी हूटिंग की, उससे संकेत मिल गया कि एक दिवसीय श्रृंखला में पारा गरम ही रहने वाला है।

भारतीय टीम ने पिछले ऑस्ट्रेलिया दौरों पर पांच बार त्रिकोणीय श्रृंखलाएं खेली और तीन बार बेस्ट ऑफ थ्री फाइनल तक पहुंची। लेकिन मेजबान के खिलाफ उनमें से एक भी मैच नहीं जीत सकी थी।

इस बार विश्वकप उपविजेता श्रीलंका तीसरी टीम थी।

गांगुली, द्रविड़ और लक्ष्मण को टीम से बाहर करने के फैसले पर भारत में तीखी प्रतिक्रिया हुई। ऐसे संकेत थे कि टी-20 विश्वकप जीतने के बाद धोनी टीम में युवा ब्रिगेड ही रखना चाहते थे और चयनकर्ताओं को भी उन्होंने अपनी पसंद बता दी थी। जो दाव उन्होंने खेला, वह चल निकला और युवाओं ने कप्तान के फैसले को सही साबित कर दिखाया।

टीम में एकमात्र सीनियर बल्लेबाज सचिन तेंदुलकर थे और उन्होंने अपनी उपयोगिता साबित भी की।

ऑस्ट्रेलिया और श्रीलंका के खिलाफ ब्रिसबेन में पहले दोनों मैच खराब मौसम के कारण बेनतीजा रहे। पहले मैच में भारतीय बल्लेबाज नहीं चल सके लेकिन गेंदबाजों ने संक्षिप्त स्पैल में भी प्रभाव छोड़ा। दूसरे में बल्लेबाज फार्म में आए और गेंदबाजों को बारिश के कारण मौका ही नहीं मिल सका।

अब तक स्पष्ट हो गया था कि कप्तानी के दबाव का असर धोनी की बल्लेबाजी पर नहीं पड़ा है, जैसा कि अतीत में दूसरे कई भारतीय कप्तानों के साथ होता आया है। पहले मैच में ऑस्ट्रेलिया के खतरनाक गेंदबाजों के सामने कप्तान ने 37 रन बनाए जो भारतीय पारी का दूसरा सर्वोच्च स्कोर था। उसके बाद श्रीलंका के खिलाफ वह 88 रन बनाकर नाबाद रहे। कप्तान के तौर पर यह अब तक उनका सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन था। इस मैच में गौतम गंभीर ने 102 रन की अविजित पारी खेली।

चार विकेट 83 रन पर उखड़ने के बाद गंभीर और धोनी ने पांचवें विकेट की नाबाद साझेदारी में 184 रन जोड़े। बारिश के कारण श्रीलंकाई टीम बल्लेबाजी नहीं कर सकी।

ऑस्ट्रेलिया के हौसले श्रीलंका को 128 रन से हराने के बाद बुलंद थे। लेकिन वह मेलबर्न में अलगे मैच में ईशांत की कातिलाना गेंदबाजी देखकर दंग रह गए और वह हुआ जिसकी उन्होंने कल्पना भी नहीं की थी।

ईशांत ने चार और श्रीसंत ने तीन विकेट लेकर मेजबान टीम को 43.1 ओवर में 159 रन पर समेट दिया।

धोनी ने अपने गेंदबाजों का चतुराई से इस्तेमाल किया और क्षेत्र रक्षकों ने भी उनका बखूबी साथ निभाया। धोनी ने चार कैच लपके और एक स्टम्पिंग भी की। अपने संक्षिप्त कैरियर में पांच या अधिक बल्लेबाजों को पैवेलियन लौटाने का करिश्मा उन्होंने तीसरी दफा किया था। भारतीय विकेटकीपरों में से सिर्फ नयन मोंगिया को यह श्रेय हासिल है।

भारत के लिए 160 रन का लक्ष्य मामूली था लेकिन बल्लेबाजों ने इसे भी चुनौतीपूर्ण बना दिया। भारत की आधी टीम उस समय पैवेलियन लौट चुकी थी, जब स्कोर बोर्ड पर सिर्फ 102 रन टंगे थे।

गेंदबाजी में यदि ईशांत का जलवा दिखा तो बल्लेबाजी में रोहित शर्मा का जिसने नाबाद 39 रन बनाए।

रोहित के साथ दूसरे छोर पर कप्तान धोनी थे जिन्होंने 54 गेंद में नाबाद 17 रन बनाए। उस मुकाम पर हालांकि उनका क्रीज पर रहना अधिक अहम था।

इस जोड़ी ने भारत को 455 ओवर में जीत दिला दी। धोनी का स्ट्राइक रेट 31.48 था जो उनके कैरियर का न्यूनतम था लेकिन मामूली लक्ष्य के जवाब में संयम के साथ विकेट बचाकर खेलना जरूरी था।

इसके बाद पासा पलटा और भारत को अगले दो मैचों में मिली पराजय के बाद श्रृंखला में अपना अस्तित्व बचाए रखने के लिए जूझना पड़ा।

एडीलेड में श्रृंखला का आठवां मैच भारत और श्रीलंका देनों के लिए निर्णायक था। ऑस्ट्रेलियाई टीम पहले ही फाइनल में पहुंच चुकी थी। यह बेहद रोमांचक मुकाबला था और भारत ने पांच गेंद बाकी रहते दो विकेट से जीत हासिल की।

इस दौरे पर युवराज बहुत खराब फार्म में थे और टैस्ट या वनडे श्रृंखला में एक भी अर्धशतक नहीं जमा सके थे। धोनी पर उन्हें टीम से बाहर करने का भारी दबाव था लेकिन उन्होंने इस खब्बू बल्लेबाज पर भरोसा किया जिसने मैच जिताने वाली 76 रन की पारी खेली।

श्रीलंका ने छह विकेट पर 238 रन बनाए। इसके जवाब में भारतीय पारी की शुरुआत अच्छी नहीं रही और चार विकेट 99 रन पर गिर गए। इसके बाद युवराज और धोनी ने 59 रन की भागीदारी की। धोनी ने इरफान के साथ भी 58 रन जोड़े। आखरी क्षणों में भारत फिर दबाव में आ गया, जब तीन विकेट 20 रन के भीतर गिर गए लेकिन कप्तान ने मोर्चे से अगुआई करते हुए टीम को जीत की सौगात दी।

धोनी ने 50 रन की अनूठी नाबाद पारी खेली जिसमें एक भी चौका या छक्का नहीं था। यह पांचवां ऐसा वाकेया था, तब किसी भारतीय बल्लेबाज ने 50 या अधिक रन की पारी में कोई चौका छक्का नहीं लगाया हो। इसके बावजूद उनका स्ट्राइक रेट 73.52 था।

यह धोनी का 22 वां वनडे अर्धशतक था और बेहद उपयोगी भी क्योंकि विजयी रन उन्होंने आखरी ओवर में ही बनाए।

मेजबान टीम ने श्रीलंका के खिलाफ अगले दोनों मैच जीत लिए जिससे भारत का फाइनल में पहुंचने का मार्ग प्रशस्त हुआ। अब उसे होबर्ट में आखरी लीग मैच में श्रीलंका से भिड़ना था।

मध्यम तेज गेंदबाज प्रवीण कुमार एडीलेड में श्रीलंका के खिलाफ एक भी विकेट नहीं ले सके थे। उनकी जगह सिडनी में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ श्रीसंत को मौका मिला लेकिन भारत वह मैच 18 रन से हार गया।

श्रीसंत ने सिडनी में दो विकेट लिए थे लेकिन इस महत्वपूर्ण मैच में पांच गेंदबाजों को लेकर उतरने का फैसला कर चुके धोनी ने मुनाफ पटेल को अंतिम ग्यारह में रखा और सहवाग की जगह प्रवीण को उतारा।

यह एक और बढ़िया फैसला साबित हुआ। प्रवीण ने श्रीलंकाई बल्लेबाजी की नींव हिलाकर 31 रन देते हुए चार विकेट लिए और मैन ऑफ द मैच रहे। भारत ने सात विकेट से मैच जीतकर फाइनल में जगह बनाई।

आखरी लीग मैच में 63 रन बनाने के बावजूद तेंदुलकर का खराब फार्म चिंता का विषय बना हुआ था। धोनी ने एडीलेड मैच के बाद प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा था, "जब से मैं क्रिकेट खेल रहा हूं, लोग सचिन के बारे में बात करते आए हैं। लेकिन उनके बारे में लिखते समय एहतियात बरतनी चाहिए। उन्होंने 16,000 रन बनाए हैं जबकि मैंने 16,000 गेंद भी नहीं खेली हैं।"

भारत ने छह साल से किसी त्रिकोणीय या अधिक टीमों वाली श्रृंखला का फाइनल नहीं जीता था। उसने इस कलंक को धोया और वह भी शानदार अंदाज में। भारतीय खिलाड़ियों के तीखे तेवर और जबरदस्त आत्मविश्वास को देखकर ऑस्ट्रेलियाई दंग रह गए, क्योंकि उन्हें लगता था कि इन गुणों पर उनका ही विशेषाधिकार है।

तेंदुलकर के नाबाद 117 रन की मदद से भारत ने सिडनी में खेला गया पहला फाइनल 25 गेंद बाकी रहते छह विकेट से जीता।

एक बार फिर धोनी ने गेंदबाजी में आश्चर्यजनक बदलाव किए जो कामयाब साबित हुए। ईशांत की जगह प्रवीण से गेंदबाजी की शुरुआत कराई गई और उसने एडम गिलक्रिस्ट और रिकी पोंटिंग को सस्ते में आउट करके अपने कप्तान के फैसले को सही साबित कर दिखाया।

धोनी ने युवा लेग स्पिनर पीयूष चावला को भी पहली बार अंतिम एकादश में जगह दी और उसने अच्छी गेंदबाजी की।

भारतीय कप्तान ऐसे पारसमणि साबित हो रहे थे जिनके छूने भर से सब कुछ सोने में बदल रहा था और ब्रिसबेन में दूसरे फाइनल में भी ऐसा ही हुआ।

यह मैच आखरी ओवर तक खिंचा और यदि ऑस्ट्रेलिया जीत जाता तो तीसरे और निर्णायक मैच में उसे रोक पाना कठिन हो जाता।

लेकिन भारत ने विश्व चैम्पियन के पैरों तले से जमीन खिसकाकर ब्रिसबेन में नौ रन से जीत दर्ज की और श्रृंखला 2-0 से अपने नाम कर ली।

एक बार फिर तेंदुलकर 91 रन बनाकर जीत के नायक साबित हुए। लेकिन तीन मैचों में दूसरी बार प्रवीण कुमार जैन मैन ऑफ द मैच रहे जिन्होंने चार विकेट चटकाए।

तनाव और विवादों से भरे थकाऊ दौरे के आखिर में भारतीय टीम विजेता बनी। ऑस्ट्रेलिया को उसने ऐसे जख्म दिए जिन पर जल्दी मरहम लग पाना आसान नहीं था।

पिछले सात महीने में ट्वेंटी-20 विश्वकप के बाद धोनी और उनकी टीम के लिए यह दूसरा खिताब था। धोनी ने मैच के बाद यह कहने में देर नहीं की, "यह महान जीत है।"

उन्होंने अपने योगदान को भी ज्यादा तूल नहीं दिया हालांकि विकेट के सामने और पीछे जौहर दिखाने के अलावा उन्होंने चतुराई से कप्तानी भी की थी। उन्होंने कहा, “कप्तान की भूमिका ही सब कुछ नहीं होती। कप्तान वह होता है जो दबाव को एकत्र करके सभी खिलाड़ियों में बांटता है और सब कुछ इस पर निर्भर करता है कि बाकी खिलाड़ी उसे कैसे लेते हैं।”

टीम चुनते समय धोनी ने युवाओं को तरजीह दी और यह रणनीति विफल रहने पर आलोचना झेलने के लिए भी वह तैयार थे। इस जीत के बाद अब वह पूरे हौसले के साथ कह सकते थे, “हम यदि यह टूर्नामेंट हारे भी होते तो इन्हीं युवा खिलाड़ियों को फिर मौका दिया जाना चाहिए था।”

कप्तान के साथ बहस करने की स्थिति में कोई नहीं था। उनके सारे फैसले सही साबित हुए, जैसा कि सितंबर में दक्षिण अफ्रीका में हुआ था। टीम के आठ खिलाड़ियों ने इससे पहले ऑस्ट्रेलिया में वनडे मैच नहीं खेला था। धोनी ने पुरस्कार वितरण समारोह के दौरान इस एक पंक्ति में सब कुछ कह डाला, “सबसे छोटा कौन है?”

उन्नीस बरस के पीयूष चावला ने सीबी ट्रॉफी थामी जो भारत की युवा ब्रिगेड के विजय अभियान का द्योतक था। इसके अगुआ खुद कप्तान थे जिन्हें अपने खिलाड़ियों पर पूरा विश्वास था।

बाद में धोनी से सवाल किया गया कि तब इस असाधारण जीत की खुशी में उनके साथी खिलाड़ी जश्न में डूबे थे तब उन्होंने अपने जज्बात जाहिर क्यों नहीं किए। वह गुपचुप ही नजर आए।

बाद में उन्होंने तहलका पत्रिका (22 मार्च 2008) से कहा था कि ऑस्ट्रेलियाई टीम और मीडिया के वैमनस्यपूर्ण रवैए को उत्तर देने का यह उनका तरीका था। उन्होंने कहा, “एक जीत लाखों वाक्प्रहारों का जवाब देने के लिए काफी होती है। मैं जानता था कि हम जीतेंगे लिहाजा मैंने कभी कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की। मैं जानता था कि सही समय आने पर हम उन्हें माकूल जवाब देंगे।”

कप्तान बनाए जाने के बाद से धोनी की बल्लेबाजी शैली में भी काफी बदलाव आया। दिसंबर 2006 तक उन्होंने 59 वनडे खेलकर 43.37 की औसत और 98.3 के स्ट्राइक रेट से रन बनाए थे।

अब सीबी श्रृंखला के समाप्त होने तक 15 मैचों में उन्होंने 51.75 की औसत से रन बनाए लेकिन उनका स्ट्राइक रेट घटकर 79.92 हो गया। यह अभी भी प्रभावी था लेकिन यह इंगित करता है कि कप्तानी की जिम्मेदारी ने कैसे उन्हें संयमित होकर खेलने की प्रेरणा दी। चौकों से रन बनाने का प्रतिशत भी 20 फीसदी कम हो गया। कुल मिलाकर सबसे अहम बात टीम की सफलता दर थी जिसमें उनकी परिपक्व बल्लेबाजी की भूमिका महत्वपूर्ण रही।

इस श्रृंखला में धोनी एक ही बार गलत साबित हुए जब 10 वें लीग मैच में सिडनी में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ भारत 18 रन से हार गया। उन्होंने इसी मैच में अपना 100 वां वनडे कैच भी लपका लेकिन टीवी विशेषज्ञ और ऑस्ट्रेलिया के पूर्व विकेटकीपर इयान हीली ने

देखा कि खासतौर पर बने धोनी के दस्तानों में अंगूठे और उंगली के बीच अतिरिक्त बुनाई है। उन्होंने इसकी सूचना मैच रैफरी जैफ क्रोव को दी।

इन दस्तानों को 'अवैध' करार दिया गया और नियमों के मुताबिक, "विकेटकीपर के दस्तानों में अंगूठे और पहली उंगली को छोड़कर कहीं भी बुनाई नहीं होनी चाहिए। इसे अतिरिक्त मददगार माध्यम माना जाएगा।" धोनी को चेतावनी देकर छोड़ दिया गया और दस्ताने तुरंत बदलने को कहा गया। लेकिन विवाद उस समय तूल पकड़ गया जब ऑस्ट्रेलियाई विकेटकीपर एडम गिलक्रिस्ट ने उनका बचाव किया।

धोनी उसके बाद से पारंपरिक दस्ताने पहनते आए हैं।

भारत में जश्न का माहौल था। खुली बस में टीम का जुलूस निकालने का इरादा रद्द कर दिया गया क्योंकि बोर्ड को महसूस हुआ कि खिलाड़ी बहुत थके हुए हैं और उन्हें जल्दी से जल्दी घर पहुंचना चाहिए।

दिल्ली के फिरोजशाह कोटला मैदान पर एक सादा समारोह आयोजित किया गया। बीसीसीआई की ओर से खिलाड़ियों को दस करोड़ रुपए इनाम के तौर पर मिले।

धोनी पूरे अभिनंदन समारोह में चुपचाप बैठे रहे। इसका एक कारण थकान भी थी। लेकिन उन्होंने साक्षात्कारों में संकेत दिए कि टीम चयन के समय हुई आलोचना को लेकर वह व्यथित थे। उनके चेहरे पर दुखमिश्रित संतोष के भाव थे।

अध्याय दस

अनमोल सितारा धोनी

ऑस्ट्रेलिया में जब भारतीय टीम कामन वैल्थ बैंक श्रृंखला में बने रहने के लिए संघर्ष कर रही थी, उसी समय मुंबई के एक पांच सितारा होटल में ऐसा नाटकीय घटनाक्रम चल रहा था जिससे क्रिकेट का चेहरा हमेशा के लिए बदलने वाला था।

पहली बार क्रिकेटरों की नीलामी हुई और उन्हें जानवरों की तरह खरीदा और बेचा गया (एडम गिलक्रिस्ट के शब्दों में)।

बीस फरवरी 2008 को अपने खिलाड़ियों की नीलामी के साथ ही इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) ने खेल जगत का ध्यान खींचा। आठ फ्रेंचाइसी टीमों ने इन खिलाड़ियों को खरीदा और अपनी कीमत जानने के लिए दुनिया भर के ये नामचीन क्रिकेटर इंटरनेट पर जमे रहे।

कुछ बहुत महंगे बिके तो कुछ के ज्यादा दाम नहीं लग सके। अधिकांश क्रिकेटर खुश थे, सिवाय रिकी पोंटिंग जैसो के जिनकी कीमत बहुत कम लगाई गई थी।

लेकिन सभी की सांसें थमी रह गई जब *चेन्नई सुपर किंग्स* ने महेंद्र सिंह धोनी को अपने कप्तान के तौर पर डेढ़ मिलियन डॉलर यानी लगभग छह करोड़ रुपए में खरीदा। अपने संक्षिप्त कैरियर में ही धोनी दुनिया के सबसे महंगे क्रिकेटर बन गए।

धोनी के पीछे ऑस्ट्रेलियाई हरफनमौला एंड्रयू साइमंड्स थे जिन्हें *हैदराबाद डेक्कन चार्जर्स* ने 1.35 मिलियन डॉलर में खरीदा।

पोंटिंग की कीमत सिर्फ दो लाख डॉलर लगाई गई और उन्हें *कोलकाता नाइट राइडर्स* ने खरीदा। ऑस्ट्रेलियाई कप्तान का खिन होना स्वाभाविक था।

आठों फ्रेंचाइसी टीमें भी आसमान छूते दामों पर खरीदी गई थी। *राजस्थान रॉयल्स* 67 मिलियन डॉलर में, मुकेश अंबानी की *मुंबई इंडियंस* 119.9 मिलियन डॉलर, विजय माल्या की *बेंगलुरू रॉयल चैलेंजर्स* 111.6 मिलियन डॉलर में खरीदी गई।

सुपर स्टार अभिनेता शाहरूख खान ने *कोलकाता नाइट राइडर्स* और प्रीति जिंटा ने *किंग्स इलेवन पंजाब* खरीदी।

वानखेड़े स्टेडियम में उस समय उत्तर और पश्चिम क्षेत्र के बीच दलीप ट्रॉफी का फाइनल चल रहा था और पास के होटल में यह नीलामी हो रही थी। मैदान पर चुनिंदा दर्शक और गिने-चुने पत्रकार जमा थे जबकि समूचे क्रिकेट जगत के पत्रकारों का जमावड़ा इस ऐतिहासिक नीलामी को देखने के लिए लगा था।

चेन्नई सुपर किंग्स से सलाहकार वी.बी. चंद्रशेखर ने क्रिकइन्फो के अजय एस. शंकर से कहा, “धोनी अनमोल है। वह अपनी नेतृत्व क्षमता से टीम में अपार जोश भर सकता है और हमें उसके जैसा ही कप्तान चाहिए।”

धोनी की नीलामी काफी तेजी में हुई। मुंबई टीम के मालिक रिलायंस ग्रुप ने चार लाख डॉलर कीमत लगाई जो बढ़कर 13 लाख डॉलर तक पहुंची। लेकिन एक बार जब चंद्रशेखर ने अंतिम कीमत लगा दी तो *चेन्नई सुपर किंग्स* को धोनी के रूप में मनचाही मुराद मिल गई। पूर्व अंतर्राष्ट्रीय खिलाड़ी चंद्रशेखर उस राष्ट्रीय चयन समिति के सदस्य थे जिसने 2004 में पहली बार धोनी को चुना था।

चंद्रशेखर ने नीलामी के बाद कहा था, “मैंने उसे झारखंड के एक आम लड़के से इस मुकाम तक पहुंचते हुए देखा है।”

कुछ फ्रेंचाइसी टीमें धोनी को नहीं पाने पर बस हाथ मलती रह गई। दिल्ली के प्रतिनिधि और पूर्व चयनकर्ता तथा क्रिकेटर टी.ए. शेखर ने क्रिकइन्फो से कहा, “हम सभी धोनी को अपनी टीम में चाहते थे। क्यों नहीं, हर फुटबाल टीम चाहती है कि उसके पास डेविड बैकहम जैसा खिलाड़ी हो। इसी तरह हर क्रिकेट टीम को धोनी जैसे खिलाड़ी के होने पर फख्र होगा।”

एक आर्थिक अखबार ने अनुमानित आंकड़ा दिया कि धोनी को आईपीएल के दौरान प्रतिघंटा खेलने के 56.818 रुपए मिलेंगे। यह उस समय भारत के सबसे धनवान व्यक्ति मुकेश अंबानी की प्रतिघंटा कमाई से अधिक था।

एक ओर धोनी को लेकर गजब की हाइप बन गई थी, वहीं उन्हें अपने माता-पिता से मूलमंत्र मिला कि दौलत की चकाचौंध में पड़ने की बजाया अपने पैर हमेशा जमीन पर रखो।

धोनी की अपनी सोच भी ऐसी ही थी। उन्होंने एक समाचार चैनल पर कहा कि वह आईपीएल की कमाई से 1000 मोटरबाइक खरीद सकते हैं लेकिन उनके लिए देश हमेशा क्लब से ऊपर रहेगा। इसके अलावा वह क्रिकेट से अपने और परिवार के लिए पर्याप्त पैसा कमा ही चुके हैं।

पहला आईपीएल सत्र 18 अप्रैल से आरंभ होता था। इससे पहले ग्रीम स्मिथ की अगुआई में दक्षिण अफ्रीकी टीम भारत में तीन टैस्ट मैच खेलने आई। लेकिन दोनों टीमें, दर्शक और मीडिया आईपीएल को लेकर बनी हाइप में इतने मसरूफ थे कि इस टैस्ट श्रृंखला पर किसी का ध्यान भी नहीं गया।

यह विडंबना ही है कि महज एक बरस पहले विश्वकप में हार के बाद जिस बीसीसीई ने विज्ञापन के मामले में खिलाड़ियों पर सख्त पाबंदियां लगा दी थी और अब वही बोर्ड टैस्ट मैचों से पहले खिलाड़ियों के अपनी फ्रेंचाइसी टीमों के प्रचार के लिए देश भर में आयोजित कार्यक्रमों में मौजूद रहने की ताकीद कर रहा था। संकेत साफ था: टैस्ट क्रिकेट की परवाह किसे है?

चेन्नई के चेपाक स्टेडियम की सपाट पिच पर पहला टैस्ट ड्रॉ रहा। इसमें वीरेंद्र सहवाग के 319 रन की आकर्षण का केंद्र रहे। वह डान ब्रैडमेन और ब्रायन लारा के बाद टैस्ट क्रिकेट में दो तिहरे शतक जड़ने वाले दुनिया के दूसरे बल्लेबाज हो गए। लेकिन अहमदाबाद की जीवंत विकेट पर सहवाग और बाकी भारतीय बल्लेबाज कुछ नहीं कर सके और तीन दिन के भीतर पराजय का सामना करना पड़ा।

भारतीय टीम सिर्फ 20 ओवर खेल सकी और 76 रन पर सिमट गई, जो उपमहाद्वीप में टैस्ट क्रिकेट के इतिहास में सबसे छोटी पारी है। तेज गेंदबाज डेल स्टीन ने पांच विकेट चटकाए।

सिर्फ इरफान पठान (21) और धोनी (14) दोहरे अंक तक पहुंच सके। मैच उसी पल भारत के हाथ से निकल चुका था। दक्षिण अफ्रीका ने एक पारी और 90 रन से जीत दर्ज की। भारत ने हालांकि दूसरी पारी में बेहतर प्रदर्शन करते हुए 328 रन बनाए। गांगुली ने 87 और धोनी ने 52 रन की पारी खेली जो नाकाफी थी।

एक ओर जहां विश्व क्रिकेट में ट्वेंटी-20 का सर्कस शुरू होने वाला था वहीं पहली पारी में भारतीय बल्लेबाजी 20 ओवर तक ही चल सकी। घायल सचिन तेंदुलकर की गैर मौजूदगी में भी यह शर्मनाक प्रदर्शन था।

कोच गैरी कर्स्टन की भी भारतीय टीम के साथ यह पहली श्रृंखला थी और दक्षिण भारतीय होने के नाते उन्हें इसमें खासी दिक्कतें पेश आई जो बाद में उन्होंने खुद स्वीकार किया। भारतीय खेमे में काफी बेचैनी थी और वे किसी भी तरह कानपुर में तीसरा टैस्ट जीतकर श्रृंखला बराबर करना चाहते थे। मेजबान टीम को तब तगड़ा झटका लगा जब ग्रोइन चोट के कारण कुंबले अनफिट करार दिए गए और टैस्ट से बाहर हो गए। इसके मायने थे कि धोनी टैस्ट मैच में भारत की कप्तानी करने वाले पहले विकेटकीपर बने और उन्होंने अपने काम को बखूबी अंजाम भी दिया।

यह टैस्ट भी तीन दिन में खत्म हो गया लेकिन इस बार जीत भारत के नाम रही। आठ विकेट से मैच जीतकर भारत ने श्रृंखला 1-1 से बराबर कर ली। पहली पारी में गांगुली के 87 रन की बदौलत भारत ने बढ़त बनाई और गेंदबाजों ने दूसरी पारी में दक्षिण अफ्रीका को 121 रन पर समेटकर जीत सुनिश्चित की।

गेंदबाजी बदलावों के लिए धोनी की काफी सराहना हुई। उन्होंने कई चतुराई भरे फैसले किए जो सही साबित हुए। दूसरी पारी में ऑफ स्पिनर हरभजन सिंह को ईशांत शर्मा के साथ नई गेंद सौंपकर उन्होंने सभी को चौंका दिया। उन्होंने अच्छी विकेटकीपिंग भी की जो उस पिच पर आसान नहीं थी। स्पिनरों को इससे काफी टर्न मिल रहा था और तेज गेंदबाजों की गेंद नीचे को जा रही थी।

टैस्ट श्रृंखला खत्म हो गई और अब पूरी दुनिया की नजरें इंडियन क्रिकेट लीग के तमाशे पर थी।

यक्षप्रश्न यह था कि क्या भारतीय क्रिकेट प्रेमी घरेलू क्लब टीमों का समर्थन करेंगे जिनमें विदेशी खिलाड़ी भी थे। अब तक तो भारतीयों के लिए क्रिकेट का मतलब सिर्फ टीम इंडिया की जीत की दुआ करना ही था?

हर टीम को बाकी सात टीमों से दो बार भिड़ना था, एक बार अपने मैदान पर और एक बार उनके। सेमीफाइनल और फाइनल मुंबई में होने थे।

धोनी पर काफी दबाव था। उन्हें साबित करना था कि उन पर लगाई गई सबसे महंगी बोली निरर्थक नहीं थी।

क्रिकेट के इस नए तमाशे की शुरुआत लाजवाब रही और पहले ही मैच में विश्व रिकॉर्ड बने। न्यूजीलैंड के विकेटकीपर बल्लेबाज ब्रेंडन मैकुलम ने *बेंगलुरू रॉयल चैलेंजर्स* के खिलाफ *कोलकाता नाइटराइडर्स* के लिए 158 रन की नाबाद पारी खेली।

मैकुलम ने ट्वेंटी-20 विश्व क्रिकेट में सर्वोच्च व्यक्तिगत स्कोर का रिकॉर्ड बनाया और सबसे ज्यादा 13 छक्के भी जड़े। आईपीएल के आयोजकों को मनचाही शुरुआती मिली।

बेंगलुरू की टीम हार गई और वहीं से उसके पतन का भी आगाज हो गया।

अगले दिन *चेन्नई सुपर किंग्स* ने मोहाली में *किंग्स पंजाब* को 33 रन से हराया। माइकल हस्सी ने चेन्नई के लिए अविजित 116 रन बनाए। धोनी बल्ले से भले ही नाकाम रहे लेकिन कप्तान के रूप में सौ टंच खरे साबित हुए।

घरेलू क्रिकेट में अनजान चेहरे मनप्रीत मोनी और पलानी अमरनाथ ने गेंदबाजी का जिम्मा संभाला और एक बार फिर आखरी ओवर फेंका जोगिंदर शर्मा ने। सब मुछ धोनी की मंशा के अनुकूल रहा।

अगला मैच कठिन था। धोनी की टीम को चेन्नई के एम.ए. चिदंबरम स्टेडियम पर पहला मैच खेलना था और मुकाबला *मुंबई इंडियंस* जैसी सितारों से सजी टीम से था।

मुंबई को आखरी ओवर में 19 रन चाहिए थे। एक बार फिर जोगिंदर ने आखरी छह गेंदों में कमाल कर दिखाया और चेन्नई ने मैच छह रन से जीता।

अगले मैच में कोलकाता को नौ विकेट से पटखनी देने के बाद चेन्नई ने बेंगलुरू को 13 रन से हराया। महज 30 गेंद में 65 रन बनाने वाले धोनी को पहला मैन ऑफ द मैच पुरस्कार मिला। कप्तान अपनी रंगत में लौट रहे थे और लगातार चार मैच जीतकर चेन्नई के हौसले बुलंदी के सातवें आसमान पर थे।

वीरेंद्र सहवाग की अगुवाई वाली *दिल्ली डेयरडेविल्स* ने आठ विकेट से हारकर उसके विजय अभियान पर रोक लगाई। चेन्नई की टीम में अब ऑस्ट्रेलिया के मैथ्यू हेडन, माइकल हस्सी और न्यूजीलैंड के जैकब ओरम नहीं थे, जिन्हें अपनी राष्ट्रीय टीमों के साथ खेलने स्वदेश लौटना पड़ा। इनकी जगह स्टीफन फ्लेमिंग, एस. विद्युत और एलबी मॉरकेल ने ली।

बाकी टीमों से भी कई विदेशी सितारे जा चुके थे लिहाजा मुकाबला बराबरी का था और अब टूर्नामेंट काफी रोमांचक हो गया था।

धीमी शुरुआत के बाद *राजस्थान रॉयल्स* ने अपने चमत्कारिक प्रदर्शन से सभी को हैरान कर दिया था और इसके कप्तान थे ऑस्ट्रेलियाई लेग स्पिनर शेन वार्न। वार्न की टीम ने जयपुर में धोनी के धुरंधरों को आठ विकेट से मात दी।

इंतेहा तो तब हो गई जब *डेक्कन चार्जर्स* ने चेन्नई को उसी के मैदान पर सात विकेट से हरा दिया। चेन्नई की यह लगातार तीसरी हार थी और वह भी अंकतालिका में सबसे नीचे चल रहे डेक्कन चार्जर्स के हाथों। अब धोनी की टीम पहले से चौथे स्थान पर खिसक गई थी।

चेन्नई की ताकत उसकी बल्लेबाजी थी जो अब कमजोर कड़ी बन गई थी। पिछले तीन मैचों में वह 169 , 110 और 144 रन ही बना सके थे। फ्लेमिंग, मखाया एनटिनी और पार्थिव पटेल जैसे प्रमुख खिलाड़ी फार्म में नहीं थे और अब धोनी के पास ज्यादा विकल्प नहीं रह गए थे।

अगले मैच में आखरी गेंद पर मिली जीत ने उसकी गाड़ी पटरी पर लौटाई।

धोनी ने एक बार फिर टॉस जीता लेकिन इस बार प्रतिद्वंद्वी टीम *दिल्ली डेयरडेविल्स* को पहले बल्लेबाजी का न्यौता दिया।

इसका फायदा भी मिला। चेन्नई के गेंदबाजों ने अच्छी शुरुआत के बाद बड़ा स्कोर बनाने के दिल्ली के मंसूबों पर पानी फेर दिया। धोनी ने 33 गेंद में 33 रन बनाए। दिल्ली के पांच विकेट पर 187 रन के जवाब में चेन्नई ने चार विकेट से जीत हासिल की।

सहवाग के कई फैसले गलत साबित हुए और अनुभव में कमतर होने के बावजूद धोनी कप्तानी के मामले में अपने इस सीनियर पर भारी पड़े।

पंजाब के खिलाफ अगले मैच में भी मोर्चे से अगुआई करते हुए धोनी ने 60 रन बनाए और वह अंत तक आउट नहीं हुए। उनके बल्ले से छक्कों की बौछार हो रही थी। इस मैच के नायक हालांकि पूर्व टैस्ट गेंदबाज लक्ष्मीपति बालाजी थे जिन्होंने हैट्रिक समेत पांच विकेट चटकाए। चेन्नई ने 18 रन से मैच जीता और सेमीफाइनल में प्रवेश की ओर एक और कदम बढ़ा दिया।

अब सभी टीमों में अंतिम चार में जगह बनाने की होड़ तेज हो गई थी।

मुंबई इंडियंस ने अगले मैच में चेन्नई को सबसे करारी शिकस्त दी। उसने यह मैच नौ विकेट से तब जीता जब 37 गेंद फेंकी जानी बाकी थी। इसकी वजह श्रीलंका के सलामी बल्लेबाज सनत जयसूर्या का टूर्नामेंट का सबसे तेज शतक और तेंदुलकर का चोट से उबरने के बाद टीम में लौटना था।

अगले तीन में से दो मैच हारने के बाद अब चेन्नई को हैदराबाद में हर हालत में *डेक्कन चार्जर्स* को हराना था। करो या मरो का यह मुकाबला जीतने के बाद चेन्नई सेमीफाइनल में पहुंच जाता और हारने पर *मुंबई इंडियंस* को यह सौभाग्य मिलता।

डेक्कन चार्जर्स ने बेहद निराशाजनक प्रदर्शन किया जबकि उसके पास कई सितारा खिलाड़ी थे। टूर्नामेंट में अब तक सिर्फ दो जीत उसके खाते में दर्ज थी जिसमें से एक चेन्नई के खिलाफ मिली थी। मैच पूरे समय चेन्नई की पकड़ में होने के बावजूद आखरी ओवर तक

खिंचा। बेहतरीन फार्म का मुजाहिरा पेश करते हुए सुरेश रैना ने छक्का लगाकर टीम को चार गेंद बाकी रहते जीत दिला दी। इससे पहले धोनी ने 25 गेंद में 37 रन बनाए थे।

आखिरकार 54 मैचों और छह सप्ताह तक चली रस्साकशी के बाद सेमीफाइनल के समीकरण सामने थे। *राजस्थान रॉयल्स* का सामना *दिल्ली डेयरडेविल्स* से और *चेन्नई सुपर किंग्स* का मुकाबला *किंग्स इलेवन पंजाब* से होना था।

आठ जीत और छह हार से 16 अंक लेकर *चेन्नई सुपर किंग्स* लीग चरण की अंकतालिका में तीसरे स्थान पर थी। *राजस्थान रॉयल्स* पहले और पंजाब की टीम दूसरे स्थान पर थी। दिल्ली के 1 अंक थे और वह चौथे स्थान पर थी। लीग चरण के दो मैचों में पंजाब पर मिली जीत का चेन्नई को दूसरे सेमीफाइनल में मनोवैज्ञानिक फायदा मिलना तय था।

पहले सेमीफाइनल में राजस्थान ने दिल्ली को 105 रन से हराया। दूसरा मैच बिल्कुल एकतरफा रहा। पंजाब को नौ विकेट से पराजय का सामना करना पड़ा और चेन्नई ने 31 गेंद पहले ही जीत दर्ज कर ली।

पंजाब के आठ विकेट 112 रन पर गिर गए और उसके बाद से मैच में कोई रोमांच नहीं रह गया। चेन्नई ने सिर्फ एक विद्युत का विकेट गंवाकर मुकाबला जीत लिया।

राजस्थान को 14 लीग मैचों में से सिर्फ तीन में पराजय का मुंह देखना पड़ा था और उसने चेन्नई को दोनों मैचों से हराया था। लेकिन इस बार स्टार सलामी बल्लेबाज और दक्षिण अफ्रीका के कप्तान ग्रीम स्मिथ मांसपेशियों में खिंचाव के कारण फाइनल नहीं खेल रहे थे।

दोनों सेमीफाइनल मैच एकतरफा रहने के बाद क्रिकेट प्रेमी दुआ कर रहे थे कि इतने कामयाब टूर्नामेंट की इतिश्री एक रोमांचक खिताबी मुकाबले के साथ हो और ऐसा ही हुआ भी।

आईपीएल और किसी भी ट्वेंटी-20 मैच का इससे बेहतर अंत नहीं हो सकता था। राजस्थान ने मैच की आखरी गेंद पर तीन विकेट से जीत पाई और पहला आईपीएल खिताब जीता। वॉर्न ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी का फैसला किया। चेन्नई ने पांच विकेट पर 163 रन बनाए। रैना ने एक बार फिर सर्वाधिक 43 रन जोड़े जबकि धोनी 17 गेंद में 29 रन बनाकर क्रीज पर डटे रहे।

इरफान के बड़े भाई यूसुफ पठान ने ऑफ स्पिन गेंदबाजी से तीन विकेट चटकाए और बल्ले के जौहर दिखाते हुए 56 रन भी बनाए। मैन ऑफ द मैच उनके अलावा और कौन हो सकता था?

आखरी ओवर में राजस्थान को आठ रन की जरूरत थी। वार्न और पाकिस्तान के सोहेल तनवीर क्रीज पर थे। इस बार आखरी ओवर फेंकने के लिए जोगिंदर नहीं थे लिहाजा यह जिम्मेदारी बालाजी पर आन पड़ी। स्कोर बराबर होने के बाद आखरी गेंद पर तनवीर ने विजयी रन बनाया।

सबसे सस्ती खरीदी गई *राजस्थान रॉयल्स* टूर्नामेंट की सर्वश्रेष्ठ टीम साबित हुई। सही मायने में वार्न की टीम खिताब की हकदार थी लेकिन धोनी के धुरंधरों ने उसे कड़ी चुनौती

जरूर दी।

एक ओर वार्न की टीम मैदान पर जीत का जश्न मना रही थी, वहीं उसी समय धोनी ने अपने सभी खिलाड़ियों को इकट्ठा किया। एक दूसरे के गले में हाथ डालकर गोल घेरा बनाते हुए उन्होंने सभी से कहा कि इस हार के लिए कोई कसूरवार नहीं है और उन्हें गर्व है कि उसकी टीम ने आखरी गेंद तक हार नहीं मानी।

फाइनल के बाद प्रेस कॉन्फ्रेंस में भी उन्होंने यही कहा, “मैं हार के लिए किसी एक खिलाड़ी को कसूरवार नहीं मानता। मैं मानता हूं कि हमने मैदान पर कुछ गलतियां की, लेकिन सबसे बड़ी समस्या यह थी कि हमारे पास पांच ही गेंदबाज थे। उनमें से यदि किसी एक का फार्म ठीक नहीं हो तो हमारे पास कोई विकल्प नहीं था।”

एक चतुर अनुभवी लोमड़ी की तरह साबित हुए वार्न निस्संदेह धोनी के जोशोखरोश और जज्बे पर भारी पड़ गए थे।

अपनी युवा और अनुभवहीन टीम को विजेता के रूप में तब्दील करने के लिए वार्न की जितनी सराहना हुई, धोनी को भी उतनी ही दाद मिली। आईपीएल में सर्वाधिक विकेट लेने वाले गेंदबाजों में शुमार मनप्रीत गोनी को एक महीने के भीतर भारतीय एक दिवसीय टीम में जगह मिल गई। उसने धोनी को इसका श्रेय देते हुए अपना प्रेरणास्रोत बताया।

धोनी ने 41.40 की औसत से टूर्नामेंट में 414 रन बनाए और वह दूसरे नंबर पर रहे। उनका स्ट्राइक रेट 133.54 था। उनसे अधिक रन सिर्फ रैना (421) ने बनाए थे। उनके आधे से अधिक रन चौकों-छक्कों (242 , 38 चौके और 15 छक्के) से बने। *चेन्नई सुपर किंग्स* में सिर्फ रैना ने ही उनसे अधिक (248) रन चौकों-छक्कों से बनाए थे।

आंकड़ों के मुताबिक धोनी का हर रन 3623.19 डॉलर का था। इस मामले में भी वह सबसे आगे निकल गए। लेकिन यह टूर्नामेंट कमाई से भी कहीं अधिक था। फ्रेंचाइसी के लिए उनकी कीमत इससे काफी ज्यादा थी। आखिरकार ‘ब्रांड धोनी’ की वजह से ही उन्हें इतने प्रायोजक जो मिले थे।

जहां तक आईपीएल का सवाल है तो मोदी एंड कंपनी ने कभी सपने में भी नहीं सोचा होगा कि यह पहले ही साल में कामयाबी की एक नई दास्तान लिख जाएगा। थप्पड़ कांड की गूंज भी इसकी सफलता में बाधा नहीं डाल सकी। भारतीय क्रिकेट प्रेमियों ने ट्वेंटी-20 क्रिकेट को दसी तरह सिर आंखों पर बिठा लिया था, जिस तरह भारत के 1983 प्रूडेंशियल विश्वकप जीतने के बाद 50 ओवरों के एक दिवसीय क्रिकेट को।

आईपीएल की इस कामयाबी के परिणाम दूरगामी होने थे। नकारात्मक भी और सकारात्मक भी। ये प्रभाव आने वाले महीनों और बरसों में नजर आएंगे।

अध्याय ग्यारह

ब्रेक के बाद

क्रिकेट की बाइबिल कहे जाने वाले 1864 से लगातार प्रकाशित *विजडन क्रिकेटर अलमनैक* ने, अपने 2008 के संस्करण में धोनी को वर्ष 2007 के चोटी के क्रिकेटर के रूप में 'विजडन फोर्टी' में जगह दी।

विश्व ट्वेंटी-20 कप में भारत को खिताबी जीत दिलाने वाले धोनी की नेतृत्व क्षमता की प्रशंसा करते हुए इसने लिखा, "इसी साल यह विकेटकीपर कप्तान बना और नतीजे बेहतरीन रहे।"

धोनी के संक्षिप्त परिचय में इसने लिखा, "विकेटकीपर के तौर पर उसमें जरूरी चुस्ती-फुर्ती और तकनीक है तो उसकी बल्लेबाजी भी अब परिपक्व हो गई है। इसके बावजूद टैस्ट क्रिकेट में अभी भी वह सबसे ज्यादा छक्के लगाता है।"

निस्संदेह धोनी के लिए यह उत्कृष्ट वर्ष रहा। इसमें वह टी-20 और एक दिवसीय टीम के कप्तान बने। साल 2007 में खेले गए आठ टैस्ट मैचों में उन्होंने 52 की औसत से 468 रन बनाए, 14 कैच लपके और तीन स्टम्पिंग की। इसी अवधि में 37 वनडे में उन्होंने 44.21 की औसत को 1,103 रन बनाए, 31 कैच पकड़े और 18 स्टम्पिंग की। इसके अलावा आठ टी-20 अंतर्राष्ट्रीय मैचों में 32.60 की औसत से 163 रन जोड़े और एक कैच लिया।

एक जून को इंडियन प्रीमियर लीग का पहला सत्र समाप्त होने के बाद भी बहुत आराम नहीं था। लगभग 50 दिन तक ट्वेंटी-20 क्रिकेट खेलने के बाद धोनी और उनकी टीम को अब 50 ओवरों के मैच खेलने थे।

आईपीएल फाइनल के एक सप्ताह के भीतर भारतीय टीम एक निरर्थक टूर्नामेंट खेलने ढाका गई। भारत, पाकिस्तान और बांग्लादेश के बीच खेले गए *किटप्लाय कप* के कोई मायने नहीं थे। इससे यह धारणा बलवती होने लगी कि ट्वेंटी-20 क्रिकेट धीरे-धीरे 50 ओवरों के क्रिकेट खत्म कर देगा।

मौसम बेहद गर्म और आर्ट था और टीमों में जोश का भी अभाव था। यही नहीं स्टेडियम में दर्शक भी नहीं जुट सके।

एक साल पहले विश्व में बांग्लादेश की भारत पर अप्रत्याशित जीत के बावजूद इसमें कोई शक नहीं था कि फाइनल भारत और पाकिस्तान के बीच ही होगा।

प्रारंभिक मैचों में भारत और पाकिस्तान दोनों ने मेजबान को हराया। क्वार्टर फाइनल से पहले मैच में भारत ने पाकिस्तान को 140 रन से हराया जो वनडे क्रिकेट में रनों के मामले में उसकी चिर प्रतिद्वंद्वी पर सबसे बड़ी जीत थी। भारतीय बल्लेबाजों ने आठ विकेट पर 330 रन बनाए और गेंदबाजों ने पाकिस्तान को 190 रन पर समेट दिया।

पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड के अध्यक्ष ने टीम प्रबंधन को एक तल्ख ई-मेल लिखकर कड़ी कार्रवाई की चेतावनी दी। यह ई-मेल मीडिया में उजागर हो गया जिससे पाकिस्तान टीम फाइनल में पूरी तैयारी के साथ उतरी थी।

महज चार दिन में मानो पाकिस्तान टीम का कायाकल्प हो गया। सलमान बट और यूनिस खान के सैकड़ों की बदौलत उसने तीन विकेट पर 315 रनों का पहाड़ खड़ा कर दिया और भारत के लिए इस चुनौती का सामना करना विकट था।

भारत के शीर्ष आठ में से सात बल्लेबाज दोहरे अंक तक पहुंचे। लेकिन युवराज सिंह और धोनी की विश्वसनीय जोड़ी ही अर्धशतक बना सकी जो काफी नहीं था। धोनी ने 64 रन बनाए। इरफान पठान सातवें विकेट के लिए 60 रन की साझेदारी करने के बाद 28 के निजी स्कोर पर आउट हो गए। धोनी का साथ देने के लिए कोई बल्लेबाज नहीं बचा था। उन्होंने अकेले दम पर मोर्चा संभालने की कोशिश भी की, लेकिन दूसरे छोर से विकेटों का पतझड़ जारी रहा।

धोनी सातवें नंबर पर सुरेश रैना के बाद बल्लेबाजी के लिए उतरे थे। लेकिन बाकी सभी विशेषज्ञ बल्लेबाजों ने उन्हें निराश किया।

शाहिद अफरीदी ने 40 वां ओवर फेंका जब भारत के नौ विकेट गिर चुके थे और जीत के लिए 32 रन की जरूरत थी। धोनी ने पहली गेंद पर छक्का लगाकर टीम की उम्मीदें बंधाई। लेकिन अगली गेंद पर ऐसा ही स्ट्रोक फिर खेलने के प्रयास में वह विकेट गंवा बैठे। पाकिस्तान ने 25 रन से मैच जीत लिया।

हार के बाद धोनी ने हमेशा की तरह मीडिया के सामने बेबाक बात कही।

उन्होंने कहा, “मैंने गलती की। मुझे रैना से पहले उतरना चाहिए था। वह फैसला सकारात्मक सोच के साथ लिया गया था। यदि युवराज लंबी पारी खेलता तो रैना एक-एक रन लेकर स्ट्राइक बदल सकता था। ऐसे में हम 40 वें ओवर तक बेहतर स्थिति में होते। मैं और इरफान बाद में उतरने ही वाले थे लिहाजा वह आसान लक्ष्य रहता।”

आखरी छह ओवर में 64 रन बने और शीर्ष बल्लेबाजों में सिर्फ धोनी ने अच्छी पारी खेली।

अब भारतीय टीम को एशिया कप खेलने कराची रवाना होना था। भारत ने पिछले आठ में से चार बार यह ट्रॉफी जीती थी। लेकिन आखरी खिताबी जीत उसे 1995 में मिली थी।

भारत ने पहला मैच 25 जून को खेला था। यह तारीख भारतीय क्रिकेट के लिए शुभ मानी जाती है क्योंकि इसी दिन 25 बरस पहले कपिल देव की अगुवाई में टीम इंडिया ने प्रूडेंशियल विश्वकप जीता था।

हांगकांग जैसी अदना सी टीम भारत को कोई चुनौती नहीं दे सकी और 256 से हार गई। यह निहायत ही बेमिसाल मुकाबला था।

रैना ने पहला एक दिवसीय सैकड़ा जमाया तो धोनी ने भारत के लिए तीसरा और कैरियर का चौथाः 2007 में एशिया एकादश के लिए भी उन्होंने शतक ठोका था। उनके छह छक्कों में से तीन कराची के नेशनल स्टेडियम की छत पर गिरे।

अगले दिन भारत का सामना चिर प्रतिद्वंद्वी पाकिस्तान था। सहवाग के शतक की बदौलत इस बार भारत ने पाकिस्तान के चार विकेट पर 299 के स्कोर को बौना साबित कर दिखाया।

भारत ने चार विकेट और 47 गेंद बाकी रहते जीत दर्ज की। यह 300 या अधिक रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए भारत की सबसे तेज जीत थी।

एशिया की चारों दिग्गज टीमें दूसरे चरण में पहुंची। बल्लेबाजों की मददगार पिचें होने के कारण सुपर चार चरण में भारत के तीनों मैचों में रनों का अंबार लगा।

एक दिन के ब्रेक के बाद भारतीय बल्लेबाजी का जलवा सबसे पहले बांग्लादेश ने देखा। बांग्लादेश ने छह विकेट पर 283 रन बनाए और इस बार टीम इंडिया ने सात विकेट तथा 40 गेंद बाकी रहते जीत हासिल की।

भारतीयों ने क्षेत्र रक्षण में काफी ढिलाई और मैच के बाद धोनी ने चिर-परिचित बेदाकी से इनके कारण भी गिनाए। उन्होंने टूर्नामेंट के कार्यक्रम को आड़े हाथों लेते हुए कहा कि पिछले 84 घंटे में से 36 घंटे खेलकर टीम बुरी तरह थक चुकी है।

उन्होंने कहा, “लगातार मैचों से खिलाड़ियों के लिए बड़ी मुश्किल हो गई है। मैं शेड्यूल से खुश नहीं हूं। दो टीमें लगातार मैच खेल रही हैं और दो नहीं। ऐसे हालात में काफी मुश्किल हो जाती है। हम साल भर क्रिकेट खेल रहे हैं और उसके बाद यहां एक के बाद एक लगातार मैच खेलने पड़ रहे हैं।”

अगले दिन पाकिस्तान ने भारत को हराया। धोनी ने सर्वाधिक 76 रन बनाए और भारत का सात विकेट पर 308 का स्कोर चुनौतीपूर्ण रहा था। लेकिन गेंदबाजों की हिम्मत जवाब दे गई और पाकिस्तान ने सिर्फ दो विकेट खोकर जीत हासिल कर ली।

इस दौरान धोनी ने कप्तान के तौर पर 62 के बेहतरीन औसत से 1,000 रन पूरे कर लिए। इससे यही साबित होता है कि कप्तानी से उनके खेल में और निखार आया है।

भारतीय टीम को एक बार फिर लगातार मैच खेलने थे। श्रीलंका फाइनल में पहुंच चुका था, लेकिन भारत को खिताबी भिड़ंत में जगह पक्की करने के लिए यह मैच हर हालत में जीतना था।

श्रीलंका ने सात विकेट पर 308 रन बनाए जो भारत ने महज चार विकेट खोकर बना लिए। एक बार फिर धोनी ने 67 रन जोड़कर मैन ऑफ द मैच का पुरस्कार जीता।

सुपर चार चरण में बांग्लादेश के खिलाफ पाकिस्तान का आखरी मैच अब बेमानी हो गया। पाकिस्तान के कुछ पूर्व खिलाड़ियों ने श्रीलंका पर भारत से जान-बूझकर हारने का आरोप भी लगाया, लेकिन ऐसी टीम पर उंगली उठाना जायज नहीं था जिसने 300 से अधिक का स्कोर बनाया हो।

भारतीय बल्लेबाज जबरदस्त फार्म में थे और पांच मैचों में उन्होंने 280 से ज्यादा रन बनाए। टूर्नामेंट में तीसरी बार वे 300 या अधिक के लक्ष्य का पीछा करने में कामयाब रहे थे।

फाइनल में हालांकि भारत को करारा झटका लगा। श्रीलंका ने 2004 का करिश्मा दोबारा कर दिखाया और इस बार उसकी जीत के नायक थे रहस्यमयी स्पिन गेंदबाज अजंता मेंडिस।

श्रीलंका ने मेंडिस को भारत के खिलाफ सुपर चार चरण के आखरी मैच में नहीं उतारा था। तेज गेंदबाज चामिंडा वास को भी आराम दिया गया था, लेकिन ऐसी अटकलें थी कि वे मेंडिस को भारतीय बल्लेबाजों से बचाना चाहते थे जिन्होंने कभी उसकी गेंदबाजी का सामना नहीं किया था।

उनकी यह रणनीति कारगर भी साबित हुई। अपना आठवां एक दिवसीय मैच खेल रहे इस गेंदबाज ने रहस्मयी ‘कैरम बाल’ से भारतीय बल्लेबाजी की नींव हिला दी। उसने आठ ओवर में 13 रन देकर छह विकेट लिए।

सनत जयसूर्या के शतक ने श्रीलंका को 273 रन का स्कोर दिया। भारत की शुरुआत अच्छी रही लेकिन मेंडिस की गेंदों का उसके बल्लेबाजों के पास कोई जवाब नहीं था।

सहवाग के 60 रन के बाद भारत ने नौ विकेट सिर्फ 97 रन पर गंवा दिए। धोनी ने 49 रन बनाकर बाकी बल्लेबाजों को सबक दिया कि मेंडिस की गेंदों का सामना कैसे किया जाए। इसके बावजूद टीम को जीत दिला पाना उनके वश में नहीं था और भारतीय पारी का पटाक्षेप 173 रन पर हो गया। उसे 100 रन से पराजय का सामना करना पड़ा।

भारत अब 1999 के बाद 21 में से 17 फाइनल हार चुका था। उसे दो बार खिताब इंग्लैंड में 2002 में और ऑस्ट्रेलिया में 2007-08 में मिले थे और एक बार भारत और श्रीलंका संयुक्त विजेता थे। दबाव के हालात में दम तोड़ देना अब भारत के मजबूत बल्लेबाजी क्रम की मानो नियति बनती जा रही थी।

धोनी ने हार के बाद मेंडिस की गेंदबाजी के बारे में कहा, “उसने हमें अकेले दम पर हरा दिया। हमारा कोई भी बल्लेबाज उसकी गेंदों को सही ढंग से भांप ही नहीं सका।”

श्रीलंकाई सेना की आर्टिलरी रेजिमेंट का यह गनर अचानक क्रिकेट की नई सनसनी बन गया था।

टीम के मुंबई लौटने से पहले ही ये कयास लगने लगे थे कि धोनी एक ब्रेक लेकर श्रीलंकाई में जुलाई के आखिर में होने वाली तीन टैस्ट मैचों की श्रृंखला नहीं खेलेंगे।

फाइनल में हार के बावजूद एशिया कप में धोनी ने बल्लेबाजी के रूप में बेहतरीन प्रदर्शन किया और 109 की औसत से शिखर पर रहे।

सत्तर के दशक में पाकिस्तान के महान विकेटकीपर रहे वसीम बारी उनके कायल हो गए थे। बारी ने कुछ समय के लिए पाकिस्तानी टीम की कमान संभाली थी तिहरी जिम्मेदारी इतनी बखूबी कैसे निभा रहे हैं? उन्होंने कहा भी था, “दुनिया में बहुत कम विकेटकीपर बल्लेबाज कप्तान सफल हुए हैं और इसी वजह से मेरा मानना है कि वह एक असाधारण खिलाड़ी है और अपने काम को बखूबी अंजाम दे रहा है।”

हालिया बरसों में सिर्फ जिम्बाब्वे के एंडी फ्लावर और इंग्लैंड के एलेक स्टीवर्ट यह संतुलन स्थापित करने में सफल रहे हैं।

खिलाड़ियों की थकान अब जाहिर थी। धोनी द्वारा एशिया कप के व्यस्त कार्यक्रम की सरेआम आलोचना किए जाने के बाद बीसीसीआई का पलटवार था कि आईपीएल में लगातार मैच खेलने के बावजूद खिलाड़ियों ने कभी शिकायत नहीं की।

यह तथ्य आसानी से भुला दिया गया कि आईपीएल के एक मैच में अधिकतम 40 ओवर होते हैं जबकि वनडे मैच 100 ओवर तक चलता है।

मार्च 2008 में सीबी वनडे श्रृंखला खेलकर ऑस्ट्रेलिया से लौटने के बाद यह अनुमान लगाया गया था कि इस भारतीय विकेटकीपर ने 15 महीने के दौरान करीब 1,12,000 किलोमीटर की यात्रा कर ली थी जिसमें आठ देशों और पांच महाद्वीपों का दौरा शामिल है। इसके लिए उन्हें करीब 50 उड़ानें बदलनी पड़ी।

उन्होंने 2007 की शुरुआत के बाद से 47 वनडे, 11 टैस्ट और आठ टी-20 अंतर्राष्ट्रीय मैच खेले जो इस दौरान किसी भी अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेटर द्वारा खेले गए मैचों में सर्वाधिक थे। यह आईपीएल से पहले की बात है जिसमें धोनी की टीम फाइनल तक पहुंची और कुल 16 टी-20 मैच खेलने के लिए भारत भर का दौरा किया।

जुलाई 2008 में व्यस्त कार्यक्रम में दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ तीन टैस्ट मैचों की घरेलू श्रृंखला और नौ वनडे (ढाका में तीन और कराची में छह) भी थे। अब तक धोनी की यात्रा 125,000 किलोमीटर की हो चुकी थी।

निस्संदेह धोनी ने अगर थकान का हवाला देकर चयनकर्ताओं से श्रीलंका में टैस्ट श्रृंखला से आराम मांगा तो यह लाजमी भी था। चयनकर्ताओं ने धोनी की गुजारिश मान ली और इस दौरे के लिए दिनेश कार्तिक तथा पार्थिव पटेल के रूप में दो विकेटकीपर बल्लेबाजों का चयन हुआ।

इसके बाद से देशभर में धोनी के इस फैसले पर वाद-विवाद का दौर आरंभ हो गया क्योंकि किसी भारतीय क्रिकेटर द्वारा अपनी मर्जी से किसी श्रृंखला के पीछे हटने का यह पहला किस्सा था।

अधिकांश पर्यवेक्षकों ने उनके इस फैसले को साहसिक बताकर सराहना की। वह चाहते तो किसी अनजान चोट का बहाना बनाकर बाहर बैठ सकते थे। लेकिन इस साहस के बावजूद उनसे अजीबोगरीब सवाल पूछे गए।

इसमें सबसे ज्यादा यही सवाल उठा कि क्या कोई क्रिकेटर थकान की वजह से आईपीएल का कोई मैच छोड़ेगा, क्योंकि उसमें तो भारी कमाई होती है। यह अब साफ था कि व्यस्त अंतर्राष्ट्रीय कार्यक्रम और आईपीएल के दबाव का असर खिलाड़ियों पर नजर

आने लगा था। राष्ट्रीय टीम से ब्रेक लेना या समय से पहले संन्यास लेना अब आम बात होने वाली थी।

क्लब बनाम देश की दुविधा फुटबाल का खेल दशकों से झेलता आया है और पहली बार इसकी छाया क्रिकेट पर भी पड़ती दिख रही थी।

स्पोर्ट्स स्टार (19 जुलाई 2008) में पूर्व क्रिकेटर और प्रसिद्ध स्तंभकार स्वर्गीय पीटर रोबक ने धोनी के फैसले की सराहना करते हुए उनकी प्राथमिताओं पर सवाल भी उठाए थे। उन्होंने चेताया था कि इस तरह की परिपाटी बन सकती है।

उन्होंने लिखा था, "उसे जरूरत से ज्यादा थकान से बचना होगा अन्यथा उसे समय से पहले संन्यास लेना पड़ सकता है। धोनी बेतरतीब क्रिकेट खेल रहे हैं लेकिन क्या प्रायोजकों का हित उनसे ऐसा नहीं करा रहा है। हर बार खिलाड़ी अच्छे प्रदर्शन के लिए मजबूर होता है। बीसीसीआई ने अपने उपकप्तान को आराम देकर सही किया लेकिन यह एक अपवाद होना चाहिए। इसके बाद से टैस्ट क्रिकेट प्राथमिकता होनी चाहिए। धोनी को खुद संतुलन बनाना होगा।"

एशिया कप खेलकर कराची से लौटते समय सात जुलाई को अपने 27 वें जन्मदिन पर धोनी ने नई खेल प्रबंधन फर्म के साथ जुड़ने का ऐलान किया। इसके साथ ही *गेमप्लान स्पोर्ट्स* के साथ नाता टूट गया जिसने 2005 में सबसे पहले उनका हाथ थामा था।

धोनी के नए एजेंट युधजीत दत्ता इस क्षेत्र में नए थे जिन्होंने गेम प्लान छोड़कर *माइंडएस्केप्स माएस्टोस* बनाई थी। एक क्रिकेटर के लिए यह अब तक का सबसे बड़ा अनुबंध माना जा रहा था।

थकान के बावजूद धोनी मुंबई में रहे और जन्मदिन पर भी घर नहीं गए। नए व्यावसायिक करार जो उन्हें पूरे करने थे। उन्होंने मुंबई में चार दिन बिताए और विभिन्न विज्ञापनों के लिए शूटिंग करने के बाद आखिरकार रांची पहुंचे।

ऐसी सुगबुगाहट भी थी कि अमेरिकी कोला कंपनी *पेप्सी* तेंदुलकर के साथ अपना एक शतक का संबंध खत्म करके अपने *यंगिस्तान '* अभियान के तहत धोनी, रोहित शर्मा और ईशांत शर्मा को अनुबंधित करने जा रही थी।

गांगुली और द्रविड़ उसके विज्ञापनों से पहले ही बाहर हो चुके थे। बाजार के संकेत साफ थे कि सीनियर खिलाड़ियों का दौर बीत चुका और अब युवा ब्रिगेड की तूती बोल रही थी।

धोनी ने सबसे ज्यादा विज्ञापन और कमाई के मामले में भी तेंदुलकर को पछाड़ दिया था। ऐसा अनुमान है कि विज्ञापन से उनकी सालाना कमाई 50 करोड़ रुपए है जबकि तेंदुलकर 35 करोड़ की कमाई के साथ दूसरे स्थान पर हैं। धोनी कितने विज्ञापन कर रहे हैं, यह गणना करना मुश्किल है क्योंकि हर दूसरे सप्ताह उनका मुस्कुराता चेहरा टीवी स्क्रीन पर एक नए विज्ञापन के साथ नजर आ रहा है।

श्रीलंका में टैस्ट श्रृंखला के दौरान धोनी की अनुपस्थिति में कार्तिक और पटेल ने अपने लिए उम्मीद बनाने का मौका गंवा दिया। छह पारियों में इन दोनों ने कुल मिलाकर 50 रन

बनाए और भारत की 2-1 से हार के दौरान धोनी की बल्लेबाजी की निश्चित रूप से कमी खली।

अजंता मैंडिस, जिन्होंने सिर्फ एक महीना पहले एशिया कप के फाइनल में भारत को ध्वस्त किया था, अपनी पहली टैस्ट श्रृंखला में 26 विकेट लेते हुए एक बार फिर से भारत के लिए मुसीबत साबित हुए। आने वाली एकदिवसीय श्रृंखला के लिए, जिसमें धोनी ने एक बार फिर से कप्तानी संभाल ली थी, वो सबसे बढ़ा खतरा दिखाई दे रहे थे।

लेकिन भारत ने पांसा पलट दिया जबकि कप्तान ने आगे बढ़कर नेतृत्व किया और मैन ऑफ द सीरीज पुरस्कार जीता और भारत ने लंका में पहली बार कोई द्विपक्षीय श्रृंखला जीती। धोनी ने 79.33 की स्ट्राइक दर से 192 रन बनाए, मैदान में निरंतर सकारात्मक रहे और टीम में युवाओं को स्थान देने की अपनी नीति पर जमे रहे। अंत में, भारत की विजय हुई और कप्तान ने खुद को साबित कर दिया। टैस्ट श्रृंखला से मिले आराम ने स्पष्ट रूप से उन्हें बहुत फायदा पहुंचाया था।

अब समय था घरेलू श्रृंखला में ऑस्ट्रेलिया का सामना करने का और धोनी टैस्ट टीम में वापस आ चुके थे। बंगलौर में पहला टैस्ट एक नीरस ड्रॉ में समाप्त हुआ लेकिन मोहाली में मैच में बहुत नाटकीयता देखने को देखने वाली थी।

जिस तरह वर्ष के शुरू में कानपुर में दक्षिण अफ्रीका के विरुद्ध हुआ था, उसी तरह वहां भी टॉस से केवल आधा घंटा पहले धोनी को बताया गया कि चोटिल कुंबले के स्थान पर उन्हें कप्तानी संभालनी होगी। और उन्होंने अपना 100 प्रतिशत रिकॉर्ड कायम रखा जबकि भारत ने ऑस्ट्रेलिया को 320 रनों से धुन डाला, जो कि टैस्ट मैचों में उसके लिए जीत का सबसे बड़ा फर्क था।

धोनी ने शुरू से ही सब कुछ ठीक किया, टॉस जीता, गेंदबाजी में सही बदलाव किए और 92 और अविजित 68 की धमाकेदार पारियां खेलीं। और फिर उन्होंने मैन ऑफ मैच पुरस्कार भी जीत लिया। आलोचक अभी से उन्हें सुनहरी स्पर्श वाला कप्तान कहने लगे थे। अब बस कुछ समय की ही बात थी कि उन्हें टैस्ट टीम की कमान पूर्णकालिक रूप से सौंप दी जाएं।

और ऐसा उम्मीद से जल्दी ही हो गया जब नई दिल्ली में अगले टैस्ट के दौरान कुंबले एक बार फिर से चोटिल हुए और अनिर्णीत हुए टैस्ट की अंतिम शाम को उन्होंने अपने रिटायरमेंट का ऐलान कर दिया। उस समय भावनात्मक दृश्य देखने को मिले जब कुंबले को उनके साथी खिलाड़ियों ने उस मैदान पर अपने कंधों पर बिठाकर चारों ओर घुमाया जहां उन्होंने 1999 में अपना सबसे महान कारनामा अंजाम दिया था।

इसका अर्थ था कि अब धोनी तीनों फॉर्मेट—टैस्ट, एकदिवसीय और टी-20 अंतर्राष्ट्रीय—में राष्ट्रीय टीम के कप्तान थे, जोकि विकेटकीपर और उच्चस्तरीय बल्लेबाज होने के साथ-साथ बहुत बड़ा दबाव था। लेकिन नागपुर में चौथे और अंतिम टैस्ट में दोनों पारियों में अर्धशतक बनाते हुए वो बड़े सहज ढंग से इस भूमिका में ढल गए। मैच 172 रन से जीतकर श्रृंखला को 2-0 से जीतते हुए भारत ने आठ साल बाद बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी जीत ली।

अभी खुशियां मनाने का समय नहीं था क्योंकि 7 एकदिवसीय और दो टैस्ट मैचों के लिए इंग्लैंड की टीम आ चुकी थी। लेकिन नवंबर के अंतिम सप्ताह में मुंबई में होने वाले त्रासदिक घटनाओं ने देश का ध्यान क्रिकेट से हटा दिया।

कटक में भारत ने अपना लगातार पांचवां एकदिवसीय मैच जीता था और दोनों टीमें अपने होटल वापस जा रही थीं कि मुंबई में ये भयानक घटनाएं शुरू हो गई। आंतकवादियों ने हमला किया था और तीन दिन तक सारा देश थम सा गया था।

जाहिर है, अंग्रेज टीम अगली उपलब्ध फ्लाइट लेकर भारत से चली गई और अंतिम दो एकदिवसीय मैच रद्द हो गए। लेकिन जबकि दुनिया इस खौफ से उबरने की कोशिशों में लगी हुई थी, भारतीय सरकार और बीसीसीआई दृढ़ थे कि शो जारी रहेगा।

नतीजतन, केविन पीटरसन की कप्तानी में इंग्लैंड को मना लिया गया कि टैस्ट मैचों के लिए भारत आना सुरक्षित है और उनके फैसले पर सारे भारत ने राहत और आभार की सांस ली।

मुंबई में होने वाले पहले मैच को चेन्नई में रखा गया और इस भयावहता के मुश्किल से पखवाड़े के अंदर, सारा देश एक शानदार जीत की खुशियां मना रहा था।

भारत ने काफी समय बचा रहते 387 रन के लक्ष्य को पूरा कर लिया और सबसे बढ़कर ये कि मुंबई के अपने और भावुक तेंदुलकर ने विजयी चौका जड़ा जो उन्हें 103 पर ले गया जबकि युवराज दूसरे छोर पर 85 पर मौजूद थे। चीपॉक में शायद ही कोई सूखी आंख हो और अंग्रेज खिलाड़ी और उनके समर्थक भी जानते थे कि घायल भारत के लिए ये जीत क्या मायने रखती है।

मोहाली में दूसरा और अंतिम टैस्ट एक एंटी-क्लाइमैक्स था जबकि ये मैच ड्रॉ में समाप्त हुआ। लेकिन धोनी ने एक बार फिर से ये कर दिखाया था—कप्तान के रूप में अपने पहले पांच टैस्टों में अजेय!

नए टैस्ट कप्तान में कुछ-कुछ अपने जैसा स्वच्छंद स्वभाव देखने वाले सौरव गांगुली ने एक दिलचस्प टिप्पणी की: ‘भारत में हम ये सोचने की गलती करते हैं कि सिर्फ अच्छे लड़के ही अच्छे कप्तान बन सकते हैं।’

अध्याय बारह

टैस्ट क्रिकेट के शिखर पर

2008 के अंत की ओर ऑस्ट्रेलिया और इंग्लैंड के खिलाफ घरेलू जीतों और आईसीसी वर्ल्ड टैस्ट रैंकिंग में तीसरा स्थान प्राप्त करने के बाद, कोच गैरी कर्स्टन और कैप्टन एमएस धोनी ने 2009 में ऑस्ट्रेलिया और दक्षिण अफ्रीका को पीछे छोड़कर शिखर पर पहुंचने की ओर अपनी नजरें टिका दीं। इस ओर पहला कदम न्यूजीलैंड में उठाया जाना था।

लेकिन उससे पहले, बीसीसीआई ने किसी तरह श्रीलंका में एक और एक-दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय श्रृंखला रखने की व्यवस्था कर ली जिसे धोनी और उनके साथियों ने बड़ी आसानी से 4-1 से जीत लिया। अब तक श्रीलंका उनके लिए दूसरे घर जैसा बन चुका था।

लेकिन दूसरी ओर न्यूजीलैंड दुश्मन के इलाके जैसा था। भारत ने वहां 1968 में मंसूर अली खां पटौदी के नेतृत्व में अपने पहले दौरे के बाद से एक भी टैस्ट श्रृंखला नहीं जीती थी। अब समय आ गया था कि इस गलती को सुधारा जाए।

भारतीय राष्ट्रीय टीम का नेतृत्व संभालने से पहले किसी भी स्तर पर कप्तानी न करने वाले शख्स से जब पूछा गया कि वो खुद को किस तरह के कप्तान के रूप में देखता है, तो वो बिल्कुल स्पष्ट था: “मैं आक्रामक कप्तान हूं।”

न्यूजीलैंड को भारत के लिए मिथकीय “अंतिम मोर्चे” तक के रूप में देखा जाने लगा था, हालांकि तब तक भारत ने ऑस्ट्रेलिया और दक्षिण अफ्रीका में भी कोई टैस्ट श्रृंखला नहीं जीती थी। श्रृंखला के समय आईसीसी टैस्ट रैंकिंग में न्यूजीलैंड आठवें स्थान पर था जबकि भारत तीसरे स्थान पर और इसलिए मेहमान टीम का पलड़ा भारी माना जा रहा था।

दोनों ही के लिए टी-20 मैच हारना दौरे की शुरुआत का आदर्श तरीका नहीं था। लेकिन सचिन तेंदुलकर और वीरेंद्र सहवाग की असाधारण बल्लेबाजी के कारण भारत ने एक-दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय श्रृंखला 3-1 से जीत ली जिसमें धोनी ने दो अर्धशतक जड़े।

2003 के पिछले दौरे पर भारतीय बल्लेबाजों को विपरीत परिस्थितियों में धराशायी कर दिया गया था और क्रिकेट की पारंपरिक कमजोर टीम के विरुद्ध एक टैस्ट मैच जीत लंबे

समय से बनती थी।

ये काम हैमिल्टन में पहले टैस्ट में सक्षमतापूर्वक और प्रभावशाली ढंग से किया गया जिसे भारत ने 10 विकेट से जीत लिया। ये जीत 1976 में ऑकलैंड में सुनील गावस्कर की कप्तानी में हासिल की गई पिछली जीत के बाद तैंतीस साल के लंबे इंतजार के बाद हासिल हुई थी।

ऑकलैंड के बाद से वहां खेले गए 13 टैस्ट मैचों में भारत ने छह हारे थे, और छह ड्रॉ रहे थे।

ये काफी खराब रिकॉर्ड था जिसे अब दुरुस्त किया जा रहा था।

धोनी ने शुरू से ही कोई भी कदम गलत नहीं उठाया, उन्होंने टॉस जीता और विरोधी टीम को बल्लेबाजी की दावत दी। उनके तेज गेंदबाजों ने शुरू में ही झटके दिए और घरेलू टीम लड़खड़ाती हुई छह विकेट पर 60 के स्कोर तक पहुंची। हालांकि डेनियल वेटोरी और जैसी राइडर के शतकों ने उन्हें 279 के स्कोर तक पहुंचा दिया, लेकिन ये शक्तिशाली भारतीय बल्लेबाजी के खिलाफ कुछ भी नहीं था।

तेंदुलकर की 160 रन की शानदार पारी भारत के 520 के स्कोर का आधार थी, जिसमें शुरू के सभी नौ बल्लेबाजों ने योगदान दिया था। न्यूजीलैंड अपनी दूसरी पारी में पहली ही पारी की तरह 279 पर सिमट गई और सलामी बल्लेबाजों को छोटे से लक्ष्य को पूरा करने में छह ओवर से भी कम लगे।

धोनी के प्रसिद्ध पूर्ववर्तियों के नेतृत्व में, पिछले पूरे दशक में, भारतीयों ने विदेशी धरती पर नर्म चारा होने के धब्बे को मिटाने का पूरा प्रयास किया था। लेकिन हताशाजनक रूप से न्यूजीलैंड एकमात्र अवरोध बना रहा था।

जब विजयी कप्तान से ये पूछा गया कि वो इस जीत को पिछले आठ साल की उस अवधि में कहां रखते हैं जिसमें भारत ने न्यूजीलैंड के अतिरिक्त टैस्ट खेलने वाले हर देश में कम से कम एक जीत जरूर दर्ज की थी तो उन्होंने हल्की सी झुंझलाहट के साथ पूछा, “आप हमेशा चीजों की तुलना क्यों करना चाहते हैं?”

शायद इतिहास का यही अहसास वैलिंगटन में तीसरे और अंतिम टैस्ट मैच में धोनी की सावधानी का कारण बना जहां वो भारत की दूसरी पारी में पारी समाप्ति की घोषणा को तब तक टालते रहे जब तक कि मेजबान टीम के सामने 617 का नामुमकिन लक्ष्य खड़ा नहीं हो गया। मैच के अनिर्णित रहने में बारिश ने भी अपनी भूमिका निभाई।

धोनी पीठ में मोच के कारण नेपियर में दूसरा टैस्ट नहीं खेल सके थे और उनकी अनुपस्थिति में वीरेंद्र सहवाग ने शर्मिंदगी से बचाने वाले ड्रॉ में भारत की अगुआई की, और फॉलो-ऑन के लिए मजबूर होने के बाद उन्होंने जबरदस्त बल्लेबाजी का प्रदर्शन किया।

टैस्ट क्रिकेट के गंभीर खेल को पीछे छोड़ने के बाद, अब धोनी के लिए आईपीएल के दूसरे सीजन में *चेन्नई सुपर किंग्स* का नेतृत्व करने का समय था। सरकार के साथ एक नाटकीय गतिरोध के बाद, आयोजक सालाना जश्न को दक्षिण अफ्रीका ले जाने को मजबूर हो गए क्योंकि ये राष्ट्रीय चुनावों की तारीखों में पड़ रहा था।

पहले आईपीएल में उपविजेता रहने के बाद, इस बार सीएसके सेमीफाइनल तक पहुंची लेकिन वहां उन्हें *रॉयल चैलेंजर्स* बंगलौर के हाथों पराजय का सामना करना पड़ा जो खुद फाइनल में *डैक्कन चार्जर्स* के सामने शिकस्त से दो-चार हुए। धोनी बल्ले के साथ अच्छी फॉर्म में रहे लेकिन इस बार उन्हें चार्जर्स के ऑस्ट्रेलियन कप्तान एडम गिलक्रिस्ट के रूप में एक अन्य विकेट-कीपर/बल्लेबाज/कप्तान ने पीछे छोड़ दिया।

आईपीएल के दो सीजन पूरे हो जाने और दक्षिण अफ्रीका में पहले विश्व ट्वेंटी-20 में जीत के बाद वर्तमान विश्व चैंपियन के रूप में, भारत ने इंग्लैंड में दूसरे विश्वकप में दावेदार के रूप में शुरुआत की। लेकिन उनके रथ के पहिए टूर्नामेंट शुरू होने से पहले ही निकल गए और कप्तान की मुश्किलें बहुत बढ़ गईं।

मीडिया से संबंधों के बारे में बोर्ड के अपारदर्शी और घिसे-पिटे रवैये का खामियाजा धोनी को भुगतना पड़ा जब सलामी बल्लेबाज और उपकप्तान वीरेंद्र सहवाग को नेट में कुल दस गेंदों का सामना करने के बाद पहले ही मैच से पहले प्रतियोगिता से बाहर होना पड़ा।

सहवाग कुछ समय से कंधे की चोट से जूझ रहे थे जो टीम के चयन से कुछ ही पहले आईपीएल के सेमीफाइनल के दौरान और भी बिगड़ गई थी। लेकिन टीम के फीजियो ने उन्हें फिट घोषित किया और इंग्लैंड पहुंचने के बाद ही सहवाग को अहसास हुआ कि वो कतई खेलने की हालत में नहीं हैं।

मीडिया ने धोनी और सहवाग के बीच मनमुटाव का इशारा दिया, और इससे भी बदतर ये कि एक अखबार ने राय दी कि सहवाग की फिटनेस की कमी के बारे में जानकारी खुद कप्तान ने लीक की थी।

'कैप्टन कूल' का मुखौटा पहली बार सार्वजनिक रूप से चरमराता महसूस हुआ जब नाराज धोनी नॉटिंघम में एक अभ्यास सत्र के बाद मीडिया से बात करने के दौरान एकता का सुबूत देने के लिए पूरी टीम को अपने साथ ले आए। उन्होंने बयान पढ़कर कहा कि टीम में कोई झगड़ा नहीं है और उन्होंने मीडिया के अंदाजों का जमकर विरोध किया।

धोनी ने 2007 में टी-20 टीम का नेतृत्व संभालने के बाद से मीडिया से दूरी बनाकर रखी थी लेकिन साथ ही उसके साथ अपने संबंधों को सौहार्द्रपूर्ण भी बनाए रखा था। प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान तनाव को कम करने के लिए वो हमेशा मुस्कुराते रहते थे और मजाक करने के लिए हमेशा तैयार रहते थे। लेकिन अब ऐसा लगता था कि काम का दबाव उन पर हावी हो रहा था।

ये विवाद आईपीएल की भूमिका को भी सामने लाया जिसमें फ्रेंचाइज अपने स्टार खिलाड़ियों पर हल्की-फुल्की चोटों के साथ खेलने का दबाव बनाती थीं जो और भी बदतर हो जाती थीं, जिसके नतीजे में देश के लिए खेलते समय उनकी फिटनेस खतरे में पड़ जाती थी। अब चूंकि पहले से ही बुरी तरह भरे कैलेंडर में आईपीएल एक बहुत बड़े भाग पर कब्जा करने लगा था, इसलिए चोटिल खिलाड़ियों के लिए चोट से उबरने का समय भी काफी कम होने लगा था।

वर्ल्ड टी-20 का दूसरा संस्करण शुरू ही से आश्चर्यों से घिरा रहा जब पहले दिन पहले ही मैच में मेजबान इंग्लैंड को कमजोर नीदरलैंड ने चौंका दिया। शक्तिशाली ऑस्ट्रेलिया भी

शुरुआती दौर में ही बाहर हो गया, जबकि भारत बांग्लादेश और आयरलैंड पर आसान जीतें दर्ज करके आसानी से सुपर आठ चरण में पहुंच गया।

लेकिन विनाश उसके बाद आया जब गत विजेता को वेस्टइंडीज, इंग्लैंड और दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ अपने तीनों मैचों में हार का मजा चखना पड़ा और वो सेमीफाइनल में पहुंचने में असफल रहा। दो साल के सुनहरे दौर के बाद आखिरकार ऐसा लगने लगा कि धोनी का स्वर्ण स्पर्श उन्हें छोड़ने लगा है और उनकी तीखी आलोचनाएं होने लगीं।

वेस्टइंडीज ने भारतीयों पर शॉर्टपिच गेंदबाजी से आक्रमण किया और ये चाल इतनी कामयाब रही कि भारत को प्रतियोगिता से बाहर करने के लिए इंग्लिश टीम ने भी यही युक्ति अपनाई। जब तक दक्षिण अफ्रीका से मुकाबले की बारी आई, तब तक भारत के शिविर से लड़ने की इच्छा ही जैसे जाती रही थी।

धोनी न केवल बल्ले के साथ नाकाम रहे, बल्कि इंग्लैंड के विरुद्ध युवराज को बल्लेबाजी क्रम में ऊपर न भेजने की उनकी रणनीतिक गलती के कारण टीम तीन रन से हार गई, जबकि अंतिम ओवर में उसे 19 रनों की आवश्यकता थी। ये कप्तान और तगड़े हिटर यूसुफ पठान के लिए कुछ ज्यादा ही साबित हुआ।

जीत के लिए 153 रन का पीछा करते हुए, 11 वें ओवर में तीन विकेट पर 63 के स्कोर पर, नए खिलाड़ी रवींद्र जडेजा को भेजा गया जबकि युवराज पवेलियन में ही सुस्ताते रहे। जब तक ये नौजवान खिलाड़ी बड़ी मुश्किल से 25 रन बनाकर आउट हुआ और युवराज क्रीज पर आए, तब तक रन रेट 10 से ऊपर पहुंच चुका था, जो टीम की पहुंच से बाहर था।

धोनी को खून के प्यासे प्रेस के झुंड की आलोचना का सामना करना पड़ा और उन्हें एक और कमजोर प्रदर्शन के लिए सफाई देना भारी पड़ गया जिसने टीम के अभियान का प्रभावशाली रूप से अंत कर दिया था।

इसी के साथ, पाकिस्तान चैंपियन बन गया हालांकि आईपीएल की फ्रैंचाइजों ने दूसरे सीजन में उसके सभी खिलाड़ियों को बाहर कर दिया था। इससे ये सवाल खड़ा हो गया कि आईपीएल भारतीय राष्ट्रीय टीम के लिए कितना अहम है। हमेशा की तरह, विचार पूरी तरह से बंटे हुए थे।

अभी कप्तान और उनके साथियों को उबरने का मुश्किल ही से समय मिला था कि उन्हें एक एकदिवसीय अंतर्राष्ट्रीय श्रृंखला के लिए वेस्टइंडीज जाना पड़ा। बजाहिर इसका कोई उद्देश्य नहीं था। लेकिन धोनी की फॉर्म में खुशनुमा वापसी और भारत की 2-1 से जीत ने हौसले को बढ़ाने में बहुत मदद की।

जुलाई में वेस्टइंडीज के दौरे और सितंबर में श्रीलंका के एक और दौरे के बीच दो महीने के दुर्लभ ब्रेक से सभी भारतीय खिलाड़ियों को बड़ी राहत हासिल हुई होगी। अगस्त में क्रिकेट की दुनिया तब चौंक गई, जब 2003 में आईसीसी क्रिकेट रैंकिंग के लागू होने के बाद से पहली बार ऑस्ट्रेलियाई टीम को नंबर एक के तख्त से हटना पड़ा। वास्तव में, 1995 में कैरिबियन में वेस्टइंडीज को जबरदस्त शिकस्त देने के बाद से ऑस्ट्रेलिया टैस्ट क्रिकेट में सबसे आगे रहा था। लेकिन अब उनके कई सुपरस्टारों के रिटायरमेंट के बाद वो

परिवर्तन से गुजर रही टीम थी और दक्षिण अफ्रीका और इंग्लैंड के विरुद्ध लगातार पराजयों ने उन्हें उच्चतम रैंकिंग से हटा दिया।

अब ऑस्ट्रेलिया चौथे स्थान पर पहुंच चुका था जबकि पहले तीन स्थानों पर दक्षिण अफ्रीका, श्रीलंका और भारत का कब्जा था। दक्षिण अफ्रीका एकदिवसीय क्रिकेट में भी प्रथम स्थान पर था जबकि मात्र एक पॉइंट पीछे भारत उसके लिए खतरा बना हुआ था।

उस समय एक भारतीय प्रकाशन में लिखते हुए, पीटर रोबक ने भविष्यवाणी की थी कि भारत जल्दी ही टैस्ट रैंकिंग के शीर्ष पर होगा। चार महीने बाद, उनकी बात एकदम सही साबित हुई।

कॉम्पैक त्रिकोणीय श्रृंखला में श्रीलंका और न्यूजीलैंड का सामना करने से पहले कोच कर्स्टन का उद्देश्य भारत को एकदिवसीय रैंकिंग में पहले स्थान पर पहुंचाना था। और 11 सितंबर को कोलंबो में न्यूजीलैंड को छह विकेट से हराने के बाद भारत ने ये प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त कर लिया।

लेकिन ये खुशी कुल 24 ही घंटे बरकरार रही। अगले ही दिन श्रीलंका से 139 रन से बुरी तरह हारने का अर्थ था कि आईसीसी रैंकिंग के अजीबोगरीब नियमों के अंतर्गत वो फिर से प्रथम स्थान को खो बैठे थे।

दो दिन बाद यही दोनों टीमें फाइनल में भिड़ीं जिसे तेंदुलकर के शानदार शतक और हरभजन सिंह के पांच विकेटों की बदौलत भारत ने 46 रन से जीत लिया। लेकिन इसके नतीजे में उन्हें 2009 में प्रथम स्थान नहीं मिल पाया।

ये 1998 से पहला मौका था जब भारत ने श्रीलंका में कोई टूर्नामेंट जीता था और इसका मतलब था कि अब टीम 2009 में विदेशों में लगातार चार एकदिवसीय श्रृंखलाओं में विजेता रही थी, जो कि एक असाधारण कारनामा था।

तो क्या भारत दक्षिण अफ्रीका में होने वाली चैंपियंस ट्रॉफी के लिए सही समय पर उदय कर रहा था, जिसमें भारतीय टीम पहले दो बार फाइनल में पहुंची थी, जबकि 2000 में वो न्यूजीलैंड से हार गई थी और 2002 में उसने श्रीलंका के साथ मिलकर खिताब जीता था?

नहीं। वर्ष में दूसरी बार, टीम एक आईसीसी प्रतियोगिता में सेमीफाइनल तक पहुंचने में नाकाम रही। अब चर्चाएं होने लगीं कि वो बड़े मुकाबलों में घबरा जाते हैं।

लेकिन भारतीय टीम अपने तीन दिग्गज मैच विजेताओं के बिना खेल रही थी। सहवाग और जहीर खां चोटिल होने की वजह से बाहर थे और टीम के दुर्भाग्य से, पहले मैच से पहले अभ्यास मैच में युवराज की उंगली टूट गई थी।

भारत प्रभावी रूप से एक ही मैच—पाकिस्तान के विरुद्ध पहला मैच—हारने के बाद बाहर हो गया था, जिसमें गेंदबाजी आक्रमण इतना कमजोर था कि कप्तान ने ये अर्थपूर्ण टिप्पणी की कि उन्हें तीन गेंदबाजों जितनी कमी महसूस हुई।

ऑस्ट्रेलिया के विरुद्ध अगला मैच बारिश के कारण ‘नो-रिजल्ट’ रहा और जब तक अपने अंतिम लीग मैच में भारत का मुकाबला वेस्टइंडीज से होता, तब तक उनका भाग्य

सिर्फ 40 किलोमीटर दूर साथ-साथ चल रहे एक मैच में पाकिस्तान द्वारा ऑस्ट्रेलिया को हराए जाने पर निर्भर करता था।

भारत ने तो अपनी विरोधी टीम को हरा दिया, लेकिन दुर्भाग्य से उनकी ये जीत औपचारिकता मात्र साबित हुई क्योंकि ऑस्ट्रेलिया ने अपना मैच अंतिम गेंद पर दो विकेट से जीतकर सेमीफाइनल में प्रवेश कर लिया और भारत का बोरिया-बिस्तर बांध दिया।

पहला अंतर्राष्ट्रीय विकेट (ट्रैविस डाउलिन) या लगातार दूसरे साल आईसीसी द्वारा एकदिवसीय ‘प्लेयर ऑफ द इयर’ घोषित किया जाना भी धोनी की एक बार फिर से जल्दी बाहर हो जाने की पीड़ा को कम नहीं कर सका।

लेकिन अगर ये माना जाए कि एक कप्तान उतना ही अच्छा होता है जितनी कि उसकी टीम, तो धोनी वाकई मजबूर थे।

धोनी को एक और अच्छा ब्रेक मिल गया क्योंकि उनकी आईपीएल टीम सीएसके पहले चैंपियंस लीग के लिए क्वालिफाई नहीं कर सकी थी। ऐसे ब्रेक धोनी के लिए बहुत कम रहे हैं खासकर अब, जबकि वो तीनों प्रारूपों के साथ-साथ आईपीएल में भी कप्तान हैं।

सात मैच की एकदिवसीय श्रृंखलाएं आमतौर पर एक या दो मैच लंबी हो जाती हैं। अक्टूबर में ऑस्ट्रेलिया की टीम आ गई और पिछले दशकों में इन दोनों देशों की टीमों के मैचों में हमेशा जोरदार मुकाबले हुए हैं। ये श्रृंखला भी भिन्न नहीं थी और हालांकि भारत 4-2 से श्रृंखला हार गया (आखरी मैच बारिश की नजर हो गया), लेकिन दोनों ओर से कुछ बेहद शानदार प्रदर्शन देखने को मिले।

आखिरकार सहवाग की सलामी बल्लेबाज के रूप में और धोनी की शानदार फॉर्म में वापसी के साथ, वडोदरा में पहले मैच में सिर्फ चार रन से हारने के बाद, भारत ने श्रृंखला में 2-1 से बढ़त बना ली।

नागपुर में दूसरे मैच में भारत का 7 विकेट पर 354 का विशाल स्कोर धोनी के बेहतरीन ढंग से सधी हुई गति पर बनाए गए 124 के इर्द-गिर्द बना था जिसके कारण भारत 99 रन से जीता। ये 36 मैचों में उनका पहला शतक था! इससे पहले उन्होंने 2008 के एशिया कप में हांगकांग के खिलाफ शतक जड़ा था।

नई दिल्ली में तीसरे मैच में भारत ने छह विकेट से जीतकर श्रृंखला में बढ़त बनाई तो धोनी अंत में अविजित 71 रन बनाकर क्रीज पर थे।

लेकिन एक वास्तविक चैंपियन टीम की तरह, ऑस्ट्रेलिया ने जोरदार वापसी की। उसने हैदराबाद में एक कांटे के मैच में श्रृंखला में 2-2 की बराबरी कर ली जब तेंदुलकर की धमाकेदार 175 रन की पारी चैंपियंस ट्रॉफी विजेता को तीन रन से जीतने से वंचित नहीं कर सकी। उसके बाद विश्व चैंपियन ने मोहाली और गोहाटी में आसान जीतें दर्ज करके श्रृंखला को आसानी से जीत लिया, जबकि मुंबई में आखरी मैच बारिश का शिकार हो गया।

आमतौर पर टैस्ट श्रृंखला के लिए श्रीलंका का दौरा बहुत ज़्यादा उत्साह नहीं जगाता है लेकिन ये श्रृंखला भिन्न थी क्योंकि इस समय टैस्ट क्रिकेट में पहला स्थान भारत की पकड़ में था।

अहमदाबाद में शुरुआती झटकों के बाद द्रविड़ और धोनी के शतकों की बदौलत भारत 400 के स्कोर को पार करने में कामयाब रहा। ये 38 टैस्ट मैचों में धोनी का दूसरा और तीन साल से अधिक में पहला शतक था।

इसके बार श्रीलंकाई बल्लेबाजों ने भारतीय गेंदबाजों को धूल चटाते हुए 7 विकेट पर 760 रन बनाकर पारी घोषित की, जो कि भारतीय सरजमीन पर अब तक का अधिकतम स्कोर था। उसके बाद मैच नीरसतापूर्ण ड्रॉ रहा।

कानपुर का मैच घरेलू टीम के लिए बेहद आसान साबित हुआ जहां वो चार दिन के अंदर एक पारी और 144 रन से जीत गई। और ये जीत बहुत खास थी, क्योंकि ये भारत की 100 वीं टैस्ट जीत थी।

अब प्रतिष्ठित नंबर एक स्थान सिर्फ एक जीत दूर था। और ये उपयुक्त रूप से मुंबई के ऐतिहासिक ब्रैबर्न स्टेडियम पर हासिल हुई जहां 36 साल के अंतराल के बाद टैस्ट क्रिकेट की वापसी हो रही थी।

सहवाग के धमाकेदार 293 रनों ने लंकाई गेंदबाजों के परखचे उड़ा दिए और श्रृंखला में धोनी के दूसरे शतक के साथ ही मेहमान टीम को लगातार दूसरी पारी की हार का सामना करना पड़ा।

जब 6 दिसंबर, 2009 को लंका का अंतिम विकेट गिरा और भारत औपचारिक रूप से दुनिया में पहले नंबर का टैस्ट क्रिकेट देश बना, तो जश्न जैसा माहौल पैदा हो गया।

धोनी ने तुरंत ही अपने साथी खिलाड़ियों, कोच कर्स्टन और सपोर्ट स्टाफ को इसका श्रेय दिया। “ये उपलब्धि एक या दो लोगों के प्रयासों से नहीं हासिल हुई है, बल्कि ये एक लंबी प्रक्रिया थी और पिछले 18 महीनों में जो कोई भी टीम का भाग रहा है, इसमें उन सभी का योगदान रहा है। ये बड़ी मेहनत से प्राप्त की गई उपलब्धि है, लेकिन साथ ही इसे बनाए रखना भी एक मुश्किल काम होगा।”

तेंदुलकर, द्रविड़ और वीवीएस लक्ष्मण जैसे वरिष्ठ खिलाड़ियों के लिए, जिन्होंने एक दशक पहले भारतीय क्रिकेट के पतन को देखा था, ये उपलब्धि और भी संतोषजनक थी।

धोनी ने टीम की कमान एक वर्ष पहले अनिल कुंबले से ली थी। कुंबले से पहले, द्रविड़ और सौरव गांगुली ने भी भारत को विदेशों में यादगार जीतें दिलाकर ये सुनिश्चित कर दिया था कि भारत को टैस्ट के क्षेत्र में कमजोर न आंका जाए। और शीर्ष तक पहुंचने में भूतपूर्व कोच जॉन राइट ने भी शानदार किरदार निभाया था।

खिलाड़ियों, प्रशंसकों और मीडिया में टैस्ट क्रिकेट के लिए जन्मे नए उत्साह के कारण बोर्ड मजबूर हो गया। बोर्ड ने पांच दिन के खेल में बहुत कम दिलचस्पी दिखाई थी, लेकिन अब एक ऐसे समय में जबकि लगने लगा था कि आईपीएल अपने रास्ते में आने वाली हर चीज को रौंद डालेगा, ये मांग बढ़ने लगी कि भारत कुछ और ज्यादा अर्थपूर्ण मैच भी खेले। दक्षिण अफ्रीका फरवरी 2010 में पांच एकदिवसीय अंतर्राष्ट्रीय मैच खेलने वाला था लेकिन इसको जल्दी-जल्दी में बदलकर तीन एकदिवसीय और दो टैस्ट मैच कर दिया गया। अगर और टैस्ट नहीं खेले जाते, तो भारत का शीर्ष स्थान खतरे में पड़ जाता और इसलिए बीसीसीआई टैस्ट मैच क्रिकेट के महत्व के प्रति जाग गया।

इस सारे जोशो-खरोश में फिलहाल एकदिवसीय क्रिकेट पीछे छूट गई। दोनों टीमों ने एक-एक टी-20 मैच जीता जबकि एकदिवसीय श्रृंखला भारत ने 3-1 से जीत ली। नागपुर में दूसरे एकदिवसीय में शतक के साथ धोनी की शानदार फॉर्म जारी रही। लेकिन उन्हें अगले दो मैचों में बाहर बैठना पड़ा क्योंकि नागपुर के मैच में—जहां श्रीलंका ने श्रृंखला में अपनी इकलौती जीत दर्ज की—धीमी ओवर गति के लिए मैच रेफरी ने उन पर दो मैचों की पाबंदी लगा दी थी।

तीनों प्रारूपों में कप्तान के रूप में अपने पहले वर्ष के मुकम्मल होने पर, धोनी 2009 के प्रदर्शन पर संतुष्ट हो सकते थे। विश्व ट्वेंटी-20 चैंपियनशिप और चैंपियंस ट्रॉफी में बुरी तरह नाकामी जरूर हाथ लगी थी, लेकिन साथ ही छह में से पांच एकदिवसीय श्रृंखलाओं में विजय भी प्राप्त हुई थी।

लेकिन सबसे बड़ी उपलब्धि वर्ष के अंत में आईसीसी टैस्ट रैंकिंग में शीर्ष पर रहना था।

अध्याय तेरह

घरेलू सुख

हां, 2010 एमएस धोनी के लिए बेशक घरेलू सुख का वर्ष था।

कैसे?

सबसे पहले तो धोनी ने अपने नेतृत्व में *चेन्नई सुपर किंग्स* को अपना आईपीएल खिताब जिताया और फिर उसे चैंपियंस लीग में भी विजेता बनवाया। जाहिर है इन दोनों को ही घरेलू प्रतियोगिताएं माना जाता है।

लेकिन भारतीय कप्तान के लिए वर्ष की सबसे प्रमुख बात क्या थी? बेशक, अपने 29 वें जन्मदिन से सिर्फ चार दिन पहले 4 जुलाई को देहरादून में दो सालो तक करीबी रहीं, गर्लफ्रेंड साक्षी सिंह रावत से विवाह करना। तो इस तरह कैप्टन कूल को मैदान के अंदर और बाहर दोनों ही जगह घरेलू सुख प्राप्त हुआ।

इस शादी ने विभिन्न फिल्म अभिनेत्रियों के साथ उनके प्रेम प्रसंगों के बारे में अंदाजों और अफवाहों को भी हमेशा के लिए बंद कर दिया। उनके कुंआरेपन के दिन खत्म हो गए और देशभर में उनकी लाखों महिला प्रशंसकों के दिल टूट गए।

मेहमानों की फेहरिस्त चौंकाने वाली थी। इसमें दो मूवी स्टार थे, जॉन अब्राहम और बिपाशा बसु और क्रिकेट जगत से जुड़े उनके सिर्फ दो दोस्त, आर.पी. सिंह और सुरेश रैना और झारखंड के दो राजनेता। न तो भारतीय क्रिकेट से जुड़े किसी बड़े नाम को और न ही बीसीसीआई के वरिष्ठ अधिकारियों में से किसी को आमंत्रित किया गया था।

कहने की जरूरत नहीं कि मीडिया को पूरी तरह से नजरअंदाज कर दिया गया था। कड़ी सुरक्षा ने सुनिश्चित कर दिया कि वो *विश्रांति* —वो रिजॉर्ट जहां शादी का आयोजन किया गया था—के नजदीक भी नहीं फटक सके और टीवी रिपोर्टर विवाह स्थल से एक सुरक्षित दूरी पर साउंड-बाइट्स लेने के लिए फड़फड़ाते ही रह गए। शायद एक साल पहले मीडिया द्वारा बुरी तरह परेशान किए जाने के लिए ये दूल्हे का बदला था।

नंबर एक टैस्ट टीम के रूप में 2010 की शुरुआत में भारत ने अपनी पहली परीक्षा आसानी से पास कर ली जब उन्होंने बांग्लादेश को दोनों टैस्ट मैचों में हरा दिया। टैस्ट श्रृंखला से पहले एकदिवसीय त्रिकोणीय श्रृंखला के फाइनल में ढाका में श्रीलंका द्वारा हराए जाने के बाद, चटगांव के पहले टैस्ट में धोनी पीठ में मोच के कारण नहीं खेल सके। धोनी की पिछले साल की शानदार फॉर्म मीरपुर में दूसरे टैस्ट में 89 रन की पारी के साथ जारी रही।

असली परीक्षा की घड़ी इसके बाद विश्व में दूसरे नंबर की टीम दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ घरेलू श्रृंखला में आई, जिसके लिए भारतीय खिलाड़ियों ने बोर्ड से लगभग मांग की थी।

और घरेलू टीम स्तंभित रह गई जब उसे कानपुर में पहले टैस्ट में दक्षिण अफ्रीका के तबाहकुन तेज गेंदबाजों ने एक पारी और छह रनों से पछाड़कर रख दिया। ये धोनी के लिए एक नया तजुर्बा था क्योंकि उनकी कप्तानी में भारत पहली बार कोई टैस्ट मैच हारा था और उन्होंने तुरंत ही स्वीकार किया कि भारत खेल के तीनों विभागों में पराजित हुआ था।

भारत के लिए अपने शीर्ष स्थान को बनाए रखने के लिए कोलकाता में दूसरा और अंतिम टैस्ट जीतना जरूरी था और उन्होंने एक तनावपूर्ण अंत में बस कुछ मिनट रहते मैच जीत लिया। इस लघु श्रृंखला में हाशिम आमला दक्षिण अफ्रीका के बल्लेबाजी हीरो सिद्ध हुए।

धोनी की अविजित 132 रनों की पारी भारत के लिए उनका चौथा शतक था और उनके छह विकेट पर 643 रन पर पारी घोषित का अर्थ था कि दक्षिण अफ्रीका को फॉलो-ऑन करना पड़ा। उस समय केवल नौ अनिवार्य गेंदें शेष थीं जब हरभजन सिंह ने अंतिम विकेट लिया और खुशी से दौड़ते हुए पूरे मैदान का चक्कर लगाने लगे जबकि उनके सारे साथी उनका पीछा कर रहे थे।

इससे ये सिद्ध हो गया कि टैस्ट क्रिकेट भारतीय खिलाड़ियों के लिए कितनी महत्वपूर्ण थी, भले ही अधिकारियों और प्रशंसकों ने इससे बड़ी हद तक पीठ फेर ली हो।

“हम बेहद खुश हैं और इस तरह जीतना कमाल की बात है। अंत में दिल बुरी तरह धड़क रहा था,” ऑफ स्पिनर ने कहा जिन्होंने अपने उस मनपसंद मैदान पर कुल आठ विकेट लिए जहां उन्होंने खुद को पहली बार 2001 में ऑस्ट्रेलिया के विरुद्ध 13 विकेट लेकर स्थापित किया था।

रोमांचक क्रिकेट एकदिवसीय श्रृंखला में भी जारी रहा जहां सचिन तेंदुलकर ने ग्वालियर में एकदिवसीय क्रिकेट के इतिहास में पहला दोहरा शतक जमाने का कारनामा अंजाम दिया। भारत ने 2-1 से बढ़त बना ली।

जयपुर में पहले मैच में किसी तरह एक रन से जीतने के बाद, भारत ने ग्वालियर में 153 रन से जबरदस्त जीत हासिल की जहां क्रिकेट जगत तेंदुलकर के अविजित 200 रन से चौंधियाकर रह गया। धोनी तेंदुलकर के साथ बल्लेबाजी कर रहे थे जब भारत ने 3 विकेट पर 401 का स्कोर खड़ा किया। कप्तान विलेन बनते-बनते बचे जब अपनी

धमाकेदार 68 रन (35 गेंद) की पारी में वो अंत में स्ट्राइक अपने ही पास रखे हुए थे, जबकि चैंपियन बल्लेबाज पारी के अंतिम ओवर में किसी तरह से इस मील के पत्थर तक पहुंचे।

पिछले साल दक्षिण अफ्रीका में अपने संक्षिप्त पड़ाव के बाद आईपीएल एक बार फिर से भारत लौट आया। *चेन्नई सुपर किंग्स* को शुरू में ही झटका लगा जब कप्तान धोनी बांह में चोट के कारण तीन मैचों से बाहर रहे और उनकी अनुपस्थिति में सुरेश रैना ने नेतृत्व किया।

धोनी ने पहले दो मैचों में सबसे अधिक रन बनाए, *डैक्कन चार्जर्स* के विरुद्ध पराजय में और *कोलकाता नाइटराइडर्स* के खिलाफ विजय में जिसमें तेज गेंदबाज शेन बॉन्ड ने धोनी की अविजित 66 रन की मैच जिताने वाली पारी के दौरान उन्हें घायल कर दिया।

लेकिन धोनी के वापस आने के बाद, सीएसके ने अपनी खराब शुरुआत से, जिसमें वो अपने आठ में से पांच मैच हार चुकी थी, उबरने में बड़ा हौसला दिखाया। उन्हें ऑस्ट्रेलियाई बाएं हाथ के तेज गेंदबाज डग बॉलिंजर के शामिल होने से भी बड़ी मदद मिली, जिनकी ऑफ स्पिनर आर. अश्विन के साथ एक विजयी साझेदारी बनी जिसके नतीजे में टीम ने अपने अंतिम आठ में से छह मैच जीते।

सबसे अहम मैच धर्मशाला में हुआ जहां सीएसके को सेमीफाइनल में पहुंचने के लिए *किंग्स इलैवन* पंजाब के खिलाफ अपने दूसरे मैच में जीतना अनिवार्य था। चेन्नई में पहला मैच टाई होने के बाद सीएसके सुपर ओवर में हार गया था।

काम मुश्किल लगता था क्योंकि अंतिम दो ओवरों में 29 और फिर इरफान पठान के आखरी ओवर में 16 रन चाहिए थे। यहां कप्तान ने चार्ज संभाला और एक चौका और लगातार दो छक्के लगाए और आमतौर पर शांत रहने वाले धोनी खुशी और राहत से चिल्लाने और अपने जबड़े को ठोंकने लगे जबकि उनके खुशी से पागल साथियों ने उन्हें घेर लिया। उन्होंने अंतिम दो ओवरों की नौ गेंदों पर अपने बल्ले से 30 रन मारे थे।

ये एक आश्चर्यजनक नजारा था और इस पर क्रिकेट जगत की भौंहें तन गईं। आईपीएल स्पष्टतः भिन्न था और खिलाड़ी अभूतपूर्व ढंग से अपनी भावनाओं का प्रदर्शन कर रहे थे। बाजियां बहुत बड़ी थीं और टीम के मालिकों का दबाव निश्चित रूप से इन सारी भावनाओं के प्रदर्शन का कारण था।

धोनी ने भी इसे स्वीकार किया। “आपकी फ्रैंचाइज आपको इतना सारा पैसा देती है, आपको कम से कम सेमीफाइनल तक तो पहुंचना ही चाहिए। उसके बाद आप कह सकते हैं कि ये लॉटरी है।”

14 लीग मैचों में सात जीतों के साथ, सीएसके बेहतर रन रेट पर सेमीफाइनल में प्रवेश करने में सफल रही। लेकिन गत विजेता *डैक्कन चार्जर्स* के खिलाफ सेमीफाइनल लॉटरी नहीं थी 142 के मामूली स्कोर का बचाव करते हुए, धोनी ने गेंदबाजी की शुरुआत बॉलिंजर और अश्विन से कराई और उन्होंने पूर्व चैंपियनों की बल्लेबाजी का शुरू से ही दम घोंटकर रख दिया। तीन स्पिनरों के साथ एक जबरदस्त चाल साबित हुई और चार्जर्स 104 पर ऑल आउट हो गए।

सीएसके तीन साल में दूसरी बार फाइनल में पहुंची। वास्तव में, वो तीनों संस्करणों में कम से कम सेमीफाइनल तक पहुंचने वाली अकेली टीम थी, जोकि धोनी की रणनीति और जबरदस्त तनाव के बीच ठंडे दिमाग का सुबूत था। वो फाइनल से पहले ही क्रिकेट के लिए पागल उस चेन्नई के पसंदीदा सपूत बन गए थे, जिसने आईपीएल के आगमन से पहले तेंदुलकर को अपना मनपसंद बनाया हुआ था।

फाइनल ने भारतीय क्रिकेट के इन दो सुपरस्टारों को आमने-सामने खड़ा कर दिया। और हौसलामंद नौजवान ने अनुभवी विशेषज्ञ को मात दे दी। तेंदुलकर ने वेस्टइंडीज के तगड़े हिटर कीरॉन पोलार्ड को बल्लेबाजी क्रम में नीचे भेजकर भारी गलती की और एमआई सीएसके के 5 विकेट पर 168 को पीछे छोड़ने में नाकाम रहे।

कुछ जबरदस्त हिटिंग के बावजूद आवश्यक रन दर बहुत ज़्यादा थी और पोलार्ड के 10 गेंद में 27 रन पर आउट होने के बाद मैच लगभग खत्म सा हो गया। ऐसा सीएसके के कप्तान की एक जबरदस्त चाल की बदौलत संभव हुआ। उन्होंने मैथ्यू हेडन को अनऑर्थोडॉक्स स्ट्रेट मिड ऑफ पर खड़ा कर दिया और एल्बी मॉर्केल की गेंद पर पोलार्ड सीधे उन्हीं के हाथों में कैच थमा बैठे। बस “सहज भावना” धोनी ने विनीत भाव से कहा। लेकिन ये धोनी का दिन था और सीएसके ने 22 रन से मैच जीतकर पहली बार खिताब हासिल किया।

प्रतियोगिता के मध्य में बाहर होने के खतरे से जूझ रहे खिलाड़ियों को कुछ कर गुजरने और मुश्किल से बाहर निकलकर खिताब जीतने के लिए धोनी की वापसी ने ही प्रेरित किया था।

भारत की झुलसाने वाली गर्मी में लंबे आईपीएल में थककर चूर-चूर होने के बाद, दुनिया भर की राष्ट्रीय क्रिकेट टीमें तीसरे विश्व ट्वेंटी-20 के लिए वेस्टइंडीज चल दीं। क्या धोनी अपने भारतीय टीम के साथियों को उसी तरह प्रेरित कर सकते थे जैसे उन्होंने सीएसके को किया था?

ऐसा नहीं हो सका और भारतीय टीम लगातार तीसरी आईसीसी प्रतियोगिता में नाकाम रही। ये उसके लिए बदतरीन किस्म की पुनरावृत्ति थी। दक्षिण अफ्रीका पर एक प्रभावशाली जीत दर्ज करते हुए, वो एक बार फिर से सुपर एट में पहुंच गई। और एक बार फिर से वो शॉर्ट गेंदबाजी के सामने बौनी साबित हुई और अपने तीनों मैच हार गई जिस तरह पिछले साल इंग्लैंड में हुआ था।

सेंट लूशिया से दूसरे चरण के लिए ब्रिजटाउन, बारबाडोस की ज्यादा जानदार पिचों पर पहुंचने पर भूतपूर्व चैंपियन की कलई पूरी तरह खुल गई और वो बुरी तरह परास्त कर दिए गए। ऑस्ट्रेलिया, वेस्टइंडीज और श्रीलंका तीनों ने भारतीय बल्लेबाजों की पारंपरिक कमजोरी का फायदा उठाया। धोनी ने अत्यधिक सफर और अनिवार्य आईपीएल पार्टियों को खिलाड़ियों की थकान का दोषी करार दिया। कोच गैरी कर्स्टन ने भी टीम के फिटनेस स्तर की आलोचना की, जो कि प्रचंड गर्मी के महीनों में आईपीएल के कठिन कार्यक्रम को देखते हुए बहुत आश्चर्य की बात नहीं थी।

लेकिन सबसे स्पष्ट चीज थी भारत की बेजान पिचों पर आईपीएल और अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट के बीच विशाल खाई और किस तरह इस आकर्षक घरेलू टूर्नामेंट में अच्छा प्रदर्शन कुछ क्रिकेटरों का दिमाग खराब कर रहा था।

जिस तरह पाकिस्तान ने 2009 में दूसरा विश्वकप जीता था जबकि 2008 के पहले आईपीएल सीजन के बाद उनके किसी भी खिलाड़ी को नहीं चुना गया था, उसी तरह इंग्लैंड ने 2010 में विश्वकप जीत लिया जबकि उनके मुट्ठी भर खिलाड़ी ही आईपीएल में खेले थे, और इसने आग में घी का काम किया।

ये विवाद और गहरा होता चला गया कि क्या आईपीएल भारतीय क्रिकेट के लिए लाभकारी है या फिर इसे महज एक व्यापारिक उद्यम समझा जाए?

इसमें हैरत की कोई बात नहीं थी कि विश्व टी-20 के तुरंत बाद जिम्बाब्वे में होने वाली माइक्रोमैक्स एकदिवसीय त्रिकोणीय श्रृंखला से धोनी सहित कई बड़े खिलाड़ियों ने खुद को अलग कर लिया। उनकी थकान अपने चरम को पहुंच रही थी और मजबूरन सुरेश रैना को टीम की कप्तानी करनी पड़ी। मेजबान टीम से दो बार हारने और फाइनल तक न पहुंच पाने ने भारतीय दोयम दर्जे के खिलाड़ियों की कलई खोलकर रख दी।

नई ताजगी और स्फूर्ति हासिल करने के बाद, भारतीय एक बार फिर पूरी शक्ति के साथ श्रीलंका में एशिया कप के लिए वापस आ गए। इस प्रतियोगिता में भारतीयों को बहुत कम सफलता प्राप्त हुई है। वास्तव में, उन्होंने इसमें अपना पिछला खिताब बहुत पहले 1995 में जीता था और 2008 में इसके पिछले संस्करण में उन्होंने कराची में खेले गए फाइनल में श्रीलंका के रहस्यमयी स्पिनर अजंता मेंडिस के सामने घुटने टेक दिए थे।

इसीलिए दंबूला में फाइनल में विजय और भी ज्यादा आकर्षक रही जहां श्रीलंका 81 रन से बुरी तरह हारा। लेकिन चैंपियन बनने वाली टीम के लिए फाइनल तक पहुंचने का रास्ता इतना आसान नहीं रहा था। पाकिस्तान के साथ तनावपूर्ण मुकाबले में वो अंतिम ओवर में किसी तरह तीन विकेट से जीतने में सफल रहे! इस मैच में धोनी (56) ने बहुत महत्वपूर्ण पारी खेली थी। दूसरे लीग मैच में वो श्रीलंका से हार गए लेकिन फाइनल में उन्होंने बाजी पलट दी।

जुलाई का महीना धोनी के लिए काफी व्यस्त रहा। 3 जुलाई को उनकी सगाई और अगले दिन शादी के बाद एक बड़ी खबर आई कि उन्होंने *रीति स्पोर्ट्स मैनेजमेंट* और *माइंडस्केप* वन के साथ अगले तीन साल के लिए 210 करोड़ रुपए (लगभग 42 मिलियन डॉलर) की जबरदस्त कीमत पर भारतीय खेल जगत के इतिहास का सबसे बड़ा समझौता किया है।

धोनी के मर्दाना व्यक्तित्व, उनकी उत्साहपूर्ण बल्लेबाजी शैली और प्रभावशाली कप्तानी, जिसकी बदौलत 2007 में राष्ट्रीय टीम की कमान संभालने के बाद से उन्होंने भारत को तीनों प्रारूपों में शिखर तक पहुंचा दिया था, के कारण वो कॉरपोरेट जगत की आंखों का तारा बन गए थे और इस बात पर कम ही लोगों को आश्चर्य हुआ कि कुल 29 साल की उम्र में युवा आइकन बन चुका ये खिलाड़ी कम से कम व्यावसायिक रूप से तेंदुलकर को पीछे छोड़ चुका था।

संक्षेप में, वो अब भारतीय क्रिकेट के नंबर एक सुपरस्टार थे।

धोनी को न तो नए-नवेले शादीशुदा व्यक्ति की अपनी नई स्थिति का ही आनंद लेने का अवसर मिला और न ही अपने बढ़ते हुए बैंक खाते का क्योंकि एशिया कप के कुल एक महीने बाद ही भारतीय टीम एक टैस्ट श्रृंखला के लिए श्रीलंका वापस पहुंच गई।

गाले में खेला गया पहला मैच श्रीलंका ने बड़ी आसानी से जीता जबकि दूसरा टैस्ट दोनों टीमों द्वारा बनाए रनों के पहाड़ के नीचे दब गया।

श्रृंखला को बचाने और अपनी विश्व नंबर एक की रैंकिंग को सही साबित करने के लिए भारत को कोलंबो के पी सारा ओवल में—जहां श्रीलंका 1994 से एक भी टैस्ट नहीं हारा था—तीसरा और अंतिम टैस्ट जीतना अनिवार्य था। पीठ की चोट से जूझ रहे वीवीएस लक्ष्मण की एक और खास पारी की बदौलत तनावपूर्ण अंतिम दिन के खेल में भारत की नैया किसी तरह पार लगी और एक बार फिर भारतीय टीम ने किसी टैस्ट श्रृंखला में शुरुआती झटकों के बाद वापसी करने की अपनी योग्यता का प्रदर्शन किया।

अब तक शायद भारतीय और श्रीलंकाई खिलाड़ी क्रिकेट के मैदान में एक दूसरे का सामना करने से उकता चुके हों, लेकिन उन्हें अभी इससे राहत नहीं मिलनी थी। टैस्ट श्रृंखला समाप्त होने के कुल तीन दिन बाद, भारत एक और त्रिकोणीय एकदिवसीय श्रृंखला का भाग था और आश्चर्य की कोई बात नहीं थी कि पहले ही मैच में भारत को न्यूजीलैंड के हाथों 200 रन से हार का सामना करना पड़ा, हालांकि हार का अंतर वाकई चौंकाने वाला था।

लेकिन प्रत्याशित रूप से, फाइनल में एक बार फिर भारत और श्रीलंका का मुकाबला हुआ और इस बार श्रीलंका ने बड़ी ही आसानी से माइक्रोमैक्स कप पर कब्जा कर लिया।

विश्वकप से कुछ महीने पहले ये भारतीयों के लिए चिंता का विषय था। टीम क्लांत सी दिखती थी और महा मुकाबले से पहले कप्तान और कोच को बहुत काम करना था।

लेकिन उससे पहले दक्षिण अफ्रीका में चैंपियंस लीग का भी छोटा सा मसला था, जो कि धोनी और सीएसके के लिए एक नया अनुभव था क्योंकि वो 2009 के पहले संस्करण के लिए क्वालिफाई करने में नाकाम रहे थे।

चूंकि मुथैया मुरलीधरन और अश्विन प्रतियोगिता में सबसे अधिक विकेट लेने वाले गेंदबाज रहे थे, जबकि मुरली विजय सबसे अधिक रन बनाने वाले थे जिनका सुरेश रैना और माइक हसी ने भी अच्छा साथ दिया था, इसलिए धोनी का काम काफी आसान हो गया था। किसी भी टीम में अंतर्राष्ट्रीय स्टार खिलाड़ियों का ऐसा जमावड़ा नहीं था जबकि खुद कप्तान अपने नेतृत्व और बल्लेबाजी के साथ उन्हें प्रेरित करने को मौजूद थे।

फाइनल में आईपीएल चैंपियन टीम ने घरेलू मजबूत दावेदार ईस्टर्न केप वारियर्स को आठ विकेट से हराकर ट्वेंटी-20 घरेलू प्रतियोगिता जीत ली। इसका अर्थ था कि अब धोनी की कप्तानी की झोली में विश्व 2007 के विश्व टी-20 खिताब के साथ-साथ एक ही साल में आईपीएल और चैंपियंस लीग की अनोखी तिकड़ी मौजूद थी।

भारत-ऑस्ट्रेलिया श्रृंखलाओं को 2001 से जो लोकप्रियता प्राप्त हुई है, उसके नतीजे में ऑस्ट्रेलिया एक साल बाद फिर से भारत पहुंच चुका था और मोहाली में सनसनीखेज

पहले टैस्ट में एक बार फिर पहले जैसा परिचित पैटर्न देखने को मिला।

मेहमानों के खिलाफ लक्ष्मण का आश्चर्यजनक प्रदर्शन जारी रहा। और श्रीलंका में चोटिल पीठ के बावजूद भारत के सिर जीत का सेहरा बांधने के सिर्फ दो महीने बाद, उन्होंने एक बार फिर से अपने कारनामे को दोहरा दिया। जीत के लिए 216 रन का पीछा करते हुए, घरेलू टीम 8 विकेट पर 124 के बजाहिर निराशाजनक स्कोर पर थी। पीठ के निचले भाग में ऐंठन से जूझते लक्ष्मण ने एक बार फिर अंतिम बल्लेबाजों की रक्षा करने की अपनी योग्यता दिखाई और भारत ने ये कांटे का मुकाबला एक विकेट से जीत लिया जिसमें लक्ष्मण की 73 रनों की अविजित पारी टैस्ट क्रिकेट के इतिहास की सबसे महान गैर-शतकीय पारियों में से एक बन गई।

ये केवल दो टैस्ट की श्रृंखला थी, इसलिए जब भारत ने बंगलौर में दूसरा टैस्ट सात विकेट से जीता तो उसने श्रृंखला का सफाया कर दिया।

एकदिवसीय श्रृंखला में बारिश के कारण तीन में से सिर्फ एक ही मैच पूरा हो पाया और विशाखापत्तनम में भारत ने वो मैच पांच विकेट से जीतकर ऑस्ट्रेलिया को बिना किसी जीत के वापस भेज दिया।

अपने परा-टास्मान पड़ोसियों के बाद, न्यूजीलैंड की टीम भारत आई और पहले दो टैस्ट अनिर्णीत खेलकर उसने अच्छा प्रदर्शन किया, जिनमें हरभजन सिंह के असंभाव्य बल्ले से दो शतक देखने को मिले। लेकिन तीसरे टैस्ट में नागपुर में कीवी नहीं लड़ सके और एक पारी और 198 रन से कुचल दिए गए। इस टैस्ट में धोनी ने भी फॉर्म में वापसी की और अपने शतक से दो रन से चूके।

धोनी ने एक बार फिर एकदिवसीय श्रृंखला से ब्रेक लिया और उनकी अनुपस्थिति में पहली बार टीम का नेतृत्व कर रहे गौतम गंभीर ने 5-0 से न्यूजीलैंड का सफाया कर दिया।

भारत नंबर एक टैस्ट पायदान पर बने रहने के योग्य सिद्ध हो रहा था लेकिन दक्षिण अफ्रीका जाते हुए उसे अपने सबसे कड़े इम्तेहान का सामना करना था, जो कि भारत के लिए वास्तव में 'अंतिम मोर्चा' था क्योंकि भारतीय टीम ने वहां 1992 के दौरे के बाद से मात्र एक टैस्ट मैच जीता था और पिछले चार दौरों में कोई भी श्रृंखला ड्रॉ नहीं करा पाया था।

ये श्रृंखला इतिहास की बेहतरीन श्रृंखलाओं में से एक साबित हुई, जिसमें दक्षिण अफ्रीका के भयंकर तेज गेंदबाज शानदार तेंदुलकर की अगुआई में भारत की मजबूत बल्लेबाजी के सामने थे। 2010 में तीसरी बार, भारत पहला टैस्ट हारा, और तीसरी ही बार भारत ने वापसी करते हुए श्रृंखला में बराबरी की।

एकदिवसीय श्रृंखला भी दर्शनीय सिद्ध हुई जिसमें दक्षिण अफ्रीका ने केवल 3-2 से विजय प्राप्त की।

भारत को सेंचूरियन में पहले टैस्ट में एक पारी से कुचल दिया गया, जहां उसकी दोनों पारियां एक दूसरे की उलट थीं। जहां पहली पारी में उसे 136 पर समेट दिया गया था, वहीं दूसरी पारी में वापसी करते हुए उन्होंने 459 रन बनाए थे। लेकिन दक्षिण अफ्रीका के चार विकेट पर 620 पारी समाप्त घोषित के सामने ये भी बौना ही साबित हुआ। तेंदुलकर का

शानदार 50 वां टैस्ट शतक और धोनी के साथ उनकी 172 रन की साझेदारी भारतीय पारी की विशेष झलकियां थीं, लेकिन एक हारे हुए मैच में। धोनी की 90 रनों की पारी उनकी सर्वश्रेष्ठ पारियों में से एक थी जिसमें उन्होंने कुछ जबरदस्त, आक्रामक शॉट खेलते हुए अपनी टीम को उम्मीद की एक किरण दिखाई।

मेजबान टीम के समर्थक 3-0 के सफाए की भविष्यवाणियां कर रहे थे लेकिन एक बार फिर से भारतीयों ने जबरदस्त इच्छाशक्ति दिखाते हुए वापसी की और डर्बन में दूसरा टैस्ट 87 रन से जीत लिया। कम स्कोर के इस मैच में, दूसरी पारी में 96 रन बनाने वाले वीवीएस लक्ष्मण दोनों टीमों में अर्धशतक लगाने वाले एकमात्र बल्लेबाज थे।

इसका अर्थ था कि अब धोनी ने कप्तान के रूप में अपने 23 में से 14 टैस्ट जीतकर भारत के दूसरे सबसे सफल कप्तान के रूप में मुहम्मद अजहरुद्दीन की बराबरी कर ली थी, हालांकि अजहर ने अपनी 14 जीतें 47 टैस्ट मैचों में अर्जित की थीं। इतिहास में 20 से अधिक टैस्टों में कप्तानी करने वालों में अब केवल रिकी पोंटिंग, स्टीव वॉ और डॉन ब्रैडमैन की ही सफलता दर धोनी से बेहतर थी।

ये एक गर्व करने योग्य रिकॉर्ड था और केप टाउन में अंतिम टैस्ट ड्रॉ कराने के बाद धोनी ने अभी तक कभी कोई श्रृंखला न हारने के अपने रिकॉर्ड को भी बनाए रखा।

अब 2011 के आगमन के साथ भारत, श्रीलंका और बांग्लादेश द्वारा आयोजित किए जा रहे विश्वकप जैसे बड़े लक्ष्य की ओर देखने की बारी थी।

अध्याय चौदह

भव्य से हास्यास्पद तक

“मैं सकारात्मक सोच में विश्वास रखता हूं, कप हमारा होगा।”

जब कुल मिलाकर 10 वें और एशिया में आयोजित हो रहे तीसरे विश्वकप से ठीक पहले एक भारतीय साप्ताहिक पत्रिका के साथ साक्षात्कार में एमएस धोनी ने ये शब्द कहे, तो क्या वो थोड़े से ज्यादा आत्मविश्वासी हो रहे थे?

हां, 1996 के बाद विश्वकप पहली बार क्रिकेट के व्यावसायिक और निश्चित रूप से आध्यात्मिक घर वापस लौट रहा था। लेकिन 1975 में इंग्लैंड में हुए पहले विश्वकप से ही कभी भी किसी टीम ने अपनी सरजमीन पर विश्वकप नहीं जीता था।

धोनी कम से कम बाहरी तौर पर आत्मविश्वासी थे लेकिन क्या ये सब मुंबई के वानखेड़े स्टेडियम में बदल जाने वाला था, जहां 2 अप्रैल को फाइनल खेला जाना था? भले ही उन्हें दी गई टीम गेंदबाजी में कमजोर और क्षेत्ररक्षण में ढीली थी, लेकिन उसका बल्लेबाजी क्रम विश्व क्रिकेट के सबसे शक्तिशाली बल्लेबाजी क्रमों में से एक था।

अगर कोई ऐसी प्रतियोगिता थी जहां “कैप्टन कूल” को अपनी इस उपाधि का मान रखना था, तो वो प्रतियोगिता ये थी, क्योंकि सारा देश उनसे केवल उम्मीद नहीं लगा रहा था, बल्कि जिसकी लगभग मांग थी कि उसे उस विश्वकप से कम कुछ नहीं चाहिए, जो भारत ने पिछली बार कपिल देव के नेतृत्व में 1983 में जीता था। लेकिन उस समय भारत को एकदिवसीय क्रिकेट की एक कमजोर टीम माना जाता था। इस बार अपने घर पर सफलता हासिल करने—जिसमें भारत 1987 और 1996 दोनों में नाकाम रहा था—का दबाव बहुत ज्यादा था।

भारतीय टीम टूर्नामेंट के पहले मैच में मीरपुर में बांग्लादेश के खिलाफ अपनी ख्याति के अनुसार खेली। ये भारत के लिए बदले का मैच था क्योंकि 2007 में पिछले विश्वकप में बांग्लादेश द्वारा चौंका दिए जाने के बाद उन्हें बाहर होना पड़ा था।

इस बार बल्लेबाजों ने सुनिश्चित कर दिया कि 2007 का अपमान दोहराया नहीं जाएगा। वीरेंद्र सहवाग के 175 और विश्वकप का अपना पहला मैच खेल रहे विराट कोहली के अविजित 100 की बदौलत भारत तूफानी गति से 4 विकेट पर 370 के स्कोर तक पहुंच गया। जवाब में बांग्लादेश अच्छा खेल दिखाते हुए 9 विकेट पर 283 तक पहुंचा, हालांकि वो कभी भी मुकाबले में नहीं था। लेकिन एस श्रीसंत की खराब गेंदबाजी ने भारतीय टीम प्रशासन को प्रतियोगिता के शुरू में ही उलझन में डाल दिया।

भारत का बाकी अभियान घरेलू मैदानों पर ही होना था और एक शांत शुरुआत के बाद बंगलौर में विश्वकप में धमाकेदार गति बनी।

भारत-इंग्लैंड के मुकाबले ने वो सब कुछ दिया जो एक भरा हुआ स्टेडियम चाह सकता था—अलावा एक विजेता के! दोनों टीमों के लिए विश्वकप के इतिहास में ये पहला टाई मैच था और भारतीय गेंदबाजी में पहले मैच में जो दरारें दिखाई पड़ी थीं वो अब खतरनाक ढंग से फैल गई दिख रही थीं।

सचिन तेंदुलकर के शानदार 120 की बदौलत, भारत ने इंग्लैंड के सामने 339 का लक्ष्य रखा था। इतना बड़ा स्कोर आज तक विश्वकप में कभी भी दूसरी पारी में नहीं बनाया गया था। भारत का स्कोर प्रभावशाली था लेकिन ये इससे और भी अधिक हो सकता था—वो 46 वें ओवर में तीन विकेट पर 305 के स्कोर से फिसलकर अंतिम ओवर में 338 पर ऑल आउट हो गए।

इंग्लैंड के जवाब का नेतृत्व कप्तान एंड्रयू स्ट्रॉस ने किया जिनके 158 रन विश्वकप में किसी भी अंग्रेज का अधिकतम स्कोर था और जो 43 वें ओवर में 2 विकेट पर 280 के स्कोर पर इंग्लैंड को जीत के द्वार पर ले गए थे लेकिन फिर जहीर खां अपनी गेंदबाजी द्वारा भारत को वापस मैच में ले आए। जब इंग्लैंड को अंतिम दो ओवरों में 29 रन चाहिए थे, तब 49 वें ओवर में पीयूष चावला की गेंदबाजी पर 15 रन ले लिए गए और इंग्लैंड को रोकने की जिम्मेदारी मुनाफ पटेल पर आ गई। इंग्लैंड को इस सनसनीखेज मैच की अंतिम गेंद पर दो रन की आवश्यकता थी लेकिन वो बस किसी तरह एक रन ही बना सके। सारे भारत ने राहत की सांस ली!

भारत के अगले मैच चूंकि आयरलैंड और नीदरलैंड से थे, इसलिए इंग्लैंड के खिलाफ लगभग इस सदमे के बाद उनके पास सांस लेने के लिए थोड़ा समय था।

लेकिन आयरलैंड ने चार दिन पूर्व ही टूर्नामेंट का सबसे बड़ा उलटफेर करते हुए इंग्लैंड को हरा दिया था और धोनी जानते थे कि वो उन्हें हल्के में नहीं ले सकते। युवराज सिंह के शानदार हरफनमौला प्रदर्शन ने भारत को इस मुकाबले में जीत दिलाई। 31 रन देकर 5 विकेट के उनके सर्वश्रेष्ठ गेंदबाजी प्रदर्शन की बदौलत आयरलैंड 207 रन पर आउट हो गया और भारतीय पारी के दौरान 5 विकेट पर 167 रन के स्कोर पर जब भारतीय कैंप में हल्की घबराहट सी फैलनी शुरू हो गई थी, तब उन्होंने 50 रन की शांत अविजित पारी खेलकर भारत की नैया पार लगाई।

जुझारू डच टीम के खिलाफ अप्रभावशाली सी जीत में भी युवराज का ही प्रदर्शन सर्वश्रेष्ठ रहा। अभी और सख्त आजमाइशें सामने थीं और धोनी को कड़ी मेहनत करनी थी।

जब भारत नागपुर में अपने पांचवें लीग मैच में दक्षिण अफ्रीका के सामने लड़खड़ा गया तो इसमें हैरत की कोई बात नहीं थी। बेशक अंतर बहुत कम था—दो गेंदें रहते तीन विकेट से पराजय—लेकिन जो स्पष्ट दिखाई दे रहा था, उससे बचा नहीं जा सकता था।

मीडिया में आलोचनाओं की भरमार लग गई और दुनिया भर में भारतीय क्रिकेट के करोड़ों प्रशंसक शंका में पड़ गए। क्या उनके हीरो गेंदबाजी और क्षेत्ररक्षण विभागों में स्पष्ट कमजोरियों से पार पा सकेंगे? क्या शक्तिशाली बल्लेबाजी उनकी नैया को पार लगाने के लिए पर्याप्त होगी?

नागपुर में तो बल्लेबाजी तक ने उन्हें निराश किया था। 40 वें ओवर में एक विकेट पर 267 के शक्तिशाली स्कोर पर 350 का स्कोर पूरी तरह संभाव्य था। लेकिन विश्वकप के सबसे भयानक पतन के दौरान अंतिम नौ विकेट केवल 29 रन के अंदर ढेर हो गए।

देश और टीम को अपने प्रेरणादायी कप्तान से उम्मीद थी कि वो अपनी शांति बनाए रखेंगे और अपने सीमित संसाधनों का भरपूर उपयोग करेंगे। लेकिन वो भी दूसरे छोर पर अविजित 12 पर खड़े हैरत से एक के बाद एक बल्लेबाज को आते और जाते हुए देखते रहे और इस तरह सहवाग और तेंदुलकर द्वारा दी गई धमाकेदार शुरुआत बेकार साबित हो गई।

मैच के बाद, धोनी ने मीडिया के सामने एक तीखी टिप्पणी की: “आप भीड़ के लिए नहीं खेलते हैं, आप देश के लिए खेलते हैं।”

फॉरमैट ऐसा था कि क्वार्टर फाइनल में भारत की जगह पक्की हो चुकी थी। सवाल बस ये था कि वो कौन से नंबर पर आएंगे, और चेन्नई में—विश्वकप में युवराज सिंह के पहले शतक की बदौलत—वेस्टइंडीज को 80 रन से हराने के बाद, वो ग्रुप बी में दक्षिण अफ्रीका के बाद दूसरे स्थान पर रहे जबकि इस ग्रुप से वेस्टइंडीज और इंग्लैंड ने भी क्वालिफाई कर लिया।

क्वार्टरफाइनल में ग्रुप ए से उनके साथ पाकिस्तान, श्रीलंका, ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड थे। इसमें हैरत की कोई बात नहीं थी, लेकिन अब विश्वकप के उत्तेजनापूर्ण नॉकआउट चरण में प्रवेश करने के बाद भारत को अपनी सबसे बड़ी चुनौती का सामना करना था।

अहमदाबाद में क्वार्टर फाइनल में भारत को पिछले तीन विश्वकप के विजेता ऑस्ट्रेलिया से भिड़ना था। आठों टीमों के लिए करो या मरो की स्थिति आ चुकी थी।

इसे फाइनल से पहले फाइनल माना जा रहा था और इसमें एक फाइनल मुकाबले के सारे तत्व मौजूद थे। रिकी पोंटिंग के जुझारू शतक ने ऑस्ट्रेलिया को 260 तक पहुंचा दिया। ये स्कोर और अधिक भी हो सकता था लेकिन भारतीय क्षेत्ररक्षकों ने जरूरत के समय अपने खेल में सुधार कर लिया था।

अगर क्षेत्ररक्षण विद्युतीय था, तो गर्मी बेतहाशा थी और माहौल उस समय तनावपूर्ण हो गया जब भारतीय जवाब के दौरान धोनी के आउट होने पर भारतीय पारी लड़खड़ाकर 5 विकेट पर 187 रन के स्कोर पर पहुंच गई। 51,000 दर्शकों के मुंह से आह निकल गई, और जब युवराज का साथ देने के लिए उत्तेजनापूर्ण सुरेश रैना आए, जबकि भारत को 69 गेंदों पर 74 रनों की आवश्यकता थी, तो सारे दर्शक सांसें थामकर बैठ गए।

कप्तान ने वापस जाते-जाते बहुत धीमे से भारत के संकटमोचक से कहा था: "*शाबाश* युवराज, आखिर तक रहना।"

इससे प्रेरित युवराज ने ठीक ऐसा ही किया और रैना ने भी समय की मांग के अनुसार प्रदर्शन किया, और दोनों खब्बू बल्लेबाजों ने शानदार शॉट लगाते हुए ऑस्ट्रेलिया के थकते हुए तेज गेंदबाजों से बाजी मार ली।

चौथी बार मैन ऑफ द मैच बने युवराज ने मैच को शानदार ढंग से दो ओवर रहते खत्म कर दिया। वो खुशी और राहत के इस पल में घुटनों के बल झुककर अपनी मुट्ठियों को हवा में लहराने लगे, क्योंकि आखिरकार वो क्षण आ चुका था जब सारा देश भारतीय टीम के साथ उनके कप्तान के इस विश्वास को बांटने लगा था—कि ये कप भारत का ही होना था!

भारत-ऑस्ट्रेलिया मुकाबले से बड़ा मुकाबला क्या हो सकता था? जाहिर है, सेमीफाइनल में भारत-पाकिस्तान मुकाबला!

दुनिया भर के क्रिकेट प्रेमियों का सपना, लेकिन दोनों ओर के खिलाड़ियों के लिए एक भयानक सपना। चूंकि दोनों देशों के प्रमुख मैदान पर मौजूद थे, इसलिए ये मैच एक छोटे से शिखर सम्मेलन में बदल गया था। जैसे पहले ही विश्वकप के सेमीफाइनल का दबाव काफी नहीं था।

इससे पिछली बार ये दोनों देश किसी विश्वकप के नॉकआउट चरण में 1996 में बंगलौर में क्वार्टर फाइनल मुकाबले में भिड़े थे। क्रिकेट के सबसे बड़े मंच पर वो चार बार टकराए थे और भारत हर बार आसानी से जीता था। नतीजा इस बार भी इससे भिन्न नहीं होना था।

पाकिस्तानियों का क्षेत्ररक्षण बेहद खराब रहा और उन्होंने तेंदुलकर को चार 'जीवनदान' दिए और फिर बल्लेबाजी में भी उनका प्रदर्शन बहुत खराब रहा। जो मैच अत्यंत रोमांचकारी होना चाहिए था, वो अंत में एकतरफा साबित हुआ हालांकि बीच में कुछ ऐसे रोमांचक क्षण भी आए जिनके कारण क्रिकेट जगत की नजरें लगातार मोहाली पर लगी रहीं।

2003 में फाइनल में हारने वाली भारतीय टीम और 2007 में रनर-अप रही श्रीलंका की टीम अब तक रुटीनी बन चुकी श्रृंखलाओं के कारण एक दूसरे के खेल को अच्छी तरह से पहचानती थीं। मुंबई में इनके बीच होने वाला फाइनल अपने हौसले को बनाए रखने वाली टीम के हाथ लगने वाला था।

जब महेला जयवर्धने ने अविजित 103 रनों की भव्य पारी के द्वारा श्रीलंका को 6 विकेट पर 274 के चुनौतीपूर्ण स्कोर तक पहुंचाया, तो उत्तेजना और भी बढ़ गई।

विश्वकप के फाइनल में पांच अवसरों पर शतकीय पारी खेलने वाले बल्लेबाजों की टीमें विजयी रही थीं। लेकिन आधुनिकीकृत वानखेड़े स्टेडियम की रोशनियों में भारतीय टीम क्रिकेट इतिहास में अपना ही अध्याय लिखने के लिए दृढ़ थी।

जब लसिथ मलिंगा ने दोनों सलामी बल्लेबाजों सहवाग और तेंदुलकर को वापस पवेलियन भेज दिया और भारत लड़खड़ाता हुआ दो विकेट पर 31 रन के स्कोर पर था, तो मैदान में एक अजीब सी चुप्पी छा गई।

जब गौतम गंभीर और कोहली ने 83 रन की साझेदारी की तो थोड़ी सी शांति बहाल हुई लेकिन जब कोहली 35 रन बनाकर आउट हुए और भारत का स्कोर तीन विकेट पर 114 हो गया, तो लक्ष्य अभी भी दूर और मुश्किल प्रतीत होता था।

उस क्षण में जो कि मैच का निर्णयात्मक क्षण सिद्ध हुआ, धोनी ने फॉर्म में चल रहे युवराज से पहले खुद बल्लेबाजी के लिए उतरने का फैसला किया। ये एक बेहतरीन फैसला साबित हुआ लेकिन यही फैसला बड़ी आसानी से उनकी घोर आलोचना का कारण भी बन सकता था।

टूर्नामेंट में कप्तान का अभी तक का उच्चतम स्कोर 34 रहा था। अब कुछ असाधारण करने की जरूरत थी और धोनी ने ऐसा ही किया। गंभीर के ठोस समर्थन के साथ, धोनी ने गेंदबाजों पर धावा बोल दिया और 109 रन की उस साझेदारी में प्रमुख साझेदार साबित हुए जिसका अंत तब हुआ जब गंभीर अपने शतक से तीन रन पहले आउट हुए।

धोनी ने नुवन कुलसेकरा की गेंद पर एक जबरदस्त छक्का लगाते हुए खेल को शानदार ढंग से खत्म किया जबकि युवराज दूसरे छोर पर थे। इसी के साथ मैदान पर और सारे देश में जश्न का माहौल पैदा हो गया और करोड़ों प्रशंसकों ने अपने शहरों, कस्बों और गांवों को रात भर के पार्टी स्थलों में बदल दिया।

इसी के साथ 1983 के कपिल देव के कारनामे का अनुकरण करते हुए और 2007 में पहले विश्व टी-20 को जीतने के बाद चार साल के अंदर ही एक और विश्वकप जीतने के साथ धोनी भारतीय क्रिकेट के देवसमूह में प्रवेश कर गए। कप टीम और राष्ट्र के लिए था, मैन ऑफ द मैच अविजित 91 रन की ऐतिहासिक पारी के लिए कप्तान को मिला और मैन ऑफ द टूर्नामेंट युवराज को। चूंकि टैस्ट खेलने वाले देशों में भारत नंबर एक था, इसलिए अब धोनी की ख्याति और समृद्धि भारतीय खेल इतिहास में अतुलनीय थी।

वो पूरी तरह इसके हकदार थे। मैदान में जहां टीम ने तेंदुलकर और कोच गैरी कर्स्टन (भारतीय टीम के साथ आखरी मैच में) को कंधों पर बिठाया, वहीं कप्तान ने शांत रहने को तरजीह दी। जब किसी ने कहा कि खिलाड़ियों को तो उन्हें अपने कंधों पर उठाना चाहिए था, तो उन्हें तेंदुलकर की ओर इशारा करते हुए कहा, “ये उनकी रात है!”

शायद। लेकिन दरअसल धोनी अपने कुछ शुरुआती फैसलों पर आलोचना के बावजूद अपने फैसलों पर डटे रहे थे, अपने खिलाड़ियों को क्षेत्ररक्षण का स्तर ऊंचा उठाने के लिए समझाते रहे थे, अपने संसाधनों से काम लेते रहे थे और हर मैच के बाद मीडिया को संभालकर अपने साथियों को बचाते रहे थे।

अफसोस, कि खिलाड़ियों के पास अपने परिवारों और प्रियजनों के साथ खुशियां मनाने और आराम करने का मुश्किल ही से कोई समय था। एक सप्ताह से कम के अंदर आईपीएल चार आरंभ हो रहा था। और पिछले वर्ष *चेन्नई सुपर किंग्स* द्वारा जीते गए खिताब का बचाव करने की जिम्मेदारी एक बार फिर से धोनी पर थी।

धोनी ने ये स्वीकार करते हुए अपने साथियों की भावनाओं को प्रकट किया कि मैदान पर उन खिलाड़ियों का विरोध करना अजीब सा महसूस होगा जिनके साथ राष्ट्रीय टीम के भाग के रूप में कुछ ही हफ्ते पहले वो ड्रेसिंग रूम में एक साथ थे। लेकिन विश्व चैंपियन

का खिताब हासिल करने के बाद, प्रशंसकों को किसी भी तरह नहीं समझाया जा सका कि ये भी वास्तविक खेल है। वो बड़ी संख्या में दूर ही रहे और आईपीएल चार बहुत बड़ी नाकामी सिद्ध हुआ।

लेकिन सीएसके के लिए नहीं। वो आईपीएल के छोटे से इतिहास में लगातार दो खिताब जीतने वाली पहली टीम बने। ऐसा लगता था कि कप्तान धोनी कुछ गलत कर ही नहीं सकते हैं। वो अपने नए अपनाए हुए शहर की आंखों का तारा बन गए और सीएसके, जो अपने सातों घरेलू मैच जीतने वाली पहली टीम बन गई, के लिए एम.ए. चिदंबरम स्टेडियम एक किला सा साबित हुआ। इसके नतीजे में वो 'पहले क्वालिफाइंग फाइनल' में पहुंच गए जहां उन्होंने मुंबई में रॉयल चैलेंजर्स बंगलौर को छह विकेट से हराया।

चार दिन बाद फाइनल में सीएके का मुकाबला एक बार फिर आरसीबी से था। लेकिन चूंकि मैच चेन्नई में खेला जा रहा था, इसलिए इस मैच का एक ही विजेता हो सकता था, और धोनी के लड़कों ने एक बार फिर मैच बड़ी आसानी के साथ 58 रन से जीता। फेयर प्ले पुरस्कार जीतना एक अतिरिक्त बोनस था और इसके कारण भारत के भूतपूर्व ऑल-राउंडर, चेन्नई के ही निवासी डब्ल्यू.वी. रमण ने धोनी को, "दुनिया के इतिहास के सर्वश्रेष्ठ कप्तानों में से एक" कहा।

एक बार फिर से थकान के कारण धोनी और अन्य बड़े खिलाड़ी वेस्ट इंडीज में एकदिवसीय श्रृंखला से बाहर रहे जहां भारत रैना के नेतृत्व में आसानी से 3-2 के अंतर से जीता।

आईपीएल के आरंभ से ही खेल के सभी प्रारूपों में धोनी पर बढ़ती मांग ने उन्हें दौरे अपने हिसाब से चुनने के लिए मजबूर कर दिया था। परिस्थितियों को देखते हुए उन्हें दोष देना मुश्किल ही था, लेकिन इस बात की संभावना कम ही है कि कोई भारतीय खिलाड़ी थकान के कारण आईपीएल से कभी भी ब्रेक ले।

किंग्स्टन, जमैका में पहला टैस्ट 63 रनों से जीतने के नतीजे में भारत ने तीन टैस्ट मैचों की श्रृंखला को जीत लिया। आमतौर पर आसानी से विचलित न होने वाले धोनी ने खुद को बहुत सी ऐसी घटनाओं के बीच पाया जो कि श्रृंखला में क्रिकेट से ज्यादा ध्यान का केंद्र बनी रहीं।

तीसरा और अंतिम टैस्ट ऑस्ट्रेलियन अंपायर डैरिल हार्पर का अलविदाई मैच होने वाला था। लेकिन उन्होंने किंग्स्टन टैस्ट के बाद ही भारतीय खिलाड़ियों के रवैये और उनका समर्थन न करने के लिए आईसीसी की आलोचना करते हुए ग़ुस्से में अचानक इस्तीफा दे दिया। टैस्ट के बाद मीडिया के सामने धोनी का ये बयान शायद उनके लिए आखरी तिनका साबित हुआ कि: "अगर सही निर्णय किए गए होते, तो मैच बहुत पहले खत्म हो चुका होता, और हम अभी तक अपने होटल में होते।"

ब्रिजटाउन, बारबाडोस में दूसरे टैस्ट की पहली पारी में एक जबरदस्त तकनीकी गलती की वजह से धोनी को आउट करार दिए जाने के बाद उनका मूड और भी बिगड़ा होगा। अंपायर इयान गोल्ड को फिडेल एडवर्ड्स की एक गेंद की वैधता पर शक था और इसलिए उन्होंने उसका रीप्ले दिखाए जाने की मांग की। लेकिन उसके बजाय उससे पहले की एक

गेंद दिखा दी गई और धोनी को वापस भेज दिया गया। बाद में पता चला कि एडवर्ड्स का पैर वाकई रेखा से आगे निकल गया था, जिसके लिए अतिथि प्रसारणकर्ता की प्रोडक्शन टीम ने माफी मांगी।

मैच के अंतिम दिन भारतीय कप्तान ने छह विकेट पर 269 के स्कोर पर एक पारी घोषित करने का निडर फैसला किया जिसके बाद वेस्ट इंडीज को मैच जीतने के लिए 77 ओवर में 280 रन की आवश्यकता थी। अंपायरों द्वारा खराब रोशनी के कारण खेल बंद कर दिए जाने तक वेस्ट इंडीज की टीम 71.3 ओवर में किसी तरह लड़खड़ाती हुई 7 विकेट पर 202 तक पहुंची थी।

लेकिन शायद इस निडरता ने डोमिनिका में तीसरे टैस्ट में धोनी का साथ छोड़ दिया। उनके पास कैरिबियन में दो टैस्ट जीतने वाला पहला भारतीय कप्तान बनने का अवसर था, जबकि चौथी पारी में उनके सामने 47 ओवर में 180 रन बनाने का लक्ष्य था, जो 15 ओवर में 86 रन रह गया था।

इस स्थिति में राहुल द्रविड़ और वीवीएस लक्ष्मण की भारतीय जोड़ी को मैदान से बाहर आते देखकर दर्शक भौचक्के रह गए और बाद में पता चला कि दोनों कप्तानों ने मैच को खत्म करने का फैसला कर लिया था। दुनिया में नंबर एक रैंक की टीम के द्वारा ये बड़ा कमजोर सा प्रदर्शन था जिसके लिए वेस्ट इंडीज के कप्तान डैरेन सैमी ने टिप्पणी की, “हम चकित रह गए। हमें लग रहा था कि अभी जबकि धोनी जैसे बल्लेबाज बचे हुए हैं, तो भारत जीतने की कोशिश करेगा।” भारतीय कोच डंकन फ्लैचर ने ये कहते हुए इस फैसले का बचाव किया, “ये बचे रहने के लिए जरूर आसान विकेट था लेकिन तेजी से रन बनाने के लिए मुश्किल था।”

श्रृंखला के अंत तक, धोनी 27 मैचों में 15 जीतों के साथ भारत के दूसरे सबसे सफल कप्तान बन चुके थे, गांगुली की 49 मैचों में 21 जीतों के बाद। ये एक अद्भुत रिकॉर्ड था।

लेकिन अगले ही मोड़ पर तबाही इंतजार कर रही थी। और धोनी और भारतीय टीम को अपने वाटरलू का सामना इंग्लैंड में करना था।

सच कहें, तो हालात शुरू से ही स्पष्ट दिखाई दे रहे थे। भारत टैस्ट क्रिकेट में विश्व में नंबर एक पर था और हाल ही में भारत विश्वकप चैंपियन भी बना था। लेकिन वो सॉमरसैट के विरुद्ध केवल एक तीन-दिवसीय वार्म-अप मैच के बाद श्रृंखला में उतर रहे थे और चूंकि अधिकतर टीम कैरिबियन से सीधे इंग्लैंड पहुंची थी, इसलिए वो पूरी तरह पेशेवर अंग्रेज टीम के हमले से निबटने के लिए अच्छी तरह से तैयार नहीं थी।

चूंकि कुछ खिलाड़ियों को पहले ही मामूली चोटें थीं और कुछ मैचों के दौरान चोटिल हो गए, इसलिए कप्तान के पास एक ऐसी टीम थी जिसमें बार-बार छोटे-बड़े बदलाव करने पड़ रहे थे। कुल मिलाकर, सात खिलाड़ी टैस्ट श्रृंखला में और फिर दो खिलाड़ी बाद में होने वाली एकदिवसीय श्रृंखला में न खेलने लायक चोटिल हो गए।

लॉर्ड्स में होने वाला पहला टैस्ट मैच कुल मिलाकर 2000 वां और भारत और इंग्लैंड के बीच 100 वां मैच था और चूंकि तेंदुलकर 99 अंतर्राष्ट्रीय शतक बना चुके थे, इसलिए इस टैस्ट की ओर सारी दुनिया की नजर थी, और इसमें पांचों दिन पूरा स्टेडियम भरा रहा।

लेकिन अंत में, कप्तान धोनी को अपनी किस्मत का रोना रोना पड़ा। “हर वो चीज जो गलत हो सकती थी, वो गलत हुई,” उन्होंने कहा, और वास्तव में उनकी परेशानियां पहले ही दिन से शुरू हो गई थीं।

प्रमुख तेज गेंदबाज जहीर खां टखने की चोट के चलते वेस्ट इंडीज के दौरे को चूक गए थे और सॉमरसेट के खिलाफ मैच में भी वो अनफिट ही दिखाई दे रहे थे। अब जबकि धोनी ने टॉस जीतने के बाद इंग्लैंड को बल्लेबाजी की दावत दी, तो बाएं हाथ के इस गेंदबाज ने सलामी बल्लेबाजों एलेस्टेयर कुक और एंड्रयू स्ट्रॉस को तो आउट कर दिया लेकिन अपने 14 वें ओवर में उन्हें खुद भी नस में चोट के कारण लंगड़ाते हुए मैदान से जाना पड़ गया।

ये जहीर के लिए श्रृंखला का अंत था और भारत उनकी अनुपस्थिति से कभी नहीं उबर सका। कुछ उतार-चढ़ाव जरूर आए लेकिन कुल मिलाकर इंग्लैंड हावी रहा और गेंद के साथ प्रवीण कुमार और बल्ले के साथ द्रविड़ की कोशिशें बेकार गईं और भारत 196 रन से हार गया।

जहीर के जाने के बाद अपने गेंदबाजी के संसाधनों की कमी से धोनी इतने हताश थे कि इंग्लैंड की दूसरी पारी में उन्होंने खुद भी आठ ओवर गेंदबाजी की।

ट्रेंट ब्रिज में दूसरे टैस्ट में भारत के लिए कुछ अच्छे क्षण आए। वास्तव में दूसरे दिन के अंत तक तो वो दोनों में से थोड़ी बेहतर टीम ही दिखाई देते थे। लेकिन उसके बाद बस इंग्लैंड का ही बोलबाला रहा और भारत की चुनौती धुंधलाती गई। इंग्लैंड ने ये मैच 319 रन के जबरदस्त अंतर से जीत लिया।

बदलाव दूसरी पारी में इयान बैल के शतक के साथ आया, जब इंग्लैंड ने दो विकेट पर 57 से उबरते हुए 544 का विशाल स्कोर खड़ा कर लिया। एक बार फिर से केवल प्रवीण कुमार और पहली पारी में एक और शतक लगाकर द्रविड़ ही कुछ अच्छा कर सके। लेकिन मैन ऑफ द मैच का पुरस्कार हरफनमौला स्टुअर्ट ब्रॉड को गया जो 64 और 44 की पारियों के अलावा भारत-इंग्लैंड मैचों में हैट ट्रिक बनाने वाले पहले खिलाड़ी बने।

धोनी के लिए बल्ले के साथ ये एक और खराब मैच रहा, और जबकि इंग्लैंड ने 2-0 की बढ़त बनाई लेकिन ज्यादातर सुर्खियां तीसरे दिन ठीक चाय के समय बैल के विरुद्ध रन आउट की अपील को वापस लेने और बहुत विवादास्पद परिस्थितियों में उन्हें अपनी पारी को आगे बढ़ाने देने के धोनी के फैसले ने बटोरीं।

अब इंग्लैंड को भारत को शिखर से हटाने और खुद नंबर एक की रैंकिंग हासिल करने के लिए सिर्फ एक और जीत की जरूरत थी और उसने ऐसा एजबैस्टन में तीसरे टैस्ट में बड़े जोरदार ढंग से एक पारी और 242 रनों से भारत को हराकर कर दिखाया और 1974 में भारत की 3-0 से धुलाई की भयानक यादें ताजा कर दीं।

भारत के 224 और 244 के दयनीय स्कोर एक खिलाड़ी, इंग्लैंड के सलामी बल्लेबाज एलेस्टेयर कुक के निजी स्कोर से भी कम थे, जिनकी 294 रन की विशाल पारी इंग्लैंड को 7 विकेट पर 710 पारी घोषित के अभेद्य स्कोर तक ले गई थी।

धोनी ने भारत के लिए दोनों पारियों में सबसे ज़्यादा रन बनाए लेकिन उनके 77 और अविजित 74 के स्कोर शायद ही उन्हें कुछ सांत्वना दे पाए हों क्योंकि उन्होंने अपने कप्तानी

कैरियर में पहली बार पराजय का स्वाद चखा।

पराजय घोर थी और धुलाई साफ थी जबकि भारत को ओवल में चौथे और अंतिम टैस्ट में एक बार फिर से एक पारी से कुचल डाला गया। ये 1968 में ऑस्ट्रेलिया दौरे के बाद पहला अवसर था जब भारत ने किसी श्रृंखला के चारों टैस्ट हारे हों, और उस टीम के लिए जो श्रृंखला से पहले प्रथम पायदान पर थी, बुलंदी से गिरावट इससे ज्यादा प्रलयंकर नहीं हो सकती थी।

मैच और श्रृंखला के बाद धोनी पर सवालों की बौछार हो गई, लेकिन धोनी ने अपनी शांति को बनाए रखा। अनिवार्य रूप से, आईपीएल एक बार फिर से सवालों के घेरे में था कि क्या इसने भारत की टैस्ट मैच की तैयारियों पर दुष्प्रभाव डाला था। धोनी ने सारे सवालों का बहादुरी से सामना किया लेकिन इस बात का उनके पास कोई जवाब नहीं था भारत इतनी बुरी तरह कैसे हार सकता था। ओवल में द्रविड़ का श्रृंखला में तीसरा शतक एक बार फिर से पराजित टीम के लिए शर्मिंदगी से बचने की एकमात्र बात थी।

बाद में होने वाले टी-20 मैच—जो भारत छह विकेट से हारा—और एक दिवसीय श्रृंखला में भी कोई राहत नहीं मिली। लॉर्ड्स में चौथे मैच में टाई भारत के लिए एक अंतर्राष्ट्रीय मैच में जीत के सबसे नजदीक पहुंचना था। भारत 3-0 से श्रृंखला हारा और तीन अर्धशतकों के लिए धोनी के लिए मैन ऑफ द सीरीज पुरस्कार शायद घर वापस ले जाने के लिए एकमात्र सांत्वना था।

दौरे की समाप्ति पर, *स्पोर्टस्टार* में अंग्रेज स्तंभकार टैड कॉरबैट ने धोनी के लिए सहानुभूति जताई। "प्रत्येक अन्य कप्तान की तरह धोनी ने भी रणनीतिक गलतियां कीं लेकिन वो नेतृत्व करने से कभी पीछे नहीं रहे... जिम्मेदारी का बोझ इतना ज्यादा रहा है कि (टैस्ट श्रृंखला में) बल्लेबाजी में गिरावट प्रत्याशित थी... इस देश में आगमन के बाद से धोनी ने बहुत से मित्र और प्रशंसक जीते हैं और अगर पिछले कुछ सप्ताहों के विस्मित कर देने वाले नतीजों के लिए उन्हें जिम्मेदार ठहराया जाता है तो ये अत्यंत निराशाजनक होगा।"

धोनी की मुसीबतें चैंपियंस लीग में भी जारी रहीं जिसमें *चेन्नई सुपर किंग्स* गत विजेता थे। उन्होंने केप कोब्राज को हरा दिया लेकिन *मुंबई इंडियंस, ट्रिनिडाड एंड टोबागो,* और *न्यू साउथ वेल्स* से हार गए और ग्रुप से बाहर हो गए जबकि *मुंबई इंडियंस* ने खिताब जीता।

कार्डिफ, इंग्लैंड में पांचवें और अंतिम एकदिवसीय मैच में आमने-सामने होने के एक महीने से भी कम बाद, इंग्लैंड की टीम पांच एकदिवसीय मैचों के लिए भारत में थी। बदले की पुकार फिजा में और मीडिया में थी लेकिन भले ही भारत ने इंग्लैंड का 5-0 से सफाया करके किसी हद तक अपना बदला ले लिया, लेकिन इससे शायद ही उस अपमान की भरपाई हुई हो, जिसका सामना उन तीन दयनीय महीनों में उन्होंने इंग्लैंड में किया था। लगातार दूसरी श्रृंखला में, धोनी की बल्लेबाजी ने उन्हें मैन ऑफ द सीरीज पुरस्कार जिताया जिसने ये साबित कर दिया कि वो अभी भी, कम से कम एकदिवसीय क्रिकेट में, एक सशक्त बल्लेबाज हैं।

एकदिवसीय श्रृंखला से पहले, *स्पोर्टस्टार* (14 अक्टूबर, 2011 अंक) में भूतपूर्व टैस्ट ऑल-राउंडर डब्ल्यू वी रमण ने लिखा कि तनाव शायद धोनी के लिए बहुत ज्यादा साबित

हो रहा है। “मानसिक और शारीरिक दोनों रूप से धोनी के क्लांत होने के चांस बहुत ज्यादा हैं और एक समय आएगा जब उन्हें ब्रेक लेना ही पड़ेगा। ये देखते हुए कि वो क्रिकेट के सारे प्रारूपों में खेलते हैं और विभिन्न प्रकार की कठिन भूमिकाएं निभाते हैं, एक बिंदु पर पहुंचकर वो पूरी तरह निचुड़ सकते हैं।”

ये ब्रेक रमण के स्तंभ के एक महीने बाद वेस्ट इंडीज के विरुद्ध पांच मैचों की एकदिवसीय श्रृंखला में आया जिसे भारत ने 4-1 से जीता। उनकी अनुपस्थिति में सहवाग और गंभीर ने नेतृत्व किया और श्रृंखला के दौरान इंदौर में खेले गए चौथे मैच में सहवाग द्वारा बनाया गया एकदिवसीय मैचों में 219 का सर्वाधिक स्कोर देखने को मिला।

एकदिवसीस श्रृंखला से पहले भारत ने तीन टैस्ट मैचों की श्रृंखला को आसानी से जीत लिया था जिसमें भारत ने नई दिल्ली और कोलकाता में जीत दर्ज की और मुंबई का मैच नाटकीय ढंग से अनिर्णीत रहा जबकि भारत ने स्कोर की बराबरी कर ली थी और उसके नौ विकेट गिर चुके थे। धोनी ने कोलकाता में दूसरे टैस्ट में 175 गेंदों में 10 चौकों और पांच छक्कों की मदद से धुआंधार 144 रन बनाए। ये उनका पांचवां शतक था! पांचों ही उपमहाद्वीप में बने थे।

वर्ष का अंत एक बहुत ही प्रतीक्षित श्रृंखला के लिए भारत के ऑस्ट्रेलिया जाने से हुआ। इंग्लैंड में हुई धुलाई के बावजूद भारत इस श्रृंखला में दावेदार था, क्योंकि ऑस्ट्रेलिया बदलाव की स्थिति से गुजरती टीम थी और वो माइकल क्लार्क और मिकी आर्थर के नए नेतृत्व में अभी भी दक्षिण अफ्रीका और न्यूजीलैंड के हाथों खाए झटकों से उबर रहे थे।

भारत ने अभी तक ऑस्ट्रेलिया में कोई श्रृंखला नहीं जीती थी और विशेषज्ञों का मानना था कि ये भारत के लिए पहला मौका था। लेकिन ऑस्ट्रेलिया ने मेलबर्न में खेला गया बॉक्सिंग डे टैस्ट 122 रन से जीतकर श्रृंखला में शुरुआती बढ़त बना ली, और इस तरह भारत के लिए एक मिले-जुले 2011 का अंत हो गया जिसमें वो 50 ओवर में विश्व चैंपियन बने, लेकिन टैस्ट में उन्हें कुछ खास हासिल नहीं हुआ।

अध्याय पंद्रह

धोनी के लिए आगे क्या?

इंग्लैंड की श्रृंखला की ही तरह, भारतीय खिलाड़ियों ने ऑस्ट्रेलिया में भी पहले टैस्ट के दौरान अच्छा मुकाबला किया। मेलबर्न में ऑस्ट्रेलिया के 333 के जवाब में दूसरे दिन दो विकेट पर 214 के स्कोर पर ऐसा लगता था कि भारत की शक्तिशाली बल्लेबाजी उन्हें एक बड़ी लीड दिला देगा। लेकिन वो ढहकर 282 पर और दूसरी पारी में 169 पर आउट हो गए।

इसके बाद भारत का पतन कितनी तेजी से हुआ इसका अंदाजा इन आंकड़ों से लगाया जा सकता है—बची हुई सात पारियों में भारत केवल दो बार 214 के स्कोर तक पहुंच सका और चार बार 200 के अंदर ही सिमट गया।

दूसरी ओर ऑस्ट्रेलिया पहले टैस्ट के बाद केवल एक बार ऑल आउट हुआ और उन्होंने दो बार 600 के स्कोर को पार किया। कुछ महीने पहले इंग्लैंड के बल्लेबाजों ने भारतीय गेंदबाजी के विरुद्ध तीन दोहरे शतक लगाए थे। इस बार, दो दोहरे शतक और ऑस्ट्रेलिया के निरंतर बेहतर हो रहे कप्तान माइकल क्लार्क द्वारा एक तिहरा शतक जड़ा गया।

दो पारी की हारें, और 122 व 298 रन से दो अन्य हारें-भारतीय क्रिकेट—कम से कम इसका टैस्ट रूप—विदेश में लगातार आठ पराजयों के बाद इतिहास के अपने सबसे निचले स्तर पर पहुंच चुकी थी।

वीरेंद्र सहवाग ने कहा कि पीटर सिडल, बेन हिल्फेनहॉज, रायन हैरिस, मिचेल स्टार्क और जेम्स पैटिन्सन से सुसज्जित ऑस्ट्रेलिया तेज गेंदबाजी आक्रमण ऑस्ट्रेलिया का सर्वश्रेष्ठ गेंदबाजी क्रम था जिसका उन्होंने कभी सामना किया था। और इंग्लैंड के महीनों की ही तरह, इस बार भी राहुल द्रविड़ के अलावा सभी वरिष्ठ भारतीय बल्लेबाज नाकाम रहे और केवल युवा विराट कोहली ही अपनी साख में कुछ बेहतरी ला सके।

तीन टैस्टों में 102 रनों के साथ विदेशी धरती पर धोनी की खराब फॉर्म लगातार जारी रही। ऑस्ट्रेलियाई बल्लेबाजों द्वारा अच्छा प्रदर्शन किए जाने के दौरान खेल को धीमा कर देने की धोनी की आदत न केवल अति-रक्षात्मक थी बल्कि नुकसानदेह भी थी और पर्थ में तीसरे टैस्ट के बाद उन्हें एडीलेड के चौथे और अंतिम टैस्ट के लिए निलंबित कर दिया गया।

मैदान पर इस रक्षात्मक रवैये का प्रभाव हालात खराब होने के साथ-साथ मैदान के बाहर भी दिखाई देने लगा जबकि टीम ने रक्षात्मक मानसिकता अपना ली। चूंकि तेंदुलकर अपने 100 वें अंतर्राष्ट्रीय शतक के नजदीक थे, इसलिए उनकी बहुत अधिक मांग थी। लेकिन वो सार्वजनिक रूप से एक शब्द भी नहीं बोले। दिन के खेल के बाद मीडिया की गर्मी का सामना करने के लिए नए खिलाड़ियों को भेजा जाने लगा और जब सहवाग और गौतम गंभीर जैसे वरिष्ठ खिलाड़ियों को मीडिया से बात करने के लिए भेजा गया, तो उन्होंने अपने असावधानीपूर्ण टिप्पणियां देकर हालात को और भी बदतर बना दिया जिससे उनके कप्तान की स्थिति और बिगड़ गई।

जब किसी टीम का कप्तान ऐसे खराब दौर से गुजर रहा हो तो उसकी टीम में दरारें दिखाई देने लगती हैं और धोनी बनाम सहवाग का खेल एक बार फिर से दिखाई देने लगा। मीडिया ने कप्तान और उप-कप्तान के बीच की अनबन को खूब उछाला और इन दोनों ने भी अपनी परस्पर विरोधी टिप्पणियों से परिस्थिति को संभालने में मदद नहीं की।

पर्थ में तीसरे टैस्ट के अंत में, धोनी ने 'वरिष्ठों' को धीरे-धीरे टीम से बाहर करने के संकेत दिए और बजाहिर उनका खास निशाना वीवीएस लक्ष्मण प्रतीत होते थे। एक पखवाड़े बाद एडीलेड टैस्ट तक, कार्यवाहक कप्तान सहवाग ने ये कहते हुए प्रत्युत्तर दिया कि इस तरह के किसी भी बदलाव की आवश्यकता नहीं है। और फिर यही सब चलता रहा।

पर्थ में श्रृंखला हारने के बाद धोनी ने स्वीकार किया कि वो 'प्रमुख अपराधी' थे और कि वो इसका खमियाजा भुगतने और 2013 तक एक प्रारूप छोड़ने को तैयार हैं। उन्होंने स्वीकार किया कि वो अपनी कप्तानी से ज्यादा अपनी बल्लेबाजी से निराश हैं। जीत या हार दोनों के बाद, मीडिया का सामना करते हुए उनके अभिव्यक्तिशून्य चेहरे और अलगाव के भाव ने उन्हें तीनों प्रारूपों में देश का और इसके अलावा आईपीएल और चैंपियंस लीग में नेतृत्व करने के जबरदस्त दबाव से बचाए रखा था। लेकिन अब ऐसा महसूस किया जा रहा था कि ये अलगाव टीम के लिए हानिकारक है और कि किसी ज्यादा जुड़ाव वाले व्यक्ति की आवश्यकता है।

भारत द्वारा टी-20 श्रृंखला 1-1 से बराबर करने और धोनी द्वारा दो उपयोगी पारियां खेलने उम्मीद की एक किरण पैदा हुई। लेकिन एकदिवसीय त्रिकोणीय श्रृंखला—जिसमें भारत के अलावा वही दो टीमें, श्रीलंका और ऑस्ट्रेलिया थीं जिन्हें भारत ने 2008 में हराया था—भारत के लिए और भी निराशा लेकर आई।

भारत फाइनल तक पहुंचने में नाकाम रहा—लेकिन बस बाल-बाल। और अपने टैस्ट शतक के बाद, कोहली ने होबार्ट में तहलका मचा दिया जब उन्होंने भारत के लिए अंतिम साबित हुए मैच में श्रीलंका की गेंदबाजी की धुनाई करते हुए मात्र 86 गेंदों में 133 रन बनाए।

भारत को इस मैच में श्रीलंका को भारी अंतर से हराना था और फिर ये उम्मीद करनी थी कि अंतिम क्वालिफाइंग मैच में ऑस्ट्रेलिया श्रीलंका को हरा देगा।

कोहली और सुरेश रैना की बदौलत ऐसा लगभग हो ही गया जब भारत को श्रीलंका के 321 रन को 10 ओवर शेष रहते पार करना था। उन्होंने 36.4 ओवर में ऐसा कर दिखाया।

लेकिन सिर्फ 48 घंटे बाद, भारत की कहानी खत्म हो गई जब ऑस्ट्रेलिया 9 रन से हार गया और भारत के निराशाजनक दौरे का अंत हो गया।

अगर त्रिकोणीय श्रृंखला में भारत इतनी दूर तक पहुंच सका था, तो उसकी वजह धोनी की लगातार अच्छी बल्लेबाजी थी। उनका औसत 51.25 रहा था।

लेकिन टीम की धीमी ओवर गति के लिए उन्हें एक बार फिर एक मैच के लिए निलंबित किया गया। टीम ने ये बुरी आदत उनकी ही कप्तानी में विकसित की थी। ब्रिसबेन में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ बड़ी हार के लिए मैदान में धीमे वरिष्ठों—विशेषकर तेंदुलकर, गंभीर और सहवाग—को इल्जाम देकर भी उन्होंने नाराजगी मोल ली। टीम के चयन में नई 'रोटेशन पॉलिसी' के तहत, धोनी ने फैसला किया था कि किसी भी मैच में इन तीनों में से कोई दो ही खेलेंगे और ये बात न तो गंभीर को पसंद आई और न ही सहवाग को, और उपकप्तान मौजूदा कप्तान की जगह लेने की अपनी महत्वाकांक्षा को मुश्किल ही से रोक सके।

दो तनावपूर्ण मैचों के अंतिम ओवरों में धोनी पूरी तरह शांत रहे। ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ एडीलेड में अंतिम ओवर में जब जीत के लिए 13 रनों की आवश्यकता थी, तो धोनी ने छक्का मारकर टीम को जीत दिलाई। इससे पहले गंभीर ने 92 रन का योगदान किया था। धोनी ने शुरुआत में धीमी बल्लेबाजी की थी और मैच के अंत में गंभीर ने अंतिम आक्रमण इतनी देर तक टालने के लिए अपने कप्तान की आलोचना की। अब दरारें तेजी से फैलती जा रही थीं और और टीम का हौसला बुरी तरह से पस्त था।

एडीलेड में लंका के खिलाफ टाई हुए सनसनीखेज मैच में भी धोनी अंत में क्रीज पर मौजूद थे। उन्हें मलिंगा की अंतिम गेंद पर चौका चाहिए था और वो तीन रन बनाकर स्कोर बराबर करने में सफल रहे। अपने 200 वें मैच में धोनी ने अपने अविजित 58 रन के लिए मैन ऑफ द मैच का पुरस्कार जीता हालांकि गंभीर ने एक बार फिर 91 रन के साथ सर्वाधिक स्कोर किया था।

अप्रैल 2012 की *द क्रिकेटर* (यूके) मैगजीन में, एंड्रयू मिलर ने कोहली के बारे में लिखा, "तीन वर्ष बाद भारत ऑस्ट्रेलिया की सरजमीन पर विश्वकप का बचाव करेगा, और तब कोहली, जो अभी 23 वर्ष के हैं, निश्चित रूप से उनके कप्तान होंगे।"

छह महीने बाद, ज्यादातर भारतीय मीडिया भी इसी भविष्यवाणी को दोहरा रहा था।

अपने 100 वें अंतर्राष्ट्रीय शतक के लिए तेंदुलकर की तलाश इंग्लैंड और ऑस्ट्रेलिया के दौरों पर टीम के लिए एक भटकाव बनी रही थी। वो आखिरकार एशिया कप में बांग्लादेश के खिलाफ मीरपुर में इस लक्ष्य तक पहुंच ही गए और टीम ने और तेंदुलकर के अनगिनत प्रशंसकों के साथ खुद तेंदुलकर ने भी ये बोझ सिर से उतरने पर राहत की सांस ली। लेकिन ये मेजबान टीम के खिलाफ एक चौंकाने वाली हार से बचाने में नाकाफी रही और हालांकि

भारत ने श्रीलंका और पाकिस्तान के खिलाफ बड़ी जीतें दर्ज कीं, लेकिन गत विजेता होते हुए भी वो फाइनल में नहीं पहुंच सके।

इसके बाद होने वाले आईपीएल के पांचवें सीजन की टीवी स्टिंग, सैक्स कांडों और फिक्सिंग की लगातार अफवाहों सहित मैदान पर और मैदान के बाहर बहुत से विवादों के कारण काफी बदनामी झेलनी पड़ी। लेकिन सबसे बड़ा आश्चर्य ठीक अंत में सामने आया जब *कोलकाता नाइट राइडर्स* ने अपने पहले फाइनल में प्रवेश करने के बाद खिताब जीतकर सभी को चौंका दिया।

खिताबी हैट ट्रिक की तलाश में *चेन्नई सुपर किंग्स* पांच में से चौथी बार फाइनल में पहुंचे लेकिन दूसरी बार रनर-अप रहे। सीएसके लीग चरण में बाहर होने के खतरे से जूझ रहे थे, लेकिन किसी तरह अंतिम चरण में पहुंच गए। धोनी का बल्ला ज्यादातर खामोश ही रहा था और उन्होंने केवल अर्धशतक बनाया था लेकिन वो अर्धशतक एलिमिनेशन फाइनल में बंगलौर में *मुंबई इंडियंस* के खिलाफ महज 20 गेंदों में बनाए गए धुआंधार 51 रन थे जिसकी बदौलत सीएसके को 38 रन की विजय प्राप्त हुई। अगले मैच में, जो कि दूसरा क्वालिफाइंग मैच था, सीएसके ने दिल्ली डेयरडेविल्स को 86 रन से करारी शिकस्त दी और अपने लगातार तीसरे फाइनल में पहुंचे जहां उनका सामना तेजी से बेहतर हो रही केकेआर से हुआ।

एक और एकदिवसीय श्रृंखला के लिए अब अनिवार्य हो चुके श्रीलंका के दौरे में, वहां की परिस्थितियों को अच्छी तरह पहचान चुके भारतीयों ने आसानी से 4-1 से जीत लिया। लेकिन दो शानदार शतकों के साथ सनसनीखेज युवा खिलाड़ी कोहली के बेहतरीन प्रदर्शन के अलावा ये श्रृंखला कुल मिलाकर विस्मरणीय ही थी। इस अंतर के साथ, अब भारत आईसीसी की एकदिवसीय रैंकिंग में चढ़कर दूसरे स्थान पर पहुंच गया।

माना जा रहा था कि इंग्लैंड और ऑस्ट्रेलिया के दौरों की मुश्किलों के बाद, न्यूजीलैंड के खिलाफ घरेलू श्रृंखला—जिसके साथ ही इंग्लैंड, पाकिस्तान और ऑस्ट्रेलिया द्वारा भारत दौरों का एक व्यस्त कार्यक्रम शुरू होने वाला था।—एकदम आसान साबित होगी।

हैदराबाद में पहला टैस्ट मेजबान टीम के लिए आसान साबित हुआ। लेकिन बंगलौर में दूसरे टैस्ट में उनका सामना 64 रन देकर 7 विकेट लेने वाले टिम साउदी की धमाकेदार तेज गेंदबाजी से हुआ और न्यूजीलैंड ने पहली पारी में छोटी सी बढ़त बना ली। दूसरी पारी में जीत के लिए 261 रन का पीछा करते हुए, भारत 5 विकेट पर 166 के स्कोर पर मुश्किल स्थिति में था लेकिन फिर कोहली और धोनी ने 96 रन की संघर्षपूर्ण साझेदारी के द्वारा उनके बेड़े को पार लगा दिया।

टी-20 श्रृंखला जीतकर न्यूजीलैंड ने खुद को साबित किया। विशाखापट्टनम में पहला मैच बारिश की नजर हो गया और फिर उन्होंने चेन्नई में एक रोमांचकारी मैच एक रन से जीत लिया।

आठ दिन बाद भारतीयों ने चौथी विश्व टी-20 चैंपियनशिप में अपने अभियान की शुरुआत कोलंबो में अफगानिस्तान को हराकर की।

इसी के साथ धोनी को इस प्रतियोगिता में भारतीय टी-20 टीम का कप्तान बने पांच साल पूरे हो गए! वो सितंबर 2007 में कप्तान बने थे और उन्होंने दक्षिण अफ्रीका में अपनी कप्तानी की शुरुआत करते हुए पहली विश्व चैंपियनशिप में भारत को शानदार विजय दिलाई थी। इसी के बाद उन्हें एकदिवसीय और टैस्ट टीमों की कप्तानी मिलने वाली थी।

सितंबर में ये घोषणा भी की गई कि धोनी को 2011-12 के लिए आईसीसी की वर्ष की एकदिवसीय टीम का कप्तान नामित किया गया है। ये लगातार पांचवां वर्ष था जब धोनी ने इस टीम में जगह बनाई थी लेकिन उन्हें कप्तान पहली बार बनाया गया था।

पिछले पांच वर्ष धोनी के लिए और उनके नेतृत्व में राष्ट्रीय टीम के लिए बेहद उतार-चढ़ाव भरे रहे हैं। विश्व टी-20 खिताब दो वर्ष बाद भारत को दिसंबर 2009 में टैस्ट मैचों में नंबर एक रैंकिंग हासिल हुई, हालांकि ये कुल 18 महीने तक ही कायम रही, और फिर 2011 में अपनी ही सरजमीन पर विश्वकप (50 ओवर) पर कब्जा हासिल हुआ।

घरेलू मोर्चे पर, सीएसके के साथ धोनी का रिकॉर्ड शानदार, बल्कि सारी फ्रैंचाइजों में स्पष्ट रूप से सर्वश्रेष्ठ रहा था—पांच वर्ष में दो बार विजेता और दो बार रनर-अप। लेकिन 2011-12 में इंग्लैंड और ऑस्ट्रेलिया में टैस्ट श्रृंखलाओं में भारत का सफाया भी हुआ और साथ ही 2007 की जीत के बाद तीन विश्व टी-20 प्रतियोगिताओं में भारत का रिकॉर्ड अत्यंत निराशाजनक रहा था।

भारत 2012 में श्रीलंका में चौथे विश्व टी-20 में सेमीफाइनल तक पहुंचने में नाकाम रहा था, और इससे पहले 2009 में इंग्लैंड में और 2010 में वेस्ट इंडीज में भी भारत को ऐसी ही नाकामियों का सामना करना पड़ा था। लेकिन इस बार सहानुभूति धोनी और उनके खिलाड़ियों के लिए थी, क्योंकि वो पांच में से चार मैच जीतने के बावजूद नेट रन रेट पर बाहर हुए थे।

जो कि इसलिए भी बड़ी विचित्र परिस्थिति थी कि 2007 में कैरिबियन में विश्वकप (50 ओवर) में भारत के पहले दौर में बाहर हो जाने के नतीजे में चैंपियनशिप को हुए जबरदस्त वित्तीय नुकसान के बाद आईसीसी की सारी विश्व प्रतियोगिताओं के लिए नियमों में बदलाव किए गए थे।

पहले चरण में अफगानिस्तान से पार पाने और फिर इंग्लैंड की धुनाई करने के बाद, भारत ने सुपर एट में अपने तीन में से दो मैच जीते थे। सुपर एट में ऑस्ट्रेलिया से अपना पहला मैच नौ विकेट से हारने के कारण वो कठिनाई में पड़ गए थे। पांच विशेषज्ञ गेंदबाजों को खिलाने और एक बार फिर से विवादास्पद रूप से सहवाग को न खिलाने का उनका फैसला उल्टा पड़ गया और मैच के बाद उन्हें इसका खामियाजा भुगतना पड़ा। मीडिया की चुभती पूछताछ से तंग आकर, थक-हारकर उन्होंने आखिरकार कह दिया कि वो अपनी हर चाल के लिए सफाई नहीं दे सकते।

सेमीफाइनल की उम्मीद बनाए रखने के लिए भारत को पाकिस्तान के विरुद्ध अपना अगला मैच जीतना जरूरी था और ऐसा करके उन्होंने 1992 से अब तक सारे विश्वकप मैचों (50 और 20 ओवर) में अपना परफेक्ट रिकॉर्ड बनाए रखा। भारतीय खिलाड़ियों ने

दबाव की स्थिति में अपनी शांति को बनाए रखा और कोहली के अविजित 78 ने साबित कर दिया कि वो क्यों तब तक विश्व क्रिकेट के अग्रणी बल्लेबाजों में गिने जाने लगे थे।

लेकिन हालात धोनी और उनके साथियों के विरुद्ध थे और दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ अपना अंतिम मैच एक रन से जीतने के बावजूद, नेट रन रेट पर सेमीफाइनल में पहुंचने से चूकने के कारण उन्हें अपना बोरिया-बिस्तर बांधना पड़ गया।

भारत के दक्षिण अफ्रीका के साथ मुकाबले से पहले सारी निगाहें पाकिस्तान-ऑस्ट्रेलिया मैच पर टिकी हुई थीं। ऑस्ट्रेलियाई जीत भारत को सेमीफाइनल में पहुंचा देती। ऑस्ट्रेलिया 32 रन से हारा लेकिन उन्हें खुद सेमीफाइनल में पहुंचने के लिए सिर्फ 112 रन बनाने थे। इस स्कोर को उन्होंने किसी तरह अंतिम ओवर में पार कर लिया, और असामान्य रूप से ऐसे खराब और बेजान प्रदर्शन के साथ वो रेंगते हुए 7 विकेट पर 117 रन तक पहुंचे जिस पर बहुत सी भृकुटियां तन गईं। सुनील गावस्कर ने भी अपने स्तंभ में लिखा कि आश्चर्यजनक बात पराजय नहीं थी बल्कि पराजय का अंतर और ऑस्ट्रेलियाई बल्लेबाजी का तरीका था।

इसलिए इसके कुछ ही मिनट बाद, भारत ने ये जानते हुए अपना मैच शुरू किया कि उन्हें अपने विरोधी को कम से कम 31 रन से हराना होगा, जो कि टॉस हारने, पहले बल्लेबाजी करने और छह विकेट पर 152 का मामूली स्कोर खड़ा करने के बाद लगभग नामुमकिन लगता था। दक्षिण अफ्रीका को पता था कि वो बाहर हैं लेकिन भारतीय टीम के सामने झुकने के बजाय वो मैच को अंतिम ओवर तक घसीट ले गए। जैसे ही उन्होंने 122 रन के स्कोर को पार किया, प्रतियोगिता दोनों ही टीमों के लिए खत्म हो गई और भारत के बाहर होने के ढंग पर कोहली बेहद निराश थे और जैसा कि बताया गया, वो मैच के बाद ड्रेसिंग रूम में सुबक रहे थे।

ये भारतीय अभियान का एक हताशाजनक अंत था और जिस क्रूर ढंग से भारतीय टीम बाहर हुई थी उसके लिए भारतीय मीडिया ने उनके साथ पूरी सहानुभूति जताई। लेकिन अब धोनी की कप्तानी के खिलाफ शोर अपने चरम को पहुंच रहा था।

टूर्नामेंट की शुरुआत में इंग्लैंड के खिलाफ तीन स्पिनर खिलाना कारगर रहा था। लेकिन उसी संयोजन को बनाए रखने ने टीम का संतुलन बिगाड़ दिया और टीम को एक बिखरी हुई सी शक्ल दे दी। काफी काट-छांट के बाद, दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ सुपर एट के आखरी मैच में वापस तीन तेज गेंदबाजों को खिलाया गया। ऑस्ट्रेलिया के विरुद्ध, पारियों के बीच थोड़ी बारिश हो गई और तीन स्पिनरों को गेंद पकड़ने में दुशवारी हुई।

धोनी ने स्वीकार किया कि सहवाग को उस मैच से बाहर रखना उनके कप्तानी कैरियर का सबसे मुश्किल चयन निर्णय था। सलामी बल्लेबाज भी सभी मैचों में असफल रहे और इससे बाकी बल्लेबाजी पर दबाव और बढ़ गया। ये सारे कारक कप्तान के बस से बाहर थे, और साथ ही पाकिस्तान के सामने ऑस्ट्रेलिया का चौंकाने वाले ढंग से आत्मसमर्पण भी, जिसने आखरी मैच में भारत पर बहुत ज्यादा दबाव डाल दिया।

लेकिन वो ओजस्वी कप्तान अब देखने को नहीं मिलता था जिसने विश्वकप में अपने निडर और नाटकीय फैसलों के द्वारा पूरे देश को हैरान कर दिया था। ऐसा लगता था जैसे

श्रीलंका में वो अपने खोल में चले गए हों, खासकर तब जब दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ आखरी सुपर एट मैच में उन्हें रक्षात्मक क्षेत्ररक्षण लगाकर और प्रमुख स्पिनर आर अश्विन को गेंदबाजी से रोके रखकर लगभग आत्मसमर्पण कर दिया।

भूतपूर्व भारतीय सलामी बल्लेबाज आकाश चोपड़ा ने *क्रिकइंफोडॉटकॉम* पर कप्तान के इस चिंताजनक *अवतार* की तीखी आलोचना की। 'स्वाभाविक से अनम्य तक' शीर्षक के अंतर्गत, चोपड़ा ने लिखा: "ऐसा लगता है कि पिछले कुछ समय से अनम्यता, जो कि धोनी की विशेषता थी, ने उन्हें छोड़ दिया है। मैं कप्तान के बहुत ज्यादा लचीले होने का बहुत पक्षधर नहीं हूं, क्योंकि इससे दृढ़ता की कमी झलकती है, लेकिन अड़ियलपन भी अच्छी चीज नहीं है क्योंकि ये दंभ से उपजता है।"

चोपड़ा ने इस पहले-सुरक्षा वाले रवैये को हारने का डर बताया। तो क्या धोनी ने अपना जादुई स्पर्श को खो दिया था?

साप्ताहिक *आउटलुक* का ऐसा ही मानना था और उन्होंने अपने 15 अक्टूबर, 2012 के अंक में सीमित ओवर के प्रारूपों में विराट कोहली को कप्तानी के अगले दावेदार के रूप में अपने कवर पर स्थान दिया।

ठीक विश्व टी-20 के बाद, दूसरी बार दक्षिण अफ्रीका में खेले जाने वाले चैंपियंस लीग का समय हो गया और इस बार सीएसके अपना जादू बिखेरने में नाकाम रहा जिससे कप्तान के रूप में धोनी की साख को और भी धक्का लगा। जब चैंपियंस लीग 2010 में दक्षिण अफ्रीका में पहली बार आयोजित किया गया था, तो सीएसके उसके चैंपियन बने थे। लेकिन इस बार अपने ग्रुप में दो मैच जीतकर और दो मैच हारकर वो सेमीफाइनल में पहुंचने में नाकाम रहे। यॉर्कशायर के विरुद्ध अंतिम लीग मैच में, धोनी केवल एक बल्लेबाज के रूप में खेले जबकि उन्होंने कप्तानी की बागडोर सुरेश रैना को और कीपिंग के दस्ताने ऋद्धिमान साहा को सौंप दिए। अब तक ये स्पष्ट हो चुका था कि उन्हें तनावपूर्ण तिहरी भूमिका से ब्रेक की सख्त जरूरत थी।

कप्तान/विकेटकीपर/बल्लेबाज के रूप में धोनी की तिहरी भूमिका अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट में अब उतनी अनूठी नहीं रह गई जितनी कभी हुआ करती थी, हालांकि तीनों प्रारूपों में कप्तान/विकेटकीपर के रूप में उनके रिकॉर्ड को कोई नहीं पहुंच सकता। सबसे महत्वपूर्ण ये कि कप्तान के रूप में उनकी बल्लेबाजी का औसत कहीं ज्यादा है, जो उनके स्वभाव और लगन को साबित करता है।

उनसे पहले केवल इंग्लैंड के एलेक स्टीवर्ट '90 के दशक में और बाद में श्रीलंका के कुमार संगकारा इन भूमिकाओं में सफल रहे थे। वास्तव में मुंबई में भारत और श्रीलंका के बीच 2011 विश्वकप के फाइनल में पहली बार दो विकेटकीपर/बल्लेबाज टॉस के लिए मैदान में गए थे।

2011 में बांग्लादेश के विकेटकीपर मुशफिकुर्रहीम तीनों प्रारूपों में अपनी टीम की कमान संभालने वाले धोनी के बाद दूसरे खिलाड़ी बने। दक्षिण अफ्रीका के एबी डी विलियर्स 50 ओवर और टी-20 प्रारूपों में कप्तान हैं।

लेकिन आईपीएल और चैंपियंस लीग में सीएसके की कप्तानी करना धोनी के लिए अतिरिक्त बोझ है और जल्दी ही कुछ न कुछ जाएगा। अब जबकि धोनी ने खुद इशारा दे दिया है कि 2013 तक वो किसी एक प्रारूप को छोड़ देंगे, तो हो सकता है कि 50 ओवर की क्रिकेट में कोहली की कप्तानी की बारी उम्मीद से ज्यादा जल्दी आ जाए।

शायद आने वाले हालात का संकेत देते हुए, धोनी ने 7 नवंबर, 2012 को मुंबई में सुपरस्पोर्ट श्रेणी में एफआईएम वर्ल्ड सुपरबाइक चैंपियनशिप के लिए अपनी माही रेसिंग टीम का अनावरण किया। ये 600 सीसी क्लास में यामाहा की फैक्टरी टीम है।

पहले एमएसडी आर-एन रेसिंग टीम इंडिया के नाम से जानी जाने वाली अपनी इस नई टीम के लिए तीन बार के विश्व चैंपियन कीनन सोफूग्लू और चौथे नंबर के फेबियन फोरर को साइन करके धोनी ने दिखा दिया कि वो बाइकों के लिए अपने जुनून के प्रति कितने गंभीर हैं। उन्होंने ये भी घोषणा की कि उनकी योजना भारत में एक राइडिंग स्कूल खोलने की है।

मीडिया के अंदाजे उनके द्वारा भारत में एक राइडिंग स्कूल खोलने के इर्द-गिर्द घूमते रहे —शायद धोनी पहले ही क्रिकेट के बाद के अपने जीवन की योजना बना रहे थे। उन्होंने संक्षेप में अपनी भावनाएं इन शब्दों में व्यक्त कीं: “सच पूछें, तो एक छोटे शहर का होने के कारण मैंने कभी नहीं सोचा था कि मैं भारत के लिए खेल सकूंगा! साफ बात है! राइडिंग स्कूल खोलना कभी मेरी योजनाओं में नहीं था, लेकिन अब हम इस स्थिति में हैं कि ऐसा कर सकते हैं।”

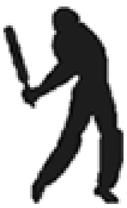

अध्याय सोलह

कैप्टन आइस-कूल

2013 में भारतीय क्रिकेट में महेंद्र सिंह धोनी की ‘मैन’ से सुपरमैन तक की तरक्की 50 ओवर के खेल में दो यादगार विजयों और टैस्ट क्षेत्र में भारत के पक्ष में एक दुर्लभ सफाए के कारण रही।

इस वर्ष में धोनी आईसीसी के तीन विश्व खिताब—टी-20 विश्व कप, 50 ओवर का विश्व कप और अंततः इंग्लैंड में चैंपियंस ट्रॉफी—जीतने वाले पहले कप्तान बन गए।

इसमें भारत द्वारा दिसंबर 2009 में उनकी कप्तानी में टैस्ट क्रिकेट में प्राप्त नंबर एक रैंकिंग और दो आईपीएल और चैंपियंस लीग खिताब और जोड़ लें तो धोनी की ट्रॉफी कैबिनेट छलकती प्रतीत होने लगती है।

वेस्टइंडीज में एक और एकदिवसीय त्रिकोणीय श्रृंखला थी और एक बार फिर से इसमें श्रीलंका भी शामिल था। लेकिन धमाकेदार फाइनल को किसी भी तरह नीरस नहीं कहा जा सकता था।

लेकिन वो शानदार दिन बहुत दूर लगते थे, जब 2012 के अंत में इंग्लैंड की क्रिकेट टीम उस श्रृंखला के लिए आई थी, जिसे इलेक्ट्रॉनिक मीडिया ने प्रत्याशित रूप से बदले की श्रृंखला कहा था—पिछली गर्मियों में इंग्लैंड के हाथों 4-0 से सफाए का बदला।

भारत में इंग्लैंड का रिकॉर्ड काफी खराब रहा था, क्योंकि अभी तक केवल तीन कप्तान —डगलस जार्डीन (1933-34 में पहला दौरा), टोनी ग्रेग (1976-77) और डेविड गॉवर (1984-85)—विजयी होकर लौटे थे। अब इस प्रतिष्ठित फहरिस्त में एलेस्टेयर कुक का नाम भी जुड़ गया था।

लेकिन अहमदाबाद में श्रृंखला के प्रत्याशित रूप से शुरू होने के बाद अंत में इंग्लैंड के लिए 2-1 की जीत काफी असंभाव्य सी लगती थी। पुराना भारतीय फॉर्मूला—टॉस जीतो, एक बड़ा स्कोर खड़ा करो और फिर सब कुछ स्पिन गेंदबाजों पर छोड़ दो—सरदार पटेल स्टेडियम में बड़े सुंदर ढंग से सफल रहा था और भारत 9 विकेट से मैच जीता था।

लेकिन उससे पहले जब कुक ने दूसरी पारी में 176 रन की अपनी जुझारू पारी के लिए लगभग 10 घंटे तक बल्लेबाजी की और भारत को दोबारा बल्लेबाजी के लिए मजबूर कर दिया, तो उन्होंने भारतीयों को अंदाजा करा दिया था कि आगे क्या आने वाला है। लेकिन मैन ऑफ द मैच का पुरस्कार चेतेश्वर पुजारा को टैस्ट मैच में उनके पहले दोहरे शतक के लिए प्राप्त हुआ।

धोनी ने तुरंत मांग कर दी कि मुंबई में वानखेड़े स्टेडियम में दूसरे टैस्ट में विकेट शुरू ही से स्पिनरों की मदद करने वाला होना चाहिए।

ऐसा ही हुआ भी—लेकिन इस बार ग्रेम स्वान और मोंटी पनेसर की इंग्लैंड की स्पिन जोड़ी ने कुल 19 विकेट लेकर भारत को और भारत के अक्खड़ कप्तान को मुंह की खिलाई।

भारत अपनी ही चाल में फंस गया और वो भी किस तरह। उन्होंने तीन स्पिनरों और केवल एक तेज गेंदबाज को खिलाया। लेकिन ये पहला मौका नहीं था, जब स्पिनरों की मदद करने वाला विकेट मेहमान टीम के गेंदबाजों के लिए ज्यादा मददगार साबित हुआ था। 10 विकेट से हारने के सदमे ने धोनी और उनके साथियों को भौंचक्का कर डाला था।

इंग्लैंड की किस्मत में ये एक जबरदस्त बदलाव था जिसका नेतृत्व पनेसर (11 विकेट), कुक (122) और केविन पीटरसन द्वारा किया गया था, जिनकी 186 रन की पारी भारतीय जमीन पर खेली गई सबसे क्रूर पारियों में से एक थी।

घूमती गेंद को मदद करने वाली पिच बनाने की धोनी की लगातार मांग को ईडन गार्डन के तिरासी वर्षीय क्यूरेटर प्रबीर मुखर्जी ने अनसुना कर दिया और उन्होंने भारतीय कप्तान की मांग को 'अनैतिक' कहकर उसकी आलोचना की, और वो बीसीसीआई और अपनी मेजबान एसोसिएशन के भरपूर दबाव के आगे भी झुके नहीं।

नतीजतन इस बार, अडिग कुक के एक और लगभग अवश्यंभावी शतक की बदौलत बने 523 के विशाल स्कोर और लगभग 200 रनों की बढ़त के बाद, भारतीय बल्लेबाजों के पांव इंग्लैंड के स्पिनरों के बजाय तेज गेंदबाजों ने उखाड़े। अब तक किसी भी प्रकार का प्रतिरोध व्यर्थ प्रतीत होने लगा था और इंग्लैंड सारे क्रिकेट जगत को चौंकाते हुए 7 विकेट से जीत गया।

नागपुर में चौथा और अंतिम टैस्ट श्रृंखला के लिए एंटी-क्लाइमैक्स साबित हुआ। भारत चार स्पिनरों के साथ खेला लेकिन एक सपाट पिच पर फैसले की कोई उम्मीद ही नहीं थी। तीसरे दिन विराट कोहली और उनके कप्तान की जरूरत से ज्यादा धीमी बल्लेबाजी ने सबको चकित किया, जबकि भारत को मैच में किसी फैसले के लिए तेजी से रन बनाने की आवश्यकता थी। लेकिन इसके बजाय इस जोड़ी ने 507 गेंदों में 198 रन जोड़े। ये देखना अच्छा नहीं लगा।

धोनी ने श्रृंखला में अपना एकमात्र बड़ा स्कोर बनाया और 99 रन पर उनके रन आउट होने ने श्रृंखला में उनकी मुसीबतों का सार बता दिया, जबकि उनकी सारी तदबीरें उलटी पड़ती गई थीं।

अब तलवारें खिंच चुकी थीं। मीडिया को धोनी का सिर चाहिए था और उसने युवा सनसनी कोहली को लगभग उनका स्थानापन्न नियुक्त ही कर दिया था। हालात तब और भी बदतर हो गए जब पाकिस्तान एक छोटे से दौरे के लिए आया और उसने एकदिवसीय श्रृंखला 2-1 से जीत ली और टी-20 श्रृंखला 1-1 से बराबर कर ली, हालांकि एकदिवसीय श्रृंखला में धोनी की पारियों (अविजित 113 , अविजित 54 और 36) ने सीमित ओवर के फॉरमैट में उनकी अनिवार्यता को एक बार फिर से साबित कर दिया।

साप्ताहिक *स्पोर्टस्टार* (जनवरी 13 , 2013) ने धोनी के बारे में अपनी कवर स्टोरी को शीर्षक दिया 'संघर्षरत,' जबकि एक अन्य साप्ताहिक अखबार ने प्रत्यक्ष उत्तराधिकारी कोहली को अपने कवर पर स्थान दिया।

धोनी की परेशानियां नाराज और असुरक्षित वरिष्ठ खिलाड़ियों के एक गुट ने, और सचिन तेंदुलकर, हरभजन सिंह और जहीर खां की खराब फॉर्म ने और भी बढ़ा दीं। ये निश्चित रूप से एक प्रसन्नचित्त कैंप नहीं था।

लगभग इसी समय भूतपूर्व चयनकर्ता और महान बल्लेबाज महेंद्र अमरनाथ ने ये भी कह दिया कि 2011 में इंग्लैंड से और फिर 2012 में ऑस्ट्रेलिया से 4-0 द्वारा सफाए के बाद चयनकर्ताओं ने एकमत से धोनी को कप्तानी से हटाने का फैसला कर लिया था। अमरनाथ का दावा था कि इस फैसले को बोर्ड के अध्यक्ष एन श्रीनिवासन ने पलट दिया था जिनके बारे में माना जाता था कि *चेन्नई सुपर किंग्स* के मालिक होने के नाते वो धोनी की स्टार वैल्यू की रक्षा करना चाहते थे।

परेशानियों से घिरे कप्तान के लिए खुशी का एक दुर्लभ क्षण तब आया जब क्रिसमस ब्रेक के बाद इंग्लैंड की टीम दो टी-20 मैचों (1-1 से बराबर) और एक एकदिवसीय श्रृंखला के लिए वापस आई, जिसे भारत ने 3-2 से जीत लिया। इस श्रृंखला की विशेषता जनवरी 19 , 2013 को दिखी जब धोनी के शहर रांची ने अपने पहले एकदिवसीय मैच की मेजबानी की और स्थानीय लड़के ने विजयी रन बनाए। टॉस के समय उनकी इस टिप्पणी ने, कि उन्होंने वहां मौजूद 30,000 दर्शकों में से आधे के साथ टेनिस-बॉल क्रिकेट खेली होगी, इस यादगार अवसर की शुरुआत की और भारत द्वारा श्रृंखला जीत लिए जाने के साथ ही भारत ने आईसीसी की एकदिवसीय रैंकिंग में इंग्लैंड को पहले स्थान से हटा दिया।

भारतीय क्रिकेट इतिहास के इस सबसे व्यस्त सत्र में थके हुए मेजबानों को सांस लेने का भी मौका नहीं मिला था कि माइकल क्लार्क की कप्तानी में ऑस्ट्रेलियाई टीम चार टैस्ट मैचों की श्रृंखला के लिए भारत आ पहुंची।

एक बार फिर से बदले की बातें होने लगीं—धोनी की टीम ने पिछले सत्र में ऑस्ट्रेलिया के दौरे के दौरान अपने लगातार दूसरे सफाए को झेला था।

बदला वाकई लिया गया, और वो भी भरपूर बदला, जब 4-0 के जवाब में भारत ने ये श्रृंखला 4-0 से ही जीती। 1970 में दक्षिण अफ्रीका द्वारा हराए जाने के अलावा ये ऑस्ट्रेलिया के लिए केवल दूसरा मौका था, जब उन्होंने किसी श्रृंखला के सभी मैच हारे थे।

धोनी ने नेतृत्व की जिम्मेदारी बखूबी निभाई और चेन्नई में पहले टैस्ट में 265 गेंदों में उनकी 224 रन की पारी किसी भी भारतीय कप्तान या विकेटकीपर द्वारा सबसे बड़ी पारी

थी।

बावजूद इसके कि पिछली श्रृंखला में इंग्लैंड के फिरकी गेंदबाजों ने मेजबान बल्लेबाजों पर पांसा पलट दिया था, कप्तान ने इस बार भी स्पिन के लिए मददगार पिचों पर ही जोर दिया और इस बार उनका उपाय कारगर रहा।

मेहमानों के पास परिस्थितियों का लाभ उठाने लायक गेंदबाज नहीं थे और धोनी ने खुद आगे बढ़कर उनके स्पिन आक्रमण के बखिये उधेड़ने की जिम्मेदारी संभाली और चेन्नई में नेथन ल्योन की ऑफ-स्पिन गेंदबाजी पर 85 गेंदों में 104 रन बटोरे।

पहली पारी में क्लार्क का शतक श्रृंखला में ऑस्ट्रेलिया का एकमात्र शतक साबित हुआ, जबकि भारतीय बल्लेबाजों ने छह शतक बनाए जिनमें से दो मुरली विजय ने बनाए जबकि धोनी और पुजारा ने दोहरे शतक जड़े।

धोनी को प्रथम श्रेणी मैचों के अपने पहले दोहरे शतक के लिए मैन ऑफ द मैच पुरस्कार प्राप्त हुआ। लेकिन इसके लिए उनका स्थानीय खिलाड़ी आर अश्विन के साथ कड़ा मुकाबला रहा होगा जिन्होंने मैच में 12 विकेट लिए थे। हैरत की बात नहीं है कि भारत ने मैच 8 विकेट से जीता और शेष श्रृंखला के लिए स्वयं को तैयार कर लिया।

ऑस्ट्रेलिया ने अपनी सरजमीन पर भारत को प्रत्येक टैस्ट में हराया था, और भारत ने उसका उसी प्रकार से जवाब दिया। भारत ने हैदराबाद में दूसरा टैस्ट एक पारी और 135 रन से जीता और मोहाली में तीसरा और दिल्ली में चौथा टैस्ट दोनों ही 6 विकेट से जीते। लेकिन कप्तान और बोर्ड अधिकारियों द्वारा क्यूरेटरों पर निरंतर दबाव ने जीत की चमक किसी हद तक कम कर दी।

ऑस्ट्रेलियाई शिविर का हौसला बुरे हाल में रहा होगा, जिसका उदाहरण मोहाली टैस्ट से पहले 'होमवर्क' वाली घटना में सामने आया जब उनके चार खिलाड़ियों को अनुशासनहीनता के लिए टीम से बाहर कर दिया गया।

श्रृंखला से पहले गौतम गंभीर को, और श्रृंखला के दौरान हरभजन और सहवाग को—बेशक कप्तान की मर्जी से—निकाले जाने और जहीर खां की निरंतर अनुपस्थिति के कारण टीम में नई प्रतिभा को मौका मिला जिसकी बेहद आवश्यकता भी थी।

पुजारा ने एक और दोहरे शतक के साथ नंबर तीन पर अपनी जगह पक्की कर ली जबकि शिखर धवन ने अपने पहले टैस्ट में एक धमाकेदार शतक जड़ा और स्विंग गेंदबाज भुवनेश्वर कुमार ने भी टैस्ट क्रिकेट में प्रभावशाली कदम रखा। कोहली द्वारा विश्व के अग्रणी बल्लेबाजों में अपनी जगह मजबूत किए जाने और स्पिनरों अश्विन, प्रज्ञान ओझा और रवींद्र जडेजा द्वारा अपनी जगहें पक्की कर लिए जाने के बाद, बार-बार असुरक्षित वरिष्ठ खिलाड़ियों की ओर देखते रहने के बजाय आखिरकार धोनी के पास एक ऐसी टीम थी जिसे वो अपनी छवि में ढाल सकते थे।

एकदिवसीय क्रिकेट से रिटायरमेंट के तेंदुलकर के फैसले से भी कप्तान और टीम को राहत मिली होगी क्योंकि पिछले दो वर्षों में उनके खराब स्कोर एक तनाव और भटकाव बने हुए थे।

अब कोई धोनी को हटाए जाने की मांग नहीं कर रहा था। लेकिन ये बड़ा करीबी मामला रहा था। एक और पराजय होती, तो उन्हें हटाए जाने की मांग इतना जोर पकड़ सकती थी कि उसका विरोध कर पाना मुश्किल हो जाता।

अब समय आ गया था आईपीएल के छठे सीजन का, वो टूर्नामेंट जिसमें *चेन्नई सुपर किंग्स* के साथ धोनी को अपार सफलता प्राप्त हुई थी।

धोनी बेशक रांची में पैदा हुए थे, लेकिन अब तक उन्हें बड़ी खुशी के साथ चेन्नई का मुंहबोला बेटा स्वीकार किया जा चुका था। ऑस्ट्रेलिया के विरुद्ध चेन्नई टैस्ट में उनके दोहरे शतक ने इसकी और भी पुष्टि कर दी थी।

एक बार फिर से चेन्नई में मुंबई इंडियंस के विरुद्ध अंत में कप्तान ही मौजूद थे। दो शक्तिशाली हिटरों के दरम्यान इस मैच में, वेस्टइंडीज के कीरॉन पोलार्ड के अविजित 57 की बदौलत मुंबई की टीम ने 6 विकेट पर 148 रन बना लिए थे।

सीएसके की आधी टीम 56 रन पर आउट हो चुकी थी लेकिन फिर धोनी ने आकर मुंबई के गेंदबाजों को धुन डाला। उनके 51 रन लगभग दो रन प्रति गेंद की गति से बने थे और अंत में जब 18 गेंदों में 40 रन चाहिए थे, तो उन्होंने पोलार्ड पर एक ओवर में 17 रन बनाए। अब 12 गेंदों में 23 रन चाहिए थे और जब अंतिम ओवर के लिए मुनाफ पटेल आए तो 12 रन की आवश्यकता थी—धोनी के रिकॉर्ड के हिसाब से बेहद आसान।

लेकिन अंतिम जीत पोलार्ड की ही हुई जब उन्होंने डीप मिडविकेट सीमा पर एक लगभग निश्चित छक्के के शॉट को कलाबाजी खाते हुए लपक लिया और धोनी के आउट होने के साथ ही मैच का फैसला हो गया।

सीएसके ने अगले मैच में मोहाली में जबरदस्त वापसी करते हुए *किंग्स इलैवन पंजाब* पर रिकॉर्ड 10 विकेट की जीत दर्ज की और उससे अगले मैच में *रॉयल चैलेंजर्स बंगलौर* को अंतिम गेंद पर हराया जब आर पी सिंह द्वारा अंतिम गेंद नो-बॉल फेंके जाने की बदौलत सीएसके ने जीत हासिल कर ली।

दिल्ली डेयरडेविल्स को 86 रन से ध्वस्त किया गया और गत विजेता *कोलकाता नाइट राइडर्स* को उन्हीं के मैदान पर हराकर चौंकाया गया और *पुणे वॉरियर्स* के हाथों हार के बावजूद, *राजस्थान रॉयल्स* को एक और कड़े मुकाबले में हराने के बाद, सीएसके मध्य बिंदु पर पॉइंट टेबल में सबसे ऊपर थी।

उसी प्रकार का कड़ा मुकाबला तीन दिन बाद *सनराइजर्स हैदराबाद* के खिलाफ देखा गया और अब चेन्नई के प्रशंसक शिकायत करने लगे थे—क्योंकि उनके कप्तान हर मैच को बिल्कुल अंत तक जाने देते हैं?

अंतिम ओवर में जब 15 रनों की आवश्यकता थी, तो आशीष रेड्डी ने एक छक्का और दो चौके मारे और चेन्नई की टीम दो गेंदों के शेष रहते जीत गई। जीत का रन धोनी के ही बल्ले से आया। उनके अविजित 67 रनों को 37 गेंदों की जरूरत पड़ी।

मैच के बाद चर्चा का विषय रहा दुनिया के अग्रणी तेज गेंदबाज माने जाने वाले डेल स्टेन का उनके द्वारा धुनाई आक्रमण। स्टेन ने अपने चार ओवर में 45 रन दिए। धोनी के चार

में से तीन छक्के स्टेन की गेंदों पर पड़े, जिनकी भयंकर गति के बावजूद उनकी काफी धुनाई हुई।

अब तक सीएसके के गेंदबाजी कोच एंडी बिकेल धोनी की तुलना अपने ऑस्ट्रेलियाई देशवासी माइकल बेवन से करने लगे थे, जिन्हें 50 ओवर के खेल का सबसे अच्छा फिनिशर माना जाता रहा था। लेकिन बिकेल ने ये भी माना कि ज्यादा छोटे फॉरमैट के कारण धोनी का काम ज्यादा मुश्किल था।

इस आईपीएल सत्र की एक विडंबना ऑस्ट्रेलियाई सलामी बल्लेबाज माइक हसी की शानदार फॉर्म थी, जिनका अपनी राष्ट्रीय टीम से हालिया रिटायरमेंट भारत के हाथों उसके सफाए का एक प्रमुख कारण रहा था।

हसी बजाहिर क्लार्क के बजाय धोनी की कप्तानी में अधिक सहज थे और सत्र में अपनी पहली आठ पारियों में उन्होंने 89 के आश्चर्यजनक औसत से 445 रन बनाए थे। धोनी की प्रेरणास्पद कप्तानी के कारण उनके खिलाड़ी केवल अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ही अपना बेहतरीन कौशल दिखाने में सक्षम नहीं होते थे।

चूंकि सुरेश रैना, ड्वेन ब्रावो और रवींद्र जडेजा भी शानदार फॉर्म में थे, इसलिए सीएसके एकमात्र ऐसी टीम होने के अपने रिकॉर्ड को कायम रखने में सफल रही, जो ग्रुप चरण से आगे निकलने में सफल रही हो। उन्होंने 16 में से 11 मैच जीते और अपने घरेलू मैदान से बाहर सबसे अच्छा रिकॉर्ड भी उन्हीं का रहा।

लेकिन अभी जबकि आईपीएल अपने अंतिम चरण में प्रवेश कर ही रहा था कि ये स्तब्ध कर देने वाली खबर आई कि *राजस्थान रॉयल्स* के तीन खिलाड़ी—जिनमें अंतरराष्ट्रीय गेंदबाज एस श्रीशंत भी शामिल थे—स्पॉट फिक्सिंग के लिए गिरफ्तार कर लिए गए हैं।

ये खबर सब पर बिजली की तरह गिरी थी। लेकिन ये उन लोगों के लिए बहुत हैरत की बात नहीं थी, जिनकी पैसे के इस खेल से जुड़े विभिन्न अनैतिक पक्षों पर 2008 में शुरुआत से ही नजर रही थी। पिछले वर्ष पांच खिलाड़ियों पर एक टीवी स्टिंग किया गया था, जिससे भ्रष्टाचार के संकेत मिलते थे। नियंत्रण की कमी और टीमों के मालिकों को दी गई पूर्ण स्वतंत्रता से इस तरह के नतीजे सामने आने ही थे।

अभी जबकि ये तीन खिलाड़ी, जो अपने निर्दोष होने की दुहाई दे रहे थे, सलाखों के पीछे ही थे कि सीएसके के मैचों में सट्टेबाजी के आरोप में बीसीसीआई के अध्यक्ष एन श्रीनिवासन के दामाद गुरुनाथ मेयप्पन की गिरफ्तारी की खबर आई।

मेयप्पन, जिन्हें ट्विटर पर सीएसके के 'टीम प्रिंसिपल' के रूप में बताया गया था (जिसे शीघ्र ही हटा दिया गया) और जो कि आईपीएल की नीलामियों में बोली लगाने वाले हुआ करते थे, मैचों के दौरान टीम की बेंच पर भी हमेशा मौजूद रहते थे।

श्रीनिवासन की स्थिति निरंतर कमजोर होती जा रही थी और आईपीएल के आरंभ में किसी बीसीसीआई अधिकारी के टीम का मालिक (इंडिया सीमेंट्स के माध्यम से) भी होने से संबंधित हितों के संघर्ष की बात अब उन्हें परेशान कर रही थी।

खास बीसीसीआई स्टाइल के कुटिल राजनीतिक नाटक और कुचक्र के बीच, आखिरकार बीसीसीआई द्वारा नियुक्त जांच पैनल द्वारा गुरुनाथ के निर्दोष साबित होने तक के लिए श्रीनिवासन को "एक ओर हटने" के लिए मजबूर किया गया और भारतीय क्रिकेट की बूढ़ी चालाक लोमड़ी जगमोहन डालमिया ने एक बार फिर से, भले ही अस्थायी रूप से, वापसी की।

इसके बाद के दो महीनों में होने वाली घटनाएं इतनी जटिल और तेजी से बदलने वाली थीं कि उन्हें एक किताब में दर्ज करना मुश्किल है। लेकिन जुलाई में चेन्नई में छात्रों के सामने भाषण देने के दौरान श्रीनिवासन की एक टिप्पणी ने उनकी सामंतवादी मानसिकता की पोल खोल दी।

"आपके ख्याल से लोग सीएसके से क्यों जलते हैं?" उन्होंने अपने युवा श्रोताओं से भाषणगत सवाल किया। "धोनी की वजह से। मुझ पर बर्बरतापूर्ण आक्रमण हुआ क्योंकि मेरे पास धोनी हैं।"

इन शब्दों ने ये भी साबित कर दिया—अगर वाकई किसी सुबूत की जरूरत रह गई थी—कि आईपीएल के बाद क्रिकेटर अमीर व्यापारियों द्वारा खरीदे-बेचे जाने की वस्तुएं बनकर रह गए हैं।

लेकिन मई में इस संकट के चरम पर सीएसके जबरदस्त दबाव में थी और कप्तान के लिए परेशानी इसलिए और भी बढ़ गई कि मीडिया को सीएसके के मैचों में धोनी की पत्नी साक्षी के पास सट्टेबाजी के कथित सरगना, असफल अभिनेता विंदू दारा सिंह, के बैठे होने के फुटेज मिल गए।

फिर भी, भले ही इस गुबार के बीच, और एक ऐसे समय में जबकि न केवल हर मैच बल्कि वास्तव में हर गेंद को पूरी गहराई और संदेह के साथ देखा जा रहा था, आईपीएल तो खेला ही जाना था।

सीएसके ने पहले क्वालिफायर में एमआई को हराकर छह साल में चौथी बार फाइनल में प्रवेश किया, जो अभी तक किसी भी टीम का सर्वश्रेष्ठ रिकॉर्ड था। वास्तव में, उन्हें दोनों ही ग्रुप मैचों में हराने वाली एकमात्र टीम एमआई ही थी।

दूसरे क्वालिफायर में राजस्थान रॉयल्स को हराकर एमआई ने फाइनल में प्रवेश कर लिया लेकिन कोलकाता में होने वाला फाइनल एक क्रिकेट समारोह के चरमोत्कर्ष के बजाय एक अंत्येष्टि सा ज्यादा नजर आया।

धोनी की एक दुर्लभ रणनीतिक गलती के कारण सीएसके मैच हार गया और एमआई ने अपना पहला आईपीएल खिताब जीत लिया। अपने तीसरे खिताब के लिए मात्र 149 रन का पीछा करते हुए चेन्नई की टीम ढहकर सातवें ओवर में 5 विकेट पर 36 के स्कोर पर थी—जो जल्दी ही 6 विकेट पर 39 हो गया—जब उनके मैच जिताने वाले कप्तान बल्लेबाजी के लिए आए।

धोनी ने एक बार फिर 45 गेंदों में 63 रन की पारी खेलकर अपनी टीम में सबसे अधिक रन बनाए, लेकिन इस बार ये पर्याप्त नहीं रहा। इस बार अंतिम ओवर में कोई नाटकीय खेल नहीं देखा गया। किसी भी समय ऐसा प्रतीत नहीं हुआ कि वो दिल से पीछा कर रहे हों;

फाइनल से पहले उनके कोच स्टीफन फ्लेमिंग ने स्वीकार किया था कि उनके खिलाड़ी “थक चुके हैं।”

पारी 9 विकेट पर 125 पर समाप्त हो गई, मुंबई की टीम बड़ी आसानी से 23 रन से जीत गई और अब एक ऐसे समय में जब उनकी टीम को उनकी सबसे ज्यादा जरूरत थी, बल्लेबाजी क्रम में इतने नीचे सातवें नंबर पर आने के लिए धोनी को आलोचना का सामना करना पड़ा।

ये सीएसके का लगातार चौथा फाइनल था, लेकिन ये लगातार दूसरा मौका भी था जब वो फाइनल में हारी थी, और ये एक ऐसी चीज थी जिसके धोनी आदी नहीं थे।

भारतीय क्रिकेट के पागलपन भरे कार्यक्रम में, खिलाड़ियों को अपने थके अंगों को जरा सा आराम देने का भी मौका नहीं मिला था कि उन्हें आईसीसी द्वारा घोषित अंतिम चैंपियंस ट्रॉफी के लिए इंग्लैंड जाना पड़ा। ये टूर्नामेंट 1998 में शुरू हुआ था और इसे भारत ने कभी संपूर्ण रूप से नहीं जीता था।

लेकिन धोनी अभी भी निशाने पर थे और इस बार कारण था खेल प्रबंधन कंपनी रीति स्पोर्ट्स में उनकी और उनके परिवार के कुछ सदस्यों की वित्तीय हिस्सेदारी जिसकी खोज एक वित्तीय दैनिक ने की थी और इसके कारण कुल मिलाकर भारतीय क्रिकेट के लिए, और विशेषकर धोनी के लिए ये एक संकटपूर्ण पखवाड़ा रहा।

“हितों के संघर्ष” का भयानक मुद्दा उन्हें परेशान करने वाला था क्योंकि कंपनी की तालिका में चार भारतीय खिलाड़ियों में से धोनी समेत तीन सीएसके से थे। उनके द्वारा रीति के साथ जुलाई 2010 में किया गया कथित रूप से बहुचर्चित 200 करोड़ रुपए का समझौता भी अब संदेह के दायरे में था।

एक अंतरराष्ट्रीय टूर्नामेंट से पहले वो उचित मनोस्थिति में नहीं थे और प्रस्थान से पहले प्रेस कॉन्फ्रेंस से पहले तनावपूर्ण चेहरा लिए धोनी खामोश रहने के लिए मजबूर हो गए, जबकि मीडिया उनसे तीखे प्रश्न पूछने पर उतारू था। इंग्लैंड पहुंचने के बाद भी उन्हें मजबूरन अंतरराष्ट्रीय मीडिया को समझाना पड़ा कि वो प्रेस से बातचीत के दौरान विवादास्पद मामलों पर बातचीत करने की स्थिति में नहीं हैं।

हैरत की बात नहीं कि अब तक धोनी की दाढ़ी में जरूरत से ज्यादा ही खिचड़ी बाल नजर आने लगे थे। कम से कम हाल के उनके कुछ प्रसिद्ध पूर्ववर्तियों के विपरीत उनका मशहूर बालों भरा सिर अभी तक मौजूद था; लोगों और मीडिया की निरंतर पैनी नजर के कारण खेल जगत में भारतीय कप्तान का काम सबसे मुश्किल कामों में से एक है।

कप्तान और उनके खिलाड़ियों को श्रेय देना पड़ेगा कि उन्होंने इस सबको पीछे छोड़ते हुए टूर्नामेंट में एक धमाकेदार शुरुआत की।

कार्डिफ में धवन के पहले एकदिवसीय शतक और रोहित शर्मा के साथ उनकी शतकीय साझेदारी ने भारत को 7 विकेट पर 331 तक पहुंचने में मदद की और दक्षिण अफ्रीका, अंत में कुछ कड़ा मुकाबला करने के बावजूद, कभी भी मैच में दावेदार नहीं रहा।

जडेजा, रैना और अश्विन की स्पिन गेंदबाजी चौंकाने वाली साबित हुई जब उन्होंने मध्यावस्था में केवल 66 रन देते हुए लगातार 16 ओवर तक गेंदबाजी की। टूर्नामेंट में

चौंकाने वाली पिचों का ये शुरुआती इशारा था।

ओवल में अगले मैच में वेस्टइंडीज को 8 विकेट से हराकर भारत ने सेमीफाइनल में स्थान सुरक्षित कर लिया जहां धवन के लगातार दूसरे शतक और जडेजा के पांच विकेट ने 2004 की चैंपियन टीम को धराशायी कर दिया।

दुनिया में कहीं भी हो, भारत-पाकिस्तान के मैच का हमेशा बेचैनी से इंतजार रहता है और एजबैस्टन का मैच भी भिन्न नहीं था हालांकि इसका कोई महत्व नहीं था—भारत पहले ही अंतिम चार में जगह बना चुका था और पाकिस्तान बाहर हो चुका था।

बारिश द्वारा डाले लगातार व्यवधानों के बीच पाकिस्तान के 165 ऑल आउट के जवाब में भारत को 22 ओवर में 102 रन बनाने थे और एक बार फिर से भारत ने मैच 8 विकेट से जीत लिया।

अब तक भारत की चुस्त फील्डिंग अपना लोहा मनवाने लगी थी और धोनी का ये कहना एकदम सही था कि भारत की फील्डिंग टूर्नामेंट की सारी टीमों में सबसे अच्छी है। कप्तान की युवा टांगों और ताजा दिमाग की नीति के अच्छे नतीजे सामने आ रहे थे।

कार्डिफ का सेमीफाइनल 2011 के विश्व कप फाइनल का दोहराव था।

अब तक 8 विकेट से जीतना भारत की आदत सी बनती जा रही थीं और इस बार भारतीय खिलाड़ियों के एक और शानदार प्रदर्शन के साथ उन्होंने श्रीलंका के विरुद्ध भी ऐसा ही किया—लगातार तीसरी बार। इसका अर्थ ये था कि धोनी को अभी तक टूर्नामेंट में केवल एक बार—पहले मैच में दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ—बल्लेबाजी करने की जरूरत पड़ी थी।

धवन इस सारे शो के सितारे के रूप में उभरकर सामने आ रहे थे। इस बार उन्होंने 68 रन की आकर्षक पारी खेली थी और टूर्नामेंट में अपने रनों की संख्या को 100 से अधिक के औसत पर 332 तक ले गए थे।

टीम अपने चरम पर थी और खिताब के लिए एजबैस्टन में इंग्लैंड का सामना करना वास्तव में एक स्वप्निल फाइनल था—विश्व चौंपियन बनाम मेजबान।

लेकिन खराब मौसम के कारण, जिसने शुरू ही से टूर्नामेंट पर कहर बरपा किया हुआ था, ये सपना आयोजकों और प्रशंसकों के लिए एक बुरे सपने में बदलने वाला था।

तेज बारिश होने के कारण आईसीसी ने अपने ही नियमों में लचीलापन पैदा करते हुए अंतिम समयसीमा को इतना बढ़ा दिया कि कम से 20 ओवर प्रति टीम का मैच हो सके, जिसकी फैसले के लिए न्यूनतम आवश्यकता थी।

भारत को 2002 में कोलंबो में श्रीलंका के विरुद्ध भी बारिश ने वंचित कर दिया था और तब खिताब को बांटना पड़ा था। एक बार फिर से लगभग यही होने वाला था। लेकिन अब इस टूर्नामेंट के अंतिम फाइनल के लिए एक 20/20 का शूटआउट होने वाला था।

दोनों टीमें घबरा गईं। लेकिन महत्वपूर्ण चीज ये थी कि भारत थोड़ा सा कम घबराया—और एक बार फिर उनके शांत कप्तान के कारण ही ऐसा हो सका था। या कैप्टन कूल के कारण।

उन्होंने बल्लेबाजी में नाकामी—एकदिवसीय मैचों में अक्तूबर 2010 के बाद उनका पहला शून्य का स्कोर—के बावजूद भी किस तरह ऐसा किया, ये अब क्रिकेट की किंवदंतियों का भाग है।

जिस तरह 2007 में पहले विश्व टी-20 फाइनल में पाकिस्तान के विरुद्ध अंतिम ओवर में जोगिंदर शर्मा को लाकर उन्होंने सभी को चौंकाया था, उसी तरह यहां भी गेंदबाजों के क्रम में उनके हेरफेर के कारण बहुत सी भौंहें तनीं।

दर्शकों में अधिकतर भारतीय समर्थकों के बीच इंग्लैंड के प्रशंसकों के चिल्लाने की आवाजों के अतिरिक्त सब कुछ खत्म हो चुका सा लगता था, जबकि भारत के गिरते-पड़ते बने 7 विकेट पर 129 के स्कोर के जवाब में 17 वें ओवर की समाप्ति पर इंग्लैंड चार विकेट पर 102 तक पहुंच चुका था और रवि बोपारा और इयॉन मॉर्गन नियंत्रण में थे। अब तीन ओवर शेष थे और 28 रनों की आवश्यकता थी—जोकि मजबूती से पिच पर डटे हुए जोड़े के लिए बेहद आसान काम दिखता था।

ऐसे में धोनी ने 2007 की तरह एक बार फिर से एक चौंकाने वाला काम किया—वो ईशांत शर्मा (तीन ओवर में 27 रन) को उनके चौथे और अंतिम ओवर के लिए वापस लाए बावजूद इसके कि पिच स्पिनरों की मदद कर रही थी और दूसरे मध्यम तेज़ गेंदबाजों कुमार और यादव ने अभी तक कहीं ज्यादा किफायती गेंदबाजी की थी।

पहली गेंद—कोई रन नहीं; दूसरी गेंद, मॉर्गन ने छक्का मारा; तीसरी—वाइड; चौथी—फिर से वाइड।

मैच भारत की पकड़ से फिसलता जा रहा है। फील्डर परेशान हैं, मैदान पर मौत सा सन्नाटा छाया हुआ है।

और फिर दो गेंदों के अंदर मैच पलटा खाता है। ईशांत अपना हौसला बनाए रखते हैं, एक धीमी गेंद डालते हैं, मॉर्गन (33) मिडविकेट पर गलत शॉट खेलते हैं और अश्विन द्वारा लपक लिए जाते हैं।

अगली गेंद, आउट! फील्डर एक बार फिर से अश्विन हैं, बोपारा 30 रन पर आउट होते हैं और 18 वें ओवर के अंत तक चार विकेट पर 102 चमत्कारिक रूप से 6 विकेट पर 111 में बदल जाता है।

इंग्लैंड अभी भी सफल हो सकता है। लेकिन इसके बजाय, अंतिम दो ओवरों में फील्डर बल्ले के एकदम नजदीक मंडराते रहते हैं, जडेजा और अश्विन फिरकी गेंदबाजी करते हैं और इंग्लैंड के बल्लेबाज बुरी तरह से घबराहट में पड़ जाते हैं।

अंतिम ओवर में पंद्रह रन की जरूरत, स्टुअर्ट ब्रॉड और जेम्स ट्रेडवैल क्रीज पर हैं। अंतिम गेंद, ट्रेडवैल घुमाते हैं और चूक जाते हैं जबकि जीत के लिए छह रन की जरूरत है। धोनी खुशी से उछलने-कूदने लगते हैं। और राहत से?

खेल खत्म हो चुका है और भारतीय मैदान पर और मैदान से बाहर खुशी से दोहरे हो रहे हैं। कुल पंद्रह मिनट पहले वो हार का सामना कर रहे थे। 18 वें ओवर के उस महत्वपूर्ण फैसले तक जिसने मैच को सिर के बल पलट दिया।

धवन सबसे अधिक रन बनाने वाले और प्लेयर ऑफ द सीरीज बनते हैं, जडेजा सबसे अधिक विकेट लेने वाले हैं। विशेषज्ञ धोनी के निरीक्षण में 2015 के विश्व कप की टीम अभी से आकार ले रही है।

अभी टीम विजय की भावना को आत्मसात भी नहीं कर पाई थी कि उन्हें 24 घंटे के अंदर एक बार फिर मेजबान वेस्टइंडीज और श्रीलंका के साथ एकदिवसीय श्रृंखला के लिए कैरिबियाई दौरे पर रवाना होना था।

धोनी अगर घर जाने की इजाजत मांगते तो शायद उन्हें क्षमा किया जा सकता था। लेकिन वो चैंपियंस फाइनल के एक सप्ताह के अंदर वेस्टइंडीज के खिलाफ पहले मैच के लिए मैदान पर थे।

लेकिन थकान तो दिखाई देनी ही थी। भारत ने न केवल मैच एक विकेट से खोया, बल्कि बल्लेबाजी के दौरान घुटने के पीछे की नस में खिंचाव से चोटिल अपने कप्तान को भी खो दिया। दिनेश कार्तिक ने विकेटों के पीछे उनकी जगह संभाली और वेस्टइंडीज की बल्लेबाजी के दौरान कोहली ने कप्तानी की।

अपने करिश्माई कप्तान की अनुपस्थिति में, भारत को अगले मैच में लंका ने कुचल डाला, लेकिन भारत ने वापसी करते हुए वेस्टइंडीज को हराया और फिर लंका को 81 रन से हराकर फाइनल में प्रवेश कर लिया।

इस दौरान धोनी की जगह कोहली कप्तानी करते रहे, धोनी अपनी चोट के इलाज के बीच सीमारेखा पर लगे रहे। कुछ लोगों ने उनकी मौजूदगी पर सवाल उठाए कि वो वापस घर क्यों नहीं गए। क्या वो अपने उपकप्तान को कमजोर करने में लगे थे? वो 7 जुलाई को—फाइनल से चार दिन पहले—अपना 32 वां जन्मदिन इतनी दूर पोर्ट ऑफ स्पेन के बजाय अपने परिवार के साथ रांची में मना सकते थे। लेकिन धोनी फाइनल के लिए फिट होने के लिए दृढ़ थे—और वो फिट हुए।

शायद वो तीन मैच छोड़ना एक वरदान साबित हुआ हो। 23 दिसंबर 2004 को अपने पहले एकदिवसीय मैच से किंग्सटन में उस पहले मैच तक, धोनी कुल 352 दिन की टैस्ट क्रिकेट, 225 एकदिवसीय मैच, 42 टी-20 अंतरराष्ट्रीय, 96 आईपीएल मैच (20/20) और 90 दिन की अन्य क्रिकेट खेल चुके थे।

इसका मतलब हुआ मैदान में हैरतअंगेज तौर पर 819 दिन। इस दौरान सफर में बिताए दिन भी शामिल कर लें, तो धोनी ने नौ साल की इस कड़ी दौड़-धूप के दौरान न केवल बल्लेबाजी की थी, विकेटकीपिंग की थी, कप्तानी की थी, मैच जीते थे, बल्कि ये आश्चर्य की ही बात थी कि वो अभी तक अपनी टांगों पर खड़े होने लायक भी थे।

इन नौ वर्षों में उन्होंने, चोटिल होने या मजबूरन आराम के कारण, आठ टैस्ट मैच, 27 एकदिवसीय अंतरराष्ट्रीय मैच, तीन टी-20 अंतरराष्ट्रीय और तीन मैच आईपीएल और चैंपियंस लीग में नहीं खेले थे।

अब एक बार फिर एक त्रिकोणीय श्रृंखला के फाइनल में भारत और श्रीलंका आमने-सामने थे, इस बार पोर्ट ऑफ स्पेन में, और धोनी के साथी खिलाड़ियों और प्रशंसकों को उन्हें मैदान पर वापस देखकर बड़ी राहत मिली थी।

और क्या शानदार मैच साबित हुआ ये, अगर कोई मैच धोनी स्पेशल था, तो वो ये था;

लंका का 201 पर ऑल आउट का स्कोर बहुत बड़ी चुनौती नहीं होना चाहिए था। लेकिन हालांकि सलामी बल्लेबाज रोहित शर्मा सावधानीपूर्ण 58 रनों के साथ पहले आधे भाग में पारी को संभाले रहे, लेकिन बत्तीसवें ओवर में 4 विकेट पर 139 के स्कोर पर उनके जाने के साथ, धोनी पारी की एक संकटपूर्ण स्थिति में बल्लेबाजी के लिए आए।

कप्तान असहाय से दूसरे छोर पर देखते रहे और विकेट एक के बाद एक लड़खड़ाते गए। रैना, जडेजा और अश्विन के जल्दी-जल्दी आउट होने के कारण 38 वें ओवर में स्कोर 7 विकेट पर 152 हो गया, धोनी का साथ देने के लिए केवल पुछल्ले बल्लेबाज ही बचे।

जब अंतिम बल्लेबाज ईशांत बल्लेबाजी के लिए आए, तो समीकरण बड़ा मुश्किल था—एक विकेट हाथ में था, जीत के लिए 20 रन की आवश्यकता थी और इन्हें बनाने के लिए 22 गेंदें शेष थीं।

स्थिति तनावपूर्ण थी जबकि धोनी चिल्ला-चिल्लाकर ईशांत को आदेश दे रहे थे जब उन्हें एंजेलो मैथ्यूज के पूरे 49 वें ओवर का सामना करना था जिसमें उन्होंने किसी तरह दो रन जोड़े। लेकिन अहम बात ये थी कि शामिंडा इरंगा के अंतिम ओवर का सामना करते समय धोनी स्ट्राइक पर थे—जिसमें 15 रन बनाने थे।

एकदम आसान? जी हां, विशेषज्ञ फिनिशर के लिए ऐसा ही था। पहली गेंद—बल्ला घूमा लेकिन चूक हुई। दूसरी गेंद, मैदान के बाहर, छह रन; तीसरी गेंद—चौका।

अब जरूरत पांच रन की थी, लेकिन ये औपचारिकता मात्र थी। चौथी गेंद को एक्स्ट्रा कवर के ऊपर से एक और छक्के के लिए भेज दिया गया, और इस तरह धोनी ने एक बार फिर से ये कर दिखाया—मैच में दो गेंदें शेष रहते एक विकेट से जीत।

मैदान पर हंगामा, भारतीय खिलाड़ी और समर्थक अविश्वास में। फिर से वही सुनहरा स्पर्श। कैप्टन कूल अब कैप्टन आइस-कूल बन चुके हैं।

"मुझे लगता है कि मेरे पास क्रिकेट की कुछ अच्छी समझ का वरदान है," प्रसन्नचित्त धोनी मैन ऑफ द मैच पुरस्कार समारोह के बाद उदारता से काम लेते हुए कहते हैं। "मैं जानता था कि मैं अंतिम ओवर में 15 रन बना सकता हूं।"

अब जो आंकड़े सामने आते हैं वो दिमाग़ को चकित कर देने वाले हैं और पुष्टि करते हैं कि धोनी एकदिवसीय अंतरराष्ट्रीय मैचों के इतिहास के महानतम फिनिशर हैं। सफल दूसरी पारियों में 72 जीतों के दौरान 89.63 के स्ट्राइक रेट पर उनका औसत 100.09 है। अभी तक दूसरी पारी में किसी भी खिलाड़ी से उनका औसत (52.45) सबसे अधिक है। और सबसे बढ़कर—उन 33 मैचों में जिनमें उन्होंने अविजित रहते हुए भारत को जीत दिलाई है, उनमें उनका स्ट्राइक रेट दुनिया में सर्वश्रेष्ठ, 93.75 , है।

फाइनल के बाद, दिमाग़ को झकझोर देने वाले बहुत से विश्लेषणों में से एक उत्कृष्ट लेख इंडियन एक्सप्रेस (19 जुलाई 2013) में संदीप द्विवेदी का आया।

"धोनी का फिनिशिंग का कारनामा, जादू और गणित" शीर्षक के तहत, द्विवेदी ने समझाया कि "मुश्किल मैचों में धोनी का एजेंडा है कि अंतिम ओवर तक, अंतिम गेंदबाज

के साथ करो या मरो वाले मुकाबले के लिए डटे रहो। ये जोखिम उठाने से ज़्यादा बहादुरी का काम है।”

उधर भूतपूर्व टैस्ट बल्लेबाज संजय मांजरेकर कुछ कहने के लिए सिर खुजाते रहे। “उम्मीद करते हैं कि एक दिन वो किसी को अपने दिमाग में आने की आज्ञा देंगे और हम समझ सकेंगे कि उनका दिमाग किस तरह चलता है...”

उनके ‘दिमाग में’ शायद जो सबसे ज्यादा झांक सका है, वो हैं खेलों के मनोवैज्ञानिक डॉ. रूडी वी वैब्स्टर। डॉ. वैब्स्टर की किताब *थिंक लाइक ए चैंपियन* (हार्पर कॉलिंस पब्लिशर्स इंडिया) के लिए इंटरव्यू के दौरान धोनी ने बताया था कि वो तनावपूर्ण स्थितियों से किस तरह लड़ते हैं।

“मुझे चुनौती और दबाव पसंद है। इन्होंने मुझे हमेशा अच्छा करने के लिए प्रेरित किया है। दबाव मेरे लिए बस एक अतिरिक्त जिम्मेदारी है... अगर ईश्वर ने आपको अपनी टीम और देश के लिए एक हीरो बनने का मौका दिया है तो ये दबाव नहीं है।”

इस सारे उल्लास के दौरान खबर आई कि माही के सबसे करीबी दोस्तों में से रहे और उन्हें अब तक मशहूर हो चुका ‘हैलिकॉप्टर शॉट’ सिखाने वाले, झारखंड के रणजी ट्रॉफी के खिलाड़ी संतोष लाल का दिल्ली के एक अस्पताल में कुल 32 वर्ष की उम्र में—अपने सबसे अच्छे दोस्त की समान उम्र में—पैन्क्रिएटाइटिस से निधन हो गया।

धोनी अपने लिए बहुत जरूरी छुट्टी लेकर न्यूयॉर्क गए हुए थे और वो अपने दोस्त की हालत पर नजर रखे हुए थे। उन्होंने सुनिश्चित किया था कि उन्हें बेहतरीन इलाज के लिए रांची से दिल्ली ले जाया जाए। लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी। रांची के अपनी टीम के साथियों के साथ हमेशा वफादार रहे भारतीय कप्तान के लिए ये खबर दिल तोड़ने वाली रही होगी ओर इसने उनसे जीत की मिठास छीन ली होगी।

एम एस धोनी की कहानी गरीबी से अमीरी तक की एक हैरतअंगेज कहानी रही है जिसने भारत में और सारी दुनिया में लाखों लोगों को प्रेरित किया है, और इसका अंतिम अध्याय अभी लिखा जाना बाकी है। इसमें कोई शक नहीं कि आगे आने वाले रास्ते में बहुत से मोड़ आएंगे। लेकिन कैप्टन कूल की निगरानी में भारतीय क्रिकेट अच्छे हाथों में है।

अध्याय सत्रह

आंकड़ों के आइने में धोनी

मोहनदास मेनन द्वारा

महेंद्र सिंह धोनी

जन्मः रांची, बिहार; 7 जुलाई 1981

बल्लेबाजी शैलीः दाएं हाथ के मध्यक्रम बल्लेबाज

क्षेत्ररक्षण स्थानः विकेट-कीपर

गेंदबाजीः दाएं हाथ के मध्यगति गेंदबाज (कभी-कभार)

भूमिकाः विकेट-कीपर बल्लेबाज

टीमें: भारत, भारत ए, एशिया एकादश, इंडिया सीनियर्स, इंडिया ब्लू, बिहार, झारखंड, पूर्वी क्षेत्र, चेन्नई सुपर किंग्स

सभी फॉर्मेटों में अंतर्राष्ट्रीय मैचों में											
फॉर्मेट	मैच	पारी	नाबाद	रन	उ.स्कोर	औसत	स्ट्रा.रेट	100	50	कैच	स्टंप
टैस्ट	77	121	15	4209	224	39.70	60.04	6	28	212	36
एक दिवसीय	226	200	57	7358	183*	51.45	88.17	8	48	212	75
टी20	42	39	15	748	48*	31.16	114.90	0	0	21	9
कुल	345	360	87	12315	224	45.01	76.91	14	76	445	119
सभी फॉर्मेटों के प्रथम श्रेणी मैचों में, अंतर्राष्ट्रीय बॉलिंगः 114बॉल 89रन, 1विकेट (सर्वश्रेष्ठः 1/14)											
फॉर्मेट	**मैच**	**पारी**	**नाबाद**	**रन**	**उ.स्कोर**	**औसत**	**स्ट्रा.रेट**	**100**	**50**	**कैच**	**स्टंप**
प्रथम श्रेणी	118	187	18	6371	224	37.69	57.87	9	42	320	55
लिस्ट ए (50 ओवर)	283	253	68	9361	183*	50.60	86.34	14	59	282	90
टी20	157	141	46	3359	73*	35.35	133.87	0	14	79	35
कुल	558	581	132	19091	224	42.51	89.02	23	115	681	180
हर फॉर्मेट की बॉलिंगः 183 बॉल, 156 रन, 2 विकेट (सर्वश्रेष्ठ1/14)											

टैस्ट कैरियर रिकॉर्ड											
प्रतिपक्षी	**मैच**	**पारी**	**नाबाद**	**रन**	**उ.स्कोर**	**औसत**	**स्ट्रा.रेट**	**100**	**50**	**कैच**	**स्टंप**
ऑस्ट्रेलिया	17	29	4	922	224	36.88	60.45	1	5	43	14
बांग्लादेश	3	4	2	193	89	96.50	70.95	0	2	12	3
इंग्लैंड	16	27	2	808	99	32.32	52.43	0	8	46	4
न्यूजीलैंड	7	10	2	482	98	60.25	56.44	0	5	21	5
पाकिस्तान	5	6	1	323	148	64.60	73.91	1	2	9	1
दक्षिण अफ्रीका	10	16	1	560	132*	37.33	57.67	1	2	24	1
श्रीलंका	9	12	2	491	110	49.10	65.72	2	2	21	1
वेस्टइंडीज	10	17	1	430	144	26.87	64.85	1	2	36	7

स्थान	मैच	पारी	नाबाद	रन	उ.स्कोर	औसत	स्ट्रा.रेट	100	50	कैच	स्टंप
ऑस्ट्रेलिया	7	14	1	243	57*	18.69	43.86	0	1	18	3
बांग्लादेश	3	4	2	193	89	96.50	70.95	0	2	12	3
इंग्लैंड	7	13	2	429	92	39.00	59.50	0	4	19	0
भारत	40	59	9	2334	224	46.48	59.49	5	15	98	24
न्यूजीलैंड	2	3	1	155	56*	77.50	52.54	0	2	11	1
पाकिस्तान	3	3	0	179	148	59.66	89.05	1	0	7	1
दक्षिण अफ़्रीका	5	9	0	283	90	31.44	70.39	0	1	16	0
श्रीलंका	3	4	0	128	76	32.00	58.18	0	1	6	0
वेस्टइंडीज	7	12	0	265	74	22.08	62.79	0	2	25	4

घरेलू/विदेशी	मैच	पारी	नाबाद	रन	उ.स्कोर	औसत	स्ट्रा.रेट	100	50	कैच	स्टंप
घरेलू	40	59	9	2334	224	46.68	59.49	5	15	98	24
विदेशी	37	62	6	1875	148	33.48	60.73	1	13	114	12

वर्ष	मैच	पारी	नाबाद	रन	उ.स्कोर	औसत	स्ट्रा.रेट	100	50	कैच	स्टंप
2005	3	5	1	149	51*	37.25	74.87	0	1	5	1
2006	12	19	0	557	148	29.31	71.59	1	2	36	8
2007	8	13	4	468	92	52.00	67.82	0	5	14	3
2008	12	19	1	633	92	35.16	52.48	0	6	26	5
2009	5	6	2	369	110	92.25	59.22	2	2	21	1
2010	13	19	1	749	132*	41.61	55.48	1	4	41	7
2011	12	21	2	511	144	26.89	58.06	1	3	47	3
2012	8	13	2	447	99	40.63	49.22	5	5	13	3
2013	4	6	2	326	224	81.50	86.70	0	0	9	5

मैच की हर पारी में	मैच	पारी	नाबाद	रन	उ.स्कोर	औसत	स्ट्रा.रेट	100	50	कैच	स्टंप
पहली पारी	34	3	1297	144	41.83	63.23	2	10	73	15	
दूसरी पारी	42	2	1732	224	43.30	59.27	4	9	53	8	
तीसरी पारी	28	5	820	90	35.65	60.87	0	8	62	10	
चौथी पारी	17	5	360	76*	30.00	52.17	0	1	22	3	

परिणाम में	मैच	पारी	नाबाद	रन	उ.स्कोर	औसत	स्ट्रा.रेट	100	50	कैच	स्टंप
मैच जीते	33	47	7	1967	224	51.76	64.85	4	12	100	21
मैच हारे	18	36	2	895	90	26.32	52.74	0	7	43	4
ड्रॉ	26	38	4	1347	148	39.61	59.07	2	9	69	11
बैटिंग क्रमांक	**पारी**	**नाबाद**	**रन**	**उ.स्कोर**	**औसत**	**स्ट्रा.रेट**	**100**	**50**			
तीसरा	2	1	105	68*	105.00	72.41	0	1			
पांचवां	3	1	54	20	27.00	66.67	0	0			
छठा	17	3	925	224	66.07	63.61	2	5			
सातवां	89	8	2565	110	31.66	56.22	2	19			
आठवां	10	2	560	144	70.00	72.91	2	3			

कप्तानी	मैच	पारी	नाबाद	रन	उ.स्कोर	औसत	स्ट्रा.रेट	100	50	कैच	स्टंप
कप्तान के रूप में	47	73	10	2787	224	44.23	58.87	5	19	143	22
खिलाड़ी के रूप में	30	48	5	1422	148	33.06	62.47	1	9	69	14
कुल	मैच	पारी	नाबाद	रन	उ.स्कोर	औसत	स्ट्रा.रेट	100	50	कैच	स्टंप
टैस्ट मैच में	77	121	15	4209	224	39.70	60.04	6	28	212	36
टैस्ट गेंदबाजीः 78 गेंद, 58 रन, 0 विकेट											
एकदिवसीय कैरियर रिकॉर्ड											
टीम	मैच	पारी	नाबाद	रन	उ.स्कोर	औसत	स्ट्रा.रेट	100	50	कैच	स्टंप
भारत	223	197	56	7184	183*	50.95	87.54	7	48	209	72
एशिया इलैवन	3	3	1	174	139*	87.00	125.17	1	0	3	3
प्रतिपक्षी	मैच	पारी	नाबाद	रन	उ.स्कोर	औसत	स्ट्रा.रेट	100	50	कैच	स्टंप
अफ्रीका इलैवन	3	3	1	174	139*	87.00	125.17	1	0	3	3
ऑस्ट्रेलिया	29	26	5	840	124	40.00	71.91	1	4	28	10

बांग्लादेश	13	10	5	338	101*	67.60	90.13	1	1	13	8
बरमूडा	1	1	0	29	29	29.00	116.00	0	0	1	0
इंग्लैंड	35	34	10	1128	96	47.00	90.09	0	9	31	10
हांगकांग	1	1	1	109	109*	-	113.54	1	0	1	3
आयरलैंड	1	1	0	34	34	34.00	68.00	0	0	3	0
नीदरलैंड	1	1	1	19	19*	-	47.50	0	0	1	0
न्यूजीलैंड	11	10	4	309	84*	51.50	80.46	0	3	10	3
पाकिस्तान	30	28	8	1208	148	60.40	90.82	2	9	28	8
स्कॉटलैंड	1	–	–	-	–	–	–	-	–	2	0
दक्षिण अफ्रीका	20	19	3	413	68*	25.81	85.33	0	2	15	4
श्रीलंका	57	46	12	2086	183*	61.35	90.54	2	16	59	19
वेस्टइंडीज	21	18	6	548	95	45.67	94.04	0	3	17	6
जिम्बाब्वे	2	2	1	123	67*	123.00	112.84	0	2	0	1

स्थान	मैच	पारी	नाबाद	रन	उ.स्कोर	औसत	स्ट्रा.रेट	100	50	कैच	स्टंप
ऑस्ट्रेलिया	17	15	6	552	88*	61.33	71.50	0	4	24	5
बांग्लादेश	17	14	6	489	101*	61.12	93.14	1	2	12	8
इंग्लैंड	17	14	2	438	78*	36.50	85.38	0	4	13	6
भारत	86	78	23	3184	183*	57.89	92.53	6	17	62	31
आयरलैंड	2	2	1	14	14*	14.00	93.33	0	0	2	0
मलेशिया	4	3	0	43	33	14.33	75.43	0	0	7	1
न्यूजीलैंड	5	4	2	184	84*	92.00	98.39	0	2	2	1
पाकिस्तान	11	9	5	546	109*	136.50	105.40	1	5	16	3
स्कॉटलैंड	1	-	–	–	–	–	–	–	–	2	0
दक्षिण अफ्रीका	12	10	0	217	55	21.70	77.50	0	1	13	3
श्रीलंका	33	31	7	1078	94	44.91	79.79	0	9	39	8
यूएई	2	2	0	62	59	31.00	75.60	0	1	2	0
वेस्टइंडीज	14	13	3	378	95	34.80	84.56	0	1	15	7
जिम्बाब्वे	5	5	2	173	67*	57.66	110.19	0	2	3	2

घरेलू/विदेशी	मैच	पारी	नाबाद	रन	उ.स्कोर	औसत	स्ट्रा.रेट	100	50	कैच	स्टंप
घरेलू	83	75	22	3010	183*	56.79	91.15	5	17	59	28
विदेशी	93	85	21	3044	101*	47.56	84.46	1	24	89	27
तटस्थ	50	40	14	1304	139*	50.15	90.61	2	7	64	20
वर्ष	**मैच**	**पारी**	**नाबाद**	**रन**	**उ.स्कोर**	**औसत**	**स्ट्रा.रेट**	**100**	**50**	**कैच**	**स्टंप**
2004	3	3	1	19	12	9.50	135.71	0	0	4	2
2005	27	24	6	895	183*	49.72	103.11	2	3	19	6
2006	29	26	6	821	96	41.05	92.97	0	7	33	3
2007	37	33	8	1103	139*	44.12	89.60	1	7	31	18
2008	29	26	7	1097	109*	57.73	82.29	1	8	38	11
2009	29	24	7	1198	124	70.47	85.57	2	9	26	11
2010	18	17	4	600	101*	46.15	78.94	1	3	19	4
2011	24	22	9	764	91*	58.76	89.88	0	6	17	6
2012	16	14	6	524	113*	65.50	87.62	1	3	12	5
2013	14	11	3	337	72	42.12	82.59	0	2	13	9

प्रत्येक मैच पारी में	मैच	पारी	नाबाद	रन	उ.स्कोर	औसत	स्ट्रा.रेट	100	50	कैच	स्टंप
पहले बैटिंग	106	104	22	4158	148	50.70	93.45	6	26	82	39
बाद में बैटिंग	120	96	35	3200	183*	52.45	82.13	2	22	130	36
दिन/रात के मैच में	**मैच**	**पारी**	**नाबाद**	**रन**	**उ.स्कोर**	**औसत**	**स्ट्रा.रेट**	**100**	**50**	**कैच**	**स्टंप**
दिन/रात के मैच	139	124	37	4325	139*	49.71	85.20	5	29	139	41
दिन के मैच	87	76	20	3033	183*	54.16	92.79	3	19	73	34
परिणाम में	**मैच**	**पारी**	**नाबाद**	**रन**	**उ.स्कोर**	**औसत**	**स्ट्रा.रेट**	**100**	**50**	**कैच**	**स्टंप**
मैच जीते	129	110	47	4650	183*	73.80	97.28	6	30	142	52
मैच हारे	83	83	6	2360	113*	30.64	74.00	2	15	61	22
मैच टाई हुए	3	3	2	167	78*	167.00	101.21	0	2	2	0
अनिर्णीत मैच	11	4	2	181	88*	90.50	85.78	0	1	7	1

बैटिंग क्रमांक	पारी	नाबाद	रन	उ.स्कोर	औसत	स्ट्रा.रेट	100	50	कैच	स्टंप	
दूसरा	2	0	98	96	49.00	86.72	0	1			
तीसरा	16	4	993	183*	82.75	99.69	2	6			
चौथा	18	5	910	109*	70.00	103.40	1	9			
पांचवां	48	13	1910	124	54.57	85.53	3	9			
छठा	85	24	2584	88*	42.36	81.10	0	18			
सातवां	28	11	812	139*	47.76	94.97	2	5			
आठवां	3	0	51	20	17.00	62.19	0	0			
कप्तानी	**मैच**	**पारी**	**नाबाद**	**रन**	**उ.स्कोर**	**औसत**	**स्ट्रा.रेट**	**100**	**50**	**कैच**	**स्टंप**
कप्तान के रूप में	142	125	38	4881	124	56.10	84.56	5	34	130	54
खिलाड़ी के रूप में	84	75	19	2477	183*	44.23	96.26	3	14	82	21

बड़े टूर्नामेंट	मैच	पारी	नाबाद	रन	उ.स्कोर	औसत	स्ट्रा.रेट	100	50	कैच	स्टंप
विश्व कप	12	11	3	270	91*	33.75	83.33	0	1	12	5
चैंपियन्स ट्रॉफी	11	6	0	116	51	19.33	77.85	0	1	11	4
एशिया कप	13	12	6	571	109*	95.16	92.84	1	3	19	5
कुल	मैच	पारी	नाबाद	रन	उ.स्कोर	औसत	स्ट्रा.रेट	100	50	कैच	स्टंप
एक दिवसीय में	226	200	57	7358	183*	51.45	88.17	8	48	212	75
एक दिवसीय गेंदबाजी: 12 गेंद, 14 रन, 1 विकेट											
टी20 अंतर्राष्ट्रीय कैरियर रिकॉर्ड											
प्रतिपक्षी	मैच	पारी	नाबाद	रन	उ.स्कोर	औसत	स्ट्रा.रेट	100	50	कैच	स्टंप
अफ़गानिस्तान	2	2	2	33	18*	–	220.00	0	0	5	0
ऑस्ट्रेलिया	7	7	3	140	48*	35.00	100.00	0	0	3	2
बांग्लादेश	1	1	0	26	26	26.00	123.80	0	0	1	1
इंग्लैंड	7	7	3	140	38	35.00	128.44	0	0	0	3

आयरलैंड	1	1	0	14	14	14.00	107.69	0	0	1	0
न्यूजीलैंड	4	4	2	76	28*	38.00	96.20	0	0	1	0
पाकिस्तान	5	4	0	73	33	18.25	110.60	0	0	6	1
स्कॉटलैंड	1	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
दक्षिण अफ्रीका	7	6	3	99	45	33.00	128.57	0	0	1	1
श्रीलंका	5	5	2	107	46	35.66	118.88	0	0	2	0
वेस्टइंडीज	2	2	0	40	29	20.00	97.56	0	0	1	0

स्थान	**मैच**	**पारी**	**नाबाद**	**रन**	**उ.स्कोर**	**औसत**	**स्ट्रा.रेट**	**100**	**50**	**कैच**	**स्टंप**
ऑस्ट्रेलिया	3	3	2	78	48*	78.00	88.63	0	0	2	1
इंग्लैंड	6	6	1	94	30*	18.80	96.90	0	0	2	3
भारत	9	9	3	203	46	33.83	128.48	0	0	1	2
न्यूजीलैंड	2	2	1	30	28*	30.00	83.33	0	0	1	0
दक्षिण अफ्रीका	10	8	2	164	45	27.33	123.30	0	0	2	0
श्रीलंका	7	6	3	94	23*	31.33	114.63	0	0	7	1
वेस्टइंडीज	5	5	3	85	29	42.50	149.12	0	0	6	1

घरेलू/विदेशी	**मैच**	**पारी**	**नाबाद**	**रन**	**उ.स्कोर**	**औसत**	**स्ट्रा.रेट**	**100**	**50**	**कैच**	**स्टंप**
घरेलू	9	9	3	203	46	35.83	128.48	0	0	1	2
विदेशी	14	13	6	259	48*	37.00	104.85	0	0	7	2
तटस्थ	19	17	6	286	36	26.00	116.26	0	0	13	4

वर्ष	**मैच**	**पारी**	**नाबाद**	**रन**	**उ.स्कोर**	**औसत**	**स्ट्रा.रेट**	**100**	**50**	**कैच**	**स्टंप**
2006	1	1	0	0	0	0.00	0.00	0	0	1	0
2007	8	7	2	163	45	32.60	130.40	0	0	1	0
2008	1	1	0	9	9	9.00	33.33	0	0	0	0
2009	10	10	2	184	46	23.00	101.09	0	0	3	2
2010	5	5	3	85	29	42.50	149.12	0	0	6	1
2011	3	3	1	39	21	19.50	86.66	0	0	0	1
2012	13	12	7	268	48*	53.60	125.82	0	0	10	4

प्रत्येक मैच पारी में		पारी	नाबाद	रन	उ.स्कोर	औसत	स्ट्रा.रेट	100	50	कैच	स्टंप
पहले बैटिंग		23	8	437	45	29.13	113.50	0	0	7	3
बाद में बैटिंग		16	7	311	48*	34.55	116.91	0	0	14	3
दिन/रात के मैच में	**मैच**	**पारी**	**नाबाद**	**रन**	**उ.स्कोर**	**औसत**	**स्ट्रा.रेट**	**100**	**50**	**कैच**	**स्टंप**
दिन/रात के मैच	34	31	11	623	48*	31.15	112.65	0	0	15	7
दिन के मैच	8	8	4	125	29	31.25	127.55	0	0	6	1
परिणाम में	**मैच**	**पारी**	**नाबाद**	**रन**	**उ.स्कोर**	**औसत**	**स्ट्रा.रेट**	**100**	**50**	**कैच**	**स्टंप**
मैच जीते	21	20	10	390	46	39.00	137.32	0	0	16	4
मैच हारे	19	18	5	325	48*	25.00	96.72	0	0	4	4
मैच टाई हुए	1	1	0	33	33	33.00	106.45	0	0	1	0
अनिर्णीत मैच	1	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–

बैटिंग क्रमांक	पारी	नाबाद	रन	उ.स्कोर	औसत	स्ट्रा.रेट	100	50			
तीसरा	4	0	95	46	23.75	128.37	0	0			
चौथा	5	3	78	24	39.00	116.41	0	0			
पांचवां	13	5	204	36	25.50	106.80	0	0			
छठा	12	5	277	48*	39.57	111.69	0	0			
सातवां	5	2	94	38	31.33	132.39	0	0			
कप्तानी	**मैच**	**पारी**	**नाबाद**	**रन**	**उ.स्कोर**	**औसत**	**स्ट्रा.रेट**	**100**	**50**	**कैच**	**स्टंप**
कप्तान के रूप में	41	38	15	748	48*	32.52	115.25	0	0	20	8
खिलाड़ी के रूप में	1	1	0	0	0	0.00	0.00	0	0	1	0
बड़े टूर्नामेंट	**मैच**	**पारी**	**नाबाद**	**रन**	**उ.स्कोर**	**औसत**	**स्ट्रा.रेट**	**100**	**50**	**कैच**	**स्टंप**
टी20 विश्व कप	22	20	7	390	45	30.00	123.02	0	0	14	4
कुल	**मैच**	**पारी**	**नाबाद**	**रन**	**उ.स्कोर**	**औसत**	**स्ट्रा.रेट**	**100**	**50**	**कैच**	**स्टंप**
टी20 अंतर्राष्ट्रीय में	42	39	15	748	48*	31.16	114.90	0	0	21	8

टिप्पणी: ऊपर दिए गए सभी रिकॉर्ड 11 जुलाई, 2013 चैंपियंस लीग की समाप्ति तक के हैं।

RPM
RPM
SS
SS

युवा माही (विकेटकीपर के दस्ताने पहने हुए) और उनकी स्कूली टीम रांची में।
फोटो: महादेव सेन

धोनी बांग्लादेश के खिलाफ चटगांव में पहला एक दिवसीय क्रिकेट मैच खेलते हुए,
(15 दिसंबर 2004)।
फोटो: के आर दीपक, द हिंदू फोटो संग्रह

पाकिस्तान के खिलाफ विशाखापत्तनम में पहला एक दिवसीय शतक जमाने वाले धोनी,
(5 अप्रैल 2005)।
फोटो: वी वी कृष्णन, द हिंदू फोटो संग्रह

रांची में घर पर, माही के पिता पान सिंह और मां देवकी अपने बेटे को विशाखापत्तनम वनडे खेलते देखते हुए। उनका पालतू कुत्ता भी टीवी पर नजरें गड़ाए हुए है।

फोटो: महादेव सेन

श्रीलंका के खिलाफ जयपुर में नाबाद 183 रन बनाकर भारत को जीत की सौगात देने के बाद प्रसन्नचित्त धोनी, (31 अक्टूबर 2005)।

श्रीलंका के खिलाफ जयपुर में नाबाद 183 रन बनाकर भारत को जीत की सौगात देने के बाद प्रसन्नचित्त धोनी, (31 अक्टूबर 2005)।

फोटो: एस सुब्रहमण्यम, द हिंदू फोटो संग्रह

वडोदरा में श्रीलंका के खिलाफ एक दिवसीय श्रृंखला खत्म होने के बाद जश्न मनाते साथी खिलाड़ियों द्वारा भिगोए गए मैन ऑफ द सीरिज धोनी, (12 नवंबर 2005)।

फोटो: एस सुब्रहमण्यम, द हिंदू फोटो संग्रह

श्रीलंका के खिलाफ चेन्नई में अपने पहले टेस्ट में बल्लेबाजी करते धोनी, (दिसंबर 2005)।

फोटो: एस सुब्रहमण्यम, द हिंदू फोटो संग्रह

फैसलाबाद में 148 रन की पारी में पाकिस्तानी गेंदबाजों की धुलाई करते धोनी, (जनवरी 2006)।
फोटो: एस सुब्रहमण्यम, द हिंदू फोटो संग्रह

जोहान्सबर्ग में ट्वेंटी-20 विश्वकप की ट्रॉफी हाथ में थामे गौरवान्वित भारतीय कप्तान धोनी (24 सितंबर 2006)।
फोटो: कमल शर्मा

ऑस्ट्रेलिया से जीतकर लौटी वनडे टीम के अभिनंदन समारोह में फिरोजशाह कोटला मैदान पर दिल्ली के उपराज्यपाल तेजिंदर खन्ना के साथ धोनी।

फोटो: कमल शर्मा

दिसंबर 2009 में श्रीलंका को हराकर भारतीय टीम आईसीसी टेस्ट रैंकिंग में पहले पायदान पर काबिज

फोटो:के आर दीपक, द हिंदू फोटो संग्रह

2010 , मुंबई में, चेन्नई सुपर किंग्स पहली बार आईपीएल ट्रॉफी जीतने के बाद
फोटो: के आर दीपक, द हिंदू फोटो संग्रह

4 जुलाई 2010 को शादी के कुछ ही दिनों बाद धोनी अपनी पत्नी साक्षी के साथ चेन्नई एयरपोर्ट पर
फोटो: के पिछुमणि, द हिंदू फोटो संग्रह

भारतीय क्रिकेट में एक शानदार पल। मुंबई में होने वाले 2011 वर्ल्ड कप फाइनल में श्रीलंका के खिलाफ जीत का शॉट लगाने के बाद मैन ऑफ द टूर्नामेंट युवराज सिंह मैन ऑफ द मैच धोनी को गले लगाते हुए।

फोटो: के आर दीपक, द हिंदू फोटो संग्रह

चेन्नई सुपर किंग्स ने 2011 में एक बार फिर से अपना खिताब सुरक्षित रखा।
फोटो: वी गणेशन, द हिंदू फोटो संग्रह

फरवरी 2013 में धोनी चेन्नई में होने वाले पहले टैस्ट में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ दोहरा शतक लगाते हुए।
द हिंदू फोटो संग्रह

नई दिल्ली में, भारतीय टीम टैस्ट सीरिज में ऑस्ट्रेलिया का 4-0 से सफाया करके बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी पर कब्जा करने के बाद।

द हिंदू फोटो संग्रह